

# N A N D I S U T T A M̐

by

DEVAVĀCAKA

with the CŪRṆĪ by

JINADĀSA GAṆĪ MAHATTARA

Edited by

MUNI SHRI PUNYAVIJAYAJI

General Editors :

Dr V S. AGRAWALA

Pandit DALSUKH MALVANIA

PRAKRIT TEXT SOCIETY

VARANASI-5

AHMEDABAD-9

1966

Published by  
DALSUKH MALVANIA  
Secretary,  
PRAKRIT TEXT SOCIETY  
VARANASI-5

*Price Rs 10/-*

*Available from :*

- 1 MOTILAL BANARASIDASS NEPALI KHAJRA Post Box 75 VARANASI
- 2 CHAUKHAMBA VIDYABHAVAN CHAWK VARANASI
- 3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA GANDHI ROAD AHMEDABAD-1
- 4 SARASWATI PUSTAK BHANDAR RATANPOLE HATHIKHANA AHMEDABAD-1
- 5 MUNSHI RAM MANOHARLAL NAI SARAK DELHI

Printed by :-  
JAYANTI DALAL  
Vasant P Press  
Gheekanta Gheebhai's Wadi,  
AHMEDABAD-1

सिरिदेववायगविरह्यं

## नदीसुत्तं

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरह्याए चुण्णीए संजुयं

संशोधकः सम्पादकश्च

मुनिपुण्यविजयः

जिनागमरहस्यवेदिजैनाचार्यश्रीमद्विजयानन्दसूरिवर( प्रसिद्धनाम—आत्मारामजीमहाराज )शिष्यरत्न—  
प्राचीनजैनभाण्डागारोद्धारकप्रवर्तकश्रीमत्कान्तिविजयान्तेवासिनां  
श्रीजैनआत्मानन्दग्रन्थमालासम्पादकानां मुनिप्रवरश्रीचतुरविजयानां विनेयः

प्रा कृत ग्रन्थ परिषद्,

वाराणसी-५

अहमदाबाद-९,

प्रकाशक -

दलसुख मालवणिया

सेक्रेटरी प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी

वाराणसी-५

मुद्रक -

जयसिंह दलाल

बसंत प्रिन्टिंग प्रेस

धीरंदा पैलामाईकी बाड़ी

अहमदाबाद-१

## गुथसमपुणु

वरसुयसायरवीईतरतमण-वयण-कायजोगाणु ।  
वरजिणआगमपयडणकरणे अपमत्तजोगाण ॥ १ ॥  
जोगाजोगविहनुण नूण गंभीरिमाए गरिमाणु ।  
'आगमउद्वारय 'वरउवाहिमंताण सताणु ॥ २ ॥  
आयरियपुगवाण सागरआणुंदसुरिणामाणु ।  
महणायसदसच्चावयाण दुसमम्मि कालम्मि ॥ ३ ॥  
करकमलकोसमज्जे ताग सपइ दिवंगयाण मए ।  
अप्पिज्जइ गुथोऽय विणएण पुणुणविजएणु ॥ ॡ ॥

## ग्रन्थसमर्पण

जिनका मन वचन-काययोग श्रेष्ठ श्रुतसागरकी तरंगोंमें तैरता था, जो श्रेष्ठ जिनागमके प्रकाशनमें अप्रमत्तयोगसे प्रवृत्त थे, योग-अयोग के विवेक में कुशल थे, गाम्भीर्यगुणकी गरिमासे अन्वित थे, 'मागमोद्धारक'की श्रेष्ठ पदवीसे विभूषित सत थे, और दुःपमकालमें जिन्होंने अपने आपमें 'महानाद' शब्दको सत्य सिद्ध किया था ऐसे साम्प्रत कालमें दिवंगत आचार्यश्रेष्ठ श्रीसागरानन्दस्वरिजीके पवित्र करकमल रूप कोषमें यह ग्रन्थ विनयपूर्वक समर्पित करता हूँ ।

पुण्यविजय

## प्रकाशकीय निवेदन

जैन आगम ग्रन्थों के प्रकाशनके लिए अब तक अनेक व्यक्ति और संस्थाओंने प्रयत्न किया है। ई. १८४८ में सर्व प्रथम स्टिवेन्सन ने कल्पसूत्रका अनुवाद प्रकाशित किया किन्तु वह क्षतिपूर्ण था। वस्तुतः वेबर ही सर्वप्रथम विद्वान माने जायेंगे जिन्होंने इस दिशामें नया प्रस्थान शुरू किया। उन्होंने ई. १८६५-६६ में भगवती सूत्रके कुछ अंश का संपादन किया और उन पर टिप्पणीरूप अपना अध्ययन भी लिखा।

राय धनपतिसिंह बहादुरने आगमोका प्रकाशन १८७४ में शुरू किया और कई आगम प्रकाशित किये किन्तु उनका मूल्य हस्तप्रतों की मुद्रित आवृत्तिसे कुछ अधिक था। फिर भी—विद्वानों को दुर्लभ वस्तु सुलभ बनानेका श्रेय उन्हें है ही। जेकोबीका कल्पसूत्र (ई. १८७९), और आचारांग (ई. १८८२), ल्युमनका औपपातिक (ई. १८८३) और आवश्यक (ई. १८९७), स्टेइन्थलका ज्ञाताधर्मकथा का कुछ अंश (ई. १८८१), होर्नलका उपासकदशा (ई. १८९०), शुब्रिगके आचारांग (ई. १९१०) इत्यादि ग्रन्थ आगमों के संपादनकी कला में आधुनिक विद्वानों को संमत ऐसी पद्धति को अपनाकर प्रकाशित हुए थे। फिर भी लाला सुखदेव सहायद्वारा ऋषि अमोलककृत हिन्दी अनुवाद के साथ (ई. १९१४-२०) जो ३२ आगम प्रकाशित हुए तथा आगमोदय समिति द्वारा समग्र सटीक आगमों का ई. १९१५में जो मुद्रण प्रारंभ हुआ उनमें उस पद्धति की उपेक्षा ही हुई। आचार्य सागरानन्दसूरि द्वारा संपादित संस्करण शुद्धिकी और मुद्रण की दृष्टिसे राय धनपतिसिंहके संस्करणसे आगे बढ़ा हुआ है और विद्वानोंके लिये उपयोगी भी सिद्ध हुआ है। इस संस्करणके प्रकाशनके बाद जैनधर्म और दर्शनके अध्ययन और संशोधन में जो प्रगति हुई उसका श्रेय आचार्य सागरानन्दसूरिको है। किन्तु इतना होने पर भी आगमों को आधुनिक पद्धतिसे समीक्षित वाचना की आवश्यकता तो बनी ही रही थी। पाटनमें ई. १९४३ में आगम प्रकाशनके लिए जिनागम प्रकाशिनी ससदकी स्थापना की गई किन्तु उससे अब तक कुछ भी प्रकाशन हुआ नहीं। पू. पा. मुनिश्री पुण्यविजयजी लगातार चालीससे भी अधिक वर्ष से इस प्रयत्नमें है कि आगमोका सुसंपादित संस्करण प्रकाशित हो। उन्होंने इस दृष्टिसे प्राचीन प्रतों की शोध करके कई मूल आगमों और उनकी प्राकृत-संस्कृत टीकाओं के पाठ संशोधित किए हैं। इतना ही नहीं उन्होंने टीकाओं में या अन्य ग्रन्थों में आगमोके जो अवतरण आये हैं उनका आधार लेकर भी पाठशुद्धिका प्रयत्न किया है। उनके इस प्रयत्नको ही मुख्यरूपसे नजर समक्ष रख कर स्वतन्त्र भारतके प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसादने ई. १९५३ में प्राकृत ग्रन्थ परिषद्की स्थापना की। अबतक इस परिषद् के द्वारा प्राकृत भाषाके कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सुसंपादित होकर प्रकाशित हुए हैं। तथा पं. हरगोविंददासका सुप्रसिद्ध पाइयसदमहण्णवो भी पुनः मुद्रित हुआ है। प्राकृत ग्रन्थपरिषद् के द्वारा सटीक आगमों का प्रकाशन होना है यह जानकर केवल मूल आगमो के प्रकाशनके लिए बंबईके महावीर जैन विद्यालयने ई. १९६० में योजना बनाई और पू. मुनिश्री का सहकार मांगा जो सहर्ष दिया गया।

यह परम हर्षका विषय है कि प्राकृत ग्रन्थ परिषद् अब अपने मुख्य ध्येय के अनुसार आगमप्रकाशनके क्षेत्रमें भी प्रवेश कर रही है और समग्र आगमके मंगलभूत नन्दीसूत्र आ० जिनदास महत्तर कृत चूर्णि और आचार्य हरिभद्रकृत वृत्ति आदिके साथ नवम और दशम ग्रन्थके रूपमें प्रकाशित कर रही है। इसका श्रेय पू. पा. मुनिराज श्री पुण्यविजयजी को है जिन्होंने बड़े परिश्रम से इनका संपादन दीर्घकालीन अध्ययनसे अनेक हस्तप्रतों और टीकाओंके आश्रयसे किया है। इसके लिए प्राकृत ग्रन्थ परिषद् और विद्वज्जगत उनका ऋणी रहेगा।

ता. २९-६-६६

दलसुख मालवणिया  
मंत्री





## प्रस्तावना

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके सशोधनके लिये मूलसूत्रकी आठ और चूर्णिकी चार, एवं सब मिलकर बारह प्रतियाँ सामने रक्खी गई है। इनमें से मूलसूत्रकी तीन और चूर्णिकी एक, ये चार ताडपत्रीय प्रतियाँ हैं। इन सबका परिचय इस प्रकार है —

**जे० प्रति**—यह प्रति जेसलमेरके किलेमे स्थित खरतरगच्छीय युगप्रधान आचार्य श्रीजिनभद्रसूरि ताडपत्रीय ज्ञान-भंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। सूचीमें इस प्रतिका क्रमाङ्क ७७ है। इसमें पत्र १ से २६ में नन्दीसूत्र मूल है और पत्र १ से २९७ में श्रीमलयगिरिसूरिकृत वृत्ति है। प्रतिकी लंबाई-चौड़ाई ३३॥×२॥ इंच है। प्रतिपत्रमें पत्रकी चौड़ाईके अनुसार चार या पांच पंक्तियाँ लिखी है। प्रति तीन विभागमें लिखी गई है। प्रति शुद्धतम है। पुष्पिकाके लेखानुसार इस प्रति का सशोधन खरतरगच्छीय आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने स्वयं किया है। अनेक स्थानपर आपने उपयोगी टिप्पनीयाँ भी की है, जो हमने हमारे मुद्रणमें तत्तत् स्थान पर दे दी है। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अन्तमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है —

स्वस्ति । सवत् १४८८ वर्षे श्रीसत्यपुरे पौष वदि १० दिने श्रीपार्श्वदेवजन्मकल्याणके श्रीखरतरगणाधिपैः  
श्रीजिनराजसूरिपट्टालंकारसारैः प्रभुश्रीमज्जिनभद्रसूरिसूर्यावतारैः श्रीनन्दिंसिद्धान्तपुस्तकं स्वहस्तेन शोधितं  
पाठितं च । तच्च श्रीश्रमणसङ्घेन वाच्यमानं चिर नन्दतु ॥

सामान्यतया श्रीजिनभद्रसूरिके उपदेशसे लिखाई गई प्रतियाँ स्तम्भतीर्थ(खंभात)निवासी खरतरगच्छीय श्रावक परीक्षित धरणाशाह या श्रीमालिज्ञातोय (१) बलिराज-उदयराजकी पाई गई है। किन्तु इस प्रतिमें इन तीनोंमेंसे किसीके नामका उल्लेख नहीं है। यहां यह भी स्पष्ट होता है कि अपने विहारगन क्षेत्रोंमें भी आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिको अन्य मुख्य कार्योंके साथ साथ पुस्तकलेखन-सशोधन-अध्यापनादि कार्य भी था।

**सं० प्रति**—यह प्रति पाटन-सधवीपाडाके लघुपोशालिक ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसके पत्र ८२ है। प्रतिपत्रमें तीन या चार पंक्ति लीखी है। प्रतिपंक्तिमें ४० से ४३ अक्षर लिखे है। प्रति दो विभागमें लिखी है। इसकी लंबाई-चौड़ाई १४×१॥ इंचकी है। प्रतिकी डिपि सामान्यतया अच्छी है। अन्तमें लेखककी पुष्पिका नहीं है। इसके अन्तमें अनुज्ञानन्दी नहीं है।

**खं० प्रति**—यह प्रति खंभातके श्रीशान्तिनाथताडपत्रीय जैनज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। प्राच्यविद्यामंदिर-बडौदासे प्रकाशित इस भंडारकी सूचीमें इसका क्रमाङ्क ३८ है। इसमें पत्र १ से १८ में नन्दीसूत्र मूल है, पत्र १८-१९ में अनुज्ञानन्दी है और पुन पत्र १ से २४७ में नन्दीसूत्रकी मलयगिरीया वृत्ति है। प्रतिकी लंबाई-चौड़ाई ३१॥×२॥ इंच है। ताडपत्रकी चौड़ाईके अनुसार तीनसे पाँच पंक्तियाँ लिखी हुई हैं। प्रतिपंक्तिमें १०१ से ११९ अक्षर लिखे पाये जाते है। प्रति शुद्धप्राय है और लिपि सुन्दरतम है। प्रति तीन विभागमें लीखी गई है। अन्तमें इस प्रकारकी पुष्पिका है —

स० १२९२ वर्षे वैशाख शुदि १३ अचेह वीजापुरे श्रावकपौषधालायां श्रीदेवभद्रगणि प० मलय-  
कीर्ति पं० अजितप्रभगणिप्रभृतीनां व्याख्यानत ससारासारतां विचिन्त्य सर्वज्ञोक्तं ग्राह्य प्रमाणमिति मनसि  
ज्ञात्वा सा० धणपालसुत सा० रत्नपाल ठ० गजसुत ठ० विजयपाल श्रे० देलहामुत श्रे० वीरहण महं०  
जिणदेव महं० वीरकलसुत ठ० आसपाल श्रे० साल्हा ठ० सहजामुत ठ० अरसीह सा० राहडमुत सा०  
लाहडप्रभृतिसमस्तश्रावकैः मोक्षफलप्रार्थकैः समस्तचतुर्विधसकन्य पठनार्थं वाचनार्थं च मर्मर्पणाय लिखापितम् ॥३॥  
इन्हीं विजापुरके श्रावकोंकी लिखाई हुई अन्य कड ताडपत्रीय प्रतिया खंभातके इस भाण्डागारमें विद्यमान हैं।

डे० प्रति—यह प्रति अहमदाबादके डेला उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसमें मलयगिरीया टीका भी पत्रपाठरूपसे लिखित है। साथमें अनुज्ञानन्दी भी है। कागज पर लिखी हुई यह प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीमें लिखी माहम होती है।

ल० प्रति—यह प्रति अहमदाबाद खवारकी पोलके उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसकी पत्रसख्या ३५ है। हरेक पत्रमें नव पक्तियाँ हैं। हरेक पक्तिमें ३१ से ४२ अक्षर लिखे हैं। प्रतिकी छिपि सुन्दरतम है। अक्षर मोटे हैं। कागज पर लिखी हुई इस प्रतिके अतमें लेखकनी पुष्पिका इस प्रकार है—

नन्दी सम्पत्ता ॥छा॥ स १४८५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनौ श्रीभीमपल्लीय [अक्षर बीगाड दिये हैं]।

श्री ॥छा॥ शुभं भवतु ॥छा॥

इस पुष्पिकामें जो अक्षर बिगाड दिये हैं उनके स्थानमें बहार इस प्रकार नये अक्षर लिखे है—

साह श्रीवच्छासुत साह सहिसकस्य स्वपुण्यार्थं पुस्तकभंडारे कारापिता सुत वर्धमानपुस्तकपरिपालनार्थं ॥ छ ॥

मो० प्रति—यह प्रति पाटन—श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित भोदी ज्ञानभंडारकी है। यह प्रति विक्रमकी सोलहवीं सदीमें लिखी हुई है।

शु० प्रति—यह प्रति पाटन—श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित शुभवैरजैनज्ञानभंडारकी है। प्रति प्रायः शुद्ध है। प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीके उत्तरार्द्धमें लिखी प्रतीत होती है।

धु० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरान दसूरिवरसम्पादित श्रीमलयगिरिकृतटीकायुक्त है। जो आपने भागम वाचनाके समय सम्पादित की है। यह आवृत्ति वि स १९७३में आगमोदयसमिति—पुरतकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

### चूर्णीकी प्रतियाँ

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेर किलेमें स्थित श्रीजिनमद्राय ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसका क्रमांक ४१० है। इस क्रमाकमें तीन ग्रन्थ हैं—१ दगवैत्रलिक अगस्त्यासिंहोया चूर्णी पत्र १८४। २ नदीसूत्रचूर्णी पत्र १८५—२२३। ३ अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी पत्र १२४—२७५। इनसे नदीचूर्णी और अनुयोगद्वारचूर्णी ये दोनों चूर्णियाँ किसी गीतार्थकी सशोधित हैं। प्रतिकी छवाई—चौड़ाई २५×२॥ इंचकी है। प्रतिके अतमें लेखनसवत् या लेखककीपुष्पिका नहीं है। तथापि प्रतिका रग-ढग देखनेसे प्रतीत होता है कि—यह प्रति तेरहवीं सदीमें लिखित है। प्रति शुद्धप्राय है।

आ० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारकजी श्रीसागरान दसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जिसका प्रकाशन श्रीरूपमदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बरसस्था—रतलामकी ओरसे हुआ है। पूज्यश्रीको इसकी कोई अच्छी प्रति न मिलनेके कारण यह बहुत अशुद्ध छपी है। फिर भी एक प्रयत्नरकी तोरसे हमारे सशोधनमें यह आवृत्ति काममें ही आई है।

दा० प्रति—यह प्रति जिनागमज्ञ पूज्य श्रीविजयदानसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जो भाई हीरालालके द्वारा प्रकाशित है। इसमें भी काफ़ी अशुद्धियाँ हैं। तथापि पूज्य सागरान दसूरिम०की आवृत्तिकी अपेक्षा यह कुछ अच्छी आवृत्ति है।

चूर्णिके सम्पादन और सशोधनके समय पाटन—श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरकी एक प्रति और श्रीलालभाई दलपतभाई भारतीय सस्कृति विद्यामंदिरकी प्रतिको भी सामने रखी थी। ये दोनों प्रतियाँ क्रमशः सोलहवीं और सत्रहवीं सदीमें लिखी हुई प्रतियाँ हैं और अशुद्धिभरपूर प्रतियाँ हैं। तथापि शुद्ध पाठोंके निर्णयमें ये भी सहायक हुई है।

इस चूर्णिके सशोधनमें हमारे लिये मुख्य आधारस्तम्भ जे० प्रति ही है, जो अतीव शुद्ध प्रति है।

### सूत्रप्रतियोंकी विशेषता

स० डे० मो०, ये तीन प्रतियोंका प्रतिलेखनके बाद किसी विद्वानने सशोधन नहीं किया है।

जे० खं० ल० शु०, ये चार प्रतियाँ सशोधित प्रतियाँ हैं। इनमें भी जे० प्रतिका सशोधन खरतरगञ्जीय गीतार्थ आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने किया है, जिसमें आपने नन्दीसूत्रके प्रक्षिप्त पाठादिके विषयमें स्थान स्थान पर टिप्पणियाँ की हैं, जो हमने हमारे इस प्रकाशनमें दी हैं, देखो पृ. ५ टि. १०, पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११, पृ. १२ टि. ५ इत्यादि।

शु० प्रति अधिकतर अंशमें खं० प्रतिसे मीलतीझुलती होने पर भी जुदा कुञ्जको मालूम होती है। इसमें स्थविरावलिकी प्रक्षिप्त मानी जानेवाली गाथाये नहीं है, देखो पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११। छठे परिषत्सूत्रमें जो तीन गाथायें प्रक्षिप्त हैं वे भी इस प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ. १२ टि. ५। इसी प्रकार मनःपर्यवज्ञानके द्रव्यक्षेत्रादिविषयक सूत्रपाठमें जो सूत्रपाठ चूर्णीकार एवं हरिभद्रसूरिको अभिप्रेत है वह इस प्रतिसे पाया गया है, देखो पृ. २३ टि. ३। ऐसी जो जो अन्यान्य विशेषतायें इस प्रतिकी हैं उनका पादटिप्पणियोंमें उल्लेख कर दिया है। यहां पर परीक्षण एवं अभ्यासकी दृष्टिसे पाठभेदोंका निरीक्षण करनेवाले विद्वानोसे प्रार्थना है कि इस मुद्रणमें पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११ आदि दो-चार स्थानोंमें P प्रतिका निर्देश किया है वह P प्रति कौनसी ? और किस भंडारकी थी ? यह मेरी स्मृतिसे चला गया है। फिर भी यहाँ इतनी सूचना कर देता हूँ कि—शु० प्रति कुछ अंशमें इस P प्रतिसे मीलतीझुलती प्रति है। अर्थात् जैसे—**गोविंदाणं पि णमो० तथा तत्तो य भूयदिन्ने०** ये दो गाथायें P प्रतिमें नहीं हैं इसी तरह शु० प्रतिमें भी उपलब्ध नहीं हैं, देखो पृ. १० टि. ७। यद्यपि प्रस्तुत मुद्रणमें इस स्थानमें P प्रतिके साथ शु० प्रतिका उल्लेख छुट गया है किन्तु भंडारमें जा कर शु० प्रतिको पुनः देखके निश्चित किया है कि **गोविंदाणं पि णमो० तथा तत्तो य भूयदिन्ने०** ये दोनों गाथायें शु० प्रतिमें भी नहीं हैं। एवं—**वंदामि अज्जधम्मं० तथा वंदामि अज्जरक्खियं०** ये दो गाथायें शु० प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ. ८ टि. १०। चूर्णी एव टीकाओंमें इन चार गाथाओंका उल्लेख या व्याख्यान नहीं है। नन्दीसूत्रकी ऐसी और भी प्रति मेरे देखनेमें आई है, जिसमें ये गाथाये नहीं हैं। फिर भी नन्दीसूत्रकी प्राचीन तालपत्रीय प्रतियोंमें और दूसरी बहुतसी पंद्रहवीं-सोहवीं शती में लिखित कागजकी प्रतियोंमें ये गाथाये अवश्य ही उपलब्ध हैं। यहां प्रश्न होता है कि—चूर्णीकार और टीकाकारोंने इन गाथाओंका स्पर्श तक क्यों नहीं किया है ?

जे० और मो० प्रतिकी विशेषता यह है कि—इसमें प्रायः लुप्तव्यञ्जनके स्थानमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग न होकर केवल अ और आ की श्रुतिवाले प्रयोग ही हैं, जो पूज्य श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजके मुद्रणमें नजर आते हैं। ये दो प्रतियाँ उस परम्पराकी हैं, जिसमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग कम हैं। आदि ण प्रयोगके स्थानमें नका प्रयोग मुख्य है। जैसे कि—**नाण नाह नमंसिय नियम नदिघोस निगय नाल निम्मल सुयनिरिसय आदि।**

डे०शु० प्रतियाँ नप्रयोगके विषयमें जे०मो० प्रतियोंके समान हैं, किन्तु इन प्रतियोंमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग ही प्रयुक्त हैं।

खं०स० प्रतियोंमें णप्रयोगकी प्रधानता है। किन्तु सं० प्रतिमें फुरन्त महन्त समन्ता आदि परसवर्णके प्रयोग नजर आते हैं, इतना खं० और स० प्रतिका भेद है। इसी तरह स० और खं० प्रतिका अन्तर यह है कि खं० प्रतिमें चडुलियम्वा पदीवम्वा आदि जैसे प्रयोग भी प्रयुक्त दिखाई देते हैं देखो पृ. १६ टि. ३।

उपर आठ प्रतियोंका परिचय दिया गया है, जो आज उपलब्ध प्रतियोंमें प्राचीन प्रतियाँ हैं। इतनी प्रतियाँ एकत्र करने पर भी चूर्णीकार एवं वृत्तिकारसम्मत ऐसे अनेक पाठ हैं जो इन इतनी प्रतियोंसे भी प्राप्त नहीं हुए हैं। इनका सूचन पादटिप्पणियोंमें यथास्थान किया है।

इस नन्दीसूत्रके सशोधन, पाठ, पाठभेद, पाठोंकी कमीवैगीके निर्णयके लिये चूर्णि, हरिभद्रवृत्ति, मलयगिरिवृत्ति, श्रीचन्द्रीय

डे० प्रति—यह प्रति अहमदाबादके डेला उपाश्रयके ज्ञानमहारकी है। इसमें मलयगिरीया टीका भी पचपाठरूपसे लिखित है। साथमें अनुज्ञानन्दी भी है। कागज पर लिखी हुई यह प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीमें लिखी माद्धम होती है।

छ० प्रति—यह प्रति अहमदाबादख्वारकी पोल्के उपाश्रयके ज्ञानमहारकी है। इसकी पत्रसख्या ३५ हैं। हरेक पत्रमें नव पक्तियाँ हैं। हरेक पक्तिमें ३१ से ४२ अक्षर लिखे हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अक्षर मोटे हैं। कागज पर लिखी हुई इस प्रतिके अतमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है—

नन्दी सम्मत्ता ॥छा॥ स १४८५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनौ श्रीभीमपण्डीय [अक्षर बीगाड दिये हैं]।

श्री ॥छा॥ शुभ भवतु ॥जा॥

इस पुष्पिकामें जो अक्षर बिगाड दिये हैं उनके स्थानमें बहार इस प्रकार नये अक्षर लिखे हैं—

साह श्रीवच्छासुत साह सहिसकस्य स्वपुण्यार्थं पुस्तकमडारे कारापिता सुत वर्धमानपुस्तकपरिपालनार्थं ॥ छ ॥

मो० प्रति—यह प्रति पाटन—श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमदिरमें स्थित मोदी ज्ञानमहारकी है। यह प्रति विक्रमकी सोलहवीं सदीमें लिखी हुई है।

शु० प्रति—यह प्रति पाटन—श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमदिरमें स्थित शुभवीरजैनज्ञानमहारकी है। प्रति प्रायः शुद्ध है। प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीके उत्तरार्द्धमें लिखी प्रतीत होती है।

मू० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरानदसूरिकरसम्पादित श्रीमलयगिरिकृतटीकायुक्त है। जो आपने आगम वाचनके समय सम्पादित की है। यह आवृत्ति वि स १९७३में आगमोदयसमिति—सुरतकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

### चूर्णोंकी प्रतियाँ

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेर किलेमें स्थित श्रीजिनमद्राय ताडपत्रीय जैन ज्ञानमहारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसका क्रमाङ्क ४१० है। इस क्रमाकमें तीन ग्रन्थ हैं—१ दग्वैकान्तिक अगस्त्यसिंहीया चूर्णी पत्र १८४। २ नन्दीसूत्रचूर्णी पत्र १८५—२२३। ३ अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी पत्र १२४—२७५। इनमेंसे नन्दीचूर्णी और अनुयोगद्वारचूर्णी ये दोनों चूर्णियाँ किसी गीतार्थकी सशोधित हैं। प्रतिकी लवाई—चौड़ाई २५ × २॥ ईचकी है। प्रतिके अतमें लेखनसवत् या लेखककीपुष्पिका नहीं है। तथापि प्रतिका रग-ढग देखनेसे प्रतीत होता है कि—यह प्रति तेरहवीं सदीमें लिखित है। प्रति शुद्धप्राय है।

आ० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारकजी श्रीसागरानदसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जिसका प्रकाशन श्रीरूपमदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बरसस्था—रतलामकी ओरसे हुआ है। पूज्यश्रीको इसकी कोई अच्छी प्रति न मीलनेके कारण यह बहुत मशुद्ध छपी है। फिर भी एक प्रथमतरकी तोरसे हमारे सशोधनमें यह आवृत्ति काममें ही आई है।

दा० प्रति—यह प्रति जिनागमज्ञ पूज्य श्रीद्विजयदानसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जो माई हीरालालके द्वारा प्रकाशित है। इसमें भी काफी अशुद्धियाँ हैं। तथापि पूज्य सागरानदसूरिम०की आवृत्तिकी अपेक्षा यह कुछ अच्छी आवृत्ति है।

चूर्णिके सम्पादन और सशोधनके समय पाटन—श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमदिरकी एक प्रति और श्रीलालमाई दलपतमाई भारतीय संस्कृति विद्यामदिरकी प्रतिको भी सामने रखी थी। ये दोनों प्रतियाँ क्रमशः सोलहवीं और सत्रहवीं सदीमें लिखी हुई प्रतियाँ हैं और अशुद्धिभरपूर प्रतियाँ हैं। तथापि शुद्ध पाठोंके निर्णयमें ये भी सहायक हुई हैं।

इस चूर्णिके सशोधनमें हमारे लिये मुख्य आधारस्तम्भ जे० प्रति ही है जो अतीव शुद्ध प्रति है।

### सत्रप्रतियोंकी विशेषता

स० डे० मो०, ये तीन प्रतियोंका प्रतिलेखनके बाद किसी विद्वानने सशोधन नहीं किया है।

जे० खं० ल० शु०, ये चार प्रतियाँ सशोधित प्रतियाँ हैं। इनमें भी जे० प्रतिका सशोधन खरतरगञ्जीय गीतार्थ आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने किया है, जिसमें आपने नन्दीसूत्रके प्रक्षिप्त पाठादिके विषयमें स्थान स्थान पर टिप्पणियाँ की हैं, जो हमने हमारे इस प्रकाशनमें दी हैं, देखो पृ. ५ टि. १०, पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११, पृ. १२ टि. ५ इत्यादि।

शु० प्रति अधिकतर अंगमें खं० प्रतिसे मीलतीझुलती होने पर भी जुदा कुछको माछम होती है। इसमें स्थविरावल्की प्रक्षिप्त मानी जानेवाली गाथाये नहीं है, देखो पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११। छट्टे परिषत्सूत्रमें जो तीन गाथायें प्रक्षिप्त हैं वे भी इस प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ. १२ टि. ५। इसी प्रकार मनःपर्यवज्ञानके द्रव्यक्षेत्रादिविषयक सूत्रपाठमें जो सूत्रपाठ चूर्णिकार एवं हरिभद्रसूरिको अभिप्रेत है वह इस प्रतिसे पाया गया है, देखो पृ. २३ टि. ३। ऐसी जो जो अन्यान्य विशेषतायें इस प्रतिकी हैं उनका पादटिप्पणियोंमें उल्लेख कर दिया है। यहां पर परीक्षण एवं अभ्यासकी दृष्टिसे पाठभेदोका निरीक्षण करनेवाले विद्वानोसे प्रार्थना है कि इस मुद्रणमें पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११ आदि दो-चार स्थानोंमें P प्रतिका निर्देश किया है वह P प्रति कौनसी ? और किस भंडारकी थी ? यह मेरी स्मृतिसे चला गया है। फिर भी यहाँ इतनी सूचना कर देता हूँ कि—शु० प्रति कुछ अंशमें इस P प्रतिसे मीलतीझुलती प्रति है। अर्थात् जैसे—**गोविंदाणं पि णमो० तथा तत्तो य भूयदिन्ने०** ये दो गाथायें P प्रतिमें नहीं हैं इसी तरह शु० प्रतिमें भी उपलब्ध नहीं हैं, देखो पृ. १० टि. ७। यद्यपि प्रस्तुत मुद्रणमें इस स्थानमें P प्रतिके साथ शु० प्रतिका उल्लेख छुट गया है किन्तु भंडारमें जा कर शु० प्रतिको पुनः देखके निश्चित किया है कि **गोविंदाणं पि णमो० तथा तत्तो य भूयदिन्ने०** ये दोनों गाथाये शु० प्रतिमें भी नहीं हैं। एवं—**बंदामि अज्जधम्मं० तथा बंदामि अज्जरक्खियं०** ये दो गाथाये शु० प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ. ८ टि. १०। चूर्णी एव टीकाओंमें इन चार गाथाओका उल्लेख या व्याख्यान नहीं है। नन्दीसूत्रकी ऐसी और भी प्रति मेरे देखनेमें आई है, जिसमें ये गाथायें नहीं हैं। फिर भी नन्दीसूत्रकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतियोंमें और दूसरी बहुतसी पंद्रहवीं-सोलहवीं गती में लिखित कागजकी प्रतियोंमें ये गाथाये अवश्य ही उपलब्ध हैं। यहां प्रश्न होता है कि—चूर्णिकार और टीकाकारोंने इन गाथाओका स्पर्ण तक क्यों नहीं किया है ?

जे० और मो० प्रतिकी विशेषता यह है कि—इसमें प्रायः लुप्तव्यञ्जनके स्थानमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग न होकर केवल अ और आ की श्रुतिवाले प्रयोग ही हैं, जो पूज्य श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजके मुद्रणमें नजर आते हैं। ये दो प्रतियाँ उस परम्पराकी हैं, जिसमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग कम हैं। आदि ण प्रयोगके स्थानमें नका प्रयोग मुख्य है। जैसे कि—**नाण नाह नमंसिय नियम नदिघोस निग्गय नाल निम्मल सुयनिरिसय आदि।**

डे०शु० प्रतियाँ नप्रयोगके विषयमें जे०मो० प्रतियोंके समान हैं, किन्तु इन प्रतियोंमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग ही प्रयुक्त हैं।

खं०स० प्रतियोंमें णप्रयोगकी प्रधानता है। किन्तु स० प्रतिमें फुरन्त महन्त समन्ता आदि परसवर्णके प्रयोग नजर आते हैं, इतना खं० और स० प्रतिका भेद है। इसी तरह स० और खं० प्रतिका अन्तर यह है कि खं० प्रतिमें चडुल्लियन्वा पदीवन्वा आदि जैसे प्रयोग भी प्रयुक्त दिखाई देते हैं देखो पृ. १६ टि. ३।

उपर आठ प्रतियोंका परिचय दिया गया है, जो आज उपलब्ध प्रतियोंमें प्राचीन प्रतियाँ हैं। इतनी प्रतियाँ एकत्र करने पर भी चूर्णिकार एवं वृत्तिकारसम्मत ऐसे अनेक पाठ हैं जो इन इतनी प्रतियोंसे भी प्राप्त नहीं हुए हैं। इनका सूचन पादटिप्पणियोंमें यथास्थान किया है।

इस नन्दीसूत्रके सशोधन, पाठ, पाठभेद, पाठोका कमीवैशीके निर्णयके लिये चूर्णि, हरिभद्रवृत्ति, मलयगिग्वृत्ति, श्रीचन्द्रीय

टिप्पण, इन चारोंका समग्रभावसे उपयोग किया गया है, इतना ही नहीं, किंतु जहाँ जहाँ न दीसूत्रके उदरण, व्याख्यान आदि आये हैं ऐसे द्वादशारण्यचक्र, समवायाङ्गसूत्र एव भगवतीसूत्रकी अभयदेवीया वृत्ति, विशेषावश्यकमलघारीया वृत्ति, पाक्षिसूत्रवृत्ति आदि अनेक शास्त्रोंका उपयोग भी किया है, जिसकी प्रतीति इस सम्पादनकी पादटिप्पणियोंको देखनेसे होगी ।

न दीसूत्रकी चूर्णिके सशोधनके लिये मेरा आधारस्तम्भ जैसलमेरकी प्रति ही है । अगर यह प्रति प्राप्त न होती तो इसका जो गौरवपूर्ण सम्पादन हुआ है, वह शक्य न बनता । सस्कृत टीका निर्माणके बाद चूर्णियोंका अध्ययन कम हो जानेसे प्रायः आज ज्ञानमहारोमें जो जो आगमिक या आगमेतर शास्त्रोंके चूर्णप्रथकोंकी हस्तप्रतियाँ हैं, वे सभी अशुद्धि माण्डागारस्वरूप हो हो गई हैं । इतनी बात जरूर है कि—ज्यों ज्यों प्रति प्राचीन त्यों त्यों अशुद्धियाँ कम रहती हैं । किन्तु एक ही युगकी प्रतियोंके लिये यह अनुभव हुआ है कि—अगर वह प्रति प्राचीन प्रतिकी या भिन्न प्रदेशस्थित प्रतिकी नकल न हो कर, उसी युगकी या प्रदेशकी उत्तरोत्तर नकलकी नकल हो, तब तो उत्तरोत्तर अशुद्धियोंकी वृद्धि ही होती रही है, इतना ही नहीं पत्तियोंकी पत्तियाँ और सन्दर्भ के सन्दर्भ गायब हो गये हैं । अस्तु, मेरेको जैसलमेरकी प्रति मीली, यह मैं सिर्फ अपना ही नहीं, साथमें सब शास्त्रपाठी जैन गीतार्थ मुनिगण एव विद्वानोंका भी सौभाग्य समझता हूँ ।

अनेक आगमोंकी चूर्णिके, वृत्तिके अवलोकनसे प्रतीत हुआ है कि—अगर प्राचीन एव अलग अलग कुलकी प्रतियाँ प्राप्त न हो तो मुद्रणादिमें प्रायः सैंकड़ों अशुद्धियाँ पाठपरावृत्तियाँ आदि रहनेका सम्भव रहता है, इतना ही नहीं सन्दर्भके सन्दर्भ छूट जाते हैं । विद्वान् सशोधकोंके ध्यानमें लानेके लिये मैं यहाँ एक बातको उद्धृत करता हूँ—

अनुयोगद्वारसूत्रकी चूर्णिका सशोधन मैंने पाटन ज्ञानमहारकी दो प्राचीन ताडपत्रीय हस्तप्रतियाँ और खमातके श्रीशान्तिनाथ ज्ञानमहारकी दो ताडपत्रीय प्रतियाँ, एव चार प्रतियोंके आधारसे सुचारुतया कर लिया । कुछ शकास्थान होने पर भी दिलमें विश्वास हो गया था कि—एकदर सशोधन अच्छा हो गया है । किन्तु जब जैसलमेर जानेका मोका मिला, और वहाँके ज्ञानमहारकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिसे तुलना की तो कितने ही शकास्थान दूर हुए, इतना ही नहीं, परन्तु अलग अलग स्थानमें हो कर दश-बारह पत्तियाँ जितना दूसरे कुलकी प्रतियोंमें छूट गया हुआ नया पाठ प्राप्त हुआ और अनेकानेक अशुद्धियाँ भी दूर हुईं । यह प्राचीन प्राचीनतम एव अलग अलग कुलकी प्रतियोंके उपयोगका साफल्य है ।

प्रसंगवश यहाँ यह कहना भी उचित है कि—इस न दीसूत्रचूर्णिके सशोधन एव सम्पादनमें साधुन्त उपयोगमें लाई गई प्रतियोंके अलावा दूसरी अनेक प्रतियाँ मैंने समय समय पर देखी हैं, इससे ज्ञात हुआ है कि—जैसलमेरकी प्रतिकी अपेक्षा इन प्रतियोंमें त द च आदि वर्णोंके प्रयोग विपुल प्रमाणमें नजर आये हैं ।

### नन्दीसूत्रके प्रणेता

न दीसूत्रकारने न दीसूत्रमें कहीं भी अपने नामका निर्देश नहीं किया है, किन्तु चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरने अपनी चूर्णिके सूत्रकारका नाम निर्दिष्ट किया है, जो इस प्रकार है—

‘ एवं कतमगल्लोवयारो धेरावलिक्कमे य दंसिए अरिहेसु य दसितेसु दसगणिसीसो देववायगो साहुजण हितट्टाप इणमाह ’ [पत्र १३]

इस उल्लेखद्वारा चूर्णिकारने नन्दीसूत्रप्रणेता स्थविर श्रीदेववाचक हैं—ऐसा बतलाया है । आचार्य श्रीहरिमद्रसूरि एव आचार्य श्रीमल्लयगिरिसूरिने भी इसी आशयका उल्लेख अपनी अपनी टीकामें किया है, किन्तु इनका मूल आधार चूर्णिकारका उल्लेख ही है । चूर्णिकारके उल्लेखसे ही ज्ञात होता है कि—नन्दीसूत्रके प्रणेता नन्दीसूत्रस्थविरावलिगत अंतिमस्थविर श्रीदुष्यगणिके शिष्य श्रीदेववाचक हैं ।

पंथासजी श्रीकल्याणविजयजीमहाराजने अपने 'वीरनिर्वाणसवत् और जैन कालगणना' निबन्धमें (नागरीप्रचारिणी भाग १० अंक ४) अनेकानेक प्रमाण और युक्ति द्वारा नन्दीसूत्रप्रणेता स्थविर देववाचक और जैन आगमोक्ती माथुरी एवं बाल्मी वाचनाओको सवादित करनेवाले श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणको एक बतलाया है।

नन्यकर्मग्रन्थकार आचार्य श्रीदेवेन्द्रसूरि महाराजने अपनी स्वोपज्ञ वृत्तिमे देवर्द्धिवाचक, देवर्द्धिक्षमाश्रमण नामके उल्लेखपूर्वक अनेकवार नन्दीसूत्रपाठके उद्धरण दिये हैं, यह भी उन्होने देववाचक और देवर्द्धिक्षमाश्रमणको एक व्यक्ति मानके ही दिये हैं। यह भी श्रीकल्याणविजयजी महाराजकी मान्यताको पुष्ट करनेवाला सबूत है। तथापि नन्दीकी स्थविरावलीमें अंतिम स्थविर दुष्यगणि है, जिनको नन्दीचूर्णिकारने देववाचकके गुरु दरशाये है। तब कल्पसूत्रकी वि. स० १२४६ में लिखित प्रतिसे ले कर आज पर्यन्तकी प्राचीन-अर्वाचोन ताडपत्रीय एवं कागजकी प्रतियोंमें स्थविरावलिके पाठोंकी कमी बेशीके कारण कोई एक स्थविरका नाम व्यवस्थितरूपसे पाया नहीं जाता है। इस कारण इन दोनो स्थविरोंको एक मानना यह कहां तक उचित है, यह तज्ज्ञ विद्वानोंके लिये विचारणीय है। देववाचक और देवर्द्धिक्षमाश्रमण इन नाम और विशेषण-उपाधिमें भी अंतर है। साथमें यह भी देखना जरूरी है कि नन्दीसूत्रकी स्थविरावलीमें वायगवंस, वायगपय, वायग, इस प्रकार वायग शब्दका ही प्रयोग मिलता है, दूसरे कोई वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर जैसे पदका प्रयोग नजर नहीं आता है। अगर देववाचकको क्षमाश्रमणकी भी उपाधि होती तो नन्दीचूर्णिकार जरूर लिखते ही। जैसे द्वादशारनयचक्रटीकाके प्रणेता सिंहवादी गणि क्षमाश्रमण, विशेषावश्यककी अपूर्ण स्वोपज्ञ टीकाको पूरी करनेवाले कोट्यार्यवादी गणि महत्तर, सन्मतितर्कके प्रणेता वादी सिद्धसेनगणी दिवाकर आदि नामोंके साथ दो विशेषण-उपाधियाँ जुडी हुई मिलती है इसी तरह देववाचकके लिये भी दो उपाधियोंका निर्देश जरूर मिलता। अतः देववाचक और देवर्द्धिक्षमाश्रमण, ये दोनो एक ही व्यक्ति है या भिन्न, यह प्रश्न अब भी विचारणीय प्रतीत होता है। कल्पसूत्रकी स्थविरावली और नन्दीसूत्रकी स्थविरावलीका मेलजोल कैसे, कितना और कहां तक हो सकता है, यह भी विचारार्ह है।

वाचकपदकी अपेक्षाकृत प्राचोनता होने पर भी कल्पसूत्रकी समयसमय पर परिवर्धित स्थविरावलीमें धेर और खमासमण पदका ही निर्देश नजर आता है, यह भी दोनो स्थविर और स्थविरावलीकी विशेषता एवं भिन्नताके विचारका साधन है।

यहाँ पर प्रसंगोपात्त एक बात स्पष्ट करना उचित है कि—भद्रेश्वरसूरिकी कहावलीमें एक गाथा निम्नप्रकारकी नजर आती है—

वाई य खमासमणे दिवाथरे वायगे ति एगट्टा । पुब्बगयं जस्सेस जिणागमे तम्मिमे नामा ॥

अर्थात्—वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर और वाचक, ये एकार्थक—समानार्थक शब्द हैं। जिनागममें जो पूर्वगत शास्त्र हैं उनके शेष अर्थात् अंशोंका पारम्परिक ज्ञान जिनके पास है उनके लिये ये पद है।

इस गाथासे यह स्पष्ट है कि—इन उपाधियोंवाले आचार्योंके पास पूर्वगतज्ञानकी परंपरा थी। किन्तु आज जैन परम्परामें जो ऐसी मान्यता प्रचलित है कि—इन पदधारक आचार्योंको एक पूर्वआदिका ज्ञान था, यह मान्यता भ्रान्त एवं गलत प्रतीत होती है। कारण यह है कि—अगर आचाराङ्गादि प्राथमिक अंगआगम शीर्षविगीर्ण हो चूके थे, इस दशामें पूर्वश्रुतके अखंड रहनेकी सभावना ही कैसे हो सकती है?।

स्थविर श्रीदेववाचककी नन्दीसूत्रके सिवा दूसरी कोई कृति उपलब्ध नहीं है।

### चूर्णिकार

नन्दीसूत्रचूर्णिके प्रणेता आचार्य श्रीजिनदास गणि महत्तर है। सामान्यतया आज यह मान्यता प्रचलित है कि—जैन आगम उपरके भाष्योंके प्रणेता श्रीजिनभद्र गणि क्षमाश्रमण और चूर्णियोंके रचयिता श्रीजिनदास गणि महत्तर

ही हैं, और ऐसे प्राचीन उल्लेख पहावली आदिमें पाये भी जाते हैं, किन्तु भाष्य-चूर्णियोंके अवगाहन बाद ये दोनों मान्यताएँ गलत प्रतीत हुई हैं। यहाँ पर भाष्यकारोंका विचार अप्रस्तुत है, अतः सिर्फ यहाँ पर जैन आगमोंके उपर जो प्राचीन चूर्णियाँ उपलब्ध हैं उनके विषयमें ही विचार किया जाता है। आज जैन आगमोंके उपर जो चूर्णिनामक प्राकृतभाषाप्रधान व्याख्याग्रन्थ प्राप्त हैं उनके नाम क्रमशः ये हैं—

१ आचारसङ्गचूर्णि २ सूत्रकृताङ्गचूर्णि ३ भगवतीचूर्णि ४ जीवाभिगमचूर्णि ५ प्रज्ञापनासूत्रशरीरपदचूर्णि ६ जम्बूद्वीप-करणचूर्णि ७ दशाकल्पचूर्णि ८ कल्पचूर्णि ९ कल्पविशेषचूर्णि १० व्यवहारसूत्रचूर्णि ११ निशीथसूत्रविशेषचूर्णि १२ पञ्चकल्पचूर्णि १३ जीतकल्पबृहच्चूर्णि १४ आचर्यकचूर्णि १५ दशकालिकचूर्णि श्रीअगस्त्यसिंहकृता १६ दशकालिकचूर्णि बृहद्विवरणाल्या १७ उत्तराध्ययनचूर्णि १८ नन्दीमूत्रचूर्णि १९ अनुयोगद्वारचूर्णि २० पाक्षिकचूर्णि।

उपर जिन बौद्ध चूर्णियोंके नाम दिये हैं उनका और इनके प्रणेताओंके विषयमें विचार करनेके पूर्व एतद्विषयक चूर्णि-ग्रन्थोंके प्राप्त उल्लेखोंको मैं एकसाथ यहाँ उद्धृत कर देता हूँ, जो भविष्यमें विद्वानोंके लिये कायमकी विचारसामग्री बनी रहे।

(१) आचाराङ्गचूर्णी । अन्त —

से हु निरालंबणमपतिद्वितो । शेष तदेव ॥ इति आचारचूर्णी परिसमाप्ता ॥ नमो सुयदेवयाए भगवईप ॥ ग्रथाग्रम् ८३०० ॥

(२) सूत्रकृताङ्गचूर्णी । अन्त —

सदहामि जघ सूत्रेति गेत्व सन्वमिति ॥ नम सर्वविदे बीराय विगतमोहाय ॥ समाप्त चेद सूत्रकृताभिष द्वितीयमङ्गमिति । भद्र भवतु श्रीजिनशासनाय । सूत्राङ्गचूर्णि समाप्ता ॥ ग्रथाग्रम् ९५०० ॥

(३) भगवतीचूर्णि—

श्रीभगवतीचूर्णि परिसमाप्तेति ॥ इति भद्र ॥

सुमवेवय तु वदे नीइ पसाएग सिक्खिय नाण । विहय पि बतव (शुभ)देवि पसन्नवाणि पगिवयामि ॥ ग्रथाग्र ६७०७ ॥ श्रीः

(४) जीवाभिगमचूर्णि—

इस चूर्णीकी प्रति अद्यावधि ज्ञात किसी मंडारमें देखनेमें नहीं आई है।

(५) प्रज्ञापनाशरीरपदचूर्णि । अन्त —

जमिह समयविरुद्ध बद्ध बुद्धिविकलेण होजा हि । त जिणवयणमिहन्नु खमिऊण मे पसोहितु ॥ १ ॥

॥ शरीरपदस्स चुण्णी जिणभइखमासमणकित्तिया समत्ता ॥ अनुयोगद्वारचूर्णि पत्र ७४ ।

यानिनीमहत्तरासु आचार्य श्रीहरिमदसुरिश्चत अनुयोगद्वारलघुवृत्ति पत्र ९९ में भी यही उल्लेख है।

(६) जम्बूद्वीपकरणचूर्णि । अन्त —

एव उवरिद्धमागस्स तेरासिय पउजियञ्च । विरु वेहवुइदीओ आगेयञ्चाओ ॥ जवुद्वीवपण्यत्तिकरणाणं चुण्णी समत्ता ॥

(७) दशाश्रुतस्कन्धचूर्णि । अन्त —

जाव णया वि । जाव करणओ—सञ्चेसि पि णयाण० गाथा ॥ दशानां चूर्णी समाप्ता ॥

(८) कल्पचूर्णी—

आउयवजा उ० गाथा ९९ । विश्वेण जहा थिसेसावस्सगमासे । 'सामितं चेद पाढीण को केवतियं वषइ' खवेइ वा केत्तिय को उ' ति जहा कम्मपगढीए । एत पसणेण गत ।



अन्तः—

तजो य आराहणातो छिण्णससारी भवति ससारसततिं छेतुं मोक्खं पावतीति ॥ कल्पचूर्णी समाता ॥  
ग्रन्थाग्रम्—५३०० प्रत्यक्षरगणनया निर्णीतम् ॥ [ सर्वग्रन्थाग्रम्—१४७८४ ] ॥

(९) कल्पविशेषचूर्णि—

कल्पविसेसचुण्णी समत्तेति ॥

(१०) व्यवहारचूर्णि । अन्तः—

व्यवहारस्य भगवतः अर्थविवक्षाप्रवर्तने दक्षम् । विवरणमिदं समाप्तं श्रमणगणानाममृतभूतम् ॥१॥

(११) निशीथविशेषचूर्णि । आदिः—

नमिरुग्णऽरहंताण, सिद्धाण य कम्मचक्कमुक्काणं । सयणसिणेहविमुक्काण सव्वसाहूग भावेण ॥१॥

सविसेसायरजुत्तं काउ पणाम च अत्थदायिस्स । पडजुण्णास्समासमगस्स चरण-करणाणुपालस्स ॥२॥

एवं कयप्पणामो पक्कप्पणामस्स विवरणं वन्ने । पुव्वायरियकयं चिय अहं पि तं चेव उ विसेसे ॥३॥

भणिया विमुत्तिचूला अहुणाऽवसरो णिसीहचूलाए । को संबंधो तिस्सा ? भण्णइ, इणमो निसामेहि ॥४॥

तेरहवा उदेशके अन्तमें—

संकरंजडमउडविमूसणस्स तण्णामसरिसणामस्स । तस्स सुतेणेस कता विसेसचुण्णी णिसीहस्स ॥

पद्महवा उदेशके अन्तमें—

रैविकरमभिधानकखरसत्तमवगतअखरजुएणं । णामं जस्सिथीए सुतेण तिस्से कया चुण्णी ॥

सोलहवा उदेशके अन्तमें—

देहँडो सीह थोरा य ततो जेट्टा सहोयरा । कणिट्ठा देउलो णणो सत्तमो य तिहज्जिथो ।

एतेसि मज्झिमो जो उ मंदेवी(मंदधी) तेण वित्तिता(चिन्तिता) ॥

अन्तः—

जो गाहासुत्तथो चेवविधपागडो फुडपदत्थो । रइओ परिभासाए साहूण अणुग्गहट्टाए ॥१॥

ति-चउ-पण-ऽट्टमवणे ति-पण-ति-तिगक्खरा ठवे तेसिं । पढम-ततिएहि णिट्ठइ सरजुएहिं णामं कयं जस्स ॥२॥

गुरुदिण्णं च गणिच्चं महत्तरत्तं च तस्स जुट्टेण । तेण कतेसा चुण्णी विसेसणामा णिसीहस्स ॥३॥

णमो सुयदेवयाए भगवतीए ॥ जिणदासगणिमहत्तरेण रइया णिसीहचुण्णी समत्ता ॥

(१२) पञ्चकल्पचूर्णि । अन्तः—

कल्पपणयस्स भेओ पख्विओ मोक्खसाहणट्टाए । जं चरिऊग सुविहिया करेति दुक्खक्खयं धीरा ॥

पञ्चकल्पचूर्णिः समाता ॥ ग्रन्थप्रमाणं सहस्रत्रयं शतमेक पञ्चविंशत्युत्तरम् ३१२५ ॥

(१३) जीतकल्पबृहच्चूर्णी । अन्तः—

इति जेण जीयदाणं साहूणऽइयारपंकपरिसुद्धिकरं । गाहाहिं फुडं रइयं महुरपयत्थाहिं पावणं परमहियं ॥ १ ॥

१. इस गाथासे ज्ञात होता है कि चूर्णिकार श्रीजिनदासगणिमहत्तरके पिता का नाम नाग अथवा तो चन्द्र होगा ।

२. इस गाथाके अर्थका विचार करनेसे चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरकी माताका नाम प्राकृत गोवा संस्कृत गोपा अधिक सम्भवित है ।

३. इस गाथामें उल्लिखित देहड आदि, चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरके सहोदर भाई हैं ।

जिणभद्रत्वमासमण निचिअसुत्तअथदायगामलचरण । तमह वदे पयओ परम परमोवगारकारिण महग्घं ॥ २ ॥

॥ जीतकेल्पचूर्णि समाप्ता । सिद्धसेनकृतियेया ॥

(१४) आवश्यकचूर्णी । अन्त —

करणनयो—सवेसि पि नयाण० गाथा ॥ इति आवस्सगनिज्जुत्तिचुष्णी समाप्ता ॥ मगल महाश्री ॥

(१५) दशकालिकसूत्रअगस्त्यसिंहचूर्णी । अन्त —

एवमेत धम्मसमुक्कित्ताणादिचरण करणाणेगपरूणागम्भ नेव्वाणगमणफलावसाणं भवियजणाणदिकरं चुष्णि समासवयणेण दसकालिय परिसमत्तं ॥

नम ॥ वीरवत्स भगवतो तित्ये कोडीगणे सुविपुलम्भि । गुणगणवहरामस्ता त्रैसामिस्स साहाए ॥ १ ॥

महरिसिसरिससमावा भावाऽभावाण मुगितपरमत्था । रिसिगुत्तखमासमणा खमा समाण निधी आसि ॥ २ ॥

तैसि सीसेण इया कलसमवमइदणामवे जेग । दसकालियस्स चुष्णी पयाण रयणातो उवणत्था ॥ ३ ॥

हयिरपद सधिणियता उट्ठियपुणरुत्तत्रित्थरपसगा । वक्खाणमत्तरेणावि सिस्समत्तिबोधणसमत्था ॥ ४ ॥

ससमय परसमयणयाण ज थ ण समाधित पमादेण । त खमह पसाहेह य इय विण्णत्ती पवयणीण ॥ ५ ॥

॥ दसकालियचुष्णी परिसमत्ता ॥

(१६) दशकालिकसूत्रचूर्णि वृद्धविवरणारया । अन्त —

अञ्जयणाणतर 'कालाओ समाधीए' जीवणकालो जस्स गतो समाहाए ति । जहा तेण एत्तिण्ण चेव आराहगा भवति ति ॥ दशकालिकचूर्णी सम्भत्ता ॥ ग्रन्थाम् ७४०० ॥

(१७) उत्तराध्ययनचूर्णि । अन्त —

वाणिजकुलसमूतो कोडियगणितो य वज्जसाहीतो । गोवालियमहत्तरओ विक्खातो आसि लोगम्भि ॥ १ ॥

ससमय-परसमयविऊ बोयस्सी देहिम सुगर्भारो । सीसगणसपरिवुडो वक्खाणरत्तिपियो जासी ॥ २ ॥

तैसि सीसेण इम उत्तरअयणाण चुष्णिखड तु । रइय अगुगहत्थ सीसाण मदवुद्धीणं ॥ ३ ॥

न एत्थ उस्सुत्त अयाणमाणेण विरतित होजा । त अणुओगघरा मे अणुचितेड समारेंतु ॥ ४ ॥

॥ पट्टिंशोत्तराध्ययनचूर्णी समाप्ता ॥ ग्रन्थाम् प्रत्यक्षरणनया ५८५० ॥

(१८) नन्दीसूत्रचूर्णि । अन्त —

णि रे ण म म च ण ह स दा ङ या (१) पसुपत्तिसखगजट्टिताकुला ।

कमट्टिता धीमर्त्तचितियक्खरा फुड कहेयतऽभिषाण क्तुणो ॥१॥

शरुराओ पञ्चसु वर्षशतपु व्यक्तिका तेपु अष्टनवतेपु नन्द्याभ्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ ग्रन्थाम् १५०० ॥

(१९) अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णि । अन्त —

चरणमेव गुणो चरणगुणो । अहवा चरण चारित्रम्, गुणा खमादिया अणेगविधा तेसु जो जहट्टिमो साधू सो सन्धयसम्भतो भवताति ॥

॥ कृत्ति श्रीश्वेताम्बराचार्यश्रीजिननासगणिमहत्तरपुण्यादानामनुयोगद्वाराणा चूर्णि ॥

१ इष चूर्णि पर टिप्पण रचनेवाळे श्रीभीचद्रश्रीजी प्रस्तुतचूर्णिका वृद्धचूर्णिके नामसे उल्लेख करते हैं ।

## (२०) पाक्षिकसूत्रचूर्णि । अन्तः—

अनुष्टुप्भेदेन छंदसां ग्रंथाप्रं चत्वारि शतानि ४०० ॥ पाक्षिकप्रतिक्रमणचूर्णी समाप्तेति ॥ शुभं भवतु सकल संघस्य । मंगलं महाश्रीः ॥

१. उपर जिन बीस चूर्णियोंके आदि-अन्तादि अंशोंके उल्लेख दिये हैं। इनके अवलोकनसे प्रतीत होता है कि—प्रज्ञापना-सूत्रके बारहवें शरीरपदकी चूर्णि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण कृत है। आज इसकी कोई स्वतन्त्र हस्तप्रति ज्ञानभंडारोंमें उपलब्ध नहीं है, किन्तु श्रीजिनदासगणि महत्तर और आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने क्रमशः अपनी अनुयोगद्वारसूत्र उपरकी चूर्णि और लघुवृत्तिमें इस चूर्णिको समग्र भावसे उद्धृत कर दी है, इससे इसका पता चरता है। श्रीजिनभद्रगणि क्षमा-श्रमणने प्रज्ञापनासूत्र उपर सम्पूर्ण चूर्णी की हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। इसका कारण यह है कि—प्राचीन जैन ज्ञानभंडारोंमें प्रज्ञापनासूत्रचूर्णीकी कोई हाथपोथी प्राप्त नहीं है। दूसरा यह भी कारण है कि—आचार्य श्रीमलयगिरिने अपनी प्रज्ञापनावृत्तिमें सिर्फ शरीरपदकी वृत्तिके सिवा और कहीं भी चूर्णीपाठका उल्लेख नहीं किया है। अतः ज्ञात होता है कि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणने सिर्फ प्रज्ञापनासूत्रके बारहवें शरीरपद पद पर ही चूर्णी की होगी। आचार्य मलयगिरिने अपनी वृत्तिमें इस चूर्णीका छ स्थान पर उल्लेख किया है।

२. नन्दीसूत्रचूर्णी, अनुयोगद्वारचूर्णी और निशीथसूत्रचूर्णीके प्रणेता श्रीजिनदासगणि महत्तर है। जो इन चूर्णियोंके अन्तिम उल्लेखसे निर्विवाद रूपसे ज्ञात होता है। निशीथचूर्णिके प्रारम्भमें आपने अपने विद्यागुरुका शुभनाम श्रीप्रद्युम्न क्षमाश्रमण बतलाया है। सम्व है कि आपके दीक्षागुरु भी ये ही हो। इन चूर्णियोंकी रचना जिनभद्र गणि क्षमाश्रमणके बादकी है। इसका कारण यह है कि—नन्दीचूर्णमें चूर्णिकारने केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोग-एकोपयोग-क्रमोपयोगकी चर्चा की है एवं स्थान स्थान पर जिनभद्रगणिके विशेषावश्यक भाष्यकी गाथाओका उल्लेख भी किया है। अनुयोगद्वारचूर्णीमें तो आपने श्रीजिनभद्रगणिकी शरीरपदचूर्णीको साधन्त उद्धृत कर दी है। अतः ये तीनों रचनायें श्रीजिनभद्रगणिके बादकी ही निर्विवाद सिद्ध है।

३. दशवैकालिकचूर्णिके कर्ता श्रीअगस्त्यसिंहगणी है। ये आचार्य कौटिकगगान्तर्गत श्रीवज्रस्वामीकी शाखामें हुए श्रीऋषिगुप्त क्षमाश्रमणके शिष्य है। इन दोनों गुरु-शिष्योंके नाम शाखान्तरवर्ति होनेके कारण पद्यावलीयोंमें पाये नहीं जाते हैं। कल्पसूत्रकी पद्यावलीमें जो श्रीऋषिगुप्तका नाम है वे स्थविर आर्यसुहस्तिके शिष्य होनेके कारण एवं खुद वज्रस्वामीसे भी पूर्ववर्ती होनेसे श्रीअगस्त्यसिंहगणिके गुरु ऋषिगुप्तसे भिन्न है। कल्पसूत्रकी स्थविरावलीका उल्लेख इस प्रकार है—

धेरस्स ण अज्जसुहत्थिस्स वासिद्धसगुत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था । तं जहा—

धेरं य अज्जरोहण १ जसभदे २ मेहगणी ३ य कामिह्दी ४ ।

सुट्ठियं ५ सुप्पडिवुद्धे ६ रक्खिखय ७ तह रोहगुत्ते ८ य ॥ १ ॥

इसिगुत्ते ९ सिरिगुत्ते १० गणी य बंभे ११ गणी य तह सोमे १२ ।

दस दा य गणहरा खल्ल एए सीसा सुहत्थिस्स ॥ २ ॥

स्थविर आर्यसुहस्ति श्रीवज्रस्वामीसे पूर्ववर्ती होनेसे ये ऋषिगुप्त स्थविर दशकालिकचूर्णप्रणेता श्रीअगस्त्यसिंहके गुरु श्रीऋषिगुप्त क्षमाश्रमणसे जुदा है, यह स्पष्ट है।

आवश्यकचूर्णी, जिसके प्रणेताके नामका कोई पता नहीं है, उसमें तपसयमके वर्णनप्रसंगमें आवश्यकचूर्णिकारने इस प्रकार दशवैकालिकचूर्णीका उल्लेख किया है—

तवो दुविहो—बञ्जो अम्भतरो य । जघा दसवेतालियचुष्णीए चाउलोदणत (१ चालणेदाणत) अल्लेण  
णिज्जरु साधूसु पडिवायणीय ८ । [आवश्यकचूर्णी विभाग २ पत्र ११७]

आवश्यकचूर्णिके इस उद्धरणम दशवैकालिकचूर्णीका नाम नजर आता है । दशवैकालिकसूत्रके उपर दो चूर्णियाँ आज प्राप्त हैं—एक स्थविर अगस्त्यसिंहप्रणीत और दूसरी जो आगमोद्धारक श्रीसागरानदसूरि महाराजने रतलामकी श्री-  
ऋषमदेवजी केसरीमलजी जैन श्वेताम्बर सस्थाकी ओरसे सम्पादित की है, जिसके कर्ताके नामका पता नहीं मीला है और  
जिसके अनेक उद्धरण याकिनीमहत्तरापुत्र आचार्य श्रीहरिमद्रसूरिने अपनी दशवैकालिकसूत्रकी शिष्यहितावृत्तिमें स्थान स्थान  
पर वृद्धविवरणके नामसे दिये हैं । इन दो चूर्णियोंमेंसे आवश्यकचूर्णिकारको कौनसी चूर्ण अमिप्रेत है ? यह एक कठिनसी  
समस्या है । फिर भी आवश्यकचूर्णिके उपर उल्लिखित उद्धरणको गौरसे देखनेसे अपन निर्णयके समीप पहुच सकते हैं । इस  
उद्धरणमें “चाउलोदणत” यह पाठ गलत हो गया है । वास्तवमें “चाउलोदणत”के स्थानमें मूलपाठ “चालणेदाणत” ऐसा  
पाठ होगा । परतु मूलस्थानको विना देखे ऐसे पाठोंके मूल आवश्यकता पता न चलने पर केवल शाब्दिक शुद्धि करके सख्या  
बन्ध पाठोंको विद्वानोंने गलत बनाने के सख्याबन्ध उदाहरण मेरे सामने है । दशवैकालिकसूत्रकी प्राप्त दोनों चूर्णियोंको मैंने  
बराबर देखी है, किंतु “चाउलोदणत”का कोई उल्लेख उनमें नहीं पाया है और इसका कोई सार्थक सम्बन्ध भी नहीं है । दश  
वैकालिकसूत्रकी अगस्त्यसिंहिया चूर्णमें तपके निरूपणकी समाप्तिके बाद “चालणेदाणि” [पत्र १९] ऐसा चूर्णिकारने लिखा  
है, जिसको आवश्यकचूर्णिकारने “चालणेदाणत” वाक्यद्वारा सूचित किया है । इस पाठको बादके विद्वानोंने मूल स्थानस्थित  
पाठको विना देखे गन्त शाब्दिक सुधारा कर बिगाड दिया—ऐसा निश्चितरूपसे प्रतीत होता है । अत मैं इस निर्णय पर आया  
हूँ कि—आवश्यकचूर्णिकारनिर्दिष्ट दशवैकालिकचूर्ण अगस्त्यसिंहिया चूर्ण ही है । और इसी कारण अगस्त्यसिंहिया चूर्ण  
आवश्यकचूर्णिके पूर्वकी रचना है ।

आचार्य श्रीहरिमद्रसूरिने अपनी शिष्यहितावृत्तिमें इस चूर्णिका खास तौरसे निर्देश नहीं किया है । सिर्फ रइवका =  
स० रतिलान्या नामक दशवैकालिकसूत्रकी प्रथम चूलिकाकी व्याख्यामें [पत्र २७३—२] “अ ये तु व्याचक्षते” ऐसा निर्देश करके  
अगस्त्यसिंहिया चूर्णिका मतान्तर दिया है । इसके सिवा कहीं पर भी इस चूर्णिके नामका उल्लेख नहीं किया है ।

इस अगस्त्यसिंहिया चूर्णमें तत्कालवर्ती सख्याबन्ध वाचनांतर—पाठभेद, अर्थभेद एवं सूत्रपाठोंकी कमी-बेशीका काफी  
निर्देश है, जो अतिमहत्वके हैं ।

यहाँ पर ध्यान देने जैसी एक बात यह है कि—दोनों चूर्णिकारोंने अपनी चूर्णोंमें दशवैकालिकसूत्र उपर एक प्राचीन  
चूर्णों या वृत्तिका समान रूपसे उल्लेख रइवकाचूलिका की चूर्णोंमें किया है । जो इस प्रकार है—

“एथ इमातो वृत्तिगतातो पदुदेसमेत्तगाथाओ । जहा—

दुक्स च दुस्समाए जीविउ जे १ लहुमगा पुणो कामा २ ।

सातिबहुला मणुत्सा ३ अचिरट्टाण चिम दुक्स ४ ॥ १ ॥

ओमजणम्मि य स्सिसा ५ वत च पुणो निसेविय भवति ६ ।

अहरोवसपया वि य ७ दुल्लमो षम्भो गिहे गिहिणो ८ ॥ २ ॥

निवयति परिकिळेसा ९ वधो ११ सायज्जजोग गिहिवासो १३ ।

एते तिण्णि वि दोसा न हात्ति अणगारवासम्मि १० १२ १४ ॥ ३ ॥

साधारणा य भोगा १५ पत्तेय पुण्ण पावफलमेव १६ ।

नीयमवि माणत्वाण कुसग्गाजलचचलमणिच्च १७ ॥ ४ ॥

गत्थि य अवेदयित्ता मोक्खो कम्मस्स निच्छओ एसो १८ ।

पदमट्टारसमेतं वीरवयणसासणे भणितं ॥ ५ ॥ ”

### अगस्त्यसिद्दीया चूर्णी

दूसरी मुद्रित चूर्णोंमें [पत्र ३५८] “एत्थ इमाओ वृत्तिगाथाओ । उक्तं च” ऐसा लिखकर उपर दी हुई गाथायें उद्धृत कर दी हैं ।

इन उल्लेखोंसे यह निर्विवाद है कि—दशवैकालिकसूत्र के उपर इन दो चूर्णियोंसे पूर्ववर्ती एक प्राचीन चूर्णी भी थी, जिसका दोनों चूर्णाकारोंने वृत्ति नामसे उल्लेख किया है । इससे यह भी कहा जा सकता है कि—आगमोंके उपर पद्य और गद्यमें व्याख्याग्रन्थ लिखनेकी प्रणालि अधिक पुराणी है । और इससे हिमवतस्थविरावलीमें उल्लिखित निम्न उल्लेख सत्यके समीप पहुंचता है—

“तेषामार्यसिंहानां स्थविराणां मधुमित्रा-SSर्यस्कन्दिलाचार्यनामानौ द्वौ शिष्यावभूताम् । आर्यमधुमित्राणां शिष्या आर्यगन्धहस्तिनोऽतीवविद्वांसः प्रभावकाश्चाभवन् । तैश्च पूर्वधरस्थविरोत्तंसोमास्नातिवाचकरचित-  
तत्त्वार्थोपरि अशीतिसहस्रश्लोकप्रमाणं महाभाष्यं रचितम् । एकादशाङ्गोपरि चाऽऽर्यस्कन्दिलस्थविरा-  
णामुपरोधतस्तैर्विवरणानि रचितानि । यदुक्तं तद्रचिताऽऽचाराङ्गविवरणान्ते यथा—

थेरस्स महुमिच्चस्स सेदेहिं तिपुव्वनाणजुत्तेहिं । मुणियाणविवदिएहिं ववगयरायाइदोसेहि ॥ १ ॥

वंभदीवियसाहामउडेहिं गंधहत्थिविबुहेहिं । विवरणमेय रइय दोसयवासेसु विक्रमओ ॥ २ ॥

आचाराङ्गसूत्रके इस गन्धहस्तिविवरणका उल्लेख आचार्य श्रीशीलाङ्कने अपनी आचाराङ्गवृत्तिके उपोद्घातमें भी किया है । कुछ भी हो, जैन आगमोंके उपर व्याख्या लिखनेकी प्रणाली अधिक प्राचीन है ।

४. उत्तराध्यनसूत्रचूर्णिके प्रणेता कौटिकगणाय, वज्रशाखीय एव वाणिजकुलीय स्थविर गोपालिक महत्तरके शिष्य थे । इस चूर्णिकारने चूर्णमें अपने नामका निर्देश नहीं किया है । इनका निश्चित समयका पता लगाना मुश्किल है । तथापि इस चूर्णमें विशेषावश्यकभाष्यकी स्वोपज्ञ टीकाका सन्दर्भ उल्लिखित होनेके कारण इसकी रचना जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके स्वर्गवासके बादकी है । विशेषावश्यक भाष्यकी स्वोपज्ञ टीका, यह श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकी अन्तिम रचना है । छठे गणधरवाद तक इस टीकाका निर्माण होने पर आपका देहान्त हो जानेके कारण वादके समग्र ग्रंथकी टीकाको श्रीकौटार्यवादी गणी महत्तरने पूर्ण की है ।

५. जीतकल्पवृद्धचूर्णिके प्रणेता श्रीसिद्धसेनगणी है । इस चूर्णिके अन्तमें आपने सिर्फ अपने नामके अतिरिक्त और कोई उल्लेख नहीं किया है । श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत ग्रन्थके उपर यह चूर्ण होनेके कारण इसकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके बादकी स्वयंसिद्ध है । इस चूर्णिको टिप्पणकार श्रीश्रीचन्द्रमूरिने वृद्धचूर्णानामसे दर्शाई है—

नत्वा श्रीमन्महावीरं परोपकृतिहेतवे । जीतकल्पवृद्धचूर्णेन्यास्या काचित् प्रकाशयते ॥ १ ॥

उपरनिदिष्ट सात चूर्णियोंके अतिरिक्त तेरह चूर्णियोंके रचयिताके नामका पता नहीं मिलना है । तथापि इन चूर्णियोंके अवलोकनसे जो हकीकत ध्यानमें आई है इसका यहाँ उल्लेख कर देता हूँ ।

यद्यपि आचाराङ्गचूर्णी और नूत्रकृताङ्गचूर्णिके रचयिताके नामका पता नहीं मिला है तो भी आचाराङ्गचूर्णोंमें चूर्णिकारने पदद्वय स्थान पर नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख किया है, उनमेंसे सात स्थान पर “भद्रंतनागज्जुणिया” इस प्रकार बहुमानदर्शक ‘भदन्त’शब्दका प्रयोग किया है, इससे अनुमान होता है कि ये चूर्णिकार नागार्जुनसन्तानीय कोई स्थविर होने चाहिए । नूत्रकृताङ्गचूर्णोंमें जहां जहां नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख चूर्णिकारने किया है वहां सामान्यतया

नागञ्जुणिया इतना ही लिखा है। अतः ये दोनों चूर्णिकार अलग अलग ज्ञात होते हैं। सूत्रकृताङ्गचूर्णोंमें जिनमद्राणीके विशेषावश्यकभाष्यकी गाथायें एव स्वोपज्ञ टीकाके सन्दर्भ अनेक स्थान पर उद्धृत किये गये हैं, इससे इस चूर्णिकी रचना श्रीजिनमद्राणिके बादकी है, तब आचाराङ्गचूर्णोंमें जिनमद्राणिके कोई प्रथका उल्लेख नहीं है, इस कारण इस चूर्णोंकी रचना श्रीजिनमद्राणिके पूर्वकी होनेका सम्भव अधिक है।

भगवतीसूत्रचूर्णोंमें श्रीजिनमद्राणीके विशेषणवतीग्रन्थकी गाथाओंके उद्धरण होनेसे, और कल्पचूर्णोंमें साक्षात् विसेसावस्सगमासका नाम उल्लिखित होनेसे इन दोनों चूर्णियोंकी रचना निश्चित रूपसे श्रीजिनमद्राणिके बादकी है।

दशासूत्रचूर्णोंमें केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोगादिवादका निर्देश होनेसे यह चूर्णों भी श्रीजिनमद्राणिके बादकी है।

आवश्यकचूर्णिके प्रणताका नाम चूर्णोंकी कोई प्रतिमें प्राप्त नहीं है। श्रीसागरानदसूरि महाराजने अपने सम्पादनमें इसको जिनदासगणिमहचरकृत बतलाई है। प्रतीत होता है कि—आपका यह निर्देश श्रीधर्मसागरोपाध्यायकृत तपागच्छीय पद्यावलीके उल्लेखको देख कर है, किन्तु वास्तवमें यह सत्य नहीं है। अगर इसके प्रणेता जिनदासगणि होते तो आप इस प्रासादभूत महती चूर्णोंमें जिनमद्राणिके नामका या विशेषावश्यकभाष्यकी गाथाओंका जरूर उल्लेख करते। मुझे तो यही प्रतीत होता है कि—इस चूर्णोंकी रचना जिनमद्राणिके पूर्वकी और नन्दीसूत्ररचनाके बादकी है।

दशवैकालिकचूर्णों (बृद्धविवरण)में और व्यवहारचूर्णोंमें श्रीजिनमद्राणिकी कोई कृतिका उद्धरण नहीं है, अतः ये चूर्णों भी जिनमद्राणि क्षमाभ्रमणके पूर्वकी होनी चाहिए।

जम्बूद्वीपकरणचूर्णों, यह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिकी चूर्णों मानी जाती है किन्तु वास्तवमें यह जम्बूद्वीपके परिधि त्रीवा धनु पृष्ठ आदि आठ प्रकारके गणितको स्पष्ट करनेवाले किसी प्रकारकी चूर्णों है। वर्तमान इस चूर्णोंमें मूल प्रकरणकी गाथाओंके प्रतिक मात्र चूर्णोंकारने दिये हैं, अतः कुछ गाथाओंका पता जिनमद्राणिके बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरणसे लगा है, किन्तु कितनीक गाथाओंका पता नहीं चला है। इस चूर्णोंमें जिनमद्राणिके बृहत्क्षेत्रसमासकी गाथायें भी उद्धृत नजर आती हैं, अतः यह चूर्णों उनके बादकी है।

यहां पर चूर्णियोंके विविध उल्लेखोंको लक्ष्यमें रख कर चूर्णोंकारके विषयमें जो कुछ निवेदन करनेका था, वह करनेके बाद अतमें यह लिखना प्राप्त है कि—प्राकृत्यमान इस नन्दीसूत्रचूर्णोंके प्रणेता श्रीजिनदासगणि महत्तर हैं, जिसका रचनासमय स्पष्टतया प्राप्त नहीं है, फिर भी आज नन्दीसूत्रचूर्णोंकी जो प्रतियाँ प्राप्त हैं उनके अन्तमें सवतका उल्लेख नजर आता है, जो चूर्णोंरचनाका सवत् होनेकी संभावना अधिक है। यह उल्लेख इस प्रकार है—

शकरं च पञ्चसु वर्षशतेषु यत्किंशतेषु अष्टनवतेषु नन्वध्ययनचूर्णों समाप्ता इति ।

अर्थात् शके ५९८ (वि स ७३३) वर्षमें नन्वध्ययनचूर्णों समाप्त हुईं। इस उल्लेखको कितनेक विद्वान् प्रतिका लेखनसमय मानते हैं, किन्तु यह उल्लेख नन्वध्ययनचूर्णोंकी समाप्तिका अर्थात् रचनासमाप्तिका ही निर्देश करता है, लेखनकालका नहीं। अगर प्रतिका लेखनकाल होता तो 'समाप्ता' ऐसा न लिख कर 'लिखिता' ऐसा ही लिखा होता। इस प्रकार गद्यसन्दर्भमें रचनासवत् लिखनेकी प्रथा प्राचीन युगमें थी ही, जिसका उदाहरण आचार्य श्रीशीलाङ्गकी आचाराङ्गवृत्तिमें प्राप्त है।

१ श्रीश्रीराट् १ ५५ वि० ५८५ वर्षे याकिनीसुत्तु श्रीहरिभद्रसूरि स्वगमाङ्क । निशीथ-बृहत्कल्पमाध्याऽऽवश्यकवि-  
चूर्णकाराः श्रीजिनदासमहत्तरादयः पूर्वगतसुतधरश्रीप्रमुग्गक्षमणादिशिष्यत्वेन श्रीहरिभद्रसूरित प्राचीना एव यथा  
कालमादिनो बोध्याः । १११५ श्रीजिनमद्राणियुगप्रधान । अथ च जिनमद्राणियुगप्रकाराद् भिन्नं सम्भाव्यते । इति  
दृष्टीन्वेरी पु ११ पृ २५३ ॥

## सूत्र और चूर्णकी भाषा

नन्दीसूत्र और इसकी चूर्णकी भाषाका स्वरूप क्या है? इस विषयमें अभी यहाँ पर अधिक कुछ मैं नहीं लिखता हूँ। सामान्यतया व्यापकरूपसे मेरेको इस विषयमें जो कुछ कहना था, यह मैंने अखिलभारतीयप्राच्यविद्यापरिषत्-श्रीनगरके लिये तैयार किये हुए मेरे “जैन आगमधर और प्राकृत वाङ्मय” नामक निबन्धमें कह दिया है, जो ‘श्रीहजारीमल स्मृतिग्रन्थ’में प्रसिद्ध किया गया है, उसको देखनेकी विद्वानोको सूचना है।

## परिशिष्टादि

चूर्णिके अन्तमें पांच परिशिष्ट और शुद्धिपत्र दिये गये हैं। पहले परिशिष्टमें मूल नन्दीसूत्रमें जो गाथाये है उनको अकारादिक्रममें दी गई है। दूसरे परिशिष्टमें नन्दीचूर्णमें चूर्णिकारने उद्धृत किये उद्धरणोंको अकारादिक्रमसे दिये हैं। तीसरा परिशिष्ट चूर्णिगत पाठान्तर और मतान्तरोंका है। चौथे परिशिष्टमें नन्दीसूत्र और चूर्णमें आनेवाले ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थविर, नृप, श्रेष्ठी, नगर, पर्वत आदि विशेषनामोंका अनुक्रम है। पाँचवे परिशिष्टमें सूत्र और चूर्णमें आनेवाले विषयद्योतक एवं व्युत्पत्ति-द्योतक शब्दोंका अनुक्रम दिया गया है। इन परिशिष्टोंके बादमें शुद्धिपत्रक दिया गया है। वाचक और अध्येता विद्वानोसे नम्र निवेदन है कि इस ग्रन्थको शुद्धिपत्रके अनुसार शुद्ध करके पढ़ें।

## संशोधन और सम्पादन

इस ग्रन्थके संशोधनमें अनेक महानुभाव विद्वान् व्यक्तियोंका परिश्रम है। खास तोरसे पं. भाई अमृतलाल मोहनलाल भोजकका इस सम्पादनमें महत्त्वका साहाय्य है। जिसने चूर्ण और मूल सूत्रकी प्रामाणिक प्राण्डुलिपि (प्रेसकॉपी) तैयार की है, साधन्त प्रुफपत्र देखे हैं और इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट भी किये हैं। भाई श्री दलसुखभाई मालवणिया—मुख्यनियामक ला. द. भारतीय सस्कृतिविद्यामंदिर—अहमदाबाद तथा पंडित बेचरदासभाई दोसीने मुद्रणके बादमें साधन्त देखकर अशुद्धियोंका परिमार्जन किया है, जिसके फलस्वरूप शुद्धिपत्र दिया है। भाई श्रीदलसुख मालवणिया का आगमोंके संशोधनमें शाश्वत साहाय्य प्राप्त है, यह परम सौभाग्यकी बात है।

बसंत प्रिन्टींग प्रेसके संचालक श्री जयति दलाल और मेनेजर श्री शान्तिलाल गाह प्रमुख प्रेसके सर्व भाईओका प्रस्तुत मुद्रणकार्यमें आंतरिक सहयोग भी हमारे लिए चिरस्मरणीय है।

चूर्णिमहित नन्दीसूत्रके संशोधनमें मात्र ग्रन्थकी प्रतियोंका ही आधार रखा गया है, ऐसा नहीं है, किन्तु मूलसूत्र एवं चूर्णिके उद्धरण प्राचीन व्याख्याग्रन्थोंमें जहाँ जहाँ भी देखनेमें आये उनसे भी तुलना की गई है। इस प्रकार प्राचीन प्रतियाँ, प्राचीन उद्धरणोंके साथ तुलना एवं अनेक विद्वानोंके बौद्धिक परिश्रमके द्वारा इस नन्दीसूत्र एवं चूर्णिका संशोधन और सम्पादन किया गया है। मैं तो सिर्फ इस संशोधन एवं सम्पादनमें साक्षीभूत ही रहा हूँ। अतः इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण संशोधन एवं सम्पादन का यश हम सभीको एकसमान है।

अन्तमें गीतार्थ मुनिप्रवर एवं विद्वानोसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि—मेरे इस संशोधनमें जो भी छोटी मोटी भ्रति प्रतीत हो, इसकी मुझे सूचना दी जायगी तो जरूर अतिरिक्त शुद्धिपत्रकी तोरसे उसको आदर दिया जायगा।

स. २०२२ माघ शुक्ल पूर्णिमा  
अहमदाबाद

मुनि पुण्यविजय

# चूर्णियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

सूत्र	विषय	पृष्ठ	सूत्र	विषय	पृष्ठ
	चूर्णिकारका उपक्रम-प्रारम्भ	१	१	प्रत्यक्षज्ञानके इन्द्रियप्रत्यक्ष] मोक्षान्दियप्रत्यक्ष दो भेद	१४
१	गाथा १३ मङ्गलसूत्र-गाथा २-३ महावीरपरमात्माकी स्तुति	१	१०	इन्द्रियप्रत्यक्षके पाँच भेद	१४
२	गाथा ४-१७ सङ्गस्तुतिसूत्र-श्रीधंपदी रथ चक्र, नगर पद्म चन्द्र, सूय समुद्र और मन्दरगिरिके रूपको द्वारा स्तुति	३-६	११	मोक्षप्रत्यक्षके तीन भेद	१५
३	गाथा १८-१९ जिनावलीसूत्र- बोधीस जिनोको नमस्कार	६	१२	अवधिप्रत्यक्षके दो भेद- क्षाबोपशामिक और भवप्रत्यक्षिक	१५
४	गाथा २०-२१ गणधरावलीसूत्र- मगवान् महावीरके ११ गणधरोकी स्तुति	७	१३	क्षाबोपशामिक तथा गुणप्रत्यक्षिक अवधि- ज्ञानका स्वरूप	१५
५	गाथा २२-४२ स्थविरावलीसूत्र- श्रुतस्थविरोंकी स्तुति गा २२ सुषर्मा जम्बूस्वामि प्रभवस्वामि, शम्भुम्भवा गा २३ यशोभद्र सम्भूताय मद्रबाहु स्थूलभद्र गा २४ महागिरि सुहृस्ती बहुल गा २५ स्वाति, दयाप्राय, शण्डिल्य जीवधर गा २६ आचससुद्र गा २७ आयमहु, गा २८ आयनन्दिल गा २९ वाचक आयनागहृस्ती, गा ३० रेतितिनक्षत्र वाचक गा ३१ सिंहवाचक गा ३२ इकादिलावाय गा ३३ हिमवन्त गा ३४-३५ नागजुन वाचक गा ३६-३८ भूतविष्ठावाय गा ३९ लौहित्य ४-४१ दुष्यगणि गा ४२ सामान्यरूपसे सर्व स्थविरोंकी स्तुति	७-१२	१४	अवधिज्ञानके आनुगामिकादि छ भेद	१५
			१५-२१	१ आनुगामिक अवधिज्ञानका स्वरूप उसके अन्तगत और मध्यगत भेद तथा पुरतो आ-तगत मागतो आ-तगत, पाश्चतो अन्त गतादि प्रमेयों का स्वरूप उन में प्रतिविशेष आदिका निरूपण	१६
			२२	२ अनानुगामिक अवधिज्ञान	१७
			२३	३ वधमानक अवधिज्ञान गाथा ४४-४५ अवधिज्ञानका जष-य और उत्कृष्ट अवधि क्षेत्र गा ४६-४९ इव्य क्षेत्र काल भावकी अपेक्षाके अवधिज्ञानकी वृद्धिक स्वरूप गा ५० इव्य क्षेत्र काल-भावका पारस्परिक वृद्धिका स्वरूप गा ५१ क्षेत्र-कालकी सूक्ष्मभाषाका निरूपण	१७-१८
			२४	४ हीयमान अवधिज्ञान	१९
			२५	५ प्रतिपाति अवधिज्ञान	१९
			२६	६ अप्रतिपाति अवधिज्ञान	१९
६	गा ४३ पर्यवसूत्र- श्रुतज्ञानके-क्षात्रके अधिकारि-अनधिकारी क्षिप्पों की परीक्षाके लिये शैलपन कुट चाळनी, परिपूर्णक हस आदिके लाक्षणिक उदाहरण और शरपद् अज्जपद् एव दुर्विद्वज्जपद्	१२	२७	इव्य क्षेत्र काल भाव आक्षी अवधिज्ञानका स्वरूप	१९
७	क्षणिसूत्र- पाँच ज्ञानके नाम मत्यादि पाँच ज्ञानकी व्युत्पत्ति क्रम आदिका निरूपण	१३	२८	गा ५२ अवधिज्ञानका उपसंहार	२
			२९	मन पर्यवज्ञानका अधिकारी	२०
			३०	मन पर्यवज्ञानके ऋजुमति विपुलमति दो भेद	२२
			३१-३२	इव्य क्षेत्र काल भाव आक्षी ऋजुमति विपुलमतिमन-पर्यवज्ञानका स्वरूप और गा ५३ मन पर्यवज्ञानका उपसंहार	२३
८	मत्यादिज्ञानोंका प्रत्यक्ष परोक्ष रूपमें विभाजन	१४		चूर्णियुक्त- अष्ट इचकप्रदेश और उप रिम अचस्तन क्षुद्रकप्रतरका स्वरूप	२४



पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	सूत्र	विषय	पृष्ठ
३३	केवलज्ञानके भवस्थ और सिद्धकेवलज्ञान दो भेद	२५	५२	अपायके भेद और एकार्थिक शब्द	३५
३४-३६	भवस्थकेवलज्ञानके भेद और स्वरूप	२५	५३	धारणाके भेद और एकार्थिक शब्द	३६
३७	सिद्धकेवलज्ञानके अनन्तरसिद्ध परम्परसिद्ध दो भेद	२६	५४-५६	२८ प्रकारके मतिज्ञानका और व्यञ्जनाव-ग्रहका प्रतिबोधक और मल्लक दृष्टान्त द्वारा स्वरूपनिरूपण	३७-३९
३८	अनन्तरसिद्धके तीर्थसिद्ध, अतीर्थसिद्ध आदि पद्रह भेद	२६	५७	द्रव्यक्षेत्र काल भाव आश्री आभिनिबोधिक ज्ञानका स्वरूप	४२
३९	परम्परसिद्धकेवलज्ञान	२७	५८	गा. ७०-७५ आभिनिबोधिक ज्ञानके भेद, अर्थ, कालमान, शब्दश्रवणका स्वरूप, एकार्थिक शब्द और उपसहार	४३
४०	द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री केवलज्ञानका स्वरूप	२८	५९	श्रुतज्ञानके चौदह भेद	४४
	चूर्णिमें-केवलज्ञान-केवलदशनविषयक युग-पदुपयोग-एकूपयोग-क्रमोपयोगवादीकी चर्चा	२८-३०	६०-६३	१ अक्षरश्रुतके सज्ञाक्षर, व्यञ्जनाक्षर और लब्धक्षर, तीन भेद और स्वरूप	४५
४१	गा ५४-५५ केवलज्ञानका उपसहार	३०	६४	२ गा ७६ अनक्षरश्रुत	४५
४२	परोक्षज्ञानके आभिनिबोधिक श्रुतज्ञान दो भेद	३१	६५-६८	३ सञ्ज्ञिश्रुतके कालिक्युपदेश, हेतूपदेश और दृष्टिवादोपदेश तीन प्रकार, स्वरूप और	
४३	आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञानकी सदैव सहभाविता	३१		४ असञ्ज्ञिश्रुत	४५-४७
	चूर्णिमें-मतिज्ञानऔर श्रुतज्ञानका पृथक्करण			चूर्णिमें-ईहा, अपोह, मार्गणा, गवेषणा, चिन्ता, विमर्श इन शब्दोंके अर्थका स्पष्टीकरण	
४४	मतिज्ञान और मतिअज्ञान तथा श्रुतज्ञान और श्रुतअज्ञानका तात्त्विक विवेक	३२	६९	५ सम्यक्श्रुत-द्वादशाह्निके नाम	४८
४५	आभिनिबोधिक ज्ञानके श्रुतनिश्चित अश्रुत-निश्चित दो भेद	३२	७०	६ मिथ्याश्रुत-भारत, रामायण हसी मासु-रुक्ख आदि प्राचीन अनेक जैनतर शास्त्रोंके नाम और सम्यक्श्रुत-मिथ्याश्रुतका तात्त्विक विवेक	४९-५०
४६	अश्रुतनिश्चित आभिनिबोधिकज्ञानके भेद, स्वरूप और उदाहरण	३३	७१-७३	७-८ सादि-अनादि ९-१० सपर्यवसित अपर्यवसित श्रुतज्ञान, और उनका द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री स्वरूप	५१
	गा ५६ अश्रुतनिश्चित आभिनिबोधिकके औत्पत्तिकी आदि चार भेद गा ५७-६० औत्पत्तिकी मत्तिका स्वरूप और उदाहरण गा ६१-६३ वैतथिकी मत्तिका स्वरूप और उदाहरण, गा ६४-६५ कर्मजा मत्तिका स्वरूप और उदाहरण, गा. ६६-६९ पारिणामिक मत्तिका स्वरूप और उदाहरण		७४-७५	पर्यवाप्राक्षरका निरूपण और अतिगाढ-कर्मावृत्त दशमें भी जीवको अक्षरके अनन्तमें भाग जितने ज्ञानका शाश्वतिक सद्भाव	५२
४७	श्रुतनिश्चित मतिज्ञानके अवग्रह, ईहा आदि चार भेद	३४	७६	चूर्णिमें- अक्षरपटलका विस्तृत निरूपण	५३-५६
४८	अवग्रहके अर्थावग्रह व्यञ्जनावग्रह दो भेद	३४	७७	११-१२ गमिक अगमिक श्रुतज्ञान	५६
४९	व्यञ्जनावग्रहके भेद और स्वरूप	३५	७८	१३-१४ अज्ञप्रचिष्ट और अज्ञवाह्यश्रुत	५६
५०	अर्थावग्रहके भेद और एकार्थिक शब्द	३५	७९	अज्ञवाह्यश्रुतके आवश्यक और आवश्यक-व्यतिरिक्त दो प्रकार	५७
५१	ईहाके भेद और एकार्थिक शब्द	३५	८०	आवश्यकश्रुत	५७
				आवश्यकश्रुतके कालिक और उत्कालिक दो प्रकार	५७

सूत्र	विषय	पृष्ठ	सूत्र	विषय	पृष्ठ
८१	उत्कालिकश्रुत के २९ नाम	५७	१०८-१०	अनुयोगदृष्टिवादके मूलप्रथमानुयोग और गडिकाानुयोग दो प्रकार तथा इनका स्वरूप	७६
	चूर्णिमें— २९ उत्कालिकश्रुतके नामोंका व्युत्पत्त्यर्थविवरण			चूर्णिमें—सिद्धगण्डिकाका वर्णन	७७
८२	कालिकश्रुतके २९ नाम	५८	१११	चूलेका दृष्टिवाद	७९
	चूर्णिमें—कालिक श्रुतके नामोंका व्युत्पत्त्यर्थविवरण। टिप्पणीमें नामोंकी कमी-बेशीका निर्देश		११२-१३	दृष्टिवादका परिमाण और विषय	८०
८३	आवश्यकव्यतिरिक्तश्रुतका उपसंहार	६	११४	द्वादशाह्निकी विराधकोंको हानि	८०
८४	अज्ञप्रविष्टश्रुतके १२ नाम	६१	११५	द्वादशाह्निकी आराधकोंको लाभ	८१
८५	१ आचारार्हसूत्रका स्वरूप	६१	११६	द्वादशाह्निकी शाश्वतिकता	८१
८६	२ सूत्रकृतार्हसूत्रका स्वरूप	६२	११७	द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्रीश्रुतज्ञानका स्वरूप	८२
८७	३ स्थानार्हसूत्रका स्वरूप	६३	११८	गा ८१ श्रुतज्ञानके चौदहमेद गा ८२ श्रुतज्ञानका लाभ गा ८३ बुद्धिके आठ गुण गा ८४ सूत्रार्थप्रवणविधि गा ८५ सूत्रव्याख्यानविधि और उपसंहार-नदी सूत्रकी समाप्ति	८२
८८	४ समवायार्हसूत्रका स्वरूप	६४		प्रथम परिशिष्ट- नदीसूत्रगत गणार्थोंका अकारादिक्रम	८५
८९	५ विवाहप्रज्ञप्तिअज्ञसूत्रका स्वरूप	६५		द्वितीय परिशिष्ट- नन्दीचूर्णगत उदरार्थोंका अकारादिक्रम	८७
९०	६ ज्ञाताभक्त्याज्ञसूत्रका स्वरूप	६५		तृतीय परिशिष्ट- नन्दीचूर्णगत पाठान्तर और मतान्तरोंका निर्देश	८८
९१	७ उपासकदशाज्ञसूत्रका स्वरूप	६६		चतुर्थ परिशिष्ट- नन्दीसूत्र और चूर्णगत अथ प्रथकार, इधविर द्यप क्षेत्री नगर आदि के विशेषनामोंका अकारादिक्रम	८९
९२	८ अन्तर्हृद्वाज्ञसूत्रका स्वरूप	६७		पञ्चम परिशिष्ट- नदीसूत्र और चूर्णगत विषयविभाग और व्युत्पत्तिद्वयक शब्दोंका अकारादिक्रम	९६
९३	९ अनुत्तरीपपातिकदशाज्ञसूत्रका स्वरूप	६८			
९४	१० प्रप्रथ्याकरणदशाज्ञसूत्रका स्वरूप	६९			
९५	११ विपाकसूत्रके दुःखविपाक सुखविपाक दो प्रकार उनका वर्णन और स्वरूप	७०			
९६	१२ दृष्टिवाद अंगके पांच मेद	७१			
	१७-१०५ परिकमदृष्टिवादके सात प्रकार और इनके मेद	७१			
१०६	सूत्रदृष्टिवादके २२ प्रकार	७३			
१७	पूर्वगतदृष्टिवाद-चौदह पूर्व	७५			



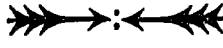
॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महइ-महावीर-वद्धमाणसामिस्स ॥

णमो अणुओगधराणं थेराणं ।

सिरिदेववायगविरइयं

नंदीसुत्तं ।

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरइयाए चुण्णीए संजुयं ।



॥ नमो भगवते वर्द्धमानाय ॥

सव्वसुत्तक्खेधगादीणं मंगलाधिकारे णंदि ति वत्तव्वा । णंदणं णंदी, णंदंति वा अणयेति णंदी, णंदंति वा णंदी, णमोदो हरिसो कंदप्यो इत्यर्थः । तस्स य चतुन्विहो निक्खेवो । गंतासु णाम-द्ववणासु दव्वणंदी जाणगो अणुवउत्तो । अहवा जाणग-भवियसरीरवतिरित्तो बारसविधो तूरसंघातो इमो—

भंमा १ मकुंद २ मइल ३ कडंब ४ झल्लरि ५ हुडुक्क ६ कंसाला ७ ।

काइल ८ तलिमा ९ वंसो १० पणवो ११ संखो १२ य बारसमो ॥१॥

[ ]

भावणंदी णंदिसदोवयुत्तभावो । अहवा इमं पंचविहणाणपरूवणं णंदि ति अज्झयणं, तं च सुत्तंसेण सव्वसुत्त-  
भंन्तरभूतं । तं च सव्वसुत्तारंभेसु विण्योवसमणत्थंभादीए मंगलं पयुज्जति । तस्स य मंगलट्टाणावसरपत्तस्स  
गुरवो विणेयस्स अत्थ-सुत्तगोरवुप्पादणत्थं अविच्छेदसंताणागतसुत्तपपरिसणत्थं च इमं थेरावलिं कहेत्ता ततो से  
अत्थं कंहयंति । सव्वसुत्तथा य जतो तित्थगरप्पभावा, अतो भत्तीए पण्णवग-सावग-पढग-चित्तगा य पढमताए  
णमोक्कारं करेत्ता भणंति—

[ सुत्तं ? ]

जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।

जगणाहो जगबंधू जयइ जगपियामहो भयवं ॥ १ ॥

जयति० गाहा । सोतिंदियादिविसय-कसाय-परीसहोवसेग्ग-चउघातिकम्म-ऽट्टप्पगारं वा परप्पवादिणो य  
जिणमाणो जित्तंसे वा जयति ति भण्णाति । जगं ति-खेत्तंलोगो तम्मि जे जीवा तेसिं जाओ जोणीओ-सच्चित्त-सीत-  
संबुडादियाओ चउरासीतिलक्खविहाणा वा विविहणगारेहिं जाणमाणो वियाणओ । अहवा जो जहा जेहिं कम्महिं  
जाए जोणीए उव्वज्जति तं तहा जाणति ति विसिट्ठो जाणगो वियाणगो । अहवा जगगहणातो धम्मा-ऽधम्मा-  
ऽऽगास-पुग्गलग्गहणं, जीव ति सव्वजीवग्गहणं, जोणि ति-जीवा-ऽजीवुप्पत्तिठणं, जहा य जं उप्पज्जति विग-  
च्छति धुवं वा तं तहा सव्वं जाणइ ति वियाणगो । अनेन वचनेन केवलनाणसामत्थतो सव्वभावे सव्वहा जाणति

१ 'क्खेधतादीणं आ० दा० ॥ २ अणाए त्ति आ० । अणेण त्ति दा० ॥ ३ गयाओ णाम-द्ववणाओ । दव्वं  
आ० दा० ॥ ४ 'भादीय मंगलट्टं पयुं' आ० ॥ ५ 'वल्लिय कहेत्ता आ० दा० ॥ ६ कथयंति आ० दा० ॥ ७ पण्णावगं  
आ० दा० ॥ ८ जिणवसभो सल्लियवसभविक्रमगती महावीरो इत्युत्तरार्धपाठमेदम्बूणो । नाय पाठमेदः कस्मिंश्चिदपि  
सूत्रादशं उपलभ्यते ॥ ९ 'सग्गावघाति' आ० । 'सग्गुवघाति' दा० ॥ १० खेत्तभावो तम्मि आ० दा० ॥

चित् ख्यापित भवति । 'जगगुरु' चि जग ति-सव्वसण्णिलोगो, तस्स भगवानेव गुरु । कथम् ? उच्यते—  
 [ज० १८६ प्र०] गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरु, ब्रवीतीत्यर्थ, तिरिय-मणुयं देवा ऽसुराए परिसाए धम्ममक्खाति ।  
 जो वा ज पुच्छति त सव्व कहयति चि तेण गुरु, अनेन वचनेन परोपकारित्वे प्रदर्शित भवति । जगा-सचा ताण  
 आणदकारी जगाणदो । कह ? उच्यते-सव्वेसिं सचाण अन्वावादणोवदेसकरणत्तातो । जतो भणित-“सव्वे सचा ण  
 5 इतन्वा ण परियावेत्तन्वा ण परिचेत्तन्वा ण अजावेत्तन्व” [आचा० श्रु १ अ ४ उ २ सू ३] चि । विसेसतो सण्णीण  
 धम्मकहणत्तातो आणदकारी, ततो वि विसेसतो भव्वसचाण ति । अनेन वचनेन हितोपदेशकर्तृत्व दर्शित भवति ।  
 जगा-सचा ते अणोहि परिमबिज्जमाणे रक्खइ चि जगणाहो । कह ? उच्यते-मणो वयण-काएहि क्त-कारिता ऽणुमतेहि  
 रक्खतो जगणाहो भवति । अनेन वचनेन सव्वपाणीणं सणाहता दसिता भवति । 'जगवधु' चि जगा-सचा तेसिं  
 वधु जगवधु । कह ? उच्यते-जो अप्पणो परस्स वा आचतीए वि ण परिच्चयति सो वधु, भगव च सुट्ठु वि  
 10 परीसहोवसग्गादिस्सु वाहिज्जमाणो वि सत्तेसु वधुच अपरिच्चयतो ण विरौहेति चि अतो जगवधु, अनेन वचनेन  
 सव्वसचेसु सबधुता दसिता भवति । पितामहो चि जो पितुपिता स पितामहो, सो य भगव चेव । सव्वसचाण  
 पितामहो कह ? उच्यते-सव्वसचाण अहिंसादिलक्खणो धम्मो पिता रक्खणत्तातो, सो य धम्मो भगवता पणीतो  
 अतो भगव धम्मपिता, एव च सव्वसचाण भगव पितामहो चि । अनेन वचनेन धम्म पदुच्च आदिपुरिसत्त ख्यापित  
 भवति । एतीए गाहाए पच्छदस्स पादतर इम-“जिणवसभो सललियवसमविक्रम [जि० १८६ द्वि०] गती महावीरो ।” जिण  
 15 एव वसभो जिणवसभो । वसभो चि सजममारुव्वहणे । चक्रमतो सुमा गायसचालणक्रिया सललित मण्णति ।  
 वाम-दाहिणाण वा पुरिम-पच्छिमचलणाण ज कम्मखेवकरणे स विक्रमो मण्णति, दुपदस्स पुण एगचलणुक्खेवो  
 चेव विक्रमो । सेस कठ ॥ १ ॥ किंच—

जयइ सुयाण पमवो तित्थंयराण अपच्छिमो जयइ ।

जयइ गुरु लोगाण जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

20 जयति सुताण० गाहा । राग-दोसादिअरी जिणतो जित्तंस्सु वा जयति चि । [‘सुताण’] सव्वसुताण ति,  
 सुतण्णंत्यो भगवतातो पमवो । 'पमवो' चि पद्धती । अणिद्वयणपरिहारातो पच्छिमो वि अपच्छिमो मण्णति,  
 अहवा पच्छाणुपुव्वीए अपच्छिमो, रिसमो पच्छिमो । अविस्सिद्धजीवलोगस्स विसिद्धसण्णिजीवलोगस्स वा, अहवा  
 सम्महिट्टिमादिसज्जता-सज्जतलोगस्स गुरु । मह आता जस्स सो य अकम्मवीरियसामत्यतो महात्मा, केवलादि  
 विसिद्धलद्धिसामत्यतो वा महात्मा ॥ २ ॥ किंच—

25 भइ सव्वजगुज्जोयगस्स भइ जिणस्स वीरस्स ।

भइ सुरा ऽसुरणमसियस्स भइ धुरयस्स ॥ ३ ॥

भइ सव्व० गाहा । भायते भाति वा भद्रम्, त भगवतो भवतु चि । सव्वजग ति-ल्लोगो । अद्धविहो वि  
 ल्लोगनिक्खेवो भाणितन्वो [आव० नि० गा० १०५७] । सेस कठ ॥ ३ ॥ इम सयस्स रहूवग—

१ य-सदेयां जे दा ॥ २ प पद्यमफला जे ॥ ३ सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण इतन्वा ण  
 अजावेयन्वा ण परियावेयन्वा ण परिचेत्तन्वा ण उव्वेयन्वा इतिस्स स्यमाचारान्हे ॥ ४ विसंयेइ आ० ॥ ५ महो भवति ।  
 अनेन आ० ॥ ६ श्यगरा सं० ॥ ७ णाणत्थाणं भग आ० ॥ ८ च्छिमो वीरो, रिसमो आ० ॥

## [ सुतं २ ]

भदं सीलपडागूसियस्स तवणियमतुरगजुत्तस्स ।

संघरहस्स भगवओ सज्जायसुणंदिघोसस्स ॥ ४ ॥

भदं सील० गाहा । रहो सामण्यतो पंचमहव्वतमइओ । उस्सितो त्ति तस्सऽट्टारससीलंगसहस्ससिता  
जतपँडागा । वारसविहो तत्रोऽइंदिय-णोइंदियो य णियमो एते अस्सा । सज्जायसदो णंदिघोसो । सेसं कंठं ॥४॥ 5  
संघस्सेव इमं चक्ररूवगं—

संजम-तवतुंबाँ-अयस्स णमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।

अपण्डिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥

संजम० गाहा । विसुद्धभावचक्कस्स उत्तरसविधो संजमो तुवं । तस्स वारसविहत्तवोमता अरगा । पारियल्लं  
ति-जा वाहिरपुट्टयस्स वाहिरव्वमी, सा से सम्मत्तं कत्तं, जम्हा अपणेहिं चरगादिएहिं जेतुं [ जे० १८७ प्र० ] ण 10  
सकति तम्हा एयं जयति, अपण्डिचक्कं च एतं । णमो एरिसस्स [ सघ ] चक्कस्सेति ॥ ५ ॥ इमं संघस्सेव णगररूवगं—

गुणभवणगहण ! सुयस्यणभरिय ! दंसणविसुद्धरच्छागा ! ।

संघणगर ! भदं ते अक्खंडचारित्तपागारा ! ॥ ६ ॥

गुणभवणगहण० गाहा । तम्मि पुरिससंघणगरे इमे गुणा—पिडविसुद्धि-समिति-गुत्ति-दव्वादिअभिग्गह-  
मासादिपडिया-नोयरे य चरगादिया, एमादिउत्तरगुणा तम्मि सघणगरे भवणा कता, भवण त्ति घरा, तेहिं 15  
गहणं ति-निरंतरं संठिता घणा । तं च संघपुरिसणगरं अंगा-उंगंगादिविचिच्चत्तुरयणभरितं । खयोवसमितादि-  
सम्मत्तमइयरच्छाओ य, मिच्छादिक्रियारवज्जित्तणतो विसुद्धाओ । मूलगुणचरित्तं च से पागारो, सो य अक्खंडो  
त्ति-अविराधितो निरंतिचार इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ६ ॥ इमं पि संघस्सेव पुट्टंरूवगं—

कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयस्यणदीहणालस्स ।

पंचमहव्वयथिरक्कणियस्स गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥

सावगजणमहुयैरिपरिवुडस्स जिणसूरतेयबुद्धस्स ।

संघपउमस्स भद समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥ [ जुम्मं ]

कम्मरय० गाहा । कम्म एव रयो कम्मरयो । अइवा जं पुव्ववद्धं तं कम्मं, वज्जमाणं रयो, तं सव्वं पि

१ भदं सील० इति संजमतव० इति गुणभवण० इति च सूत्रगयात्रिक श्रीहरिभद्रस्मृतिवृत्तौ श्रीमलयगिरिपादवृत्तौ च  
पथानुपूर्व्या व्याख्यातमस्ति ॥ २ हरि०वृत्तौ मलय०वृत्तौ च 'सुणेमिघोसस्स' इति पाठमेवो निर्दिष्टाऽस्ति । अंगविज्ञानात्रेऽपि-  
" तस्य मरुत्पत्ते हिरण्येण-दुदुभि-उमभ-गय-सीह-चददूल-भमर-रघणेमिणिग्गोस-भारम-कोक्खि-उद्धोष-कोच-चक्का-हम-कुग्ग-वरिहिण-  
तनीसर-नीत-नाटत-तलतालधेम-उरुद्ध-छेलित्त-मोडित्त-क्किणिमहुग्गोम-नादुम्भावे मग्गपण्य वृथा । " इत्यत्र 'णेमिणिग्गोस' इति पठ वक्तव्यं ॥  
३ 'पडाता आ० ॥ ४ त्व० मो० आदर्शयो' केनापि विदुषा 'वारयस्स' एतान् 'वारस्स' इति सशोचित वनंतं । एतत्पाठानुगार्येण  
मलयगिरिपादव्याख्यानं वक्तव्यं ॥ ५ 'तवो महाअरगा जे० दा० ॥ ६ अक्खंडचारित्तं' सु० ॥ ७ 'च्छाया य आ० दा० ॥  
८ 'कतवरं' आ० दा० ॥ ९ 'णिरइचार आ० ॥ १० पउमं' आ० दा० ॥ ११ 'यरपरिं' दे० ल० ॥

चि ख्यापित भवति । 'जगगुरु' चि जग ति-सव्वसण्णिलोगो, तस्स भगवानेव गुरु । कयम् ? उच्यते—  
 [जि० १८६ प्र०] गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरु, ब्रवीतीत्यर्थ, तिरिय-भणुयं देवा-ऽसुराए परिसाए धम्ममक्खाति ।  
 जो वा ण पुञ्जति त सव्व कहयति चि तेण गुरु, अनेन वचनेन परोपकारित्व मदर्शितं भवति । जगा-सत्ता ताण  
 आणदकारी जगाणदो । कह ? उच्यते-सव्वेसिं सत्ताण अब्बावादणोवदेसकरणत्तातो । जतो भणितं-“सव्वे सत्ताण  
 5 इतव्वा ण परियावेतव्वा ण परिषेत्तव्वा ण अज्जावेतव्व” [आचा० श्रु १ अ ४ उ २ सू ३] चि । विसेसतो सण्णीण  
 धम्मकइणत्तातो आणदकारी, ततो वि विसेसतो मव्वसत्ताण ति । अनेन वचनेन हितोपदेशकर्त्तव्व दर्शित भवति ।  
 जगा-सत्ता ते अण्णेहि परिभविज्जमाणे रक्खइ चि जगणाहो । कह ? उच्यते-मणो-वयण-कार्हि क्त-कारिता ऽणुमतेहि  
 रक्खतो जगणाहो भवति । अनेन वचनेन सव्वपाणीण सणाहता दसिता भवति । 'जगवधु' चि जगा-सत्ता तेसिं  
 वधू जगवधू । कह ? उच्यते-जो अप्पणो परस्स वा आयतीए वि ण परिषयति सो वधू, भगव च सुट्ठु वि  
 10 परीसहोवसभादिस्सु वाहिज्जमाणो वि सत्तेसु वयुच अपरिषयतो ण विरौहेति चि अतो जगवधू, अनेन वचनेन  
 सव्वसत्तेसु सबधुता दसिता भवति । पितामहो चि जो पित्तुपिता स पितामहो, सो य भगव चैव । सव्वसत्ताण  
 पितामहो कह ? उच्यते-सव्वसत्ताण अहिंसादिलक्खणो धम्मो पिता रक्खणत्तातो, सो य धम्मो भावता पणीतो  
 अतो भगव धम्मपिता, एव च सव्वसत्ताण भगव पितामहो चि । अनेन वचनेन धम्म पइच्च आदिपुरिसत्तं ख्यापित  
 भवति । एतीए गाहाए पच्छदस्स पादतर इम-“जिणवसभो सललियवसभविक्रम [जि० १८६ द्वि०] गती महावीरो ।” जिण  
 15 एव वसभो जिणवसभो । वसभो चि सजममारुवइणे । चक्रमतो सुभा गायसत्तालणक्रिया सललित भण्णति ।  
 वाम-दाहिणाण वा पुरिम-पच्छिमचलणाण ज कसुक्खेवकरण स विक्रमो भण्णति, दुपदस्स पुण एगचलणुक्खेवो  
 चैव विक्रमो । सेस कठ ॥ १ ॥ किंच—

जयइ सुयाण पभवो तित्यंयराण अपच्छिमो जयइ ।

जयइ गुरु लोगाण जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

20 जयति सुताण० गाहा । राग-दोसादिअरी जिणतो जित्तेशु वा जयति चि । ['सुताण'] सव्वसुताण ति,  
 सुतर्णाणत्थो भगवतातो पभवो । 'पभवो' चि पसती । अण्डुवयणपरिहारातो पच्छिमो वि अपच्छिमो भण्णति,  
 अहवा पच्छणुपुञ्चीए अपच्छिमो, रिसभो पच्छिमो । अविस्सिद्धनीवलोगस्स विसिद्धसण्णिवलोगस्स वा, अहवा  
 सम्मदिट्ठिमादिसजता ऽसजतलोगस्स गुरु । मह आता जस्स सो य अकम्मवीरियसामत्थतो महात्मा, केवल्लादि  
 विसिद्धलदिसामत्थतो वा महात्मा ॥ २ ॥ किंच—

25 भइ सव्वजगुज्जोयगस्स भइ जिणस्स वीरस्स ।

भइ सुरा ऽसुरणमसियस्स भइ धुयस्यस्स ॥ ३ ॥

भइ सव्व० गाहा । भायते भाति वा भद्रम्, त भगवतो भवतु चि । सव्वजग ति-लोगो । अट्टविहो वि  
 लोगनिकखेवो भाणितव्वो [ भाव० नि० गा० १०५७ ] । सेस कठ ॥ ३ ॥ इम सयस्स रहरुवग—

१ य-सव्वेया जे० दा ॥ २ ए पव्वमक्खा जे० ॥ ३ सव्वे पाणा सव्वे मूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण इतव्वा ण  
 मजावेव्वा ण परियावेव्वा ण परिषेत्तव्वा ण उरवेव्वा इतिरुं एयमाच्चाराङ्गे ॥ ४ विसव्वेइ वा ॥ ५ महो भवति ।  
 अनेन वा ॥ ६ त्यगरा सं० ॥ ७ णापत्थार्थं भग वा० ॥ ८ च्छिमो वीरो, रिसभो वा० ॥

सम्मदंसणवरददरूढगाढावगाढंपेढस्स ।

धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलौगस्स ॥ १२ ॥

णियमूसियकणयसिलायलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स ।

णंदणवणमणहरसुरभिसीलगंधुंछुमायस्स ॥ १३ ॥

जीवदयासुंदरकंदरूढरियमुणिवरमंडंइणस्स ।

हेउसयधाउपगलंतंरत्तदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥

संवरजलपगलियउज्जरपविरायमाणहारस्स ।

सावगजणपउरसवंतमोरणचंतकुहरस्स ॥ १५ ॥

विणयमयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ।

विविहंकुलकप्परुक्खगणयभरकुसुमियकुलवणस्स ॥ १६ ॥

णाणवररयणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स ।

वंदामि विणयणओ संघमहामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥" [ छहिं कुलयं ]

सम्मदंसण० गाहा । णियमू० गाहा । जीवदया० गाहा । संवर० गाहा । विणय० गाहा ।

पोणवर० गाहा । संघपव्वतस्स सम्मदंसणं चेव वरं । तं च संक्रादिसल्लरहियत्तणयो ददं ति<sup>१३</sup> रूढं ति—वड्ढितं, कंहं ? विसुज्जमाणत्तणयो । गाढं ति—अतीव, अवगाढं ति—ओगाढं, सद्दहाणत्तणतो जीवादिपदत्थेसु अतीवओगाढं 15 ति वुत्तं भवति । एतं पेढं । धम्मो दुविहो मूलत्तरगुणेसु । सो य दुविहो वि वरो त्ति—पधानो । तत्थुत्तरगुणधम्मो रयणा, तेहिं मंडिता जे मूलगुणा ते चामीकरं ति, तं च सुवणं, तम्मयी मेहला, तथा जुत्तस्स मेहलागस्स ॥ १२ ॥

नियमो त्ति इंदिय-णोइंदिएसु अणेगविधो, सो य णियमो सिलातला तेहिं चेव उस्सितो, असुमज्जवसाण-विरहितत्तणतो कम्मविसुज्जमाणत्तणतो वा उज्जलसुत्त-उत्थाणुसरणत्तणतो यं जळति चित्तं, चित्तिज्ज जेण तं चित्तं, तं चेव कूडं ति चित्तकूडं तस्स । [जे० १८८ प्र०] णंदंति जेण वणयर-जोतिस-भन्न-वेमाणिया विज्जाहर-मणुया य 20 तेण णंदणं, वणं ति—वणसंडं । तं च लता-वल्लि-वित्तोणाणेगोसहिसतेहिं गहणं, पत्त-पल्लव-पुप्फ-फलोव्वेतेहिं मण-

१ 'सणवरवरददरूढ' दे० शु० ल० मु० । 'सणओयरहह' स० ॥ २ 'ढपीढ' स० ॥ ३ 'लायस्स' स० ॥ ४ 'यलज्ज' शु० ॥ ५ 'गंधुद्धमा' सर्वास्त्रपि सूत्रप्रतिषु । 'गधद्धमा' हरि० वृत्तौ ॥ ६ 'मयंदइणस्स' दे० । 'मडदइणस्स' ल० ॥ ७ 'तरयणदित्तो' षो० मु० । 'तरित्थदित्तो' दे० ॥ ८ विणयणयपवरं' मस्रप्र० । चूर्णिक्कत्तम्मत्त सूत्रपाठ कुत्राप्यादयो नोपलभ्यते ॥ ९ विविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमाउलवणस्स' सस्रप्र० । चूर्णिक्कत्तम्मत्त सूत्रपाठ कुत्राप्यादयो नोपलभ्यते ॥

१० सप्तदशगाथानन्तर चूर्णिक्कदादिभिर्गव्याख्यातया गाथायुगलमिदमधिक सर्वास्त्रपि सूत्रप्रतिप्लभ्यते—

गुणरयणुज्जलकडयं सीलसुयघतवमंडिउहेसं । सुयवारसगसिहरं संघमहामंदरं वंदे ॥ १ ॥

नगर रह चक्क पउमे चंदे सरे समुद् मेरुम्मि । जो उवमिज्जइ सयय तं संघ गुणायरं वदे ॥ २ ॥

अत्रार्थे जेस्स आदयो इय टिप्पणी वत्तने—'गुणेत्यादि गाथा २ वृत्तावव्याख्यातम्' ॥

११ णाणावरण० गाहा जे० दा० । अशुदोऽय पाठमेदः ॥ १२ 'दंसणं से वरं जे० ॥ १३ 'त्ति चिरवड्ढितं आ० ॥

१४ य उज्जलं-दित्तं चित्तिज्ज तेण दित्तं, तं चेव आ० । अनङ्गतोऽशुद्धथाय पाठः ॥ १५ 'विताणणेगसंठाणसंठि-तेहिं गहणं जे० दा० ॥ १६ 'लोच्चतेहिं आ० ॥

हारित्तणतो मणहर, गथतो सुरभिगथ । सीलवणसढे वि जम्हा साधवो गदति भमोवति रमतीत्यर्थं । विविहलद्धि-  
विसेसतो य मणहर सीलवण, विमुद्धभावत्तणतो य सुगध, जहा दच्चवणसढे गधेण उद्धुमात्त ति-च्यात्त तहा  
सीलगधेण सघस्स गधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥ किंच—

ज पव्वतासण्ण सिलाक्खवणहण त कदर ति । भावे जीवेसु दयाकरणसुदर जं त कदर ति । तत्थ य  
5 उं-प्यावळे, दरितो ति-दप्पितो, जीवदयाकरणदप्पितो ति बुत्त भवति । को य सो ? मृणिगणो । सो चेव मृणिगणो  
मद्दो परप्पवादितासणसयभयाण इदो । कह ? सितवादउँत्तमभावत्तणतो । हेत्तु ति-पक्खधम्मो कारण वा, ते  
सतमासो सुत्ते समवति । ते य हेतवो धातू, ते य पगलति परवणगुहाए । सा य परवणगुहा णाणादिर-  
त्तणादिपहिं दित्ता, खेलोसहिमादिओसहीहिं वा दित्ता ॥ १४ ॥

एव दित्तोसहिगुहस्स सघस्स सवरो ति-पक्खत्ताण, त चेव सलिल, किंचि पव्वतग्गातो ओसरित उज्जर,  
15 ईहावि खाइगभाघातो खयोवसमिय उज्जर, ततो पळविता स्वतोवसमित्तसंघरदगधारा, स खेव धारा हारो, तेण  
विरायते-सोमति ति । सावगजणो पउरो ति-वेहू प्रचुर. सो य गीतदणीए रवति ति-रडती, ते चेव मोरा  
णाडगादीहि य णत्तति । ज पव्वतस्स अंदे समप्पदेस ख्खवाकुल [जे० १८८ द्वि०] च त कुहर । एव सघपव्वतस्स  
पहवणभडवादी कुहर ति ॥ १५ ॥

विणयकरणत्तातो विणयेमतो मृणी । सो य विणयकरणत्तेण फुरते, त चेव फुरित विज्जुत्त ति-चक्रोरित,  
20 त च उज्जल ति-निम्मल, तेण उज्जलत्तेण सघसिहर जलितमिध लविसज्जति । सघसिहर च पावयणिपुरिसा  
दद्वन्वा । तत्थ य विविहकुलुप्पणा साहवो कप्पक्खत्ता, खीरासवादिलद्धिफळेहि ये णयमरा, लद्धिहेत्तुद्धिता साहवो  
कुसुमिती कुन्वग ति दद्वन्वा ॥ १६ ॥

मति-सुतादिनाणा वर ति-पहाणा, ते चेव णाणावेकलियादिरत्तणा इव कता, कता इति-कतिजुत्ता ।  
कतिजुत्तत्तणतो चेव सविसतेण जीवादिपदत्थसरूवोवलमतो दिप्पति । नाणस्स य मलो णाणावरण, तच्चिगमातो  
20 य विगतमल । चूलामणिरिव सिहरोवरि चूला, सा य णाणातिसयगुणेहिं जुत्ता, जुगप्पहाणो पुरिसो चूला इति ।  
एव सघपव्वतस्स पेढादिचूलपज्जत्तसाणकप्पियस्स वदामि विणयपणतो ति छह वि गाहाण एत्त क्रियापद ति ॥ १७ ॥

एव चरमात्तियगरस्स सघस्स ये पणामे कते इमा अवसंरप्पत्ता आवली भण्णति—सा ति विहा तित्यकर १  
गणहर २ थेरावली ३ य । तत्थ तिथगरावलिदसणत्थ इम भण्णति—

[ सुत्त ३ ]

वंदे उसभ अजिअ समवमभिणदण सुमति सुप्पम सुपास ।  
ससि पुप्फदत्त सीयल सिज्जस वासुपुज्ज च ॥ १८ ॥

१ स्स किया । ज आ० ॥ २ उद- प्रावत्ये इत्यर्थं ॥ ३ उत्तिम आ० ॥ ४ इघावि आ ॥ ५ वहु  
आ० ॥ ६ गीतसुणीय आ० ॥ ७ अहे आ० ॥ ८ पहाणं आ ॥ ९ यणत्तो आ० दा० ॥ १० य फलभरा आ०  
दा० ॥ ११ ता गुणधण ति आ० ॥ १२ कताविज्जुत्त आ० ॥ १३ सो य णाणातिसयत्थसरूवोवलमगुणोद्धुया  
जुगप्पहाणा पुरिसा चूला आ० ॥ १५ सरापण्णा आ आ० ॥ १६ सेज्जसं सं सु० । सेयंसं ख० ॥



विमलमणंतंइ धम्मं संति कुंथुं अरं च मल्लि च ।

मुणिसुव्वय णमि णेमि पासं तह वद्धमाणं च ॥ १९ ॥ [ जुम्मं ]

वंदे उस्समं गाहा । [विमलं गाहा य] कंठा ॥१८॥१९॥ चरमत्तिथगरस्स इमा गणहरावली—

[ सुत्तं ४ ]

पढमेत्थ इंदभूती वितिण पुण होति अग्गिभूति ति ।

ततिण य वाउभूती तंतो वित्ते सुहम्मे य ॥ २० ॥

मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिते चैव अयलभाता य ।

मेतज्जे य पभासे य गणहरा होंति वीरस्स ॥ २१ ॥ [ जुम्मं ]

एत्थ गणहरावली ॥२०॥२१॥ तो सुधम्मातो थेरावली पक्कत्ता, जतो [जे० १८९ प्र०] भण्णाति—

[ सुत्तं ५ ]

सुहम्मं अग्गिवेसाणं जंबूणांमं च कासवं ।

पभवं कच्चायणं वंदे वच्छं सेज्जंभवं तहा ॥ २२ ॥

सुहम्मं अग्गिवेसाणं० सिलो गो । समणस्स णं० महावीरस्स कासवगोत्तस्स सुधम्मे अंतेवासी अग्गिवेसायण-

सगोत्ते । सुहम्मस्स अंतेवासी जंबुणामे कासवे गोत्तेणं । जंबुणामस्स अंतेवासी पभवे कच्चायणसगोत्ते । पभवस्स अंतेवासी सेज्जंभवे वच्छसगोत्ते ॥ २२ ॥

जसभदं तुंगियं वंदे संभूयं चैव माढरं ।

भद्वबाहुं च पाइण्णं थूलभदं च गोयमं ॥ २३ ॥

जसभदं० गाहा । सेज्जंभवस्स अंतेवासी जसभदे तुंगियायणे कग्घावच्चसगोत्ते । जसभदस्स अंतेवासी इमे दो

थेरा— भद्वबाहुं पांथीणगिसगोत्ते, समूतविजण य माढरसगोत्ते । समूतविजयस्स अंतेवासी थूलभदे गोतमसगोत्ते ॥२३॥

एलावच्चसगोत्तं<sup>११</sup> वंदामि महागिरिं सुहत्थि च ।

ततो कांसवगोत्तं बहुलस्स सरिव्वयं वंदे ॥ २४ ॥

१ 'मणंतय डे० ल० मु० ॥ २ णेमि खं० जे० मु० ॥ ३ इद गाथायुगल चूर्णिक्कता चूर्णौ स्वयमेवेत्थमुल्लिखितमस्ति ।

पढमेत्थ इंदभूई वीप पुण होइ अग्गिभूइ ति । तइए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥ मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिप चैव अयलभाया य । मेयज्जे य स० डे० शु० मो० ॥ ४ वायभूई डे० ल० ॥ ५ तहा मो० ॥

६ एकाविंशति-द्वाविंशतिगाथयोरन्तराले चूर्णिक्कताऽव्याख्याताऽपि श्रीहरिभद्रसूरि-श्रीमलयगिरिपादाभ्यां स्वस्ववृत्तौ व्याख्याता जिनशासनस्तुतिरूपा इयमेका गाथाऽधिका सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु वर्तते—

णेव्वुइपहसासनयं जयइ सया सव्वभावदेसणयं । कुसमयमयणासनयं जिणिदवरवीरसासनयं ॥

जयति शु० । जयउ डे० ल० । जिणंदं ल० ॥

७ जंबुणामं स० ॥ ८ सिज्जंभवं ल० मो० ॥ ९ पायन्नं डे० ल० ॥ १० वाईणतिसगोत्ते आ० ॥ ११ 'वच्छसं

स० डे० ल० । 'वत्ससं' शु० ॥ १२ 'गुत्तं' शु० ल० ॥ १३ कोसियगोत्तं ससुप्र० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिपादाभ्यामेतत्पाठानु-  
नारेणव व्याख्यातमस्ति । चूर्णिक्कत्सम्मतः सूत्रपाठो नोपलभ्यते कुत्राप्यादर्शे ॥

एलावच० गाहा । धूलमदस्स अंतेवासी इमे दो थेरा-महागिरी एलावचसगोचे, सुहत्थी य वासिदुसगोत्ते । सुहत्थिस्स सुद्धित सुपद्धिबुद्धादयो आवलीते जहा दसासु [अ० ८ सूत्र २१०] तथा भाषितव्वा, इह तेहिं अहिगारो णत्थि, महागिरिस्स आवलीए अधिकारो । महागिरिस्स अतेवासी बहुलो बलिस्सहो य दो जमलभातरो कासवस गोचा । तस्य बलिस्सहो पावयणी जातो, तस्स धुतिकरणे भणति-"बहुलस्स सरिन्वय वदे" । 'सरिन्वय' ति सरिसवयो, वयो य जम्मकाल पडुच्च जा जा सरीरपरिविद्धिदभवत्था सा सा वतो भणति ॥ २४ ॥

हारियंगोत्त साइ च वदिमो हारिय च सामज्जं ।

वदे कोसियगोत्त सडिल्ल अज्जजीयेधर ॥ २५ ॥

हारिय० गाहा । बलिस्सहस्स अतेवासी साती हारियसगोत्तो । सातिस्स अतेवासी सामज्जो हारितसगोत्तो चेव । सामज्जस्स अतेवासी सडिल्लो कोसियसगोत्तो, सो य अज्जजीतधरो चि अज्ज ति-आर्ये आद्य वा जीत ति-सुत्तं धरति, सुत्तत्थस्स अविच्चुत्तिधरणचातो, वदे चि वक्कसेस । पाठंतर वा "जीवधर" ति, आर्यत्वात् जीव धरेति-रक्षती 10 त्थर्य । अण्णे पुण भणति-सडिल्लस्स अतेवासी जीवधरो अणगारो, सो य अज्जसगोत्तो ॥२५॥ सडिल्लस्स सीसो-

तिसमुद्धसायकिंति दीव समुद्धेसु गहियपेयाल ।

वदे अज्जसमुद्ध अक्खुमियसमुद्धगभीर ॥ २६ ॥

तिसमुद्ध० गाहा । पुब्बदक्खिणा उपरा ततो समुद्धा, उत्तरतो वेतद्धो, एततरे खातकिवी । सेस कटं ॥२६॥ तस्स सीसो [वि० १८९ दि०] इमो-

भणग करग झरग पभावग णाण दसणगुणाण ।

वदामि अज्जमगु सुयसागरपाग धीर ॥ २७ ॥

भणग० गाथा । कालियपुब्बसुत्तथ भणतीति भणको । चरण करणक्रिया करोतीति कारक० । सुत्तत्थे य मणसा ज्ञायतो ज्जरको । परम्पादिजयेण पत्रयणप्पमानको । नाणदसण-चरणगुणाण च पभावको आधारो य । सेस कठ ॥२७॥ तस्स सीसो-

णाणम्मि दसणम्मि य तव विणए णिच्चकालमुज्जुत्त ।

अज्जौणदिल्लवमण सिरसा वदे पसणमण ॥ २८ ॥

१ अत्र चूर्णिकृता हरिमद्रपादैश्च सुहस्ती भगवान् इत्याद्युतस्त्वन्वाद्यमाप्ययनस्यविरावस्यामिव वासिष्ठगोत्रीयं स्थापितं द्विष मलयगिरिसरिन्वराणैश्च सुगणायानुलोम्याद् देलापस्यसगोत्रीयं स्थापितं तदत्र तज्ज्ञ एव प्रमाणम् ॥ २ कोसियगोत्ता दा० ॥ ३ मणिय आ ॥ ४ यगुत्त साय च दे झु० ल ॥ ५ जीवधर इति चूर्णौ पाठान्तरम् ॥ ६ वेरां शाण्डिल्या धारणां आपजीतधर आयसमुद्धाख्यौ द्वौ दिव्यावभूताम् । आर्यसमुद्धस्याऽऽर्यमङ्गनामान् प्रभावकां शिष्या जाता इति दिमय-तस्सधिरावह्याम् पत्र ९ ॥ ७ खाइकिंति ल ॥ ८ परथतरे वा० ॥ ९ अज्जमगू ल० ॥ १० अद्यावित्तितम गायान्तरं २५ प्रति विहाय सर्वांसु सूत्रप्रतिषु गाथायुगलमिदमधिकमुपलभ्यते-

यद्वामि अज्जधम्म धदे ततो य महगुत्त थ । ततो य अज्जवहर तव नियमगुणेहिं धयरसमं ॥

यद्वामि अज्जदक्खियसमणे रक्किपचरिच्चसव्यस्से । रयणकरंङ्गभूओ अणुभोगो रक्खिओ जेहिं ॥

एतद्गाथायुगलमित्ये चेह् प्रानिय टिप्पणी- यद्वामि अज्जधम्म० एतदपि गाथाद्वयं न धुत्तौ विवृतम् आवाधिकान्तर-सम्बन्धनादिति सम्मान्यते । ११ अज्ञानदिल्ल थ ॥

गाणम्मि दं० गाहा । कंठा ॥२८॥ तस्स सीसो—

वड्ढु वायगवंसो जसवंसो अज्जणागहत्थीणं ।

वागरण-करण-भंगी-कम्मप्पयडीपहाणाणं ॥ २९ ॥

वड्ढु० गाहा । 'वड्ढु' चि वृद्धिं यातु । को य सो ? 'वायगवंसो' वायेति सिस्साणं कालिय-पुत्रसुत्तं ति वातगा-आचार्या इत्यर्थः, गुरुसंनिहाणे वा सिस्सभावेण वाइतं सुत्तं जेहिं ते वायगा, वंसो चि-पुरिसव्व-परंपरेण ठितो वंसो भण्णाति । सो चैव जसोवज्जणतो संजमोवज्जणतो वा जसवंसो भण्णाति, सो य अणागतवंसो इत्यर्थः । कस्स सो एरिसो वंसो ? भण्णाति, अज्जणागहत्थीणं ति । केरिसाणं ? ति पुच्छा, भण्णाति-जीवादिपदत्य-पुच्छासु वाकरणे सहाहुडे वा पहाणाणं, एवं चरणकरणे कालकरणेसु वा सव्वभंगविकप्पणासु य तप्परुवणे य तहा कम्मप्पगडिपरुवणाए पहाणाणं पुरिसाणं वड्ढु वायगवंसो ॥२९॥ तस्स सीसो—

जच्चंजणधाउसमप्पहाण मुद्दीय-कुवल्लयनिहाणं ।

वड्ढु वायगवंसो रेवईणक्खत्तणामाणं ॥ ३० ॥

जच्चंजण० गाहा । जच्चंजणमाहणं कित्तिमबुदासत्थं, सरीरवणेण तन्निभो । तहा सरस-पक्कमुदियफलसणिभो य । कुञ्चित्तो उवल्लो कुवल्लो, सो य कण्हकायो, कुवल्लं वा-णीलुप्पलं, कुवल्लं वा-रणविसेसो । रेवतिवायो चि । सेसं कंठं ॥३०॥ तस्स सीसो—

अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।

बंभदीवग सीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥ ३१ ॥

अयलपुरा० गाहा । बंभदीवगसाहीणं आयरियाणं समीवे निक्खंतो सीहवायको, उत्तमवायकत्तणं च त्कालसुत्तसंभवं पडुच्च । सेसं कंठं ॥ ३१ ॥ तस्स सीसो—

जेसि इमो अणुओगो पयइ अज्जावि अड्ढमरहम्मि ।

बहुनगरनिग्गयजसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥ ३२ ॥

जेसि इमो० गाहा । कइं पुण तेसिं अणुओगो ? उच्यते-वारससंवच्छरिए महंते दुब्भिक्खकाले भत्तहा अण्णाणतो फिडिताणं गहण-गुणणा-उणुप्पेहाभावातो सुत्तं विप्पण्ठे पुणो सुभिक्खकाले जाते मधुराए महंते साहु-समुदए खंदिलायरियप्पमुहसंधेण 'जो जं संभरति' चि एवं संघडितं [जे० १९० प्र०] कालियसुत्तं । जम्हा य एत्तं मधुराए कत्तं तम्हा माधुरा वायणा भण्णाति । सा य खंदिलायरियसम्मय चि कात्तं तस्संतियो अणुओगो भण्णाति । सेसं कंठं । अण्णे भण्णाति जहा-सुत्तं ण णंठं, तम्मि दुब्भिक्खकाले जे अण्णे पहाणा अणुओगपरा ते विण्हा, एगे खंदिलायरिए संधरे, तेण मधुराए अणुओगो पुणो साधूणं पवत्तितो चि माधुरा वायणा भण्णाति, तस्संतियो य अणुओगो भण्णाति ॥ ३२ ॥

१ 'भंगिय-कम्म' स० सो० विना । हरि० वृत्तौ अयमेव पाठ आहतोऽस्ति ॥ २ 'सणिचे वा आ० ॥ ३ 'रेचयण' रे० ल० ॥ ४ कुञ्चित्तथो वल्लो कुवल्लो आ० ॥ ५ जेसि तिमो ल० ॥ ६ अणुओगो दा० ॥  
चु० २

ततो हिमवतमहतविक्रमे धिइपरकमर्महते ।

सज्जायमणतधरे हिमवते वदिमो सिरसा ॥ ३३ ॥

तत्तो हिम० गाहा । हिमवतपव्वतेण महत्तण तुल्ल जस्स सो हिमवतमहतो, इइ मरहे गत्थि अणो तजुल्लो चि, एस थुतिवादो । उत्तरतो वा हिमवतेण सेसदिसासु य समुद्वेण निवारितो जसो, हिमवतनिवारणो जसो महतो चि अतो हिमवतमहतो । महतविक्रमो कह ? उच्यते—सामत्थतो, महते वि कुल-गण-सघप्पयोगे तरति चि, परप्पवादिजण वा विसेसलद्धिसपणत्तणतो वा महतविक्रमो । अहवा परीसहोवसग्गे तवविसेसे वा धितिवलेण परकमतो महतो । अणतगम-पज्जवत्तणतो अणतधरो त, महत् हिमवतणाम वदे । सेस कठ ॥ ३३ ॥

किंच—

कालियसुयअणुंओगस्स धारए धारए य पुब्बाण ।

हिमवतस्समासणे वदे णागज्जुणायरिए ॥ ३४ ॥

कालिय० गाहा । हिमवतो चेव हिमवतस्समासमणो । तस्स सीसो णागज्जुणायरितो ॥ ३४ ॥

तस्स इमा गुणकित्तणा—

मिदुं-महवसपण्णे अणुपुब्बि वायगतण पते ।

ओहसुयसमायारे णागज्जुणवायए वदे ॥ ३५ ॥

मिदु-महव० गाहा । 'अणुपुब्बी' सामादियादिसुत्तण्णणेण, कालतो य पुरिमपरियायत्तणेण पुरिसाणु पुब्बितो य वायगतण पतो, ओहसुत्त च उत्सग्गो, त च आयरति । सेस कठ ॥ ३५ ॥

णाग जुणवायगस्स सीसो भूतद्विण्णो आयरितो । तस्सिमा गुणकित्तणा तिहिं गाहाहिं—

तंविवरकणग चपय विमज्जलवस्कमलग्गंभसरिवण्णे ।

भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥ ३६ ॥

अइठमरहप्पहाणे बहुविहसज्जायसुमुणियपहाणे ।

अणुंओगियवरवसहे णाइलकुलवसणंदिकरे ॥ ३७ ॥

१ मणते स सु० ल० । जेत्त प्रतो महते इति पाठस्योपरि टिप्पणी यथा— मणते इति वृत्तौ व्याख्यातम् । इति ॥

२ सुतिवादा आ ॥ ३ जसो हिमवतो चि, अतो हिमवते महतविक्रमो, कह ? आ० ॥ ४ ततो अणत वा सुत्त महतो आ ॥

५ गुजोग स० ॥ ६ मिय म रे० ॥ ७ पव्वनिगतमगायानन्तरं P अति विहाय सर्वास्वपि सुप्रतिपुलभ्यत इदं गाथायुगलमधिकम्—

गोविंदाण पि णमो अणुंओगे विज्जलधारणिंदाण । निच्च सति दयाण परुवणे हुल्लमिंदाण ॥

ततो य भूयदिधं निच्च तव-सज्जे अतिद्विन्त्त । यद्वियजणसामंभं वधामी संजमविहन्तू ॥

एतद्गाथायुगलमिय इदमपि गाथाद्वयं न वृत्तौ इति इति जेत्त प्रतो टिप्पणी ॥ ८ पूरिमपरि आ० । पूरपरि जे ॥

९ सर्वास्वपि सुप्रतिपु धरकणगतवियचपय इति पाठ उपलभ्यते । मणवता हरिमद्गाथायें "धरकणग० गाहा" इति प्रतीक-

रूपेण एव पाठः स्वीकृतोऽस्ति । सूर्यो पुन तविय० गाहा" इति प्रतीकचानात् चूर्णिकृता तवियधरकणगचपय० इति पाठ

भारतः गन्भाव्यत । धीमत्यगिरिपास्तु "धरतवियेत्यादि गाथात्रयम्" इति प्रतीकनिष्ठत्वेन धरतवियकणगचपय इति

पाठोऽस्वीकृतो भवति । न त्वन्वेतच्छूर्णिकृतमत्यगिरिपादनिर्दिष्ट पाठमेतदुक्तं सुशार्दूलेषु दृश्यते ॥ १० धमसिरिय स । धमसमव

रे ॥ ११ गुमोपिय स । गुमोइय सु० । श्रीहरिमद् मत्यगिरिभ्यामयमेव पाठः स्वत्ववृत्तौ स्वीकृतोऽस्ति ॥

भूयहिययप्पगब्भे वंदे हं भूयदिण्णमायरिण्ण ।

भवभयवोच्छेयकरे सीसे णागज्जुणरिसीणं ॥ ३८ ॥ [ विसेसयं ]

तेचिय० गाहा । गब्भो त्ति-पोमकेसरा । सेसं कंठं ॥ ३६ ॥

अद्धभरह० गाहा । बहुविहो सज्जायो त्ति-अंगपविट्ठो वारसविधो, अणंगपविट्ठो य कालिय-उकालितो  
अणेगविहो । सो य पधाणो त्ति, सुगुणितत्तणेण निस्संको त्ति कातुं । सेसं कंठं ॥ ३७ ॥

5

भूतहितय० गाहा । भूतहितं ति अहिंसा । [जे० १९० द्वि०] पगब्भं ति-धारिडं । अहिंसाभावे पाग-  
ब्भता, अतीवअप्पमत्तताए अहिंसाभावपरिणता इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ३८ ॥

भूतादण्णस्स सीसो लोहिच्चो । तस्स इमा थुती—

सुमुणियणिच्चा-ऽणिच्चं सुमुणियसुत्त-ऽत्थधारयं णिच्चं ।

वंदे हं लोहिच्चं सब्भावुब्भावणात्तच्चं ॥ ३९ ॥

10

सुमुणित० गाहा । सुट्ठु मुणितं सुमुणितं । किं तं ? भण्णति-जीवो जीवत्तणेण निच्चो, गतिमादिएहिं  
अणिच्चो । परमाणू अजीवत्तणेण सुत्तत्तणेण य निच्चो, दुप्पदेसादिएहिं वण्णादिपज्जवेहि य अणिच्चो । सुट्ठु त मुणितं  
सुत्त-ऽत्थं धरेति । णिच्चकालं पि स्वे भावे ठितो सब्भावो, सँ-सोभणो वा भावो सब्भावो, सँ-विज्जमाणो वा भावो  
सब्भावो, तं उब्भासए तच्चत्तणेण, तथयत्वेन इत्यर्थः । तं च लोहिच्चणामं आयरियं वंदे । सेसं कंठं ॥ ३९ ॥

तस्स लोभिच्चस्स सीसो दूसगणी । तस्स इमा थुती—

15

अत्थ-महत्थक्ख्वाणिं सुँसमणवक्खवाणकहणणेव्वाणिं ।

पयतीए महुस्वाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥ ४० ॥<sup>११</sup>

सुकुमाल-कोमलतले तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।

पादे पावयणीणं पाँडिच्छासएहि पणिवइए ॥ ४१ ॥

अत्थ-महत्थ० गाहा । खाणि त्ति-आगरो । सा य अत्थस्स खाणी । किंविसिट्ठस्स ? महत्थस्स । महत्थो य 20  
अणेगपज्जायभेदभिण्णो । अहवा भासगरुवो अत्थो, विभासग-सव्वपज्जवतीकरो य महत्थो । एरिसस्स अत्थस्स  
ख्वाणी । का सा ? 'वाणि' त्ति संवज्जति । सुभो समण(णो) सुस्समण(णो), तस्स सुस्समणस्स वक्खवा[णकह]णं  
त्ति-अत्थकहणं, तम्मि अत्थकहणे सोत्ताराण करोति वाणी णेव्वाणी । अहवा वक्खवाणं ति-अणुयोगपरुवणं,

१ वरकणग० गाहा आ० । वरकणगतचिय० गाहा दा० ॥ २ धारेयव्वं । अहिंसां आ० । धारेव्वं सो० ॥  
३ धारयं वंदे । सब्भावुब्भावणया, तत्थ लोहिच्चनामाणं ॥ इति सु० पाठ । नाय पाठ्यूर्ध्व-वृत्तिकृतां सम्मत, नापि च  
सुत्रप्रतिपुलभ्यते ॥ ४ सन्-शोभनो वा भाव सद्भाव, सन्-विद्यमानो वा भाव सद्भाव इत्यर्थः ॥ ५ संवेज्जमाणो आ० ॥  
६ ऋखाणी डे० ल० ॥ ७ सुसवणं चूर्णं पाठान्तरम् ॥ ८ व्वाणी डे० ल० ॥ ९ वाणी डे० ल० ॥ १० गणी डे० ल० ॥  
११ चत्वारिंशत्तमगथानन्तर P प्रति विहाय सर्वासु सुत्रप्रतिषु गाथेयमविक्रोपलभ्यते—

तव-नियम-सच्च-संजम-विणय-ऽज्जव-वंति-महवरयाण । सीलगुणगद्वियाणं अणुभोगजुगप्पहाणाणं ॥  
अत्र "गद्वियाण" इति "गद्विताना" ख्यातानाम्" इति आचक्ष्यकदीपिकाकृता व्याख्यातमस्ति । एतद्वायाविषये जेसुं प्रतौ "एपाऽपि  
गाथा न वृत्तौ कुतश्चित्" इति टिप्पणी वक्तते ॥ १२ पडिं सु० ॥ १३ खाणी, दूसगणि त्ति संवं आ० ॥

कहण ति-अत्रखेवमादियाहि कहाहि धम्मकहण । तत्थ कुद्धाण वि आगताण तस्स वाणी जेव्वाणि जणेति,  
 क्रिमग पुण धम्मस्सवणद्वमागताण ? । अहवा पाणे-“सुसवण” चि तत्थ सवण चि-कणा, तेसु सुह जणेइ चि  
 सुस्सवणा, एव इकारलोवातो भण्णति । अहवा सुस्सवणा सुहस्रवा इत्यर्थः । सेस कठ ॥ ४० ॥ इमा वि दुस्सगणिणो  
 चेव चलगधुती-

5 सुकुमाल० गाहा । पवयण-दुवालसग गणिपिडग जस्स अत्थि सो पावयणी, गुरवो चि कातु बहुवयण  
 भणित । सेस कठ ॥ ४१ ॥ एस णमोकारो आयरिययुगम्हाणपुरिसाण विसेसग्गहणातो कतो । इमा पुण  
 [ बे० १९१ प्र० ] सामण्णतो सुतविसिद्धान कज्जइ-

जे अण्णे भगवते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।

ते पैणमिऊण सिरसा णाणस्स पैरूवण वोच्छ ॥ ४२ ॥

॥ थेरावलिया सम्भत्ता ॥

जे अण्णे० गाहा । कठा ॥ ४२ ॥

एत च नाणपरूवणज्जयण अरिहस्स देज्जति, णो अणरिहस्स देज्जइ । जतो भणित-

[ सुत्त ६ ]

सेलघण १ कुडग २ चालणि ३ परिपूणग ४ हस ५ महिस ६ मेसे ७ य ।

15 मसग ८ जळग ९ विराली १० जाहग ११ गो १२ मेरि १३ आभीरे ॥ ४३ ॥

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता, त जहा-जाणिया १ अजाणिया २ दुब्बियद्दा ३ ।

६ सेलघण० गाहा । एत्थ अरिहा इमे कुडेसु-अप्पसत्यवम्मसारिच्चा, पसत्यभावितेसु य अवम्मसा  
 रिच्चा । तहा हस मेस-जळग-जाहगसारिच्चा अरिहा, गो मेरी-आभीरेसु य पसत्योवणतोवणीता अरिहा । सेसा  
 अणअरिहा ॥ ४३ ॥

20 इमस्स य नाणपरूवणज्जयणस्स परूवणे परिसा जाणियाइ तिविहा जाणितव्वा । तत्थ जाणिया-  
 गुणदोसविसेसण्ण अणभिगाहिता य कुस्सुइ मतेसु । सा खल्ल जाणगपरिसा गुणतच्छिळा अणुणवज्जा ॥१॥

[ कल्पमा गा ३६५ ]

१ किज्जइ हा ॥ २ धदिऊण स० धदिऊण P ॥ ३ परूवण ख० ॥ ४ आभीरी सर्वास्वपि सुप्रप्रतिषु । एष एव पाठ  
 धोहरिमद्र मलयगिरिभ्यां व्याख्यातोऽस्ति ॥ ५ एतत्प्रानन्तरं जे दे० मो० सुस० सु० अतिषु चूर्णि-वृत्तिकृद्भिर्न्याख्यातोऽधिकोऽय  
 प्रक्षिप्तः स्यामात् पाठ उपलभ्यते-

जाणिया जहा-

धीरमिथ जहा हता जे सुइति इह गुरगुणसमिद्धा । दोसे य विवज्जती त जाणसु जाणियं परिस ॥

अजाणिया जहा-

जा होइ पणमदुरा मियछाययसीह-कुक्कुडगभूया । रयणमिथ असंठविया अजाणिया सा भवे परिसा ॥  
 दुब्बियद्दा जहा-

न य करयइ निम्भामो न य पुच्छइ परिमयस्स दोसेण । एत्थि एव पायपुण्णो पुद्ध गामेह्वयवियद्दो ॥  
 एतत्ताठविये जेत् प्रताविये णिप्पणी केतापि विदुया णिप्पिता दइयते- 'जाणियेत्वारभ्य एतद् गामात्रं वृत्तौ न  
 प्याख्यातम् अनोऽन्यकुरुड सम्भाष्यते । इति ॥ ६ आभीरीसु भा० ॥

इमा अजाणिया—

पगतीमुंद्धमजाणिय मियछावय-सीह-कुक्कुरगभूता । रयणमिव असंठविता सुहसणप्पा गुणसमिद्धा ॥ २ ॥

[ कल्पभा. गा. ३६७ ]

इमा दुव्वियड्ढा—

किंच्चिम्मत्तग्गाही पल्लवगाही य तंरियगाही य । दुव्वितड्ढिया उ एसा भणिता तिविहा भवे परिसा ॥ ३ ॥ 5

[ कल्पभा. गा. ३६९ ]

एत्थ जाणिया अजाणिया य अरिहा ॥ एवं कतमंगलोवयारो थेरावल्लिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दुत्तगणिसीसो देववायगो साहुजणहितट्ठाए इणमाह —

७. णाणं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा-आभिणिबोहियणाणं १ सुयणाणं २ ओहिणाणं ३ मणपज्जवणाणं ४ केवलणाणं ५ ।

10

७. नाणं पंचविहं० इत्यादि । अस्य व्याख्या—गाती णाणं—अत्रबोहमेत्तं, भावसाधणो । अहवा णज्जइ अणेणेति नाणं, खयोवसमिय-खाइएण वा भावेण जीवादिपदत्था णज्जति इति णाणं, करणसाधणो । अहवा णज्जति एतम्हि च्चि णाणं, नाणभावे जीवो च्चि, अधिकरणसाहणो । पंच इति संखा । विधिरिति भेदो । पण्णत्तं पण्णवितं प्ररूपितमित्यनर्थान्तरम्, अत्यतो तित्थकरेहिं, सुत्ततो गणपरोहिं । अहवा पण्णा-बुद्धी, पहाणपण्णेण अवाप्तं पण्णत्तं, सैम्मदिट्ठिणा लद्धमित्यर्थः । अहवा पहाणपण्णातो अवाप्तं पण्णत्तं, तित्थकरसमीवातो गणधरोहिं 15 लद्धं ति वुच्चं भवति । अहवा पण्णा-बुद्धी, तीए अवाप्तं पण्णत्तं, तित्थकर-नाणधरा-SSयरिएहिं कहिज्जंतं [जे० १९१ दि०] बुद्धीए पण्णत्तमिति । तंदिच्छणेण अधिकतत्थं नाणं संबज्जति । जे पुव्वसुव्वणत्था पंच णाणभेदा तेषां प्रतिपद-मभ्युपगमे जहासदो । अत्थाभिमुहो णियतो बोधो अभिनिबोधः, स एव स्वार्थिकप्रत्ययोपादानादाभिनिबो-धिकम् । अहवा अभिनिबोधे भवं, तेण निव्वत्तं, तम्मत्तं तप्पयोयणं वाSSभिणिबोधिकं । अहवा आता तदभिनिबुज्जए, तेण वाSSभिणिबुज्जते, तम्हा वा[SSभिणि]बुज्जते, तम्हि वाSSभिनिबुज्जए इत्ततो आभिनिबोधिकः । स एवाSSभि- 20 णिवोधिकोपयोगातो अनन्यत्तादाभिनिबोधिकम् १ । तहा तच्छृणोति, तेण वा सुणेति, तम्हा वा सुणेति, तम्हि वा सुणेतीति सुत्तं । आत्मैव वा श्रुतोपयोगपरिणामादनन्यत्वाच्छृणोतीति श्रुतम् २ । अवधीयते इति अवधिः, तेण वाSवधीयते, तम्हि वाSवधीयते, अवघाणं वा अवधिः, मर्यादेत्यर्थः । ताए परंपरोपणिवंधणातो दव्वादतो अवधीय(यं)त इति अवधी ३ । परि-सव्वतोभावेण गमणं पज्जवणं पज्जवः, मणसि मणसो वा पज्जवो मणपज्जवो, स एव नाणं मणपज्जवनाणं । तहा पज्जयणं पज्जयः, मणसि मणसो वा पज्जयः मनःपर्ययः, स 25 एव नाणं मणपज्जयणाणं । तहा आयो पावणं लाभो इत्यनर्थान्तरम्, सव्वतो आतो पज्जातो, मणसि मणसो वा पज्जायो मणपज्जायो, स एव नाणं मणपज्जव(पज्जाय)णाणं । अहवा मणसि मणसो वा पज्जवा मणपज्जवा, तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जवनाणं । तहा मणसि मणसो वा पज्जया [मणपज्जया], तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जयनाणं ।

गमणपरावत्तेगो लाभो भेदा य बहुपरावत्ता । मणपज्जवम्मि नाणे गिरुत्तवयणसत्थ पंचेते ॥ १ ॥ ४ ।

[ ] 30

१ जे होंति पगयमुद्धा मिगं इति कल्पभाष्ये ॥ २ तुरियं आ० दा० ॥ ३ सत्तदिट्ठिणा आ० ॥ ४ तदित्यनेन अधिष्ठतार्यम् इत्यर्थः । “त जहा” इति सूत्राशे विद्यमान ‘तद्’ इति पदमनुलक्ष्येद वचनम् ॥ ५ इत्यतः इत्यर्थः ॥

“कवलमेग सुद्ध सरुलमसाधारण अणत्त च ।” [विशेषा गा० ८४] इत्यर्थः ५। नाणसदो य सव्वत्थाऽऽ-  
 भिनिबोधिकादीण समाणाधिकरणो [जे० १९२ प्र०] दट्टव्वो, त जहा-आभिनिबोधिक च त नाण च आभिनि  
 बोधिरनाण । एव सव्वेसु देट्टव्व । पुच्छा य-किमेस मतिनाणादियो कमो ? एत्थ उत्तर भणति-एस  
 सकारणो उव्वणासो । इमे य ते कारणा-सुल्लसामिचणतो सव्वकालाविच्छेदद्वित्तणतो इदिया ऽर्णिदियणिमिच-  
 5 चणता तुल्लकखतोवसमकारणत्तणतो सव्वद्वन्वादिबिसयसामणत्तणतो परुक्खसामन्नत्तणओ य तन्भावे य सेसणाण-  
 समवातो अतो आदीए मति सुत्ताइ कताइ । तेसु वि य “मतिपुव्वत्त सुत्त” [सुत्त ४३] ति पुव्व मतिणाण  
 कत्त, तस्स य पिद्वतो सुत्त ति । अहवा इदिया ऽर्णिदियनिमित्तत्तणमविसिट्ठे वि मति-सुत्तेसु परोवदेसत्तणमेत्तभेदातो  
 अरिहतवयणकारणत्तणतो य मतिविसेसत्तणतो य सुत्तस्स मतिअणत्तर सुत्त ति । मति-सुयसमाणकालत्तणतो मिच्छ-  
 हसणपरिगहत्तणतो तच्चिवज्जयसाहम्मत्तणतो सामिसाहम्मत्तणतो य कत्थइ कालेगलाभत्तणतो य मति-सुत्ताणत्तर  
 10 अवधि चि भणितो । ततो य छउमत्थसामिसामणत्तणतो य पुमालविसयसामणत्तणतो य खयोवसममावसाम-  
 णत्तणतो य पच्चक्खभावसामणत्तणतो य अवहिसमणत्तर मणपज्जवनाण ति । सव्वनाणुत्तमत्तणतो सव्वविमुद्धत्तणतो  
 य विरत्तसामिसामणत्तणतो य सव्वावसाणलाभत्तणतो य सव्वुत्तमलद्धित्तणओ य तदत्ते केवल भणित ॥

८ त समासओ दुविह पणत्त, त जहा-पच्चक्ख च परोक्ख च ।

८ सव्व पेत्त समासतो दुविध-पच्चक्ख च परोक्ख च० इत्यादि । इह अप्पवत्तव्वत्तणतो पुव्व पच्चक्ख  
 15 पणविज्जति । इह जीवो अक्खो । कह ? उच्यते-“अशू व्याप्तौ” इति, णाणप्पणताए अत्थे असइ चि इच्चेव जीवो  
 अक्खो, णाणभावेण वावेति चि भणित भवति । अहवा “अश भोजने” इच्चेत्तस्स वा सव्वत्थे असइ चि अक्खो,  
 पालयति भुक्त्ते चेत्येथ । अक्ख पति वट्ठति चि पच्चक्ख, अर्णिदिय ति बुत्त भवति । चसदाओ य से अवधिमादि-  
 भेदा दट्टव्वा । अक्खातो [जे० १९२ द्वि०] परेसु ज णाण उप्पज्जति त परोक्ख समेद चसदाओ इदिय-मणो-  
 निमित्त दट्टव्वमिति ।

20 ९ से किं त पच्चक्ख ? पच्चक्ख दुविह पणत्त, त जहा-इदियपच्चक्ख च णोइ-  
 दियपच्चक्ख च ।

१० से किं त इदियपच्चक्ख ? इदियपच्चक्ख पच्चविह पणत्त, तं जहा-सोइदिय-  
 पच्चक्ख च किंविदियपच्चक्ख घाणिदियपच्चक्ख रंसणेदियपच्चक्ख फासिदियपच्चक्ख । से त  
 इदियपच्चक्ख ।

25 ९ से किं त पच्चक्ख ? पुच्छा । ‘से’ चि स पच्चक्खनाणभेदो । ‘किं त’ ति परिण्णहे, कतिभेद ति बुत्त  
 भवति । त च र्स्सिक्ख ? ति आयरियो पभेदमुव्वणसित्तु तस्सक्खकहणेण पच्चक्खसक्ख रुहितुकामो आइ-पच्चक्ख  
 दुविह पणत्त ति ।

१० इदिय ति-पुग्गलेहिं सठाणणिव्वत्तिक्ख दंविदिय, सोइदियमादिइदियाण सव्वात्तप्पदेसेहिं स्वा-  
 वरणखतोवसमातो जा लद्धी त भाविदिय, तस्स पच्चक्ख ति इदियपच्चक्ख । त पच्चविह । पर आइ-णणु

१ यत्तयं मो ॥ २ द्दित्तं आ० ॥ ३ त्तेण अधिसिट्ठे चि सत्ति सुत्ते चि परो आ० ॥ ४ णतो सम्मत्ता-  
 इफाले आ० ॥ ५ वेत्थय आ० ॥ ६ परोक्ख, त वेत्थ, चस आ ॥ ७ च्चक्खंइदिय सं० ॥ ८ जिदिय मो सु० ॥



द्विद्विदियावत्थियपदेसमेत्तमाहणतो सेसप्पदेसेसु अणुवल्लदी खयोवसमनिरत्थता वा भवति । आयरिय आह-ण एवं, पदीवदिट्ठंतसामत्थतो, जहा चतुसालभवणेगदेसजालितो पदीवो सव्वं भवणमुज्जोवेति तथा द्विद्विदियमेत्तप- देसविसयपडिबोधओ सव्वत्तप्पदेसोवयोगत्थपरिच्छेययो खयोपसमसाफलया य भवति त्ति ण दोसो । भाविदियो- वयारपच्चक्खत्तणतो एतं पच्चक्खं, परमत्थओ पुण चित्तमाणं एतं परोक्खं । कम्हा ? जम्हा परा द्विद्विदिया, भाविदियस्स य तदायत्तप्पणतो ॥

११. से किं तं णोइंदियपच्चक्खं ? णोइंदियपच्चक्खं तिविहं पणत्तं, तं जहा-ओहि- णाणपच्चक्खं ? मणपज्जवणाणपच्चक्खं २ केवलणाणपच्चक्खं ३ ।

१२. से किं तं ओहिणाणपच्चक्खं ? ओहिणाणपच्चक्खं दुविहं पणत्तं, तं जहा- भवपच्चतियं च खयोवसमियं च । दोन्हं भवपच्चतियं, तं जहा-देवाणं च णेरतियाणं च । दोन्हं खयोवसमियं, तं जहा-मणुस्साणं च पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं च ।

११-१२. णोइंदियपच्चक्खं ति इंदियातिरिक्तं । तं तिविहं ओहिमादी । अत्रहि त्ति-मज्जाया, सा य रुविदव्वेसु त्ति, "रुविससऽवधे" [तत्त्वा. अ. १ सू. २८] त्ति वयणातो, तेसु णाणं ओहिणाणं । 'भवपच्चइतो' त्ति भणिते भणति-णणु ओधी खयोवसमिते भावे, णरगादिभवो से उदइए भावे, कइं भवपच्चइतो भणति ? त्ति, उच्यते-सो वि खयोवसमितो चेव, किंतु सो चेव खयोवसमो णरग-देवभवेसु अवसं भवति त्ति, दिट्ठतो पक्खीणं आगासगमणं व, एवं भवपच्चइतो भणति । खयोवसमियं पुण णर-तिरियाणं, तेसु णावस्सं उप्पज्जति 15 त्ति खयोवसममवेक्खाति ॥ खयोवसमसख्वं च सुत्तेणव [जे० १९३ प्र०] भणितं—

१३. को हेऊ खायोवसमियं ? खायोवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिणाणं समुप्पज्जति । अहवा गुणपडिवणस्स अणगारस्स ओहिणाणं समुप्पज्जति ।

१३. को हेतु त्ति इच्चादि । सो य खयोवसमो गुणमंतरेण गुणपडिवत्तितो वा भवति । गुणमंतरेण जहा 20 गणणवभञ्जादिते अहापवत्तितो छिद्रेण दिणकरकिरण व्व विणिस्सिता दव्वमुज्जोवंति तथाऽवधिआवरण- खयोवसमे अवधिळंमो अधापवत्तितो विण्णेतो । गुणपडिवत्तितो— गुणपडिवण्ण० इत्यादि । उच्चरुत्तर- चरणगुणविसुज्जमाणमवेक्खातो अवधिणाण-दंसणावरणाण खयोवसमो भवति । तक्खयोवसमे य अवधी उप्पज्जति ॥

१४. तं समासओ छुविहं पणत्तं, तं जहा-आणुगामियं १ अणाणुगामियं २ 25 वड्ढमाणयं ३ हायमाणयं ४ पडिवाति ५ अपडिवाति ६ ।

१४. आणुगामियं ति । अणुगमणसीलो अणुगामितो, तदावरणखयोवसमाऽऽत्तप्पदेसविसुद्धगमणत्तातो लोयणं व ॥

१ सूत्रमिदं प्रश्न-निर्वचनात्मकमपि उपलभ्यते—से किं तं भवपच्चइयं ? २ दुण्हं, तं जहा-देवाणं य णेरइयाणं य । से किं तं खयोवसमियं ? २ दुण्हं, तं जहा-मणुसाणं य पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं य । जे० मो० डे० सु० । किच्च- चुण्णि-वृत्तित्ता नेदं पत्रोत्तरात्मकं सूत्रं सम्मतम् ॥ २ 'इयं' ति आ० दा० ॥ ३ 'दियाणं' ख० ॥

१५ से किं त आणुगामिय ओहिणाण? आणुगामिय ओहिणाण दुविह पणत्त, त जहा-अतगय च मज्झगय च ।

१६ अतगय ति। जहा जलत्त वणत्त पन्वत्त, अविस्सिट्ठो अत्तसद्धो। एव ओरालियसरीरते ठित गत्त ति एगद्ध, त च आत्तप्पदेसफह्णवावदि, एगदिसोवलमाओ य अत्तगतमोधिष्णाण भण्णति । अहवा सन्नात्तप्पदेसविस्सुद्धेसु वि ओरालियसरीरेगतेण एगदिसिपासणगत ति अत्तगत भण्णति । अहवा फुद्धतरमत्थो भण्णति-एगदिसावधिउवल्लद्ध-खेत्तातो सो अवधिपुरिसो अत्तगतो चि जम्हा तम्हा अत्तगत भण्णति । मज्झगत पुण ओरालियसरीरमज्झे फह्णविस्सुद्धीतो सन्नात्तप्पदेसविस्सुद्धीतो वा सन्वदिसोवलमत्तणतो मज्झगतो चि भण्णति । अहवाऽवधिउवल्लद्धखेत्तस्स वा अवधिपुरिसो मज्झगतो चि अतो वा मज्झगतो भण्णति ॥

१६ से किं त अंतगय? अतगय तिविह पणत्त, त जहा-पुरओ अतगय ?

१७ मग्गओ अतगय २ पासतो अतगय ३ ।

१७ से किं त पुरतो अतगय? पुरतो अतगय से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चुडलिय वा अलाय वा मणि वा जोइ वा पदीव वा पुरओ काउ पणोल्लेमाणे पणोल्लेमाणे गच्छेज्जा । से त पुरओ अतगय ।

१८ से किं त मग्गओ अतगय? मग्गओ अंतगय से जहानामए केइ पुरिसे

१८ उक्क वा चुडलिय वा अलाय वा मणि वा जोइ वा पदीव वा मग्गओ काउ अणुकइडेमाणे अणुकइडेमाणे गच्छेज्जा । से त मग्गओ अतगय २ ।

१९ से किं त पासओ अंतगय? पासओ अतगय से जहानामए केइ पुरिसे

१९ उक्क वा चुडलिय वा अलाय वा मणि वा जोइ वा पदीव वा पासओ काउ परिकइडेमाणे परिकइडेमाणे गच्छेज्जा । से त पासओ अतगय ३ । से त अतगय ।

२० से किं त मज्झगय? से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चुडलिय वा अलाय वा मणि वा जोइ वा पदीव वा मत्थए काउ गच्छेज्जा । से त मज्झगय ।

१६-२० उक्क ति-दीविवा । चुडलि ति-तण्णिदी अग्गे पज्जलिता । अलाय ति-दारुय जलत्त । मणि वा जलत्त । जोइ ति-मल्लगादिठित अग्णि जलत्त । पदीवो ति-दीवतो । 'पुरतो' ति अम्मतो 'पणोल्लण' ति

१ सं० प्र० १६-१९ स्यसु सत्र अतगय इति परसवर्णान्वित पाठो दृश्यते ॥ २ १० १९ स्यसु चुडलिय इति पाठो ज्ञे मो० ॥ ३ अत्र १०-१९ स्यसु चुडलियम्वा अलायम्वा पदीवम्वा मणिम्वा जोतिम्वा इतिरूप पाठो च प्रतो वर्तते ॥ ४ १०-१९ स्यसु अलाय वा पदीव वा मणि वा जोति वा पुरतो इति पाठो सर्वस्वपि स्यप्रतिषु दृश्यते । न उक्तं यत्किञ्चित्प्रसम्मतः पाठो इत्याप्यादर्शो उपलभ्यत तथापि व्याख्याकृन्मताल्लसारेणास्माभिः परादृत्य मूले पाठो उद्धृतोऽस्ति । अलाय वा मणि वा पदीव वा जोति वा पुरतो इति तु पाठस्य नास्मत्समीपस्थेषु आदर्शेषु दृश्यते ॥ ५ काठ समुच्चदमाणे समुच्चदमाणे गच्छेज्जा ज मो सु ॥

“णुद प्रेरणे” इत्थग्गहितस्स दंडग्गहितस्स वा परंपरेण नयनमित्यर्थः । ‘मग्गतो’ ति पिट्ठतो ‘अणुकड्डणं’ ति इत्थग्गहितस्स दंडग्गहितस्स वा अणु-पच्छयो कड्डणं ति । ‘पासतो’ ति दाहिणे वामे वा पासे सा(दो)पासया[जे० १९३ द्वि० ]जमलद्वितं । परिकड्डित्यं ति-इत्थ-डंडगद्वितं वा परि-पासतो द्वितस्स कड्डणं परिकड्डणं ॥

सीसो पुच्छति—

२१. अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ? पुरओ अंतगएणं ओहिणाणेणं 5  
पुरओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, मग्गओ अंतगएणं  
ओहिणाणेणं मग्गओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ,  
पासओ अंतगएणं ओहिणाणेणं पासओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं  
जाणइ पासइ, मज्झगएणं ओहिणाणेणं सव्वओ समंता संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि  
वा जोयणाइं जाणइ पासइ । से तं आणुगामियं ओहिणाणं । 10

२१. अंतगतस्स० इच्चादि । आयरियाऽऽह-पुरतो० इच्चादि । ‘सव्वतो’ ति सव्वासु त्रि दिसि-विदिसासु  
‘समंता’ इति सव्वातप्पदेसेसु सव्वेसु वा विसुद्धफड्डगेसु । अहवा ‘सव्वतो’ त्तिसव्वासु दिसि-विदिसासु सव्वातप्प-  
देसफड्डगेसु य । ‘से’ इति निदेसे अवधिपुरिसस्स, ‘मंता’ इति णाता । अहवा “समत्ता” इति समं-द्ववाद्यो तुल्ला  
अत्ता इति-प्राप्ता इत्यर्थः ॥

२२. से किं तं अणाणुगामियं ओहिणाणं ? अणाणुगामियं ओहिणाणं से जहा- 15  
णामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं  
परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ, एंवमेव  
अणाणुगामियं ओहिणाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा  
संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ । से तं  
अणाणुगामियं ओहिणाणं । 20

२२. णो गच्छंतमणुगच्छति ति अणाणुगामिकं, संकलापडिबद्धद्वितप्पदीवो व्व, तस्स य खेत्तावेक्खसखयो-  
वसमलाभत्तणतो अणाणुगामित्तं । पेरंतं ति-समंततो अंगणिमासण्णं, तस्स य जोइस्स सव्वतो दिसि-विदिसासु  
समंता परिघोळणं ति-पुणो पुणो इतो इतो परिसकणं ॥

२३. से किं तं वड्डमाणयं ओहिणाणं ? वड्डमाणयं ओहिणाणं पंसत्थेसु अज्झ-

१ पासे दोसु वा सयं जमं आ० दा० ॥ २ मग्गओ अंतगएणं० इत्यादिसुत्तास पासओ अंतगएणं० इत्यादिसुत्तास  
न० स० प्रत्यो पूर्वपरक्रमव्यत्यासेन वर्तते ॥ ३ समत्ता इति पाठमेदश्वर्णो निर्दिष्टोऽस्ति ॥ ४ “सव्वायण्यएसेसु इत्यादौ तृतीयायं  
सममी” इति नन्दिद्वृत्तौ श्रीमल्लयगिरिपादरेतपाठोद्धरणे व्याख्यातमस्ति पत्र ८५-२ ॥ ५-६-११ ओहिणाणं डे० ल० ॥  
७-८ अगणिट्ठां ख० स० ल० शु० ॥ ९ सर्वासु सूत्रप्रतिषु अत्र जोइट्ठाण इत्येव पाठो वर्तते ॥ १० पवामेव सु० ॥ १२ अगणि-  
पासेणं, तस्स आ० । अगणिपासणं, तस्स दा० ॥ १३ पसत्थेहिं अज्झवसाणट्ठाणेहिं ख० मो० ॥

वसांणद्वाणेषु वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाणचरित्तस्स  
सव्वओ समता ओही वट्टइ ।

जावतिया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ।  
ओगाहणा जहन्ना ओहीखेत्त जहन्न तु ॥ ४४ ॥

5 सव्ववहुअगणिजीवा णिरतर जत्तिय भरेज्जसु ।  
खेत्त सव्वदिसाग परमोही खेत्तनिदिट्ठो ॥ ४५ ॥

अगुलमावलियाण भागमसखेज्ज दोसु सखेज्जा ।  
अगुलमावलियतो आवलिया अगुलपुहत्तं ॥ ४६ ॥

10 हत्थम्मि मुहुत्ततो दिवसतो गाउयम्मि वोद्धव्वो ।  
जोयण दिवसपुहत्त पक्खतो पणवीसाओ ॥ ४७ ॥

भरहम्मि अद्धमासो जवुदीवम्मि साहिओ मासो ।  
वास च मणुयलोए वासपुहत्त च रुयगम्मि ॥ ४८ ॥

सखेज्जम्मि उं काले दीव-समुदा वि होति सखेज्जा ।  
कालम्मि असखेज्जे दीव-समुदा उ भइयव्वा ॥ ४९ ॥

15 काले चउण्ह वुट्ठी कालो भइयव्वु खेत्तवुट्ठीए ।  
वुट्ठीए दव्व-पज्जव भइयव्वा खेत्त-काला उ ॥ ५० ॥

सुहुमो य होइ कालो ततो सुहुमयस्य हवइ खेत्त ।  
अंगुलसेदीमेत्ते ओसप्पिणिओ असखेज्जा ॥ ५१ ॥

से त वट्टमाणय ओहिणांण ।

20 २३ वर्धन वट्ठी, पुब्बावत्यातो उव्वररि वट्टमाण ति, त च उस्सण्ण चरणगुणविमुद्धिमपेक्खं, ततो  
पसत्त्यज्जवसाणद्वाणा तेआदिपसत्त्यलेसाणुगता भवति, पसत्त्यदव्वलेसाहि अणुरजित चित्तपसत्त्यज्जवसाणो भण्णति,  
पसत्त्यज्जवसाणातो य चरणा ऽऽतविसुद्धी, चरणा ऽऽतविसुद्धीतो य चरणपञ्चत्तद्धीण वट्ठी भवति ।

→ ३माओ य जइणुकांस विमज्झिमांधिवट्टिदसण्णगाहाओ जहा पेठियाए ॥ ४४-५१ ॥

१ सायहा सं० ॥ २ वट्टमाण उ ॥ ३ वीस तु ल० । वीसतो दे० ॥ ४ वि सु० । य मो० ॥ ५ वाणय  
व ॥ ६ पसत्तमतो एसत्थ या दा ॥ ७ आव-वकनियुक्खीठिआवां गाया १-७-१० ॥

२४. से किं तं हायमाणयं ओहिणाणं ? हायमाणयं ओहिणाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही परिहायति । से तं हायमाणयं ओहिणाणं ।

२४. हाणि चि-हस्समाणं, पुव्वावत्थातो अधोऽधो हस्समागं । तं च बद्धमाणविपक्खतो भाणितव्वं । अप्पसत्थेस्सोवरंजितं चित्तं अणेगांसुभत्थचित्तणपरं चित्तं संकिलिद्धं भण्णाति ॥

5

२५. से किं तं पडिवाति ओहिणाणं ? पडिवाति ओहिणाणं जण्णं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं वा संखेज्जतिभागं वा वालगं वा वालगपुहत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहत्तं वा जूयं वा जूयपुहत्तं वा जवं वा जवपुहत्तं वा अंगुलं वा अंगुलपुहत्तं वा पायं वा पायपुहत्तं वा वियत्थि वा वियत्थिपुहत्तं वा रयणिं वा रयणिपुहत्तं वा कुच्चिं वा कुच्चिपुहत्तं वा धणुयं वा धणुयपुहत्तं वा गाउयं वा गाउयपुहत्तं वा जोयणं वा जोयणपुहत्तं वा जोयणसयं वा जोयणसय- 10 पुहत्तं वा जोयणसहस्सं वा जोयणसहस्सपुहत्तं वा जोयणसतसहस्सं वा जोयणसतसहस्सपुहत्तं वा जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहत्तं वा →जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहत्तं वा ← उक्कोसेण लोणं वा पासित्ता णं पडिवएज्जा । से तं पडिवाति ओहिणाणं ।

२५. उप्पण्णोहिनाणस्स पुणो पातो चि पडिवाती, नाशेत्यर्थः । तं च खेत्तविसेसोवलंभेणं भण्णाति । ते य इमे-असंखेयंगुलभागादिया । दुप्पभिति जाव णव चि अंगुलपुहत्तं भण्णाति । दो हत्था कुच्छी । पडिवातिणो 15 जाव उक्कोसो लोणमेत्ते एव ॥

२६. से किं तं अपडिवाति ओहिणाणं ? अपडिवाति ओहिणाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगासंपदेसं पासेज्जा तेण परं अपडिवाति ओहिणाणं । से तं अपडिवाति ओहिणाणं ।

२६. अपडिवाति चि, सो वि खेत्तविसेसोवलंभातो चेव णज्जति, अतो भण्णाति अलोगस्स एगमवि चि । 20 'अवि' पदत्थसंभावणे, किमुत दुपदेसादिउपलंभे ? इत्यर्थः । [जे० १९४ प्र०] ॥

२७. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तंत्य दव्वओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अणंताणि रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं

१ अप्पसत्थेसुं अज्झवसायट्ठाणेसुं स० ॥ २ ओही हायति ख० स० जे० मो० ॥ ३ 'गासुत्तर्थ' जे० ॥ ४-५ 'जयभा' जे० सु० ॥ ६ पुहुत्त पुहुत्त पहुत्त शब्दाः सर्वास्त्रपि सूत्रप्रतिषु क्रमपरिहारेण आवृत्त्या दृश्यन्ते ॥ ७ विहत्थि वा विहत्थि' मो० सु० ॥ ८ धणुं वा धणुपुं जे० मो० सु० ॥ ९ जोयणलक्खं वा जोयणलक्खपुहत्तं जे० मो० सु० ॥ १० → ← एतच्चिह्नमध्यगत पाठः ख० स० नास्ति ॥ ११ 'मेत्तप वा आ० दा० ॥ १२ स० विनाऽन्यत्र—'पदेसं पासति तेण स० सु० । 'पदेसं जाणइ पासइ तेण जे० डे० ल० मो० ॥ १३ अविपदत्थो संभा' आ० दा० ॥ १४ तत्थ इति स० स० ल० सु० नास्ति ॥

सव्वाइ रुविदव्वाइ जाणइ पासइ १ । खेतओ ण ओहिणाणी जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जतिभाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखेज्जाइ अलोए लोयमेत्ताइ खंडाइ जाणइ पासइ २ । कालओ ण ओहिणाणी जहण्णेण आवलियाए असखेज्जतिभाग

जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखेज्जाओ उस्सपिणीओ अवसपिणीओ अतीत च अणागत च काल जाणइ पासइ ३ । भावओ ण ओहिणाणी जहण्णेण अणते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेण वि अणते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणमणतभाग जाणइ पासइ ४ ।

२७ वित्थरेण खयोवसमविसेसतो असखेज्जविधमोधिणाण, ओधिमादिगतिपज्जवसाण वा चतुइसविध वित्थरो, ते पइइ इम चतुविह समासतो मणति दव्वादि । दव्वओ ओधिणाणी जहण्णेण तेवामासतरे अणते दव्वे उवलमति, उक्कोसतो सव्वरुविदव्वाइ । जाणइ ति नाण, त च ज विसेसग्गाहग त गाण, सागारमित्थर्य । पासति ति दसण, त च ज सामण्णग्गाहग त दसण, अणागारमित्थर्य । खेत-कालतो य सुत्तसिद्ध । भावतो ओधिणाणी जहण्णेण अणते भावे उवलमति, उक्कोसतो वि अणते, जहण्णपदातो उक्कोसपद अणतगुण । उक्कोसपदे वि जे भावा ते सव्वभावाण अणतभागे वट्ठति ॥

२८ ओही भवपच्चतिओ, गुणपच्चतिओ य वण्णिओ एसो ।

तस्स य बहू वियप्पा, दव्वे खेत्ते य काले र्य ॥ ५२ ॥

१५ से त ओहिणाण ।

२८ ओही भव० गाया । दव्वतो बहू विगप्पा परमाणुमादिदव्वविसेसातो । खेततो वि अगुलअस खेयभागविरुप्पादिया । कालतो वि आत्रलियअसखेज्जभागदिया । भावतो वि वण्णपज्जवादिया ॥ ५२ ॥

मणपज्जवणाणमिदाणि । तस्स सरूव वण्णितमादीए [पत्रम् १३] । इदाणि सामी विसेसिज्जइ पुंच्छुत्तरेहि—

२९ [१] से किं त मणपज्जवणाणं ? मणपज्जवणाणे ण भते । किं मणुंस्साण

२० उप्पज्जइ अमणुस्साण ? गोयमा । मणुस्साण, णो अमणुस्साण । [२] जइ मणु स्साण किं सम्मुच्छिममणुस्साण गव्वभवकतियमणुस्साण ? गोयमा । णो सम्मुच्छिम मणुस्साण, गव्वभवकतियमणुस्साण । [३] जइ गव्वभवकतियमणुस्साण किं वेम्मभूम-

१ लोप्यमाणमेत्ताइ ए० सं दिना ॥ २ ओसपिणीओ उस्सपिणीओ खे सं० ॥ ३ सेण पि अणते खे ॥ ४ भागो ग० । च्छिण्णुत्ता हरिमद्रपादानां चायमेव पाठः सम्मत ॥ ५ ओही खेत परिभागे० इत्याद्यावदयकनियुक्ति २७-२८ गाथायुगोष्थानि चतुदश द्वाराण्यत्रायशोद्वयानि ॥ ६ वण्णिओ दुब्बिहो इति वृत्तिरुद्भवां निर्दिष्टः पाठमेव ॥ ७ तस्सेय स ॥ ८ द्वाराणां पानानन्तरं सर्वेषु वृत्तिभद्रसुरिपाद मलयगिरिवरणव्याख्याता एका गाथाऽधिका उपलभ्यते—

जेरतिय देय त्तिथ्यरुरा य ओदित्तसऽवाहित होति । पासति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासति ॥

९ सम्मत ओहि ग ॥ १० गाणपथफळमु० ॥ ११ पुव्वसुत्तरेहि आ० ॥ १२ णाण भते । जे मो० ॥ १३ मणुसाण सं० । एवमपडि वस्सिन् एत्त (२९) सत्तरे देयम् ॥ १४ उप्पज्जइ इति सं० सं० नास्ति ॥ १५ कम्मभूमिण मो० मु० । एवमपडि सत्तरे वस्सिन् एत्त (२९) देयम् ॥



म्मभूमगगवभवकतियमणुस्साण । [९] जइ अपमत्तसंजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसखे-  
ज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकतियमणुस्साण किं इट्ठिपत्तअपमत्तसजयसम्महिट्ठिपज्जत्तग-  
सखेज्जवासासाउयकम्मभूमगगवभवकतियमणुस्साण अणिट्ठिपत्तअपमत्तसजयसम्महिट्ठि-  
पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकतियमणुस्साण ? गोयमा । इट्ठिपत्तअपमत्तसजय-  
सम्महिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकतियमणुस्साण, णो अणिट्ठिपत्तअपम-  
त्तसजयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवकतियमणुस्साणं मणपज्जवणाणं  
समुपज्जइ ।

२०. किं मणुस्सा० इत्यादि । सम्मुच्चिमणुस्सा गवभवकतियमणुस्साण चेव वत्त पितादिस्तु समवति ।  
कम्मभूमगा पचस्तु भरहेस्तु पचस्तु एरवदेस्तु पचस्तु महाविदेहेस्तु य । हेमवतादिस्तु मिंधुणा ते अकर्मभूमगा । तिप्पि  
जोयणशते लवणजलमोगाहिता चुल्लहिमवतसिहरिपादपतिट्ठिता एगुरुगादि छप्पण अतरदीवगा । किं पज्जत्ताण  
अपज्जत्ताण ? ति । पज्जत्ती णाम-सत्ती सामत्य । सा य पुग्गलदव्वोवचया उपपज्जति । ताओ य छ पज्जत्तीतो-  
आहार-सरीर द्दिय आणापाणु भासा-मणपज्जत्ती चेति । तत्य एगिंदियाण चउरो, विगलिंदियाण पच, अस्सणीण  
सववहारतो पच चेव, सणीणं च छ । तत्य आहारपज्जत्ती नाम खल-रसपरिणामणसत्ती आहारपज्जत्ती । सत्तधातुतया  
परिणामणसत्ती सरीरपज्जत्ती । पंचण्हर्मिंदियाण [जे० १९४ टि०] जोग्गा पोग्गले चियित्तु अणाभोगनिव्वत्तित्त  
त्रिरियरुरणेण तैवभावणयणसत्ती इदियपज्जत्ती । [उस्सास] पोग्गलजोग्गाणापाणुण गहण णिसिरणसत्ती आणा-  
पाणुपज्जत्ती । वइजोग्गे पोग्गले चेतूण भासत्ताए परिणामेत्ता वइजोग्गत्ताए निसिरणसत्ती भासापज्जत्ती । मण-  
जोग्गे पोग्गले चेतूण मणत्ताए परिणामेत्ता मणजोग्गत्ताए निसिरणसत्ती मणपज्जत्ती । एताओ पज्जत्तीओ पज्ज-  
त्तयणामकम्मोदएण णिव्वत्तिज्जति, ता जेसिं अत्यि ते पज्जत्तया । अपज्जत्तयणामकम्मोदएण अणिव्वत्तातो  
जेसिं ते अपज्जत्तया । अप्पमत्तसजता जिणरुप्पिया परिहारविस्तुद्धिया अहालदिया पडिभापडिवण्णगा य, एते  
सततोवयोगोवउत्तत्तणतो अप्पमत्ता । गच्छवासिणो पुण पमत्ता, कण्हुद्द अणुवयोगसमवतातो । अहवा गच्छवासी  
णिमता य पमत्ता वि अप्पमत्ता वि भवति परिणामवसओ । 'इट्ठिपत्तस्से'ति आमोसहिमादिअण्णतरइट्ठिपत्तस्स  
मणपज्जत्तण उपपज्जइ ति । अहवा 'ओहिनाणिणो मणपज्जत्तण उपपज्जति' ति अण्णे नियम भणति ॥

३० ते च दुविह उपपज्जइ, त जहा-उज्जुमती य विउलमती य ।

३० रिज् मती उज्जुमदी, सामण्यगाहिणि ति भणित होति । एस मणोपज्जायविसेसो ति । ओसण्ण  
विसेसविमुह उवलमति, णातीववहुविसेसविसिट्ठ अत्य उवलमद् ति भणित होति, यडो णेण चित्तिओ ति  
जाणति । विपुला मती विपुलमती, बहुविसेसगाहिणि ति भणित भवति । मणोपज्जायविसेसे जाणति, दिट्ठतो  
नहा-णेण यडो चित्तितो, त च देस-कालादिअणेणपज्जायविसेसविसिट्ठ जाणति ॥ अहवा रिज् विपुलमतीण इम  
दग्गादीहिं विसेसस्सु भणति—

१ सामत्यता य भा ॥ २ एा विचिणिस्तु अणा<sup>१</sup> भा० ॥ ३ तव्वावापायण भा० दा० ॥ ४ अणिव्वत्तिता  
ता जेसिं भा ॥ ५ त च दुविह उपपज्जइ इति ए० सं नास्ति ॥ ६ उपपज्जइ इति शु० नास्ति ॥ ७ विमलमती वं ॥



३१. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दब्बओ खेत्तओ कालओ भावओ ।  
 तत्थ दब्बओ णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए खंधे जाणइ पासइ, ते चेव विउलमती  
 अब्भहियतराए जाणति पासति । खेत्तओ णं उज्जुमती अहे जाव इमीसे स्यणपभाए  
 पुढवीए उवरिमहेट्टिल्लाइं खुड्ढागपयराइं उड्ढं जाव जोतिसस्स उवरिमत्तैले तिरियं जाव अंतोमणु-  
 स्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु सण्णीणं पंचेदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगते भावे जाणइ 5  
 पासइ, तं चेव विउलमती अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतराणं विउलतराणं विसुद्धतराणं  
 वितिमिरतराणं खेत्तं जाणति पासति । कालओ णं उज्जुमती जहण्णेणं पलिओ-  
 वमस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं पि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अतीयमणागयं वा  
 कालं जाणति पासति, तं चेव विउलमती अब्भहियतराणं विउलतराणं विसुद्धतराणं विति-  
 मिरतराणं जाणइ पासइ । भावओ णं उज्जुमती अणंते भावे जाणइ पासइ सब्बभा- 10  
 वाणं अणंतभागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमती अब्भहियतराणं विउलतराणं विसुद्धत-  
 राणं वितिमिरतराणं जाणइ पासइ ।

३२. मणपज्जवणाणं पुण जणमणपरिचितियत्थपायडणं ।

माणुसखेत्तणिबद्धं गुणपच्चइयं चरित्तवओ ॥ ५३ ॥

से तं मणपज्जवणाणं ।

15

१ दब्बओ ४ । दब्बओ ल० ॥ २ तत्थ इति खं० स० ल० नास्ति ॥ ३ अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए  
 वितिमिरतराए जाणति जे० डे० मो० ल० । अब्भहियतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणति म० स० । एतयो  
 पाठमेदयो प्रथमः सूत्रपाठमेद श्रीमलयगिरिपाठं स्ववृत्तावाहतोऽस्ति । द्वितीय पुनः पाठमेदो भगवता श्रीअभयदेवसूरिणा भगवत्या-  
 मष्टमशतकद्वितीयोद्देशके मनःपर्यवज्ञानविषयकसूत्रव्याख्यानावसरे जहा नंदीप इति सूत्रनिर्दिष्टनन्दिसूत्रपाठोद्दरणे तद्व्याख्याने चाहतोऽस्ति ।  
 चूर्णि-हरिभद्रवृत्तिसम्मतस्तु सूत्रपाठं शु० आदर्श एव उपलभ्यते ॥ ४ उज्जुमती जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं उक्कोसेण  
 अहे जाव मु० । नोपलभ्यते कस्मिंश्चिदप्यादर्शोऽय पाठः, नापि चूर्णिकृता वृत्तिरुद्ध्यां वाऽय पाठ स्त्रीकृतो व्याख्यातो वा  
 वर्तते । अपि च श्रीअभयदेवाचार्येणापि भगवत्या अष्टमशतकद्वितीयोद्देशके नन्दीपाठोद्दरणे नाय पाठ उल्लिखितो व्याख्यातो वाऽस्ति ।  
 नापि विशेषावश्यकादौ तद्दोकादिपु वा मन पर्यवज्ञानक्षेत्रवर्णनाधिकारे जघन्योत्कृष्टस्थानचिन्ता दृश्यते ॥ ५ इमीप ल० ॥ ६ उवरि-  
 महेट्टिल्लेसु खुड्ढागपयरेसु उड्ढं न० स० । उवरिमहेट्टिल्ले खुड्ढागपयरे उड्ढं न० स० विना मलयगिरिवृत्तौ च ॥ ७ तलो  
 न० स० शु० ॥ ८ समुद्देसु पण्णत्तसु कम्मभूमीसु तीलाए अकम्मभूमीसु छप्पणणाए अतरदीवगेमु सण्णाणं डे०  
 शु० मो० मु० । श्रीमद्भयदेवाचार्यैर्भगवत्यामष्टमशतकद्वितीयोद्देशके नन्दीसूत्रपाठोद्दरणे एव एव सूत्रपाठ आह्वोऽस्ति ॥  
 ९ जेहिमंगुं मो० मु० ॥ १० अब्भहियतरं विउलतर विसुद्धतरं वितिमिरतर खेत्त इति हरिभद्र-मलयगिरिवृत्तिगम्यत  
 सूत्रपाठ जे० मो० मु० ॥ ११ खेत्तं इति जे० स० डे० शु० नास्ति । भगवत्यामभयदेवाचार्योर्द्वे नन्दीपाठेऽपि नास्ति । १२ च  
 भगवत्या श ८ ८ नन्दीपाठोद्दरणे ॥ १३ अब्भहियतराणं विउलतराणं इति पदद्वय न० स० ल० नास्ति । भगवत्यामपि  
 नन्दीपाठोद्दरणे एतत् पदद्वय नास्ति ॥ १४ अत्र अब्भहियतराणं विउलतराणं वितिमिरतराणं इति पदद्वय न० स० ल०  
 भगवत्यां नन्दीसूत्रपाठोद्दरणे च नास्ति, केवल विसुद्धतराणं इत्येवैव पद वर्तते ॥

३१-३२ सण्णिणा मणत्तेण मणिते मणोखे अणते अणतपदेसिए दब्बट्ठताए तम्भते य वण्णादिए भावे मणपञ्चवनाणेण पच्चक्ख पेक्खमाणो जाणाति चि मणिति । मणितमत्थ पुण पच्चक्ख ण पेक्खति, जेण मणालवण म्मुत्तमम्मुत्त वा, सो य छद्दुमत्थो त अणुमाणतो [जे० १९५ प्र०] पेक्खति चि अतो पासणता मणिता । अहवा छद्दुमत्थस्स एगविहखयोवसमलम्भे वि त्रिविधोपयोगसमवो भवति, जहेत्थेव रिजु विपुलमतीणं उवयोगो, अतो  
 5 विसेस-सामण्णत्थेसु उवउज्जतो जाणति पासइ चि मणित, ण दोसो । विपुलमती पुण दब्बट्ठताए वण्णादिएहि य अधिगत जाणतीत्यर्थ । उवरिमहेट्ठिह्हाइ खुड्ढागपतराइ ति इमस्स भावणत्थ इम पण्णविज्जति-तिरिय-लोगस्स उड्ढाउहअट्टारसजोयणसइयस्स बहुमज्जे एत्थ असखेयगुलभागमेत्ता लोगासासप्परा अलोणेण संबट्ठिता सव्वसुहलतरा खुड्ढागपतर चि मणिता, ते य सव्वतो रज्जुप्पमाणा । तेसिं जे बहुमज्जे दो खुड्ढागपतरा तेसिं पि बहुमज्जे जवुहीवे रथणप्पमपुदविवहुसमभूमिभागे मदरस्स बहुमज्जे एत्थ अट्ठपदेसो रुयगो, -जत्तो दिसि विदि-  
 10 तिविभागो पवत्तो, -एत तिरियलोगमज्ज । एतातो तिरियलोगमज्जातो रज्जुप्पमाणखुड्ढागपत्तरेहिंतो उवरि तिरिय असखेयगुलभागअसखेयगुलभागवह्दी, उवरिहुत्तो वि अगुलअसखेयभागारोहो चेव, एव तिरियसुवरिं च अगुलअसखेयमागवह्दीए ताव लोगवह्दी णेतव्वा जाव उड्ढलोगमज्ज, तातो पुणो तेणेव क्रमेण सव्वो कातव्वो उवरिलोगतो रज्जुपमाणो । ततो य उड्ढलोगमज्जातो उवरिं हेट्ठा य क्रमेण खुड्ढागपत्तरा भाणितव्वा जाव जाव रज्जुप्पमाणा खुड्ढागपत्तर चि । तिरियलोगमज्जरज्जुप्पमाणखुड्ढागपत्तरेहिंतो पि हेट्ठा अगुलअसखेयभागवह्दी  
 15 तिरिय, अहोवगाहेण वि अगुलस्सअसखभागो चेव, एव अहेलोगो बह्देतव्वो जाव अहेलोगतो सत्त रज्जुओ । सत्तरज्जुपयरोहिंतो उपरुपरिं क्रमेण खुड्ढागपत्तरा भाणितव्वा जाव तिरियलोगमज्जरज्जुप्पमाणा खुड्ढागपत्तर चि । एव खुड्ढागपत्तरेण कते इम मण्णति-उवरिम ति-तिरियलोगमज्जातो [जे० १९५ द्वि०] अहो जाव णव जोयण सता ताव इमीए रथणप्पमपुवीए उवरिमखुड्ढागपतर चि मण्णति । तदहो अहेलोगे जाव अहेलोइयगामवत्तिणो ते हेट्ठिमखुड्ढागपत्तर चि मण्णति, रिजुमती अधो ताव पश्यतीत्यर्थ । अहवा अहेलोगस्स उवरिमा खुड्ढागपत्तरा  
 20 तिरियलोगस्स य हेट्ठिमा खुड्ढागपत्तरा ते जाव पश्यतीत्यर्थ ।

अणो मणति—उवरिम चि—अंधोलोगोपरिद्धिता जे ते उवरिमा । के य ते ? उच्यते—सव्वतिरियलोग-वत्तिणो तिरियलोगस्स वा अहो णवजोतणसत्तवत्तिणो वाण चेव जे हेट्ठिमा ते जाव पश्यतीत्यर्थ, इम ण घट्ठति, अहेलोइयगाममणपञ्चवणाणसभैवपाहण्णत्तणतो । उक्त च—

इहाथोलौकिना ग्रामा न तिर्यग्लोकवर्तिन । मनोगतास्स्वसौ भावान् वेत्ति तद्वर्तिनामपि ॥ १ ॥

25

[ ]

अह्दातियगुलमाहण उस्सेह्गुलमाणतो । कह णज्जति ? उच्यते—“उस्सेह्पमाणतो मिणे देह” [बृहत्संहणी गा ३३५] ति वयणातो । अगुलादिया य जे पमाणा ते सव्वे देहनिष्फण्णा इति, णाणविसयत्तणतो य णै स्स । रिजुमतिखेत्तोत्रलमप्पमाणातो विपुलमती अन्मत्तियतराग खेत्त उवलमइ चि । एगदिंसि पि अन्मत्तियसमवो भवति चि समततो जम्हा अन्मइय ति तम्हा विपुलतराग मण्णति । अहवा जहा घडो घडातो जलाहारत्तणतो अन्मत्तितो  
 30 सो पुण नियमा घडागासखेत्तेण विउलतरो भवति एव विउलमती अन्मत्तियतराग मणोलद्विजीवदब्बाधार खेत्त जाणति, त च नियमा विपुलतर इत्यथ । अहवा आयाम विक्खमेण अन्मइयतराग वाहट्ठेण विउलतर खेत्त

१ अंधोलोगोपरिद्धितो जे ज ॥ २ समववाहलत्तणतो आ० दा० हरिमप्रश्नी च ॥ ३ ण दोसो । रिजु दा० मनवोमिह्दी च । ण दो सा० रिजु आ० ॥ ४ आ० दा० आहत्तो एक्कत्तच्छूणो वपन्न अन्मत्तिय स्थाने अन्मत्तिय इति वत्ते ॥

उपलभत इत्यर्थः । अहवा दो वि पदा एगद्वा । विसिद्धविसुद्धिविसेसदंसगो तरसदो चि, यथा शुक्लः शुक्लतर इति । किंच—जहा पगासगदव्वविसेसातो खेत्तविसुद्धि(द्धी) विसेसेणऽक्खिज्जति तहा मणपज्जवनाण-चरणविसेसातो रिजुमणपज्जवणाणिसमी[जे० १९६ प्र०]वातो विपुलमणपज्जवणाणी विसुद्धतरागं जाणति, मणपज्जवनाणाव-रणखयोवसमुत्तमलंभत्तणतो वा वित्तिमिरतरागं ति भण्णति । अहवा पुव्ववद्धमणपज्जवनाणावरणखयोवसमुत्तमलंभ-त्तणतो विसुद्धं ति भणितं तस्सेवाऽऽवरणवज्जमाणस्सऽभावत्तणतो पुव्ववद्धस्स य अणुदयत्तणतो वित्तिमिरतरागं—ति 5 भण्णति । अहवा दो वि एते एगद्विया पदा । मणपज्जवनाणस्स सेसं कंठं ॥ इदाणिं केवलनाणं भण्णति, मण-पज्जवनाणाणंतरं सुत्तकमुद्धित्तणतो विसुद्धिलाभुत्तमयो य केवलं भण्णति—

३३. से किं तं केवलनाणं ? केवलनाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा—भवत्थकेवलनाणं च सिद्धकेवलनाणं च

३३. से किं तं केवलेत्यादि सूत्रम् । केवलनाणमभेदे वि भेदो भव-सिद्धावत्यादिर्हि अणेगधा इमो 10 कज्जति—मणुस्सभवद्वितस्स जं केवलनाणं तं भवत्थकेवलनाणं । चसदो उस्सणं भेददंसणे । सव्वकम्मविप्पमुक्को सिद्धो, तस्स जं णाणं तं सिद्धकेवलनाणं ॥

३४. से किं तं भवत्थकेवलनाणं ? भवत्थकेवलनाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा—सजो-गिभवत्थकेवलनाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं च ।

३४. मणादितो जोगो, सो य जहासंभवातो, तेण सह जोगेण सजोगी, तस्स जं नाणं तं सजोगिभवत्थ- 15 केवलनाणं । अजोगी—सव्वजोगिनिरुद्धो सइलेसभावद्वितो, तस्स जं णाणं तं अयोगिभवत्थकेवलनाणं ॥

३५. से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ? सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा—पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च, अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च । से तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं । 20

३६. से किं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं ? अजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा—पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च, अहवा चरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च । से तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं ।

३५-३६. पढमसमयो—केवलनाणुप्पत्तिसमयो चैव, अपढमो वित्तियादिसमयो—जाव सजोगित्तस्स चरिमसम- 25 एत्यर्थः । अहवा एस्सेवऽत्थो समयविकप्पेण अण्णहा दंसिज्जति—सजोगिकालचरिमसमए चरिमो चि—पच्छिमो, ततो परं अयोगी भविप्यतीत्यर्थः । अचरिमो चि—चरिमो न भवति, चरिमस्स आदिसमयातो आरव्व ओमत्थगं जाव पढमसमयो ताव अचरिमसमया भण्णति, एतेसु जं णाणं तं अचरिमसमयभवत्थकेवलनाणं । सेसं कंठं ॥

३७ से त कि सिद्धकेवलणाण ? सिद्धकेवलणाणं दुविहं पण्णात्तं, त जहा-अणतरसिद्ध-केवलणाणं च परपरसिद्धकेवलणाणं च ।

३७ से किं त सिद्धकेवलणाणेत्यादि सूत्रम् । तस्य सिद्धकेवलणाणं दुविह-अणतर परपर । तस्य अणतराणो समयतर पत्त, सिद्धत्वमथमसमयवर्तिन इत्यर्थ ॥

३८ से किं त अणतरसिद्धकेवलणाण ? अणतरसिद्धकेवलणाणं पण्णासविह पण्णात्तं, त जहा-तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थिलिंगसिद्धा ८ पुरिसिलिंगसिद्धा ९ णपुसगलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अण्णलिंगसिद्धा १२ गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५ । से त्त अणतरसिद्धकेवलणाण ।

३८ ते पचदसविधा तित्थसिद्धाऽऽया । 'तित्थसिद्धा' इति जे तित्थे सिद्धा ते तित्थसिद्धा, तित्थ च-चातुवण्णो समणसयो पढमादिगणघरा वा, भणित च आरिसे-“तित्थ भते ! तित्थ ? [जे० १९६ द्वि०] अरहादि तित्थ ? गोतमा ! अरहा ताव तित्थरुरे, तित्थ पुण चातुवण्णो समणसयो” [मग श २० उ० ८ सू ६८२] तम्मि तित्थकालभावे उप्पणे ततो वा तित्थकालभावातो जे सिद्धा ते तित्थसिद्धा १ । अतित्थ-चातुवण्णसघस्स अभावो तित्थकालभावस्स वा अभावो । तम्मि अतित्थकालभावे अतित्थकालभावातो वा जे सिद्धा ते अतित्थसिद्धा । त च अतित्थ तित्थतरे तित्थे वा अणुप्पणे जहा मरुदेविसामिणिप्पमितयो २ । रिसमादयो तित्थकरा, ते जम्हा तित्थकराणामक्खमुदयभावे द्विता तित्थकरभावातो वा सिद्धा तम्हा ते तित्थकरसिद्धा ३ । अतित्थकरा सामण्णकेवलणो गोतमादि, तम्मि अतित्थकरभावे द्विता अतित्थकरभावातो वा सिद्धा अतित्थकरसिद्धा ४ । स्वयमेव बुद्धा स्वय बुद्धा, सत्त अप्पणिज्ज वा जाइसरणादि कारण पडुच्च बुद्धा सतबुद्धा । स्फुटतरमुच्यते-वाङ्मपत्ययमन्तरेण ये प्रतिबुद्धास्ते सयबुद्धा । ते य दुविहा-तित्थगरा तित्थगरवतिरिचा वा । इह वरिचेहि अधिकारो । किंच-स्वयबुद्धस्स वारसविहो वि उवही भवति, पुच्चाधीत से सुत्त भवति वा ण वा । जति से नत्थि तो लिंग नियमा गुरुसण्णिहे पडिवज्जइ, गच्छे य विहरति । अह पुच्चाधीतसुत्तसभवो अत्थि तो से लिंग देवता पयच्छति, गुरुसण्णिहे वा पडिवज्जति । जइ य एगविहारविहरणजोगो, इच्छा व से तो एको चेव विहरति, अण्णहा गच्छे विहरतीत्यर्थ । एताम्मि भावे द्विता सिद्धा एतातो वा भावातो सिद्धा सयबुद्धसिद्धा ५ । 'पत्तेयबुद्धा' पत्तेय-वाङ्म वृषभादि कारणम भिसमीक्ष्य बुद्धा मत्तेयबुद्धा । वहि मत्तेयमतिबुद्धाना च पत्तेय नियमा विधौरो जम्हा तम्हा य ते पत्तेयबुद्धा, जहा करकंडुमादयो । किंच-पत्तेयबुद्धाण जहण्णेण दुविहो उक्कोसेण णवविधो उवही नियमा पाउरणवज्जो भवति । किंच-पत्तेयबुद्धाण पुच्चाधीत सुत्त नियमा भवति, जहण्णेण एकारसगा, उक्कोसेण मिण्णदसपुच्चा । लिंग च से दयता पयच्छति, ण्णिवज्जितो वा भवति । जतो [जे० १९७ प्र०] भणित-“रूप पत्तेयबुद्धा” [आव गा ११३९] इति । एताम्मि भावे एतातो वा सिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ । बुद्धबोधिता-जे सतबुद्धेहि तित्थकरादिएहि बोहिता, पत्तेयबुद्धेहि वा क्विळादिएहि बोधिता ते बुद्धवाधिता । अहवा बुद्धबोधिएहि बोधिता बुद्धबोधिता, एव सुहम्मा

३९ दिएहि जवुणामादयो भवति । अहवा बुद्ध इति-प्रतिबुद्धा, तेहि प्रतिबोधिता बुद्धबोधिता, प्रभवदिभिराचार्ये ।

एतभावे द्विता एतातो वा सिद्धा बुद्धबोधितसिद्धा ७ । 'सल्लिंगसिद्धा' द्बल्लिंगं प्रति रजोहरण-मुहपोत्ति-पडिग्गह-  
धारणं सल्लिंगं, एतम्मि द्बल्लिंगे द्विता एतातो वा सिद्धा सल्लिंगसिद्धा ८ । 'अणल्लिंगसिद्धा' तावस-परिवाय-  
गादित्रकल-कासायमादिद्बल्लिंगद्विता सिद्धा अणल्लिंगसिद्धा ९ । एवं गिहिल्लिंगे वि-केसादिअलंकरणादिए द्बल्लि-  
ल्लिंगे द्विता सिद्धा गिहिल्लिंगसिद्धा १० । इत्थिल्लिंगं ति-इत्थीए ल्लिंगं इत्थिल्लिंगं, इत्थीए उवल्लक्खणं ति वुत्तं  
भवति । तं तिविहं-वेदो सररीरनिव्वत्ती णेवच्छं च, इह सररीरनिव्वत्तीए अधिकारो, ण वेद-णेवच्छेहिं । तत्थ वेदे 5  
कारणं-जम्हा खीणवेदो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तातो उक्कोसेण देहणपुव्वकोडीतो सिज्जति, णेवच्छस्स य अणियत्त-  
त्तणतो, तम्हा ण तेहिं अहिकारो । सररीराकारणिव्वत्ती पुण णियमा वेदुदयातो णामकम्म्युदयाओ य भवति तम्मि  
सररीरनिव्वत्तिल्लिंगे ठिता सिद्धा तातो वा सिद्धा इत्थिल्लिंगसिद्धा ११ । एवं पुरिस-णपुंसकल्लिंगा वि भाणितव्वा  
१२-१३ । एकसिद्धं त्ति-एकम्मि समए एक्को चेव सिद्धो १४ । अणेगसिद्धं त्ति-एकम्मि समए अणेगे सिद्धा,  
दुगादि जाव अट्टसतं ति । भाणितं च—

10

वत्तीसा अडयाला सट्ठी वावत्तीरी य बोधव्वा । चुलसीती छण्णउती दुरहित अट्टत्तरसतं च ॥१॥१५॥

[ वृहत्स. गा. ३३३ ]

चोदक आह-णणु एते पण्णरस भेदो छभेदद्विताअण्णोण्णनिरवेक्खा ण भवन्ति कं पंचदसभेदं त्ति पण्णत्ता ?  
आचार्य आह-णणु तित्थाऽतित्थपुरिसवि[जे० १९७ द्वि०] भागुप्यणा-ऽणुप्यणकालभेदतो वा दो भेदा परोप्य-  
रविरुद्धा १, तथा तित्थगरणामकम्म्युदयातो अभावतो य दो भेदा परोप्यरविरुद्धा २, तथा ल्लिंगादिया द्बल्लिंग- 15  
पडियत्तिभेदा परोप्यरविरुद्धा ३, तथा मोहुत्तरपगाडिवेदभेदोदयतो त्थिमादिसरीरल्लिंगणिव्वत्ती परोप्यरविरुद्धा ४,  
एगा-ऽणेगा वि एककालसहचरिता-ऽचरितत्तणतो भिण्णा ५, सयंबुद्धादयो वि णाणावरणक्खओवसमविसेसपडि-  
बोधविसेसत्तणतो प्रतिविसिट्ठा ६, एवं तित्थादियाण अण्णोण्णलक्खणसभावद्विताणं पंचदस भेदा पण्णत्ता, किंच-  
जहा मतिण्णाणे गैच्चादियाण चरिमपज्जवसाणाणं अण्णोण्णाणुंवेधत्तणे वि भेदो इहं पि जइ तथा तो को दोसो १,  
किंच-नाणाणयाभिप्पायत्तणतो सुत्तस्स य अणेगगम-पज्जायत्तणतो अभिधाणभेदत्तणतो य पंचदसभेदकरणं ति ण 20  
दोसो ॥ इदंणि तं चेव सिद्धकेवलगाणं समतभेदतो अणेगधा विसेसिज्जति—

20

३९. से किं तं परंपरसिद्धकेवलगाणं ? परंपरसिद्धकेवलगाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तं  
जहा-अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव दससमयसिद्धा  
संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, से तं परंपरसिद्धकेवलगाणं ।  
से तं सिद्धकेवलगाणं ।

25

३९. पढमसमयसिद्धस्स जो वित्तियसमयसिद्धो सो परो, तस्स वि य अण्णो, एवं परंपरसिद्धकेवलगाणं  
भाणितव्वं । तं च 'अपढमसमय' इत्यादि । नास्य प्रथमः समयो विद्यत इत्यप्रथमः, द्वितीयसमयसिद्ध इत्यर्थः,  
स च परंपरसिद्धविसेसणस्स प्रथमः, तस्स परतो वित्तियादिसमया भाणितव्वा ॥

१ भेदा विभेदं आ० दा० । अत्रेदमवधेयम्-श्रीमद्धिर्हरिभद्रपादै मलयगिरिचरणेश्व स्वस्वकृतौ तीर्थसिद्धा-ऽतीर्थसिद्धरूपमे-  
दद्यान्त पद्मदशमेदान्तर्भाव सद्बुद्धयं चालना-प्रत्यवस्थाने उपन्यस्ते स्त' तदनुसारी पाठभेदोऽपि चूपर्यादगुं दृश्यते । किञ्च-चूर्णी-  
सत्कञ्चोर्नतने आदर्शं पद्मदान्त पद्मदशमेदान्तर्भावावेदकं छम्भेदद्विता० इत्यादि पाठो वरीवृत्त्यते, आचार्यप्रतिविधानमपि पडिबभागा-  
वेदकनेर नियते इत्यस्माभिः छम्भेदद्विता० इति पाठ एव सूत्रे आहतोऽस्ति । अत्रार्थे तद्विद एव प्रमाणमिति ॥ २ गलादिकाना  
चरमपयवमानानाम् " गइ इदिए य० " तथा " भासण परित्त० " इति आचर्यकनियुक्तिगाथा १४-१५ निर्दिष्टाना द्वाराणांम् इत्यर्थः ॥  
३ 'णुवेवन्तंताण वि आ० दा० ॥ ४-५-६-७ 'सिद्धकेवलगाणं ल० ॥ ८ 'समयो तम्मि सिद्धो आ० दा० ॥

४० त समासओ चउव्विह पणत्त, त जहा-दंभवओ खेत्तओ कालओ भावओ ।  
 तंत्य दंभवओ ण केवलणाणी सब्बदंवाइ जाणइ पासइ । खेत्तओ ण केवलणाणी  
 सब्ब खेत्त जाणइ पासइ । कालओ ण केवलणाणी सब्ब काल जाणइ पासइ ।  
 भावओ ण केवलणाणी सब्बे भावे जाणइ पासइ ।

५ ४० त सब्ब पि चतुव्विह दंवादिय । 'सब्बदंभव' ति धम्मा ऽधम्मा ऽग्गासातयो, तेहिंतो जीवदंवा  
 अणतगुणा, तेहिंतो वि पुग्गलदंवा अणतगुणा, एते सब्बे सरूवतो जाणति । खेत्त पि लोगा ऽलोगभेदभिण्णम  
 णत्त सरूवतो जाणति । काल पि समया ऽऽलियादिय तीयमणागतसब्बद वा सरूवतो सब्ब जाणति । भावा  
 वि दुविधा भावा-जीवभावा अजीवभावा य । तत्त जीवभावा कम्मदुदयसत्तपरिणामितलक्खणा गति-कसाया  
 दिया कम्मदुदयलक्खणा अणेगविधा, उवसमा[जे० १९८ प्र०]-खय-खयोवसमजीवसत्तलक्खणा अणेगविहा,  
 10 पारिणामिता य जीव भव्वा ऽध्वत्तादिया, अजीवाऽमुत्तदंवेसु धम्मा ऽधम्मा ऽग्गासा गति द्विति-अवगाहलक्खणा,  
 अगुरुलहुगा य अणता, पुग्गलदंवा य सुहुम-वाद्दर विस्ससापरिणता अर्म्मिदधणुमादिया अणेगविधा । परमाणुं  
 मादीण य षण्णादिपज्जवा एगादिया अणता । एते दंवादिया सब्बे सब्बधा सब्बत्थ सब्बकाल उवयुत्तो सागारा  
 ऽग्गागारलक्खणेहिं णाण-दसणेहिं जाणति पासति य । एत्थ केवलणाण-दसणोवयोगेहिं बहुधा समयसंभाव  
 आयुद्धीए पक्खेता इम भणति—

15 केयी भणति जुगव जाणइ पासति य केवली नियमा ।  
 अण्णे एगतारिय इच्छति सुतोवदेसेण ॥ १ ॥  
 अण्णे ण चेव वीसु दसणामिच्छति जिणवरिंदस्स ।  
 ज चिय केवलनाण त चिय से दसण भेति ॥ २ ॥ [विशेषण गा १५३ ५४]

तत्त जे ते भणति 'जुगव जाणति पासति य' ते इम उववत्ति उवदिसति—

20 ज केवलाइं सादी-अपज्जवसिताइ दो वि भणिताइं ।  
 तो भेति केइ जुगव जाणति पासति य सब्बणू ॥ ३ ॥

किंच—

इहराऽऽयी णिहणत्त मिच्छाऽऽवरणक्खयो त्ति व जिणस्स ।  
 इतरतरावरणया अहवा णिक्कारणावरण ॥ ४ ॥

25 तह य असब्बणुत्त असब्बदरिसित्तणप्पसगो य ।  
 एगतरोचयोगे जिणस्स दोसा बहुविधीता ॥ ५ ॥ [विशेषण गा १९३ १९५]

एव परेण बहुधा भणिते आगमवादी उत्तर इम आह—

भण्णति, भिण्णमुत्तोवयोगकाले वि तो तिनाणिस्स ।

मिच्छा छावही सागरोचमाइ त्वयोवसमो ॥ ६ ॥ [विशेषण गा २०२]

१ दय्यमो ४ । दय्यमो स० ॥ २ तत्त इति व सं० स० सु० नास्ति ॥ ३ व्याप्तिं जां सु० ॥ ४ सब्बभावे  
 थ० ॥ ५ शु दुमणुगादीण आ० दा० ॥

जहा छउमत्थस्स मति-सुता-उवधिणाणेसु अंतसुहुत्तकालोवयोगसंभवे उवयोगा-उण्वयं  
से ठितिकालो दिट्ठो, तहा जति जिणस्स गाण-दंसणा सादिअपज्जवसाणा उवयोगा-उण्व  
दोसो ? । जति एतं ते गाणुमत्तं तां इमं ते कइं अणुमत्तं भविस्सइ ?—

अहं ण वि एतं तो सुण, जहेव खीणंतराइओ अरहा ।  
संते वि अंतरायक्कवयम्मि पंचप्पगारम्मि ॥ ७ ॥

सततं ण देइ [ जे०?०:८ दि० ] लभइ व भुंजइ उवभुंजइ य म  
कज्जम्मि देइ लभइ व भुंजइ व तहेव इहयं पि ॥ ८ ॥

किंच—

दिंतस्म लभंतस्म व भुंजंतस्म व जिणस्स एसु गुणो ।  
खीणंतराइयत्ते जं से चिग्रं ण संभवति ॥ ९ ॥

उवउत्तस्सेमेव य गाणम्मि व दंसणम्मि व जिणस्म ।  
खीणावरणगुणोऽयं, जं कमिणं सुणइ पासनि वा ॥ १० ॥

पुणो पर आह—

पासंतो वि न जाणइ, जाणं व ण पामती जति जिणंदो ।  
एवं ण कदाइ वि सो मच्चणू मच्चदरिसी य ॥ ११ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

जुगवमजाणंतो वि वृ चतुद्धिं वि नाणेद्धिं जह चतुण्णाणी ।  
भण्णइ, तहेव अरहा मच्चणू मच्चदरिसी य ॥ १२ ॥

पर एवाऽऽह—

तुल्ले उभयावरणक्कवयम्मि पुच्चयग्गमुच्चयो कस्म ।  
दुविधुवयोगाभावे जिणस्स जुगवं? नि चोदंति ॥ १३ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

भण्णति, ण एम निग्रयो जुगवुप्पणोसु जुगवमेवेह ।  
होयच्चं उवओणेण, एत्थ सुण ताव दिट्ठं ॥ १४ ॥  
जह जुगवुप्पत्तीय वि सुत्तं मम्मत्त-मनि-सुतादीणं ।  
णत्थि जुगवोवयोगो मच्चंसु तहेव केचग्गिणो ॥ १५ ॥

किंच—

भणितं पि य पण्णती-पण्णवमार्दीसु जह जिणो मम्मयं ।  
जं जाणती ण पामनि तं अणुग्गणायमार्दीणि ॥ १६ ॥ [

जे भणति केवलगाण दसणाण एगत्तं ते इम हेतुजुत्तिं भणति—  
जह किर खीणावरणे देसनाणाण सभवो ण जिणे ।  
उभयावरणातीते तह केवलदसणस्सावि ॥ १७ ॥

एस ते हेतुजुत्ती जहा अत्यसाधण ण ससहइ तहा उत्तर(र) हेतुजुत्तीए चेव भणति—  
देसणाणोघरमे जह केवलनाणसभवो भणितो ।  
देसहसणविगमे तह केवलदसण हौतु ॥ १८ ॥  
अह देसनाण-दसणविगमे तव केवल मत नाण ।  
ण मत केवलदसणमिच्छामेत्त णणु तवेद ॥ १९ ॥ [ विशेषण गा १५५-५७ ]

किंच—

भण्णति जहोहिणाणी जाणति पासति य भासित सुत्ते ।  
ण य णाम ओत्तिदसण नाणेगत्त तह इम पि ॥ २० ॥ [ विशेषण गा १७८ ]

एर पराभिप्पाये पडिसिद्धे एगतरोगयोगता सिद्धा तह विम भणति—  
जह पासतु तह पासतु, पासति सो जेण दसण त से ।  
जाणइ य जेण अरहा त से णाण ति घेत्तव्व ॥ २१ ॥ [ विशेषण गा १९२ ]

किंच-सिद्धधिरारे एगंतरो[जे० १९९ प्र०]वयोगदसिगा इमा फुडा गाहा—  
नाणम्मि दसणम्मि य त्तो एगतरयम्मि उवउत्ता ।  
सञ्चस्स केवलिस्सा जुगव दो णत्थि उवयोगा ॥ २२ ॥ [ विशेषण गा २२९ ]

किंच भगवतीए—

उवयोगो एगतरोगे पणुवीसतिमे सत्ते सिणायस्स ।  
भणितो विगडत्थो चिय छट्टुद्देसे विसेसेतु ॥ २३ ॥ [ विशेषण गा २३२ ]

किंच—

कस्स व णाणुमतमिण जिणस्स जति होज्ज दो वि उवयोगा ।  
णूण ण होति जुगव जतो णिसिद्धा सुत्ते बहूसो ॥ २४ ॥ [ विशेषण गा २४६ ]

४१ अह सब्बदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणत्त ।  
सासयमप्यडिवाती एगविह केवल णाण ॥ ५४ ॥  
केवलणाणेणस्ये णाउ जे तत्थ पणवणजोगे ।  
ते भासइ तित्थयरो, वंइजोग तय हवइ सेस ॥ ५५ ॥  
से त्त केवलणाण । से<sup>१</sup> त्त पञ्चखणाण ।

१ वरजोग सुय ददइ तर्हि इत्यं पाठः श्रुतिस्मृत्यां पाठान्तरत्वेन निर्दिशेत्सि । तथाहि- अन्ये त्वेव पठन्ति-‘वरजोग सुय ददइ तर्हि’ स वायोगे धुा भवति तत्रां धातुगाम् । इति हारि० घृत्तौ । ‘अये त्वेनं पठन्ति-‘वरजोग सुयं ददइ तर्हि’ तत्रायमप-उतौ धातुनां भावधुनकारणत्वात् न वायोगे धुते भवति, धुतमिति व्यवहृत्ये इत्यर्थः ।’ इति मलयगिर्या ॥ २ अवे घृ० ॥ ३ अत्र पूर्वा-श्रुतिस्मृतौ से त्त पञ्चखण इत्येव पाठः उन्मत्तः । नोपलब्धोऽय कस्याचिदपि प्रती ॥



४१. अहं सव्वदव्वं गाहा । केवलनाणेणं गाहा । एताओ जहा पेडियाए ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ सेसं कंठं ॥ इदाणिं कमागतं बहुवत्तव्वं पारोक्खं भण्णाति —

४२. से<sup>१</sup> किं तं परोक्खणाणं ? परोक्खणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आभिणिबोहियणाणपरोक्खं च सुयणाणपरोक्खं च ।

४२. अक्खस्स इंदिय-मणा परा, तेसु जं णाणं तं परोक्खं । मति-श्रुते परोक्षमात्मनः, परनिमित्तत्वात्, 5 अनुमानवत् । णणु सुत्ते इंदियपक्खं भणितं ? उच्यते—सच्चमिणं, एत्थं जं इंदिय-मणेहिं वहिंलिगपच्चयमुप्यज्जति तमेगंतेणेव इंदियाण अत्तणो य परोक्खं, अणुमाणत्तणतो, धूमाओ अग्गिणाणं व । जं पुण सक्खा इंदिय-मणो-निमित्तं तं तेसिं चैव पक्खं, अलिगत्तणतो, अत्तणो अवधिमादि व्व, अत्तणो तु तं एगंतेणेव परोक्खं । इंदियाणं पि तं संववहारतो पक्खं, ण परमत्थतो । कम्हा ? जम्हा दंविदिया अचेत्तणा इति । तं दुविहं—मतिणाणं सुतनाणं च । इह मति-सुताणसुवण्णासकमे कारणं पुव्वुत्तं दद्वव्वं ॥ मति-सुताण य अभेदसामिणिरुवणत्थं इमं सुत्तं— 10

४३. जंत्थाऽऽभिणिबोहियणाणं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुयणाणं तंत्थाऽऽभिणिबोहियणाणं । दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं तह वि पुण एंत्थाऽऽयरिया णाणत्तं पण्णवेत्ति—अभिणिबुज्झइ ति आभिणिबोहियं, सुणतीति सुतं ।

“ मतिपुव्वयं सुयं, ण मती सुतपुव्विया । ”

४३. जत्थ मतिनाणेत्थादि । ‘जत्थ’ ति पुरिसे जत्थ व इंदिय-नोइंदियखयोवसमे मतिणाणमत्थि 15 तत्थेव सुतनाणं पि । अहवा जत्थाभिनिबोधियसखं तत्थेव सुतं पि नियमा, अण्णोण्णाणुगता भवंतेते । आह—मति-सुताणं अण्णोण्णाणुगतत्तणतो सामि-काल-कारण[जे० १९९ द्वि० ]-खयोवसमतुल्लत्तणतो य एगत्तं पावति, णो दुगपरिक्कपणं ति, अत्रोच्यते, मति-सुताणं अण्णोण्णाणुगताण वि आयरिया भेदमाह दिट्ठंतसामत्थतो, जहा आगासपइट्ठिताणं धम्मा-ऽधम्माण अण्णोण्णाणुगताणं लक्खणभेदा भेदो दिट्ठो तहा मति-सुताण वि सामि-काला-दिअभेदे वि भेदो भण्णाति—अभिणिबुज्झतीत्यादि । एवं लक्खणो-ऽभिधाणभेदा भेदो तेसिं । अहवा इमो 20 मति-सुताविसेसो—“मतिपुव्वयं सुतं, ण मती सुतपुव्विया ” इति, जतो सुतस्स मतिरेव पुव्वं कारणं । क्हं ? उच्यते—मतीए सुतं पाविज्जति, ण मतिमंतरेण प्रापयित्तुं शक्यते, गहितं च मतीए पालिज्जति, परिवत्तयतो णो पणस्सइ ति” जतो, मतिरेवं सुतपुव्वा ण भवति । णणु सुतं पि सोत्तुं मती भवति ? उच्यते—तं दव्वसुत्तं, न भावश्रुतादित्यर्थः । अहवा मति-सुताण भेदकतो विसेसो, मतिणाणं अट्टावीसइभेदभिण्णं, सुतणाणं पुण अंगा-ऽ-

१ चूर्णि-वृत्तिकृता से किं तं परोक्खं ? परोक्खं दुविहं इति पाठोऽत्र मम्मत्, परोक्षज्ञानोपसहारेऽपि तं से चं परोक्खं त्वेव पाठं स्वीकृतोऽस्ति किञ्च सर्वेष्वपि सूत्रादशेषु उभयत्रापि परोक्खणाणं इत्येव पाठ उपलभ्यते ॥ २ चूर्णि-वृत्तिकृद्धि किल जत्थ मतिनाणं तत्थ सुतनाणं, जत्थ सुतनाणं तत्थ मतिनाणं इतिरूपं सूत्रं मौलभावेनाङ्गीकृतमस्ति । किञ्च—श्रीचूर्णिकृदादिभि मौलभावेनाङ्गीकृतमेतद् जत्थ मतिनाणं इत्यादि सूत्रं साम्प्रतीनंप्यादशेषु नोपलभ्यते । अपि च चूर्ण्यवलोकेनेतदपि जायते यत् चूर्ण-लुप्तमयभाविप्यादशेषु पाठभेदयुगलमप्यासीदिति ॥ ३ तत्थ आभिं ए० स० ॥ ४ इत्थ आर्यं मो० सु० ॥ ५ पण्णवन्ति शु० । पण्णवन्ति डे० ल० । पण्णवयन्ति मो० सु० ॥ ६ अभिणिबोज्झतीति ख० । अभिणिबुज्झतीति स० शु० । अभिणिबुज्झइइ ल० ॥ ७ इंदियं णाणं, सुं ए० ल० विना ॥ ८ सुणेइ ति मो० सु० ॥ ९ पुव्वं जेण सुयं व० डे० । चूर्णां वृत्त्योश्च जेण इति ए० नास्ति । पुव्वं सुयं ए० डे० विना ॥ १० ण-विघाणं टा० ॥ ११ च्चि, जतो मतिमेव सुतं पवण्णो भवति आ० ॥

गगाइभेदमिष्ण अणेगहा । अहवा मति-सुताण इदियोवलद्धिविभागतो भेदो इमो-सोतिंदियोवलद्धी० गाहा [ विश्वा गा १२२ ] पूर्ववद् व्याख्येया । अहवा मति-सुतभेद मणति—बुद्धीदिट्ठे० गाहा । [ विशेषा गा १०८ ] एतीए गाहाए अत्यो मति-सुतविसेसो य जहा विसेसावस्सणे तहा भाणितच्चो । अण्णे वागसम मतिणाण सुवसम च सुतणाण मणति त च ण घडति, जम्हा वाग-सुवदिट्ठेण मइनाणस्सेव सुत परिणामो दसिज्जति, तेम्हा त ण जुज्जते इत्यथ । अहवण्णो मति-सुतभेदो—अक्कराणुगत सुत, अणक्खर मतिनाण ति । अहवाऽऽत्ममत्यायक मतिणाण, स्व-परमत्यायक सुतनाण । अहवा मति सुताण आवरणभेदातो [ जे० २०० प्र० ] भेदो दिट्ठो । तक्खतो वसमविसेसातो चैव मति-सुताण भेदो भवति ॥ मणितो मति-सुतविसेसो । इदाणि जहा मति सुतणाणाण कज्ज कारणभेदेहि भेदो दिट्ठो तहा मतीए सुतस्स य सम्म मिच्छंविसेसो दसणपरिगहातो भवइ ति अतो सुत्त मणति—

४४ अविसेसिया मती मतिणाण च मतिअण्णाण च । विसेसियां मती सम्मदिट्ठिस्स

१० मती मतिणाण, मिच्छादिट्ठिस्स मती मतिअण्णाण । अविसेसिय सुय सुयणाण च सुय-अण्णाण च । विसेसिय सुय सम्मदिट्ठिस्स सुय सुयणाण, मिच्छदिट्ठिस्स सुय सुयअण्णाण ।

४४ अविसेसिता मतीत्यादि । सामिणा अविसेसिता मती इम वत्तव्वा—आभिणिबोधिकेत्यादि ।

चसदो समुचये । विसेसिता मतीत्यादि । जता पुण इमेण सामिणा विसेसिता मती भवति तदा इम वत्तव्वा—सम्मदिट्ठिस्स मतीत्यादि सूत्रसिद्ध । अविसेसित सुतमित्यादि एत पि उवउज्जिउ एव चैव वत्तव्व । अहवा जाव

१५ विसेसणेण अविसेसिता मती ताव मती चैव वत्तव्वा । सच्चैव मती णाण ऽण्णाणसद्विसेसणातो इम वत्तव्वा—आभिनिबोधिकेत्यादि सूत्रसिद्ध । णाण ऽण्णाणसद्विसेसण कह ? मणति—सम्मत्त मिच्छसामिणुत्तणतो सम्मदिट्ठिस्स मतीत्यादि सुत्तसिद्ध । सुते वि एव चैव वत्तव्व । पर आह—तुल्लुखयोवसमत्तणतो घडाइवत्थूण य सम्मपरिच्छेदत्तणतो सदादिविसयाण य समुवल्लमातो कह मिच्छदिट्ठिस्स मति-सुता अण्णाण ति मणिता ? उच्यते—

सदसद्विसेसणातो भवहेतु जतिच्छित्तोवल्लमातो । नाणफलाभावातो मिच्छदिट्ठिस्स अण्णाण ॥१॥

२० मतिपुच्च सुत्त ति काहु मतिणाण चैव पुच्च मणामि—

४५ से किं त आभिणिबोहियणाण ? आभिणिबोहियणाण दुविह पण्णत्त, त जहा-सुयणिस्सिय च असुयणिस्सिय च ।

४५ से किं त आभिनिबोधिकेत्यादि सुत्त । तस्य 'सुतनिस्सित' ति सुत्त ति—सुत्त, त च सामादियादि

विदुसारपज्जवसाण । एत दव्वसुत्त गहित । त अणुसरतो ज मतिणाणमुप्पज्जति त सुतणिस्साए उप्पण्ण ति सुतातो

२५ वा णिसुत्त त सुतणिस्सित मणति । त च उग्गाहेहा ऽवाय धारणाठित चतुम्भेद । 'अस्सुतनिस्सित व' ति ज पुण दव्व भावसुताणिरवेक्ख आभिणिबोधिकमुप्पज्जति त असुयभावातो समुप्पण्ण ति असुतनिस्सित मणति । त च उप्पत्तियादिसुद्धिचउष ॥ २५—

१ जम्हा ने दा० ॥ २ विसेसदसण आ दा० ॥ ३ अय मूले स्थापित सूत्रपाठः सं० मो० विशेषावदकमलधारीवृत्तौ १५५ पत्र नवीयदगारोदराने उपगम्यत । श्रीहरिभद्रसूरिणापि स्ववृतावयमव सूत्रपाठो व्याख्यातोऽस्ति । विसेसिया सम्मदिट्ठिस्स मती मतिणाण मिच्छादिट्ठिस्स मती मतिअण्णाण । एव अविसेसिय सुय सुयणाण च सुयअण्णाण च । विसेसिय सम्मदिट्ठिस्स सुय सुयणाण मिच्छदिट्ठिस्स सुय सुयअण्णाण । जे० दे० ल सु । अयमेव सूत्रपाठः श्रीमता मलय गिरिणा रीरिता व्याख्यातायस्ति । विसेसिया मती सम्मदिट्ठिस्स मतिणाण मिच्छदिट्ठिस्स मतिअण्णाण । अविसेसिय सुय सुयणाण सुयअण्णाण च । विसेसिय सुय सम्मदिट्ठिस्स सुयणाण, मिच्छदिट्ठिस्स सुयअण्णाण । प० ॥

४६. से किं तं असुयणिसिष्यं ? असुयणिसिष्यं चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—

उपत्तिया १ वेणइया २ कम्मया ३ पाणिमिया ४ ।

बुद्धी चउव्विहा वुत्ता पंचमा नोवल्लभइ ॥ ५६ ॥

पुवं अदिट्ठमसुयमवेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था ।

अव्वाहयफलजोगा बुद्धी उपत्तिया णाम ॥ ५७ ॥

भंरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुंडुग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८ ।

गय ९ घयण १० गोल ११ खंभे १२

खुंडुग १३ मग्गि १४ त्थि १५ पंति १६ पुत्ते १७ ॥ ५८ ॥

भरह सिल १ मिठ २ कुक्कुड ३ वालुय ४ हत्थी ५ [य] अगड ६ वणसंडे ७ ।

पायस ८ अइया ९ पत्ते १० खाडहिला ११ पंच पियरो १२ य ॥ ५९ ॥

महुसित्थ १८ मुद्दि १९ यंके २० य णाणए २१ भिक्खु २२ चेडगणिहाणे २३ ।

सिक्खा २४ य अत्थसत्थे २५ इच्छा य महं २६ सतसहस्से २७ ॥ ६० ॥ १ ।

भरणित्थरणसमत्था तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला ।

उभयोलोगफलवती विणयसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६१ ॥

णिमित्ते १ अत्थसत्थे २ य लेहे ३ गणिए ४ य कूव ५ अस्से ६ य ।

गहम ७ लक्खण ८ गंठी ९ अंगए १० रहिए य गणिया य ११ ॥ ६२ ॥

सीया साडी दीहं च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स १२ ।

निव्वोदएँ १३ य गोणे घोडग पडणं च रुक्खाओ १४ ॥ ६३ ॥ २ ।

उवओगदिट्ठसारा कम्मपसंगपरिघोलणविसाला ।

साहुकारफलवती कम्मसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६४ ॥

हेरणिए १ करिए २ कोलिय ३ डोएँ ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ ।

तुण्णाग ८ वड्ढती ९ पूतिए १० य घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ६५ ॥ ३ ।

१ वेणयिया ल० शु० । वेणत्तिया ल० ॥ २ ५८-५९ गाथे ल० शु० डे० ल० प्रतिपु पूरापरव्यत्यानेन वतते ॥  
३ गंडगा ल० ॥ ४ पय ल० ॥ ५ कुक्कुड ३ तिल ४ वालुय ५ हत्थि ६ अगड ७ टनिल्ल सूत्रपाठ सर्वांस्त्रापि सूत्रप्रतिपूव-  
लभ्यते । आवश्यकनिर्घुक्त्यादावपीत्यम्भूत एव पाठ उपलभ्यते, तथैव च नत्र सर्गपि चूर्णा-वृत्तकृदादिभि व्याख्यातोऽस्मि । निघात्र  
एतत्सूत्रचूर्णानावव्यात्यानाद् मलयगिरिपादवृत्त्यनुगामी पाठो मूढे आहतोऽस्ति ॥ ६ पायस ८ पत्ते ९ अइया १० टति  
पाठानुसारेण मलयगिरिणा व्याख्यातमस्ति, न चोपलभ्यतेऽय पाठ इत्राप्याहर्त्ता ॥ ७ २० पणए २१ भिक्खु २२ य चेडगं  
प्रत्यन्तरे ॥ ८ आसे ल० ॥ ९ अंगए १० गणिया य रहिए य ११ नगंस्त्रपि सूत्रप्रतिपु । आवश्यकनिर्घुक्त्यादावै नदृत्त्यादावै च  
मूलगत एव पाठ उपलभ्यते ॥ १० निव्वोदपण १३ गोणे शु० ॥ ११ डोत्रे सो० सु० ॥

अणुमाण हेउ दिडुतसाहिया वयविवांगपरिणामा ।

हिय णीसेसफलवती बुद्धी परिणामिया णाम ॥ ६६ ॥

अमए १ सेट्टि २ कुमारे ३ देवी (१वे) ४ उदिओदए हवति राया ५ ।

साहू य णदिसेणे ६ घणदत्ते ७ साव(१वि)ग ८ अमच्चे ९ ॥ ६७ ॥

खमए १० अमच्चपुत्ते ११ चाणक्के १२ चेव थूलमहे १३ य ।

णासिकसुदरीनदे १४ वइरे १५ परिणामिया बुद्धी ॥ ६८ ॥

चलणाहण १६ आमहे १७ मणी १८ य सप्पे १९ य स्वग्गि २० थूमि २१ दे २२ ।

परिणामियबुद्धीए एवमादी उदाहरणा ॥ ६९ ॥ ४ ।

से त्त असुयनिस्सिय ।

४६ पुच्च० गाहा । [भरहसिल० गाहा] । भरह० गाहा । मधु० गाहा ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

उप्पत्तिया गता १ । इमा वेणतिया—

भरणि० गाहा । निमित्ते० गाहा । सीता० गाहा ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ विण[जे० २०० दि०]यस  
मृत्या गता २ । इमा कम्मइया—

उवओग० गाहा । हेरणिण० गाहा ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ कम्मइया गता ३ । इमा पारिणामिया—

१५ अणु० गाहा । अभए० गाहा । खमए० गाहा । चलणा० गाहा । एताओ सन्वाओ जहा णमोकारे (आव० नि० गा०  
९३८-५१) तथा दह्ववाओ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ४ । इदार्णि सुतणिस्सित उग्गहाइय सवित्थर मण्णाति—

४७ से किं त सुयणिस्सिय मतिणाण ? सुयणिस्सिय मतिणाण चउव्विह पण्णत्तं,  
त जहा—उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४ ।

४७ इह सामणस्स रूपादिअत्यस्स य विसेसनिरवेक्खवस्स अणिहेसस्स अवग्रहणमवग्रह । तस्सेवऽत्यस्स  
२० विचारणविसेसण्णेसणमीहा । तस्स विसेसणविसिद्धस्सऽत्यस्सं व्यवसातोऽत्राय , तच्चिसेसावर्गतमित्यर्थ । तच्चि  
सेसावगतऽत्यस्स धरण-अविञ्चुती धारणा इत्यथ ॥ तत्थ—

४८ से किं त उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अत्योग्गहे य वजणोग्गहे य ।

४८ ओग्गहो दुविहो—अत्योग्गहो वजणओग्गहो य ॥ एत्थ वजणोग्गहस्स पच्छाणुपुञ्चितो 'अत्यो  
ग्गहातो वा पुच्च वजणओग्गहो भवइ' ति वजणोग्गहमेव पुच्च भणामि—

१ "धिवक्कपरि ख स डे क कु ॥ २ णिस्सेस कु मो सु ॥ ३ खवणे मो ॥ ४ णामबुद्धीए क सु ॥  
५ रूपादिअसेसविसेसनिर आ दा । श्रीमलयगिरिपादस्तु आवइयकवृत्तौ नन्दिवृत्तौ चाय चूर्णिपाठ एवरूप उद्धृतोऽस्ति—  
यदाह चूर्णिइत्— सामन्तस्स रुगादिसेसपरहियस्स अणिहेसस्स अवग्रहणमवग्रह इति । [आव० टीका पत्र २१-२ नन्दिवृत्ति  
पत्र १६८-१] ॥ ६ णविसेसेणेहणमीहा आ दा० ॥ ७ स्स अवसातो आ दा ॥ ८ गम इत्यर्थ ।  
तच्चिसेसावगतस्स धरण आ० दा ॥

४९. से किं तं वंजणोग्गहे ? वंजणोग्गहे चउव्विहे पणत्ते, तं जहा—सोर्त्तिदियवंजणोग्गहे १ घाणेंदियवंजणोग्गहे २ जिब्भिदियवंजणोग्गहे ३ फासेंदियवंजणोग्गहे ४ । से त्तं वंजणोग्गहे ।

४९. वंजणाणं अन्नग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण सहाइपरिणता दव्वा घेत्तव्वा । वंजणे अन्नग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण दव्विदियं घेत्तव्वं । एतेसिं दोण्हं वि समासाणं इमो अत्थो—जेण करणभूतेण अत्थो वंजिज्जइ तं वंजणं, जहा पदीवेण यडो । एवं सहादिपरिणतेहिं दव्वेहिं उव्वकरणिंदियपत्तेहिं चित्तेहिं संबद्धेहिं संपसत्तेहिं जम्हा अत्थो वंजिज्जइ त्तिं तम्हा ते दव्वा वंजणावग्गहो भण्णति । एस वंजणावग्गहो सुत्तसिद्धो चतुव्विहो ॥

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहे ? अत्थोग्गहे छव्विहे पणत्ते, तं जहा—सोइंदिय-अत्थोग्गहे १ चर्क्खिदियअत्थोग्गहे २ घाणिंदियअत्थोग्गहे ३ जिब्भिदियअत्थोग्गहे ४ फासिंदियअत्थोग्गहे ५ णोइंदियअत्थोग्गहे ६ । [२] तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणा-घोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—ओगिण्हणया १ उव्वधारणया २ सवणता ३ अवलंबणता ४ मेहा ५ । से त्तं उग्गहे ।

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहेत्यादि सूत्रम् । अत्थस्स ओग्गहोः अत्थोग्गहो । सो य वंजणावग्गहातो चरिससमयाणंतरं एकसमयं अविसिद्धिंदियत्रिसयं गेण्हतो अत्थावग्गहो भवति । चर्क्खिदियस्स मणसो य वंजणाभावे पढमं चेव जं अविसिद्धमत्थग्गहणं कालयो एगसमयं सो अत्थोग्गहो भाणितव्वो । सव्वो वेस विभागेण छव्विहो दंसिज्जति, ण पुण तस्सोग्गहस्स काले सहादिविसेसंबुद्धी अत्थि । णोइंदियो त्ति—मणो । सो य दव्वमणो भावमणो य । तत्थ मणपज्जत्तिणामकम्मदुयातो जोग्गे मणोदव्वे घेत्तुं मणजोग्ग( ? ग)परिणामिता दव्वा दव्वमणो भण्णति । जीवो पुण मणणपरिणामक्रियावण्णो भावमणो । एस उभयरुव्वो मणदव्वालंबणो जीवस्स नाणवाचारो भावमणो भण्णति । तस्स जो उव्वकरणिंदियदुवारनिरवेक्खो घडाइअत्थसरुव्वचित्तणपरो बोधो उप्पज्जति सो णोइंदिय-त्थावग्गहो भवति ।

[२] घोस त्ति—उदत्तादिया सरविसेसा [ जे० २०१ प्र० ] घोसा भण्णति । वंजणं ति—अभिलावक्खरा । ते इमे एगट्ठिया पंच—ओगिण्हणता इत्यादि । एते ओग्गहसामण्णतो पंच वि णियमा एगट्ठिता । उग्गह-विभागे पुण कज्जमाणे उग्गहविभागंसेण भिण्णत्था भवंति । सो य उग्गहो त्रिविहो—वंजणोग्गहो सामण्णत्थावग्गहो विसेससामण्णत्थावग्गहो य । एगट्ठियाण इमो भिण्णत्थो—वंजणोग्गहस्स पढमसमयपविट्ठोपोग्गलाण गहणता ओगिण्हणता भण्णति, 'उ—प्पावळे' त्ति कातुं १ । त्रितियादिसमयादिसु जात्र वंजणोग्गहो ताव उव्वधारणता भण्णति २ । एगसामइगसामण्णत्थावग्गहकाले सवणता भण्णति ३ । विसेससामण्णत्थावग्गहकाले अवलंबणता

१ चक्खुदिं ख० स० ॥ २ 'घेज्जा मो० सु० ॥ ३ ओगेण्हं मो० सु० ॥ ४ अवघां जे० ॥ ५ अवि सव्विदियं आ० । अविदिसिद्धसव्विदियं दा० ॥ ६ बुद्धिमत्थि जे० ॥ ७ विसेसावग्गहो सामण्णं आ० दा० । हारि० वृत्तो " त्रिविधधावग्रह — सामान्यावग्रह विशेषावग्रहः विशेषसामान्यार्थावग्रहश्च " इति आ० दा० प्रतिगतचूर्णिपाठमेदानुसारि मेदनामत्रय दृश्यते । विः जेसलमेरुदुत्तप्राचीनतमे तात्पत्रीयादर्थे विसेसावग्गहो इति स्थाने वंजणोग्गहो इति पाठो वर्तते । मल्लयगिरिपादरपि नन्विचूत्तो व्यञ्जनावग्रह इति जे० प्रत्यनुसारि नाम निश्चिद्धमस्ति । तथाहि— " इहावग्रहस्त्रिधा, तद्यथा—व्यञ्जनावग्रह सामान्यार्थावग्रह विशेषसामान्यार्थावग्रहश्च । " पत्र १०४-२ ॥ ८ भण्णति, आप्ले आ० दा० ॥

भण्णति ४ । उत्तररत्रिसेसामण्णत्यावग्गहेसु जाव मेरया धावइ ताव मेधा भण्णइ ५ । जत्य वजणावग्गहो नत्थि तत्थ सवणादिया तिण्णि एगद्धिता भवति । आह—णणु भिण्णत्थंदसणे एगद्धित ति विरुद्धं उच्यते, ण विरुद्धं, जतो सब्बविक्रप्पेसु उग्गहस्सेव सख्व दसिज्जति ॥ इदाणि उग्गहसमणतर ईहा—

५१ [१] से किं त ईहा ? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, त जहा—सोतेंदियईहा १ चंक्खिदियईहा २ घाणेंदियईहा ३ जिब्भिदियईहा ४ फासेंदियईहा ५ णोइदियईहा ६ ।

[२] तीसे ण इमे एगद्धिया णाणाघोसा णाणावजणा पच णामधेयां भवति, त जहा—आभोगणया १ मग्गणया २ गवेसणया ३ चिंता ४ वीमसा ५ । से त्त ईहा ।

५१ [१] सा छव्विहा सुत्तसिद्धा ।

[२] इमे तस्सेगद्धिया, ते वि ईहासामण्णतो एगद्धिता चेव, अत्यविक्रप्पणातो पुण भिण्णत्था । इमेण विधिणा—आभोयणता इत्यादि । ओग्गहसमयाणतर सब्भूतविसेसत्याभिमुहमालोयण आभोयणता भण्णति १ । तस्सेव विसेसत्थस्स अण्णय वइरेगधम्मसमालोयण मग्गणा भण्णति २ । तस्सेवऽत्यस्स वइरेगधम्म परिच्चाओ अण्णयधम्मसमालोयण च गवेसणता भण्णति ३ । तस्सेव तद्धम्माणुगतत्थस्स पुणो पुणो समालोयणतेण चिंता भण्णति ४ । तमेवत्थ णिच्चाऽणिच्चादिर्हि दव्व मावेर्हि विमरिसतो वीमसा भण्णति ५ । एव बहुधा अत्यमालोयतस्स उकोसतो अतमुहुत्तकाल सब्बा ईहा भवति ॥ ईहाणतर अवातो—

५२ [१] से किं त अवाए ? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, त जहा—सोइदियावाए १ चंक्खिदियावाए २ घाणेंदियावाए ३ जिब्भिदियावाए ४ फासेंदियावाए ५ णोइदियावाए ।

[२] तस्स ण इमे एगद्धिया णाणाघोसा णाणावजणा पच णामधेयां भवति, त जहा—आउट्टणया १ पच्चाउट्टणया २ अवाए ३ बुद्धी ४ विण्णोणे ५ । से त्त अवाए ।

५२ [१] सो छव्विहो सुत्तसिद्धो ।

[२] तस्सेगद्धिता इमे पच, ते य अवायसामण्णत्तणतो णियमा एगद्धिता चेव, अभिधाणभिण्णत्तणतो पुण भिण्णत्था । [जे० २०१ द्वि०] इमेण विधिणा—आउट्टणता इत्यादि । ईहणभावनियत्तस्स अत्यसख्वपडिवोष बुद्धस्स य परिच्छेदमुपादतस्स आउट्टणता भण्णति १ । ईहणभावनियत्तस्स वि तमत्यमालोयतस्स पुणो पुणो णियट्टण पच्चाउट्टण भण्णति २ । सब्बहा ईहाए अवणयण कातु अवधारणावधारितत्थस्स अवधारयतो अवातो त्ति भण्णइ ३ । पुणो पुणो तमत्यावधारणावधारित बुज्झतो बुद्धी भवइ ४ । तम्मि चेवावधारितमत्थे विसेसे पेक्खतो अवधारयतो य विण्णोणे त्ति भण्णति ५ ॥ अवायाणतर धारणा—

१ त्थत्ताओ एग जा० ॥ २ विधिक जे ॥ ३ च्चक्खुदिं स ॥ ४ धेज्जा मो सु ॥ ५ एहिं ददभावेर्हि जे । विमरणं विमर्षं क्षयोपशमविशेषादेवोर्ध्वं स्पष्टतरावबोधतं सदभूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयवर्मालोचन विमर्षं, नित्याऽनित्यादिद्रव्य-आशालोचनमित्यन्ये । इति हारि कृतौ । तत ऊध्व क्षयोपशमविशेषात् स्पष्टतर सदभूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयवर्मापरित्यागतोऽन्वयवर्षविमर्षान विमर्ष इति मलयगिरिवृत्तौ ॥ ६ यमवाप डे ॥ ७ च्चक्खुदिय स० ॥ ८-९-१०-११-१२ यमवाप डे ॥ १३ धिज्जा मो० सु ॥ १४ आउट्टणया पच्चाउट्टणया स इ हारि मल्ल० वृत्तोऽथ । आउट्टणया पच्चाउट्टणया सं क ॥ १५ विण्णोण क सं ॥

५३. [१] से किं तं धारणा ? धारणा छव्विहा पणत्ता, तं जहा—सोइंदियधारणा १ चर्क्खिदियधारणा २ घाणिदियधारणा ३ जिब्बिदियधारणा ४ फासैदियधारणा ५ णोइंदिय-धारणा ६ । [२] तीसे णं इमे एगट्टिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—धरणा १ धारणा २ ठवणा ३ पतिट्ठा ४ कोट्टे ५ । से तं धारणा ।

५३. [१] सा य छव्विहा सुत्तसिद्धा ।

5

[२] तस्सेगट्टिता पंच । ते य सामणधारणं पडुच्च णियमा एगट्टिया, धारणत्थविकप्पणताए भिणत्था । इमेण विधिणा—धरणा इत्यादि । अत्रायानंतरं तमत्थं अविच्चुतीए जहण्णुकोसेण अंतमुहुत्तं धरेतस्स धरणा भणति १ । तमेव अत्थं अणुवयोगत्तणतो विच्चुतं जहण्णेणं अंतमुहुत्तातो परतो द्विसादिकालत्रिभागेसु संभरतो य धारणा भणति २ । 'ठवण' च्चि ठावणा, सा य अत्रायवधारियमत्थं पुव्वावरमालोइयं हियतम्मि ठावयंतस्स ठवणा भणति, पूर्णघटस्थापनावत् ३ । 'पतिट्ठ' च्चि सो च्चित्त अत्रधारितत्थो हितयम्मि प्रभेदेन पइट्ठातमाणो पतिट्ठा भणति, जले उपलप्रक्षेपपतिट्ठावत् ४ । 'कोट्टे' च्चि जहा कोट्टेगे सालिमादिबीया पक्खित्ता अत्रिणट्ठा धारिज्जंति तथा अवातावधारितमत्थं गुरुवदिद्वं सुत्तमत्थं वा अविणट्ठं धारयतो धारणा कोट्टगसम च्चि कातुं कोट्टे च्चि वत्तव्वा ५ ॥

10

५४. इच्चैतस्स अट्ठावीसतिविहस्स आभिणिबोहियणाणस्स वंजणोग्गहस्स परूवणं करि-  
स्सामि पडिबोहगदिद्वंतेण मल्लगदिद्वंतेण य ।

15

५४. इच्चैतस्सेत्यादि सुत्तं । 'इति' उपप्रदर्शने । 'एतस्स' च्चि जं अतिकंतं अट्ठावीसतिभेदं । ते य के अट्ठावीसं भेदा ? उच्यते—चउव्विहो वंजणावग्गहो, छव्विहो अत्थावग्गहो, छव्विहा ईहा, छव्विहो अवायो, छव्विधा धारणा, एते सव्वे अट्ठावीसं । एत्थ अट्ठावीसविहस्स मज्झातो जो वंजणावग्गहो चउव्विहो तस्स दिद्वंतदुगेण परूवणा ॥

५५. से किं तं पडिबोहगदिद्वंतेणं ? पडिबोहगदिद्वंतेणं से<sup>१</sup> जहाणामए केइं पुरिसे<sup>२</sup>  
कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहेज्जा 'अमुगा ! अमुग !' च्चि, तत्थ य चोयगे पन्नवगं एवं वयासी-  
किं एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? दुसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? जाव  
दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? संखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ?  
असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? । एवं वदंतं चोयगं पणवगे एवं वया-  
सी-णो एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, णो दुसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमा-

25

१ 'धिज्जा मो० सु० ॥ २ त्रिपवाशत्तमसूत्रानन्तर श्रीहरिभद्र-श्रीमलयगिरिभ्या व्याख्यात सर्वेच्चपि सूत्रादर्शेषु एक सूत्र-  
मधिकं वर्तते । तत्रैवम्—उग्गहे एकसामइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिण अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं  
असंखेज्जं वा कालं । पच अट्ठां स० डे० मो० शु० । उग्गहे एकं समयं, ईहा-उवाया मुहुत्तमदं ति, धारणा संखेज्जं  
वा कालं असंखेज्जं वा कालं । पच अट्ठां ल० । उग्गहे एकं समयं, ईहा-उवाया मुहुत्तमेत्त तु । कालमसंखं संखं  
च धारणा होति णायव्वा ॥ १ ॥ पच अट्ठां ल० ॥ ३ पच अट्ठां मवांसु सूत्रातिपु इत्थोश्च ॥ ४ पयस्स अट्ठां आ०  
ग० ॥ ५ से ण जहा मो० ॥ ६ केचि शु० ॥ ७ पचं इति ख० स० नात्ति ॥ ८ चोदगं सं० ॥ ९ वदासी ख० ॥

गच्छति, जाव णो दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छति, णो सखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छति, असखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छति । से त्त पडि- बोहगदिट्ठतेण ।

५५ से जहाणामयेत्यादि । 'से' ति पडिवोधरुस णिहेसे । 'जहाणामये' ति जहाणा [जे०

२०२ प्र०]म, समन्नत आत्माभिधायकृतादित्यर्थः । सव्यण्णुप्पणीयमत्थ तदणुसारि सुत्त वा अप्पबुद्धिविष्णाण-  
त्तणयो अणवगच्छमाणो सीसो पुच्छाचोदणातो चोदको, अहवा तमेव सुत्तमत्थ म 'अयडमाण' ति मण्णमाणो  
त्तदोसचोदयो य चोदगो भण्णति । पवयणमविरुद्ध निदोस सुत्तत्थ पण्णवेतो पण्णवगो, विरुद्ध-पुणरुत्तमुत्त वा  
अत्थतो अविरुद्ध दरिसेतो पण्णवेति जो सो वा पण्णवगो भण्णति, यथावत् सशयच्छेदीत्यर्थ । चोदको ससय-  
मावणो पण्णवग पुच्छति—'किं एगसमयादिपविट्ठा' इत्यादि कठ । एव चोदक पुच्छाभिप्पायण वदत पण्ण-  
१० काऽऽह—'णो एगसमयपविट्ठा' इत्यादि । जो एस पडिसेहो क्तो एस सभाइफुडगिष्णाणजणगेणेण ति णो  
गहणमागच्छति, इहवा पोग्गला गहणमागच्छत्येवेत्यर्थ । एव एगादिसमयपविट्ठपोग्गलापडिसिद्धेइमा अणुष्णा-  
'असखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छति' ति । इमस्स अणुणयोग्गतो अणुयोग्गतो य । तत्थ अणु-  
योगो इमो—जहा पवासी सगिहभेत्तो अट्ठाण पचाहेण दसाहेण वा वीतीवतिचा सगिह पविट्ठो ति, एव असखे-  
ज्जेहि समयेहि आगता पविट्ठा कण्णविलेसु पोग्गला गेण्हति ति, एव अणुणयोगो भवति । इमो अणुणयोग्यो-  
१५ पदमसमयादारम्भ पतिसमय पविसमाणेसु असखेज्जइमे समए जे पविट्ठा ते गहणमागच्छति, ते य सदादिवि-  
ष्णाणजणग ति कात्तु, अतो तेसिं गहणसुत्तदिट्ठ । सो य असखेज्जइसमयो किंपमाणे असखेज्जए भवति ?  
उच्यते—जहणणेण आवलियाए असखेज्जइमाणमेत्तेसु समयेसु गतेसु ति, उकोसेण [जे० २०२ दि०] सखेज्जासु  
आवलियासु आणापाणुकालपुहत्ते वा, उभयथा वि अविरुद्धे ॥ गतो पडिवोधरुद्वितो । इदाणि आवागद्वितो—

५६ [१] से किं त मल्लगदिट्ठतेण ? मल्लगदिट्ठतेण से जहाणामए केइं पुरिसे आवाग-

२० सीसाओ मल्लग गहाय तत्थेग उदगविट्ठु पक्खिवेज्जा से णट्ठे, अण्णे पक्खित्ते से वि णट्ठे,  
एव पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही" से उदगविट्ठु जे ण त मल्लग रवेहिति, होही"  
से उदगविट्ठु जे ण तसि मल्लगसि ठहिति, होही" से उदगविट्ठु जे" ण त मल्लग भैरै-  
हिति, होही से उदगविट्ठु जे" ण त मल्लग पवाहेहिति, एवामेव" पक्खिप्पमाणेहिं पक्खि-  
प्पमाणेहिं अणतेहिं पोग्गलेहिं जाहे त वजण पूरित होति ताहे "हुं," ति करेति णो" चेव

१ गहदथमा" जे ॥ २ आवागद्वितो इति मल्लकथन्तस्य नामान्तरम् ॥ ३ तेष जहा को द्वितो ? से जहा"  
रं ॥ ४ केवि शु ॥ ५ अण्णे वि प सं विना ॥ ६ माणे पक्खिप्पमाणे होही दे ॥ ७-९-११ होहिति सं शु ।  
होहिर ल० दे ॥ ८ रावेहिर सं० ल शु । रवेहिर जे ॥ १० मल्लगे सं० स ॥ १२-१४ जो ण य । अण्ण  
हारिणत्तो ॥ १३ मरेहिति इत्यनन्तरं विशेषावश्यकमहाभाष्यमल्लघातीयटीकाया १४८ पत्र नन्दीपात्रोदरणे होही से उदगविट्ठु जे ण  
तसि मल्लगसि न द्वाहिति इत्यधिक न द्वाहिति सूत्रमुपलभ्यते नोपलभ्यते इदं सूत्रं सर्वास्ति सूत्रप्रतिषु ॥ १५ पवयेथ य । पमेव  
शु ॥ १६ मेव पक्खिप्पमाणेहिं अणतेहिं पोग्ग ल विनामल्लघाती १४८ पत्र नन्दीसूत्रपात्रोदरणे । मेव पक्खिप्पमाणेहिं  
पोग्ग सं । मेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं पोग्ग सं ॥ १७ हों" ति य ॥ १८ ण उण जा सं० ॥



पं जाणति के वेसं सदाइ ? तओ ईहं पविसति तओ जाणइ अमुगे एस सदाइ ? तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ पं धारणं पविसइ तओ पं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

[२] से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं सहं सुणेज्जा तेणं सहे त्ति उग्गहिए, णो चेव पं जाणइ के वेसं सहे त्ति, तओ ईहं अणुपविसइ ततो जाणति अमुगे एस सहे, ततो पं अवायं पविसइ ततो से उवगयं हवति, ततो धारणं पविसइ तओ पं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । →<sup>१३</sup>एवं अव्वत्तं रूवं, अव्वत्तं गंधं, अव्वत्तं रसं, अव्वत्तं फासं पडिसंवेदेज्जा ← ।

[३] से जहानामए केई<sup>१३</sup> पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पडिसंवेदेज्जा, तेणं सुमिणे त्ति उग्गहिए<sup>१०</sup> ण पुण जाणति के<sup>१०</sup> वेसं सुमिणे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणति अमुगे<sup>१०</sup> एस सुमिणे त्ति, ततो अवायं पविसइ ततो से उवगयं हवइ, ततो धारणं पविसइ तओ पं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । से त्तं मल्लगदिद्वुतेणं ।

१ के वि एस मो० सु० ॥ २ सहे त्ति ख० । सह त्ति स० ॥ ३ तओ उवयाणं गच्छति, तओ से उवग्गहो हवइ ख० ॥ ४ गच्छति खं स० शु० ल० ॥ ५ संखेज्जकालं असंखेज्जकालं ल० ॥ ६ केयि शु० ॥ ७ सुणेइ तेणं डे० ल० ॥ ८ सह त्ति ख० शु० । सदा त्ति जे० डे० ल० मो० ॥ ९ सदाइ, तओ ईहं पविसइ सर्वासु सूत्रप्रतिषु हारि० मलय० वृत्त्योश्च ॥ १० गच्छति ख० स० शु० ल० ॥ ११ पडिवज्जेति संखेज्जं ख० स० ॥

१२ → ← एतच्चिह्नमध्यवर्तिसूत्रस्थाने जे० मो० सु० प्रतिषु रूप-गन्ध-रस-स्पर्शविषयाणि चत्वारि सूत्राण्युपलभ्यन्ते । तानि चेमानि—

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, तेणं रूवे त्ति उग्गहिए, नो चेव पं जाणइ के वेसं रूवे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रूवे त्ति, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ पं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा, तेणं गंधे त्ति उग्गहिए, नो चेव पं जाणइ के वेसं गंधे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ पं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा, तेणं रसे त्ति उग्गहिए, नो चेव पं जाणइ के वेसं रसे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ पं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेदेज्जा, तेणं फासे त्ति उग्गहिए, नो चेव पं जाणइ के वेसं फासे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ पं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ॥

१३ केयि शु० ॥ १४ पासिज्जा मो० ल० शु० ॥ १५ सुमिणो त्ति डे० ल० । सुविणो त्ति मलयगिरिटीकायाम् ॥ १६ षे नो चेव पं जां मो० सु० ॥ १७ के वि सुं डे० ल० ॥ १८ गच्छति खं स० शु० ल० ॥ १९ पडिवज्जति न० न० ॥

५६ [१] तस्य आवागसीसग ति[आ]पागट्टाणमेव, अहवा आपागट्टाणस्स आसण्ण समता परिपेत, अहवा आपागट्टारियाण ज ठाण तआपागसीसय भण्णति । 'अणतेहिं' ति प्रथमसमयादारभ्य प्रतिसमय अणता प्रविशतीत्यतो अणता । 'जाहे त वजण पूरित भवति' चि, एतथ वजणग्गहणेण सदाइपुग्गलदव्वा दन्विदिय वा उभयसवधो वा वेतव्व, तिधा वि ण विरोधो । वजण पूरिय ति कह ? उच्यते—जदा पुग्गलदव्वा वजण तदा पूरिय ति पभूता ते पोग्गलदव्वा जाता, स्व प्रमाणमागता सविसयपडिवोधसमत्था जाता इत्यर्थ १ । जदा पुंण दन्विदिय वजण तदा पूरिय ति कह ? उच्यते—जाहे तेहिं पोग्गलेहिं त दन्विदिय आहृत भरित वावित तदा पूरिय ति भण्णति २ । जदा तु उभयसवधो वजण तया पूरिय ति कह ? उच्यते—दन्विदियस्स पुग्गला अगीभावमागता, पुग्गला य दन्विदिए अनुपेक्का, एस उभयभावो, एतम्मि उभयभावे पुग्गलेहिं इदिय पूरित, इदिएण वि सविसयपडिवोधरूपमाणा पुग्गला गहिता, एव उभयसामत्थतो विष्णाणमावो भवतीत्यर्थ ३ । 'हु ति करेइ' ति वजणे पूरिते त अत्य गेण्हइ चि वुत्त भवति । एस एकसमयिओ अत्थावग्गहो । त पुण किंपेगार गेण्हति ? उच्यते—'नो चेव ण जाणति के वि एस सदादी' तक्काले सामण्णमणिहेस, सदादिविसेस ण जाणइ चि वुत्त भवति । किंच—सरूव-णाम जाति-गुण किरिया विकम्पविमुह अनारख्येय गृह्णातीत्यर्थ । एतथ पडिवोधकालतो [जे० २०३ प्र०] पुव्व वजणोग्गहो से भवति । एसा एव वजणोग्गहस्स परूवणा कता । वजणोग्गहस्स परतो 'हु ति करेति' चि एतम्मि पडिवोधकाले एगसमइयो अत्थावग्गहो से भवति, ततो से क्रमेण ईहा उवाय धारणाओ चि । एतथ पडिवोह-मल्लगदिट्ठतेहिं वजणो-  
 15 ग्गहस्स अत्थोग्गहस्स य भिष्णकालता फुड दसिता । पर आह—साधु मे पडिवोध-मल्लगदिट्ठतेहिं वजण उत्यावग्गहाण भेदो दसितो, जागरओ पुण सदाइअत्ये पडुप्पणे ण वजणोग्गहो लक्खिज्जति, जतो पुव्वामेव सदाइअत्यविष्णाणमुप्पज्जते, भणित व मुत्ते 'से जहाणामये केयि पुरिसे'त्यादि । अहवा इमस्स मुत्तस्स इमो सवधो—पर आह—यदुत्त भवता सरूव-णाम-जाति गुण क्रियाविकल्पविमुह अनारख्येय गृह्णातीत्येतद् विरुच्यते, कुत ? यत् सूत्रेऽभिहित—से जहाणामतेत्यादि । अहवा इमो सवधो—प्रसुप्तपतिवोधक-मल्लगदिट्ठतेहिं वजण उत्यावग्गहाण भेदो  
 20 दसितो, इह पुण मुत्ते मल्लगदिट्ठतेणेव वजण उत्यावग्गहाण भेदो दसिज्जति—

[२] 'से जहाणामते' त्यादि । सुत्तुच्चारणसवणाणतरमेव पर आह—एतथ मुत्ते वजण उत्यावग्गहेहा ण लक्खिज्जति, जतो 'अव्वत्त सह मुणेइ' चि भणित, सदमेत्तेऽवधारिते पदमतो अत्राय एव लक्खिज्जति चि । आयरिय आह—ण तुम सुत्ताभिप्पाय जाणसि, णणु अव्वत्तसदसवणातो अत्थावग्गहग्गहण कत, जतो अव्वत्तमणिहेस सामण्ण विकम्परहिय ति भण्णति, तस्स य पुव्व वजणावग्गहेण भवितव्व, जतो एतग्गाहिणो सोतादिइदियस्स अत्थोग्गहो वजणोग्गहमतरेण  
 25 ण भवति चि नियमसो, सो य कालसुहुमत्तणतो उप्पलसतपत्तळेज्जदिट्ठतो ण लक्खिज्जति । चोदक आह—जति एव तो ज मुत्ते भणित "तेण सहे ति ओग्गहिते" त कह ? उच्यते—इहत "तेण सहे ति ओग्गहिते" चि वक्खासूत्रकारोऽभिपत्ते इति करणनिहेसातो सब्बविसेसविमुहं शब्दमात्रमुक्तं [जे० २०३ द्वि०] भवति, णो चेव ण जाणति के वेस सहे ? चि, ण तु शब्दोऽयमित्येव बुध्यते, कम्हा ? उच्यते—एकसमयत्तातो अत्थावग्गहस्स, किंच पण्णवतो य पण्णवगो सववहाराभिप्पायतो "तेण सहे चि ओग्गहिते" चि ब्रूते, ण दोसो । जति वा "सदोऽय"  
 30 मिति बुद्धी भवे तो अवातो चेव भवे, तच्च न, कह ? उच्यते—णो जतो अत्थावग्गहसमयमेत्ते काले "सह" इति

१ पुण उवगरणिदियं मलय नदिइत्तो चूर्णिपाठोद्धरणे ॥ २ आपुण्ण भरित आ० । "आभूत" इति द्वारि० वृत्तौ ॥

३ अभियक्का इत्यर्थं, तदा पूरियं ति भण्णइ इति मलय० नन्दिवृत्तौ चूर्णिपाठोद्धरणे ॥ ४ पत्तार वा ॥ ५ जाति किरिया जे ॥ ६ जतो पत्तग्गाहिणो जे दा ॥

विसेसणाणमत्थि, अह तम्मि वि समए सद्दोऽयमिति बुद्धी हवेज्ज तो फुडं अवाय एव भवेज्ज, णो य त्काले अवातो इच्छिज्जति, जतो अत्यपरिच्छेदो असंखेज्जसमयकालिओ भवइ त्ति । अण्णे पुण आयरिया एतं सुत्तं → विसेसत्थावग्गहे भणंति—‘अव्वत्तं सद्दं सुणेज्ज’ त्ति एस← विसेसत्थावग्गहो, ‘तेण सद्दे ति उग्गहिते’ ति, एतं सुत्तखंडं सामण्णै-सद्दत्थावग्गहदंसगं, क्हं ? उच्यते—जतो भण्णति “णो चेव णं जाणति के वि एस सद्दे” त्ति संख-संग-णालि-करय-लादिको त्ति, एसो वि अवरुद्धो सुत्तथो । ‘ततो’ अत्थावग्गहसमयागंतरं पढमसमयादिस्सु ‘ईहं अणुपविसति’ 5  
‘ईहं’ ति केह संसयं मण्णंते, तं ण भवति, संसयस्स अण्णाणभावत्तणतो, मतिणाणंसो य ईह त्ति । आह—को पुण संसयेहाण विसेसो ? उच्यते—इह जं थाणु-पुरिसादिअत्येसुं पेहितं चित्तं तदत्थपडिवोहत्तेण पडिहतं सुत्त इव चेतो संसयो भण्णति, तं च अण्णाणं, जं पुण हेतूवत्ति-साधपैहिं संबूतमत्थस्स विसेसधम्माभिमुहालयणं तस्सेवऽत्थ-स्स अयम्मविमुद्दं असम्मोहमविविफलमत्थपरिच्छेदकं चित्तं जं तं ईहा भण्णति । अणु त्ति—अवग्गहातो पच्छाभावे असं-खेज्जसमइयं परिमाणतो ईहोवयोगं अविच्छेयत्तणतो अंतमुहुत्तकालं ईहति, ततो विसिट्टमतिनाणखयोवसमभाव- 10  
त्तणतो अंतमुहुत्तकालभंतर एव जाणति ‘अमुते एस सद्दे’ संख-संगादिए त्ति । दुरववोधत्तणतो पुण अत्थस्स अवि-सिट्टमइण्णाणखयोवसमत्तणतो वा ईहोवयोगअंतमुहुत्तचुतो अणवगतत्थो पुणो वि अण्णं अंतमुहुत्तं ईहति, [जे० २०४ प्र०] [एवं] ईहोवयोगाविच्छेदसंताणतो बहुए वि अंतमुहुत्ते ईहेज्जा, ण दोसो । ततो ईहागंतरं अवातो । सो य सद्दाइअत्थपडुप्पणस्स जे परधम्मा तेसु विमुहस्स सधम्मे य अवधारयतो ‘ण एस संगसद्दो, णिद्ध-मधुर-गंभीरत्तणतो संखसद्दोऽय’मित्येवमवगतत्थो [जहण्णतो] असंखेज्जसमयितो उक्कोसतो णियमा एगतमुहुत्तिओ जो 15  
अववोधो अत्यपरिच्छेदो सो अवातो भवति । ततो अवायागंतरं धारणं पविसइ त्ति । सा य धारणा जहण्णतो असंखेज्जसमते अविच्चुतीए तमत्थं धरेति, उक्कोसतो अंतमुहुत्तं, अणुवयोगतो पुण तमत्थं विस्मृतं पुणो वि संभरइ त्ति धारणा । एवं सा संखेज्जवासाउयाणं मुहुत्त-दिवसादिकालसंखाए संखेज्जं कालं भवेज्ज, असंखेज्जवासाउयाणं पुण असंखेज्जं कालं ।

एवं चक्खिंदिए वि रूवं भाणितव्वं, वंजणोग्गहवज्जं । घाण-रस-फासिंदिएसु वि जहा सोइंदिते तहा सव्वं 20  
भाणितव्वं । ‘संवेदेज्ज’ त्ति एते सद्दादिइंदियत्थे पडुप्पण्णे इंदियं स्वं स्वं इंदियत्थं आयखयोवसमणुरूवं सुमम-सुभं वा वेदेज्जं त्ति । अहवा फरिसिंदियवज्जं सेसिंदिएहिं पत्तमिंदियत्थं प्रायसो इट्टमणिद्वं वा स्वं आत्मानुगतं वेदनं वेदते, न शरीरेण अनुपलभं वा वेदयतीत्यर्थः । फासिंदियमत्थं पुण स्वं अनुगतं शरीरानुगतं च दुहा वि फुडं वेदइ त्ति संवेदेज्ज त्ति अतो भणितं ।

एवं मणसो वि सुविणे सद्दादिविसएसु अवग्गहादयो णेया, अण्णत्थ वा इंदियवावारअभावे मणेमाणस्स 25  
त्ति । इह सुत्तेण निदरिसणं मणे—

[३] से जहाणाभत्तेत्यादि सुत्तं । कंठं । सुविणो मे दिट्ठो त्ति सुविणदिद्वं अव्वत्तं सुमरइ । तच्च प्रतिवो-धप्रथमसमये सुविणमिति संभरतो अत्थावग्गहो, तस्य प्रथमावस्थायां व्यञ्जनावग्रहः, परतो ईहादि । सेसं पूर्ववत् । जगतो अर्णिदियत्थवावारे वि मणसो जुज्जते वंजणावग्गहो, उवयोगस्स असंखेज्जसमयत्तणयो, [जे० २०४ द्वि०] उवयोगद्वाए य प्रतिसमयमणोदव्वग्गहणतो, मणोदव्व्राणं च वंजणववदेसतो समए य असंखेज्जतिमे मनसो नियमा- 30

१ → ← एतद्विधान्त्वर्त्तौ पाठ जे० नास्ति ॥ २ ‘ण्णस्सऽत्था’ आ० दा० ॥ ३ ‘णादिकर’ आ० दा० ॥ ४ ‘सु पविद्वं चित्तं आ० ॥ ५ वेदेज्ज त्ति । पत्ते सद्दाई चक्खुइंदियवज्जं सेसिंदिएहिं आ० दा० ॥ ६ ‘नुपलभं वा आ० दा० ॥ ७ तस्य पूर्वमवस्थां जे० दा० ॥

धर्मग्रहण भवेत् । तस्य च प्रथमसमयार्थप्रतिबोधकालेऽर्थावग्रह, तस्य पूर्वमसख्येयसमयेषु व्यञ्जनावग्रह । शेषमी  
हादि पूर्ववत् । सीसो पुञ्जति-उमाहादीण उ कमातिक्रमे एगतरअभावे वा किं सदादिवत्पुपरिच्छेदो ण भवति ?  
आचार्याह-आम, ण भवति, अत एव च क्रमे नियम, जम्हा णो अगहित ईहति तम्हा पुव्व उग्गहो, जम्हा य  
अणीहित णो अवगच्छति ईहाणतर तम्हा अवायो, जम्हा य अणावात ण धारिज्जति वत्थु अवायाणतर तम्हा  
5 धारणा । जम्हा य एस क्रमनियमो तम्हा सव्वो आभिणिबोधिपणाणावगमो नियमा एव भवति, अत एव च  
कारणा सव्वे अवग्गहादयो मतिनाणभेदा भवतीत्यर्थं ॥

५७ त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तज्जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ ।  
तंत्य दव्वओ ण आभिणिबोहियणाणी आप्सेण सव्वदव्वाइ जाणति ण पासति ? ।  
खेत्तओ ण आभिणिबोहियणाणी आप्सेण सव्व खेत्त जाणइ ण पासइ २ । कालओ ण  
10 आभिणिबोहियणाणी आप्सेण सव्व काल जाणइ न पासइ ३ । भावओ ण आभिणि  
बोहियणाणी आप्सेण सव्वे भावे जाणइ ण पासइ ४ ।

५७ त समासतो चतुव्विहत्यादि सूच । 'त च' मतिनाण स्वयोकसमरूवतो एगविह पि होतु णेयभेद  
त्तणतो नाणाभेदा दव्वादिया से भवति । 'दव्वतो ण' ति दव्वतो वचव्वे 'ण' ति वयणालकारे, देसीवयणतो वा  
'ण' अहवा, अपादानान्ते पञ्चमी विभक्ति', तत्थ पायत्तवयणसेलीतो दव्वतो ण एव आभिनिबोधिपणाणी लभति-  
15 'आदेसेण'मित्यादि, इहाऽऽदेसो नाम-प्रकारो । सो य सामण्णतो विसेसतो य । तत्थ दव्वजातिसामण्णादेसेण  
सव्वदव्वाणि धम्मत्थिकायादियाणि जाणति, विसेसदव्वे वि जहा धम्मत्थिकाये धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थि  
कायस्स पदेसेत्यादि केयी जाणति, सव्वे ण याणति, जहा सुहुमपरिणता अविंसतत्या अप्पण्णवणादिया य । 'ण  
पस्सइ' ति सव्वे सामण्ण विसेसादेसद्वित्ते धम्मादिए, चक्खु-अचक्खुदसणेण रूव-सद्दाइते केयि पासति ति वत्तव्व ।  
अहवाऽऽदेसो-सुत्त, तस्सादेसतो सव्वदव्वे जाणतीत्यादि । चोदक आह-जति सुत्त कइ मतिनाण ? ति, उरुयते-  
20 सुतोव्वल्लद्वमत्थेसु अणुसरतो तन्भावणवुद्धिसामत्थतो [जे० २०५ प्र०] सुतोवयोगाणिरवेक्खा वि मती पवत्तइ  
त्ति ण सुत्तादेसो विरुज्जते ? । खेत्त पि सामण्ण विसेसादेसतो । तत्थ सामण्णतो खेत्तमाणास, त चेग सव्वग

१ दव्वओ ४ । दव्वओ ल ॥ २ तरथ इति पदं ख सं दे० ल० नास्ति खे शु मो सु० विआमलवृत्तौ न-शुद्धरणे  
२३० पत्रे पुनर्वर्तते ॥ ३-४-५ ६ अत्र द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावविषयकेषु चतुर्वर्षि सूत्रांशेषु जाणति पासति इति पाठो जाणति ण  
पासति इति पाठभेदेन सह भगवत्पत्त्या अष्टमशतकद्वितीयोद्देशके ३५६ २ पत्र वत्ते । अत्राभयवैवसरेशीका- दव्वओ ण ति द्रव्यमा-  
धित्य आभिनिबोधिकविषयद्रव्य वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिबोधिकज्ञान तत्र आप्सेण ति आदेश-प्रकार सामान्य विशेषरूपं तत्र च आदे  
सेन ओषतो द्रव्यमात्रतया न तु तद्वत्सर्वविशेषापेक्षयैति भाव अथवा आदेशेन श्रुतपरिकर्मिततया सर्वद्रव्याणि' धर्मास्तिकायावीनि  
जानाति अवाय-धारणापेक्षयाऽवबुध्यते ज्ञानस्यावाय-धारणारूपत्वात् पासइ ति पश्यति अवग्रहेहापेक्षयाऽवबुध्यते अवग्रहेहोर्देशतत्वात् ।

'खेत्तओ ति क्षेत्रपाधित्य आभिनिबोधिकज्ञानविषय क्षेत्र वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिबोधिकज्ञान तत्र आदेसेण' ति भावता  
श्रुतपरिकर्मणया वा सव्व खेत्त ति लोका-ऽलोकरूपम् । एव कालतो भावतश्चति । इदं च सूत्रं नान्द्या इहैव च वाचनान्तरे  
'न पासइ' ति पाठान्तरेणाशीतम् । एव च नन्दिदोकाकृता [हरिभद्रसूरिणा] व्याख्यातम्- आदेश-प्रकार स च सामान्यतो  
विशेषतय । तत्र द्रव्यजातिसामान्यादेशेन 'सर्वद्रव्याणि' धर्मास्तिकायावीनि जानाति विशेषतोऽपि यथा धर्मास्तिकायो धर्मास्तिकायस्य वैश  
हत्यादि न पश्यति सर्वान् धर्मास्तिकायादौन शब्दादीस्तु योग्यदेशावस्थितान् पश्यत्यपीति । ३५८ पत्र ॥ ७ अथि सत्तत्या  
उपपण्णवणादिया आ दा । अविशदाधा अग्रशापनादिका इत्यर्थः ॥ ८ सेसा दसविहे धम्मादिप आ दा ॥

तममुत्तं अत्रगाहलकखणं सव्वं जाणति । विसेसतो वि लोगा-ऽलोगुद्ध-ऽह-तिरियादिविसेसखेत्ते जाणति, ण जाणइ य केयी, क्षेत्रं न पश्यत्येव २ । काले वि आदेसो सामण्ण-विसेसतो । तत्थ सामण्णतो इमं भण्णति, ण य दरिसणतो, णिच्चमणिच्चं वा मुत्तममुत्तं वा कलासमूहं सव्वदव्वाणि वा कलेइ ति कलणं वा कालो, तमेवंविहं सामण्णतो सव्व-कालं जाणति । विसेसादेसो-समया-ऽऽवलिगादि उस्सपिणीमादि वा विसेसकाले केयि जाणति, ण जाणति केरिं, कालं ण पश्यत्येव ३ । भाव इति भवन्नं भूतिर्वा भावः, एवं सव्वभावे भावजातिभेत्तसामण्णतो जाणति । विसेसादेसतो जीवा-जीवभावे । तत्थ नाण-कसायादिया जीवे, अजीवे बण्णपज्जवादिष् अणेगहा वीसस-पयोगपरिणते, एत्थ मति-णाणविसयत्ये जे ते जाणति, सेसे ण याणति, सव्वभावे ण पासइ ति, मतिणाणस्स असव्वण्णेयविसयत्तणयो ॥

५८. उग्गह ईहाऽवाओ य धारणा एव होंति चत्तारि ।

आभिणिबोहियणाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥ ७० ॥

अत्थाणं उग्गहणं तु उग्गहो, तह वियालणं ईहं ।

ववसायं तु अवायं, धरणं पुण धारणं विति ॥ ७१ ॥

उग्गह एकं समयं, ईहा-ऽवाया मुहुत्तमद्धं तु ।

कालमसंखं संखं च धारणा होति णायव्वा ॥ ७२ ॥

पुढं सुणेति सहं, रूवं पुण पासती अपुढं तु ।

गंधं रसं च फासं च बद्ध-पुढं वियागरे ॥ ७३ ॥

भासासमसेदीओ सहं जं सुणइ मीसयं सुणइ ।

वीसेदी पुण सहं सुणेति णियमा पराघाए ॥ ७४ ॥

ईहा अपोह वोमंसा मग्गणा य गवेसणा ।

सण्णा सती मती पण्णा सव्वं आभिणिबोहियं ॥ ७५ ॥

सें तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं ।

१ ईह अवाओ स० शु० ल० मो० ॥ २ अत्थाणं उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा । ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं विति ॥ मो० डे० ल० मु० । हरिभद्रपादै मलयगिरिपादैश्चायमेव पाठभेदः निर्दिष्टो व्याख्यातश्चापि वर्तते ॥ ३ 'त्तमतं तु हरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्यो निर्दिष्टोऽय पाठभेदः ॥ ४ मीसियं डे० मो० मु० ॥ ५ ख० स० शु० मो० प्रतिपु से तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं इति एकमेव निगमनवाक्यम्, जे० डे० ल० मु० प्रतिपु पुन से तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं, से तं मतिणाणं इति निगमनवाक्यद्वयं दृश्यते । किञ्च हरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्यो प्रथम निगमनवाक्यं व्याख्यातमस्ति, चूर्णिक्कता द्वितीय निगमनवाक्यं व्याख्यात वर्तते इति वृत्ति-चूर्णिक्कतामेकतरदेव निगमनवाक्यमाभिमतम् । अपि च चूर्णिक्कता चूर्णो- "से किं त मतिणाण ?" ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वणिग्ते इम परित्तमत्तिदमग णिगमणवाक्यम् -- "से त मतिणाण ति" इत्यादि [पत्र ४४ प० १] यन्निगमनवाक्यव्याख्यानान्वरे निष्टद्धितमस्ति तत्रैतत् किल चिन्त्यमस्ति यत्-चूर्णावपि से किं तं आभिणिबोहिकेत्यादि सुत्तं [ सुत्त ४५ पत्र ३२ ] इति आदिवाक्यनुपपिन्नं वर्तते तत् किमिति चूर्णा निगमनवाक्यव्याख्यानान्वरे "से किं तं मतिणाण" ति एस आदीए जा पुच्छा " इत्यादि चूर्णिक्कता निरदेदि ? इत्यत्रार्थं तद्विद एव प्रमाणमिति ॥

५८ उग्गह ईहा० गाहा । अत्याण० गाहा । उग्गह एक्क० गाहा । पुट्ट सुणेह० गाहा । भासा सम० गाहा । ईहा० गाहा । एताओ गाहाओ जहा पेडियाए [ आव० नि० गा० २-६ तथा गा० १२ ] तहा भाणितव्वा इति ॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥

“से किं त मतिणाण ?” [ सुत्त ४५ ] ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सच्चहा सरूवे वणिंते इम परिसमत्ति 5 दसग णिगमणवाक्यम्—“से त मतिणाण” ति । अहवा सीसो पुच्छति—जो एस वणिंयसरूवेण ठितो णाणविसेसो सो किंवत्तवो ? आचार्य आह—‘से’ इति निदेशे, ‘त’ ति पुच्चण्हामरिसणे, त एतद् ‘मतिणाण’ ति स्वनामाख्यान मित्यर्थ । अहवा ‘से’ ति अस्य व्यञ्जनलोपे कृते एत मतिणाण ति भवति, एतावद् मतिज्ञानमित्यर्थ ॥

इदार्णि सब्बचरण ऋणक्रियाधार जघुदिह्ठ कमप्यत्त सुतणाण भण्णति—

५९ से किं त सुयणाणपरोक्ख ? सुयणाणपरोक्ख चोदंसविह पण्णत्त, त जहा- 10 अक्खरसुत्त १ अणक्खरसुत्त २ सण्णिसुय ३ असण्णिसुय ४ सम्मसुय ५ मिच्छसुय ६ सादीय ७ अणादीय ८ सपज्जवसिय ९ अपज्जवसिय १० गमियं ११ अगमिय १२ अगपविट्ठ १३ अणगपविट्ठ १४ ।

५९ से किं [ जे० २०४ द्वि० ] त सुतनाणेत्यादि । त च सुतावरणखयोवसमत्तगतो एगविह पि त अक्खरादिभावे पडुच्च जाव आवाहिर ति चोदसविध भण्णति । तस्य अक्खर त्रिविह—नाणक्खर अमिलावक्खर 15 वण्णक्खर च । तस्य नाणक्खर “क्षर सचरणे” न क्षरतीत्यक्षरम्, न प्रच्यवते अनुपयोगेऽपीत्यर्थ, आतमावत्तगतो, त च णाण अविसेसतो चेतनेत्यर्थ । आह—एव सब्बमविसेसतो णाणमक्खर कम्हा सुत्त अक्खरमिति भण्णति ? उच्यते—रूढिविसेसतो १ । अमिलौववण्णा अक्खर भण्णिता, पङ्कजवत्, एव ताव अमिलावहेतुमाहणतो सुतविण्णा णस्स अक्खरता भण्णिता २ । इदार्णि वण्णक्खर—वणिज्जति अणेणाभिहेतो अत्थो इति वण्णो, स चार्थस्य, कुड्ये चित्रवर्णकवत्, अहवा द्रव्ये गुणविशेषवर्णकवत् । वर्ण्यते—अमिलप्यतेऽनेनेति वर्णाक्षरम् ३ ॥ एत्थ सुत्त—

६० से किं त अक्खरसुत्त ? अक्खरसुत्त त्रिविह पण्णत्त, त जहा—सण्णक्खर १ वज्जण 20 क्खर २ लद्धिअक्खर ३ ।

६० से किं त अक्खरसुत्त इत्यादि । अक्खरसद् सुणतो भासतो वा अक्खरसुत्त । तस्यऽक्खरल्लभो अमिलावो वा दन्वसुत्त, खयोवसमलद्धी भावसुत्त । तच्च वर्णाक्षर त्रिविध सण्णक्खरादि ॥ तस्य—

६१ से किं त सण्णक्खर ? सण्णक्खर अक्खरस्स सठाणा ऽऽगिंती । से त्त सण्णक्खर ।

६१ ‘सण्णक्खर’ अक्खरागारविसेसो । सो य ऋणादिलिखिषाणो अणेगविधो आगारो । तेषु आ(अ)- 25 कारादिआगारेसु जम्हा अकारे अकारसण्णा एव भवति, एव सेसेसु वि, तम्हा ते सण्णक्खरा भण्णिता, जहा वट्ठ घडागार दट्ठ ठकारसण्णा उप्पज्जतीत्यथ १ ॥

१ वट्ठस जो ॥ २ अक्खरं ति दुविहं—नाणक्खरं अमिलाववण्णक्खरं च । तस्य नाण “क्षरं जे ॥ ३ लावणा अक्खरं मा० ॥ ४ ती सण्णक्खरं । से त्त खं सं डे ल्लु ॥

६२. से किं तं वंजणक्खरं ? वंजणक्खरं अक्खरस्स वंजणाभिलांवो । से तं वंजणक्खरं ।

६२. व्यक्तीकरणं वंजणं, व्यज्यते अनेनार्थं इति वा व्यञ्जनम्, यथा प्रदीपेन घटः, व्यञ्जनं च तदक्षरं चेति व्यञ्जनाक्षरम्, तच्चेह सर्वमेव भाष्यमाणं अकारादि हकारान्तम्, अर्थाभिव्यञ्जकत्वाच्छब्दस्य । तमेवं अक्खरं अत्थाभिव्यंजकं वंजणक्खरं भवति, जहा घटः पटः इत्यादि २ ॥

६३. से किं तं लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुप्पज्जइ, तं जहा—सोइंदियलद्धिअक्खरं १ चर्क्खदियलद्धिअक्खरं २ घाणेंदियलद्धिअक्खरं ३ रसणिंदियलद्धिअक्खरं ४ फासेंदियलद्धिअक्खरं ५ णोइंदियलद्धिअक्खरं ६ । से तं लद्धिअक्खरं । से तं अक्खरसुयं १ ।

६३. 'लद्धक्खरं' ति अक्खरलद्धी जस्सऽत्थि तस्स इंदिय-मणोभयविष्णाणतो इह जो अक्खरलाभो उप्पज्जति तं लद्धिअक्खरं । तं च पंचविहं सोइंदियादि । जहा सोइंदियलद्धिओ सहं सोतुं संख इति अक्खरदुयलाभो भ[जे० २०६ प्र०] व्रति, एवं सव्वत्थ लद्धिअक्खरं भाणितव्वं ३ । इह सण्णा-वंजणक्खरे दो वि दव्वसुतं गहितं, सुतविष्णाणकारणत्तातो, लद्धक्खरं भावसुतं, लद्धीए विष्णाणमयत्तणतो भयणा वा १ ॥ इदार्णि अणक्खरसुतं—

६४. से किं तं अणक्खरसुयं ? अणक्खरसुयं अणेगविहं पणत्तं, तं जहा—  
ऊससियं णीससियं णिच्छूढं खासियं च छीयं च ।  
णिस्सिधियमणुसारं अणक्खरं छेलियादीयं ॥ ७६ ॥  
से तं अणक्खरसुयं २ ।

६४. अणक्खरसद्वसवणतो करतो [? वा ] अणक्खरसुतं भवति । तं च अणेगविहं इमं—

ऊससितं० गाहा । पूर्ववत् कंठा [आव० ति० गा० २०] ॥७६॥ २ । इदार्णि सण्णिमसणिसुतं—

६५. से किं तं सण्णिसुतं ? सण्णिसुतं तिविहं पणत्तं, तं जहा—कालिओवएसेणं १ हेऊवएसेणं २ दिट्ठिवादोवदेसेणं ३ ।

६५. सण्णिसुतं सुतं सण्णिसुतं । असण्णिसुतं सुतं असण्णिसुतं । तत्र संज्ञाऽस्याऽस्तीति संज्ञी । सो य सण्णी तिविहो—'कालिओवदेसेण' इत्यादि । चोदक आह—जइ सण्णासंबंधयो सण्णी तो सव्वे जीवा सण्णी, जतो एगिंदियाण वि दस आहारादिसण्णातो पट्टिज्जंति ? आचार्याह—उहोहसण्णा थोवत्तणतो णाधिक्रियते, जहा णो कैरिसावणेण धणवं भवइ त्ति, सेसआहारादिसण्णाओ वि भूयिष्ठतरा वि णाधिक्रियंते, अणिट्टत्तणतो, जहेह हुंड-संठितो ण मुत्तित्तणतो रुववं भण्णति । एते अधिकृतसण्णाए अणुवणयदिट्ठंता । इमे उवणयदिट्ठंता—जहा बहुधणो धणवं. पसत्थणिव्वत्ति-देहमुत्तित्तणतो य रुववं भण्णति, तहेव मत्ती मुभा य संज्ञाऽधिक्रियते । सा य संज्ञानं संज्ञा-मनोविज्ञानम्. तत्सम्बन्धात् सञ्चीत्यर्थः ॥ उक्तः प्रमद्गः । प्रकृतमुच्यते—

१ लावां वंजणक्खरं । से तं ग० व० ल० शु० ॥ २ अस्मिन् सूत्रे सर्वत्र लद्धिअक्खरं इति स० शु० सो० ॥ ३ 'णतो स्कारणतो वा आ० दा० । लद्धिअक्खरं इत्यन्त 'रुव्वंते वा' भाष्येन इत्यर्थः ॥ ४ कार्यापणेन ॥

६६ से किं त कालिओवएसेण ? कालिओवएसेणं जस्सं ण अत्थि ईहा अंपोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमसा से ण सँणिणं चिं लब्भइ, जस्सं ण णत्थि ईहा अंपोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमसा से ण असंणीति लब्भइ । से त्त कालिओवएसेण ? ।

६६ 'कालितोवदेसेण' ति इहाऽऽदिपदलोको दद्वन्वो, तस्सुचरणे 'दीहकालितोवदेसेण' ति वचन्व । दीह-  
 5 आयत्त, कालितो चिं विसेसण । कस्स ? उच्यते—उवदेसस्स, जहा जिणमवणे मुहुत्तकालितो दीहकालितो वा पूयामडवो कतो तहा दीहकालितोवदेसेण ति भाणितव्वो । उवदिसण्णमुवदेसो, उपदेसो चिं वा आदेसो चिं वा पण्णवणं चिं वा परवणं चिं वा एगद्धा । दीहकालिओ उवदेसो दीहकालिओवदेसो, तेण दीहकालितोवदेसेण जस्स सण्णा भवति सो आदिपदलोकातो कालिओवदेसेण सण्णीत्यथ । अहवा कालिय—आयारादि मुत्त तदुवदेसेण सण्णी भण्णति । सो य इमेरिसो—जो य अतीत्तकाले सुदीहे वि [जे० २०६ द्वि०] इदं तदिति कृतमणुभूत वा सुमरति, वट्टमाणे य इदिय  
 10 णोइदिपणं वा अण्णतरं सदाइअत्यमुवलद्धं अण्णत्तं वइरेगधम्मोई ईइइ चिं ईहा । तस्सेव परधम्मपरिचारे सधम्मणु- गतावधारणे य 'अवोहो' चिं अवातो । विसेसधम्मणेसणा मग्गणा, जहा मधुर-गभीरत्तणतो एस सखसइ इति । वीसस-प्ययोगुम्भवणिच्चमणिच्च चेत्यादि गवेसणा । जो यऽणागते य चिंतयति 'कहं वा त तत्थं कातव्वं ?' इति अण्णोण्णालवणाणुगतं चित्तं चिंता । आंत-पर इह-परत्ययहिता ऽहितविमरिसो वीमसा । अहवा 'किमेयं ?' ति ईहा । णिच्छयावधारितो अत्यो अवोधो । अभिलसित्यस्स मणो-वयण-काएहिं जायणा मग्गणा । अभिलसित्तथे चैव  
 15 अपहुप्पज्जमाणे गवेसणा । अणेगहा सकप्पकरणं चिंता । इन्द्रमर्तेपु वीमसा, जहा णिच्चमणिच्चं हितमहितं धूरं कुञ्चं थोवं बहु इत्यादि । अहवा सकप्पतो चैव विविधा आमरिसणा वीमसा । अहवा 'अवोहो' चिं अवातो । सेसा ईहाएगट्टिया । जस्सेव अण्णयरविकप्पेण मणोदव्वमणुगतं चिंचे धावति एस कालिओवदेसेण सण्णिं चिं । सो य अण्णते मणोजोगे ख्खे वेत्तु मणेति, एत्तल्लदिसण्णो मणविण्णाणावरणखयोवसमंजुत्तणतो य जहा चक्खुमतो पदीवादिप्यगासेण फुडा रूवोवलद्धी भवति तहा मणखयोवसमलद्धिमतो मणोदव्वयगासेण मणोखट्टेहिं इदिपहिं  
 20 फुडमत्थं उवलमतीत्यर्थं । कालितोवदेससण्णीविवक्खे असण्णी, जहेइ अविमुद्धचक्खुमतो मदमदप्पगोसे रूवोवलद्धी असुद्धा एव सम्मुच्छिमपचेदिय असण्णिस्स, उक्कोसखयोवसमे वि अप्पमणोदव्वमग्गणसामत्थे मदपरिणामत्तणतो य असण्णिणो अविमुद्धमप्या य अर्थोपलब्धीत्यर्थं । ततो वि अविमुद्धा चत्तुरिंदियाणं, ततो तेइदियाणं, ततो वि अविमुद्धा वेइदियाणं अत्युवलद्धी । जस्स य जइ इदिया स तहा तेसु अवग्गहादिसु पवत्तते । विगलिंदियाणं वि आदेसतरतो मणोदव्वं [जे० २०७ प्र०] मग्गणं असुद्धमप्यत्तणतो य भाणितव्वं । सो य मणो तेसिं अमणो चैव  
 25 दद्वन्वो, असुद्धत्तणतो, असीलवद् अज्ञानवद्वा । तयो वेइदियेहिंतो वि समीवातो अव्वत्ततरं विण्णाणं एगिंदियाणं, जहा मत्तं मुच्छियं विसमाधितस्स य तहा एगिंदियाणं सव्वथा मणाभावे विण्णाणं सव्वजइणं । कालितोवदेससण्णिणो एते सम्मुच्छिमादयो सव्वे असण्णी भवतीत्यर्थं १ ॥ इदार्णि—

६७ से किं त हेऊवएसेण ? हेऊवएसेणं जँस्स ण अत्थि अभिसधारणपुव्विया

१ स्सऽत्थि सं० सं० ल० सु ॥ २ अवोहो जे मो सु ॥ ३ सण्णीति जे मो सु ॥ ४ स्स णत्थि ख सं० सु ल० ॥ ५ अवोहो जे० मो० सु० ॥ ६ ण्णी लं ख सं० दे० ल सु० ॥ ७ आत्म-परह-परत्तजहिता ऽहितविमर्ष इत्यर्थं ॥ ८ हुप्पणमाणे दा । हुच्चमाणे आ० ॥ ९ त्तं वा वत्तति पस्स जे आ दा० । धावति इति पाठस्स मो० पूर्यादण्णतो हेयं ॥ १० महेत्तुत्तणतो आ० दा ॥ ११ गासा रूवो आ० ॥ १२ अघनवद्वा आ ॥ १३ जस्सऽत्थि सं० सं० ल० सु० ॥



करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ, जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णिं ति लब्भइ । से त्तं हेऊवएसेणं २ ।

६७. 'हेतूवदेसेणं' ति हेतुः कारणं निमित्तमित्यनर्थान्तरम्, 'उत्रदेसेणं' ति पूर्ववत् । हेतूतो सण्णा भवति चि जेण तेण सो हेतुउत्रदेसेण सण्णी भवति । 'जस्स' चि जीवस्स, 'णं' वाक्यालंकारे देसीवयणओ वा आत्मस्वरूपप्रदर्शनवचनोपन्यासे वा; अव्यक्तेन विज्ञानेन अभिसन्धार्य पूर्वं ततः विज्ञानस्यैव 'करणशक्तिः' करणं-क्रिया 5 शक्तिः-सामर्थ्यं, अथवा करणे शक्तिः करणशक्तिः, अथवा करण एव शक्तिः करणशक्तिः । तच्च अभिसंधारणं संचित्य संचित्य इद्वेसु विसयवत्थूसु आहारादिसु प्रवर्त्तते, अण्णिसु य णियत्तंते । एवं सदेहपरिपालणहेतो पवत्तंति । ते य पायं पडुप्पणकाले, ण तीता-ऽणागतकालावलंबिणो भवन्ति, उस्सण्णमेवं, केरिं तु तीता-ऽणागतकाला-वलंबिणो वि भवन्ति, ते पुण ण दीहकालाणुसारिणो । किंच—तेसु वि आगतो सुहुमो संताणचोदको अविस्सरणहेतु 10 दट्ठवो । एवं ते विकल्लेदिया सम्मुच्छिमपंचेदिया या(य) हेतुवायसण्णी भणिता, ते पडुच्च असण्णी जे णिचेद्वा इद्वा-ऽण्णिविसय[अ]विणियद्वावारा मत्त-मुच्छिय-विसोवयुत्तादिसारिच्छचेतणट्ठिता पुढवादिर्णिदिया इत्यर्थः २ ॥

इदानीं—

६८. से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं ? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भति, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भति । से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं ३ । से त्तं सण्णिसुत्तं ३ । से त्तं असण्णिसुत्तं ४ । 15

६८. दिट्ठिवाओवदेसेणं ति दृष्टिः-दर्शनम्, वदनं वादः, उपदेशनमुपदेश इति, अनेन दृष्टिवादोपदेशेन संज्ञीत्यभिधीयते । सो य सम्मदिट्ठी सण्णी, तस्स सम्मदिट्ठिणो सण्णिसस जं सुत्तं तं सण्णिसुत्तं, तेण सण्णिसुत्त-खयोवसमभावेण जुत्तचणतो दिट्ठिवातसण्णी लब्भति । अहवा दिट्ठिवायसण्णिं चि मिच्छत्तस्स [जे० २०७ द्वि०] सुतावरणस्स य खयोवसमेणं कतेणं सण्णिसुत्तस्स लंभो भवति, एवं सो दिट्ठिवातसण्णी लब्भति, तस्स सुत्तं दिट्ठि-वातसण्णिसुत्तमित्यर्थः । तं खयोवसमियभावत्थं समदिट्ठिं सण्णिं पडुच्च मिच्छदिट्ठी असण्णी अणितो । सो य मिच्छ- 20 त्तस्सुदयतो असण्णी भवति, तस्स सुत्तं असण्णिसुत्तं । तं च सुत्तअण्णाणावरणखयोवसमेणं लब्भति, एवं दिट्ठिवातअ-सण्णीत्यर्थः, तस्स सुत्तं दिट्ठिवातअसण्णिसुत्तं । एवं दिट्ठिवाते सण्णि-असण्णिसु सुत्तखयोवसमभावो(वा) सुत्तं घेतव्वं इति । पर आह-खयोवसमभावट्ठित(तो) सण्णिचणतो लक्खिज्जति स्वाइगभावट्ठितो केवली किण्ण सण्णि ? चि, उच्यते-अतीतभावसरणचणतो पडुप्पणभावान्ण य बुज्जणतो अणागतभावचित्तगततो य सण्णि चि, तं तहा जिणे अणुसरणं णत्थि, जेण सो सव्वदा सव्वधा सव्वत्थ सव्वभावे जाणतीत्यर्थः, तम्हा केवली णोसण्णीणोअसण्णी भवति । 25 पुनरप्याह परः-उह मिच्छादिट्ठिणो वि केरिं हिता-ऽहितनाणवावारसण्णासंजुत्ता दीसंति किं ते असण्णिणो भणिता ? उच्यते-तस्स जा सण्णा सा जतो कुच्छिता, जहेह कुच्छित्तवयणमवयणं कुच्छित्तसीलमसीलं वा, तहा तस्स सण्णा कुच्छित्तचणतो असंनैव दट्ठवा, अण्णं च तस्स मिच्छत्तपरिग्गहातो नाणमनाणमेव दट्ठव्वं । भणितं च—

१ सण्णिं चि लं ३० शु० । सण्णी लं ख० स० जे० ॥ २ असण्णी लं ख० स० डे० ल० शु० ॥ ३ 'हेतु-वाओवदेसेणं' आ० दा० ॥ ४ सण्णी भवति आ० दा० ॥ ५ एवं तेसिं विकल्लेदियाणं सम्मुच्छिमपंचेदियाणं या हेतुवायसण्णा भणिता आ० दा० ॥ ६-७ 'वाओव' ख० । 'वाओव' स० ॥ ८ 'सुययतो' जे० ॥ ९ 'भावसुत्तं' आ० दा० ॥

“सदसदविसेसणातो०” [विशेषा० गा० ११५] गाहा । कंठा । एव पि ते असण्णी । आह-एगिंदियाण ओह-  
सण्णी चैव अतो ते असण्णी चैव, तेहिंतो वेइदियाइ जाव सम्भुच्छिमपचेंदी एते विसिट्ठतरसण्णाए हेतुवायसण्णी  
मणिता, कालितोवदेस पुण पडुच्च ते वि असण्णी, विण्णाणअविसिट्ठत्तगतो, दिट्ठिवातोवदेस पुण पडुच्च कालि-  
कोपदेसा वि असण्णी अविसिट्ठत्तगतो चैव, अतो णज्जति दिट्ठिवातसण्णी सन्वुत्तमो, सुत्ते य उँवरिं ठवितो, जुच  
मेतं, कालिय हेतुसण्णीण पुण उक्कमकरण कम्हा ? उच्चये-सन्वत्थ सुत्ते सण्णिग्गहण ज क्त त कालितोवदेस  
सण्णिसस, अत्त सर्वत्र तत्सव्यवहारंज्ञापनार्थं आदौ कालि[जे० २०८ पृ०]कग्रहण कृतमित्यर्थ । किंच-सण्णि  
असण्णीण समनस्का ऽमनस्का इति क्रमश्च दर्शितो भवति, अत्र विकलेन्द्रिया अमनस्का इति अल्पमनोद्रव्यग्रहण-  
सामर्थ्यम्, प्रतिविद्यते पुनर्मनस्तेषाम् । यस्मादुक्तम्—

कृमि-कीट-पतङ्गाद्या समनस्का जङ्गमाश्चतुर्भेदाः । अमनस्का पञ्चविधा पृथिवीकायादयो जीवा ॥ १ ॥

[ ] इति ॥

मणित सण्णि-असण्णिसुत्त ३ । ४ । इदानीं सम्म भिच्छामुत्त । तंत्य सुत्त—

६९ [१] से किं त सम्मसुत्त ? सम्मसुत्त ज इम अरहतेहिं भगवतेहिं उप्पण्णाण-  
दसणधरेहिं तेलोक्कंचहित-महिय पूइएहिं तीय-पँच्चुप्पण्ण मणागयजाणएहिं सन्वण्णहिं सन्व-  
दरिसीहिं णणीय दुवालसंगं गणिपिडग, त जहा-आयारो १ सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ  
४ विवाहपण्णत्ती ५ णायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अतगडदसाओ ८ अणुत्तरो-  
ववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुत्त ११ दिट्ठिवाओ १२ ।

[२] इच्चैय दुवालसंगं गणिपिडग चोईसपुब्बिस्स सम्मसुत्त, अभिण्णदसपुब्बिस्स  
सम्मसुत्त, तेण पर भिण्णेसु भयणा । से त्त सम्मसुत्त ५ ।

६९ [१] से किं त सम्मसुत्तेत्यादि । ‘ज’ इति अणिद्धिस्स गहण, ‘इम’ ति पच्चक्खभावे । वदण-

नमसण-भूयणादि अरहतीति अरहता, अरिणो वा हता अरिहता । तेसिं गुणसपदाए विसेसण-‘भगवतेहिं’ घम्म-  
जस-अत्थ-लच्छी-यत्त विमत्ता एते छ प्पदत्या भगसण्णा, ते जेसिं अत्थि ते भगवतो । केवलनाण-दसणाण आव-  
रणक्खते केवलनाण दसणा उप्पज्जति, ते य जुगवमूप्पण्णे सन्वमणागतद्द जधुप्पण्णसरूवे णिरावरणे सन्वद्व-  
गुण-यज्जव विसेस-सामण्णीविसए वि जुगवपवत्ते णाण-दसणधरे ते तेहिं नाण-दसणेहिं तीयद्दाए सन्वद्व-गुण-  
भावे जाफति, तथा पडुप्पण्णे अणागते य जाणति, तिकाळजे दन्व भावे य पडुप्पण्णे काले जाणतीत्यर्थ । हिंसब्दो  
सर्ववचनेषु कारणार्थे बहुवचनप्रतिपादक । तेलोक्क ति-तिण्णि लोगा तेलोक्कं, ते य ऊर्ध्वा-ऽधस्तिर्यक्, अत्र तश्चि-  
वासिग्रहणम् । भवनवासिनो अहेलोगनिवासी, वणयर-जोति-तिरियच-मणुस्सा तिरियलोकनिवासी, ऊर्ध्वं वैमानिका ।

१ ण्णा तदुप्पत्तातो ते असण्णी-आ० दा ॥ २ पतेसिं दूरतरसण्णीए हेतुधा आ० ॥ ३ अवरिं जे ॥  
४ रत्त्यापनार्थं आ ॥ ५ तत्थ सम्मसुत्त आ दा० ॥ ६ क्कनिरिक्खित महित-पूइएहिं सर्वासु सुत्तप्रतिषु हरिमद-  
मलयगिरिसरिश्वोथ । चूर्णिक्रमन्त सुत्रपाठो नोपलभ्यते कुत्राप्यादर्शो । केवल अनुयोगद्वारेणुपलभ्यते चूर्णिक्रमन्त सुत्रपाठ [पत्र ३०-१] ॥  
७ पडुप्प मो सु० ॥ ८ दसीहिं सं० ॥ ९ चउदस ल० ॥ १० णो मं छ०-त्त ३० ल० ॥ ११ णमणि-  
विसए जे० ॥

एवं प्रायोवृत्त्या अहेलोइयग्रामसंभवाद् वाच्यम् । 'चहितं' ति चाहितं प्रेक्षितं निरीक्षितं दृष्टमित्यनर्थान्तरम्, त्रैलो-  
क्येन [जे० २०८ द्वि०] चहिता-मनोरथदृष्टिदृष्टा, अथवा गोशीर्षचन्दनादिना चर्चिता । त्रैलोक्यस्य मनोहिता  
महिता, अथवा महिमाकरणेन महिता, सा च महिमा महाजनसमुदयेन गीत-नृत्य-नाटकाद्यनेकपेक्षणकरण-  
विधानैः । अणालिय-मणवज्ज-सम्भूतत्थ-विसारयवयणेहिं थुता पूइया । अथवा अन्योन्यविषयप्रासेदा ह्येते एकार्थ-  
वचना । 'पणीतं' ति तिसततिसद्व्यवादिमते अभूतत्थरूवे वज्जेऊण इमं जहत्यं दुवालसंगं पणीतं, जह णवणीतं 5  
दहियातो, भूतत्थेण वा जुत्तं प्रकरिसेण णीतं प्रणीतं । 'दुवालसंगं' इत्यादि कंठं ।

इहंगगतं आयारादि, अणंगगतं च आवस्सगादि । एतं सव्वं दव्वद्वितणयमतेण सामिणा असंवद्धं पंचत्थि-  
काया इव णिव्वं सम्मसुत्तं भण्णाति । अहवा एतं चेत्त दुवालसंगादि सामिणा संवद्धं भयणिज्जं सम्मसुत्तं मिच्छसुत्तं  
वा उच्यते-सम्मद्विद्विस्स सम्मसुत्तं, मिच्छद्विद्विस्स मिच्छसुत्तं । इमं चेव सुत्तपरिमाणतो णियमिज्जति—

[२] जो चोइसपुव्वी तस्स सामादियादि विंदुसारपज्जवसाणं सव्वं नियमा सम्मसुत्तं, ततो ओमत्थगप- 10  
रिहाणीए जाव अभिण्णदसपुव्वी एताण वि सामाइयादि सव्वं सम्मसुत्तं सम्मगुणत्तणतो चेव भवति । मिच्छद्विद्वी  
पुण मिच्छणुभावत्तणतो अभिन्नदसपुव्वे ण पावति, दिट्ठंतो जहा अभव्वो अभव्वानुभावत्तणतो ण सिज्जतीत्यर्थः ।  
'तेण परं' ति अभिण्णदसपुव्वेहितो हेट्ठा ओमत्थगपरिहाणीए जाव सामादितं ताव सव्वे सुत्तट्ठाणा सामिसम्मगुण-  
त्तणतो सम्मसुत्तं भवति, ते चेव सुत्तट्ठाणा सामिमिच्छगुणत्तणतो मिच्छसुत्तं भवति ५ ॥ इदानीं मिच्छसुत्तं—

७०. [१] से किं तं मिच्छसुत्तं ? मिच्छसुत्तं जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छद्विद्विएहिं 15  
सच्छंदबुद्धि-मतिवियंप्पियं, तं जहा-भारहं रामायणं हंभीमासुरक्खं कोडल्लयं संगमदियाओ  
खोडंमुहं कणासियं नामसुहुमं कणगसत्तरी वड्ढेसियं बुद्धवयणं वेसितं कविलं लोगायतं  
सद्धितं मादरं पुराणं वांगरणं णाडगादी, अहवा वावत्तरिकलाओ चत्तारि य वेदा संगोवंगा ।

१ वा । कइं तं चेव सम्मसुयं मिच्छसुयं वा ? उच्यते आ० दा० । वा । कइं ? उच्यते जे० ॥ २-३ मिच्छा-  
सुयं हे० ल० मो० सु० ॥ ४ इत्त आरभ्य चत्तारि य वेदा संगोवगापर्यन्तं सूत्रमित्थं समप्रमपि अनुयोगद्वारेषु वतंते [सू० ६१] ॥  
५ मिच्छद्विद्वीहिं जे० मो० सु० विना ॥ ६ "विगप्पिं" जे० मो० सु० ॥ ७ हंभीमासुरक्खं ख० हे० शु० । हंभीमासुरक्खं  
मो० । भीमासुरक्खं जे० सु० । "हंभीयमासुरक्खे मादर कोडिल्लदडनीतिमु ।" अस्य व्यवहारभाष्यगाथावस्य मलयगिरिकृता  
व्याख्या— "भम्भ्याम् आसुवृक्षे मादरे नीतिगात्रे कौटिल्यप्रणीतासु च दण्डनीतिषु ये युजला इति गम्यते ।" [व्यवहार० भाग ३  
पत्र १३२], अत्र प्राचीनासु व्यवहारभाष्यप्रतिषु "हंभीयमासुरक्खं" इति पाठो वतते । "आभीयमासुरक्खं भारह-रामायणादि-  
उत्पन्ना । तुच्छा असाहणीया सुयभण्णाण ति ण वेति ॥ ३०३ ॥ [सच्छन्दछाया-] आभीयमासुरक्खं भारत-रामायणाद्युपदेगा । तुच्छा  
असाधनीया श्रुताज्ञानमिति इदं ब्रुवन्ति ॥ ३०३ ॥ [भाष्य-] चौराणां तथा हिंसाणां, भाग्न, रामायण आदिके परमार्थगन्त्य  
अत एव अनादरणीय उपदेशोको मिथ्याश्रुतज्ञानं ब्रुवते हिं ।" [गोमटनार-ज्ञानकण्ठ पत्र ११०] । "निर्गटे निगमे पुराणे इतिहासे वेदे  
व्याकरणे निरुक्ते शिक्षाया छन्दस्विन्या यजुस्त्वे ज्योतिषे साम्ये योगे क्रियासु वेदिके वेदिके अर्थव्याया वाहस्यत्ये आम्भिष्ये  
आसुयं सुगपक्षिस्ते हेतुविद्यायाम्" इत्यादि [ललितविल्लरे परि० १२ ३३ पद्यानन्तम् पत्र १०८] ॥ ८ कोडिल्लयं मो० सु० ॥  
९ सयमं हे० ल० । सहमं शु० । सगडभं सु० । अनुयोगद्वारेषु नगमद्वियाथो ननमद्वियाथो इत्येते नामान्तरे अपि  
प्रत्यन्तरेषु दृश्येते ॥ १० घोडमुहं शु० । १० सु० प्रच्यारेण्णामर नाम्नि । अनुयोगद्वारेषु पुनं घोडगमुहं, घोडयमुहं, घोडयसहं,  
घोडयसुयं इति नामान्तराभ्यपि प्रत्यन्तरेषु दृश्यन्ते ॥ ११ नागमुहुमं जे० सु० अनु० ॥ १२ कणगसत्तरी नामानन्तरं रयणावली  
इत्यपि नाम सु० ॥ १३ वतित्सें सु० ॥ १४ तेसियं सु० सु० सु० सु० सु० । तेरासियं सु० ॥ १५ काविल्लियं हे० ल०  
गो० सु० । काविल्लं अनु० ॥ १६ णागायतं सु० ॥ १७ पाराणं सु० ॥ १८ वागरणं इति नामानन्तरं भागवतं पायंजली  
पुस्तकेष्वयं लेहं गणियं इत्यपि पाठः हे० सु०, नद पत्रे अनुयोगद्वारेणोति ॥

[२] ईचेताइ सम्मदिट्टिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइ सम्मसुय । ईचेयाइ मिच्छदिट्टिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छंसुत ।

[३] अहवा मिच्छदिट्टिस्स वि एंयाइ चैव सम्मसुय, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ, जम्हा ते मिच्छदिट्टिणो तेहिं चैव सँमएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ वमँति । से त 5 मिच्छेसुय ६ ।

७० [१] से किं त मिच्छसुत इत्यादि । अण्णाण इतेहिं [जे० २०९ प्र०] अण्णाणितेहिं । अण्णाण-अवोधो विवरीयत्थवोधो वा तेण इतो-अणुगतेत्यर्थ । मिच्छादिट्ठिं इतेहिं मिच्छादिट्ठितेहिं, मिच्छ चि-अनृत, दिट्ठि चि-दरिसण, मिच्छादिट्ठिणा अणुगतोहिं ति भणित भवति । स-इत्यात्मनिर्देश, छन्द'-अभिप्राय, तत्त्यमतत्थेण वा अत्यस्स जो बोहो स बुद्धि-अवग्रहमात्रम्, उचरन्न ईहादिविक्रप्पा सव्वे मती । अहवा नाणावरणत्वयोवसमभावो 10 बुद्धी, सो चैव जदा मणोदब्बणुसारतो एवचइ तदा मती भणति । एव आत्माभिप्रायबुद्धि-मतिमि, यच्छ्रुत विविधकल्पनाविरुल्लिप्तमिति रचित, तच्च भारथादि जाव चचारि य वेदा संगोबगा, सव्वेते लोगसिद्धा, लोगतो चैवेतेसिं सरुव जाणितव्व । एत सव्व मिच्छभावद्वित ति कातु मिच्छसुत माणितव्व । एतम्मि सम्म मिच्छसुत विक्रप्पे चतुरो विक्रप्पा माणितव्वा इमेण विधिणा—

[२] सम्मसुत सम्मदिट्ठिणो सम्मसुत चैव १, सम्मसुत मिच्छदिट्ठिणो मिच्छसुतं २, मिच्छसुत सम्मदिट्ठिणो 15 सम्मसुत ३, मिच्छसुत मिच्छदिट्ठिणो मिच्छसुत चैव ४ । 'ईचेताइ सम्मदिट्टिस्स सम्मत्तपरिग्गहिताइ सम्मसुत' एत्य सुत्ते पत्त-तइयविक्रप्पा दट्ठव्वा । 'ईचेयाइ' ति सम्म मिच्छसुताइ, अहवा मिच्छसुताइ चैव । सेस कठ । 'मिच्छदिट्टिस्स' इचादिसुत्ते वितिय-चतुत्थविक्रप्पा दट्ठव्वा । तत्थ 'पढमविक्रप्पे सम्मसुत सम्मत्तगुणेण सम्म परिणामयतो सम्मसुत चैव भवति १ वितियविक्रप्पे वि जहा खडसजुत खीर पिच्चजरोदयतो ण सम्म भवइ तथा मिच्छलुदयतो सम्मसुते मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छसुत भवति २ ततियविक्रप्पे तिफलादिमणिद्व पि उवउत्त उवका 20 रकारित्तणतो सम्म भवति तथा मिच्छसुते मिच्छभावोवलमातो सम्मसुते दढतरभावुपायकरणत्तणतो त से सम्मसुत भवति ३ चरिसविक्रप्पे मिच्छसुत, त चैव मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छसुत चैव भवति ४ ।

[३] तस्स वा मिच्छदिट्ठिणो त चैव मिच्छसुत सम्मसुत भवति । कम्हा एव भणति ? उच्यते-परिणाम 25 विसेसतो, जम्हा ते मिच्छदिट्ठिणो 'तेहिं [जे० २०९ द्वि०] चैव' पुव्वावरविरुद्धेहिं मिच्छसुतमणितेहिं 'चोदिता' भणिता 'समाणा' इति सन्त, चोदणाणतर आत्मकालावस्थाया सन्त इत्यर्थ । पुव्व ज सासण पडिबण्णो "त से सपक्खो, तम्मि जा दिट्ठी त 'वमँति' परिक्खयति, छडँति चि वुत्त भवति । जम्हा एव तम्हा त पुव्वमिच्छसुत सम्मसुत से भवति । पर आइ-तचावगमसँभावसामण्णे सम्मत्त-सुताण को पतिविसेसो जेण भण्णति 'सम्मत्त परिग्गहिताइ सम्मसुत' ? उच्यते-जहा णाण-दसणाण अवबोधसामण्णे भेदो तथा सम्म-सुताण पि भविस्सति ।

१ पयाणि चैव सम्म सर्वाणु सुत्रप्रतिपु । श्रुतिकर्त्रोरमेव सुत्रपाठ सम्मतोऽस्ति ॥ २ पयाइ मिच्छ सर्वाणु सुत्रप्रतिपु । श्रुतिकर्त्रोरमेव सुत्रपाठ सम्मत ॥ ३ च्छदिट्टिपरि" ख ॥ ४ मिच्छासुय डे० मो० सु । अपि च-सम्यक्श्रुत-मिच्छाश्रुतविवेचकोऽय सुत्राण सर्वाणु सुत्रप्रतिपु वृत्त्योरपि च क्रमव्याख्यानं वक्षते ॥ ५ पयाइं चैव इति खं सं० जे डे ल० सु० नास्ति । श्रीहरिमद्राष्ट्राचार्यैरपि नास्त्य पाठं स्वीकृतं ॥ ६ द्विया तेहिं डे ल विना ॥ ७ ससमर्पाइं जे ॥ ८ खयति जे० मो० । श्रीमल्लयगिरिपादरे क्पाताजुचार्येण व्याख्यातमस्ति ॥ ९ मिच्छासुयं डे० मा० सु ॥ १० तत्थ आतरथेण वा अत्यस्स भा । दा ॥ ११ त्मकलावस्थाया स आ० ॥ १२ तस्सेल पक्खो जे० ॥ १३ सध्माव आ० दा ॥

कहं ? उच्यते—जहा विसेसाणं बोधमवात-धारणे नाणं, अवग्रहेहाबोधे च दंसणं तथा इमं । तत्ते जा स्ती तं सम्मत्तं, तत्येव जं रोचकं तं सुत्तं । एवं मिच्छत्तपरिग्गहे वि वत्तव्वं ६ ॥ इदाणिं सादि-सपज्जवसाणे—

७१. से किं तं सादीयं सपज्जवसियं ? अणादीयं अपज्जवसियं च ? इच्चैयं दुवालसंगं गणिपिडगं विउच्छित्तिणयड्डयाए सादीयं सपज्जवसियं, अविउच्छित्तिणयड्डयाए अणादीयं अपज्जवसियं ।

७१. से किं तं सादीयं इत्यादि । इह पज्जातट्ठितो वोच्छित्तिणतो, तस्स मतेणं दुवालसंगं पि सादि सपज्जवसाणं । कहं ? जहा णरगादिभवमवेक्खातो जीवो व्व । दव्वट्ठितो पुण अव्वोच्छित्तिणतो, तस्स मयेणं दुवालसंगं पि 'अणादि अपज्जवसाणं च' त्रिकालवत्थायी, जहा पंचत्थिकाय व्व ॥ एसेवऽत्थो दव्वादित्तुकं पडुच्च चित्तिज्जति । तत्थ—

७२. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तैत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, बहवे पुरिसे पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं १ । खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंच एँस्वयाइं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं २ । कालओ णं ओसप्पिणिं उस्सप्पिणिं च पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, णोउँस्सप्पिणिं णोओसप्पिणिं च पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ३ । भावओ णं जे जया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ते<sup>१०</sup> तथा पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ४ ।

७२. दव्वतो सम्मसुत्तं एगपुरिसे सादि जं पढमताए पढति; सपज्जवसाणं देवलोगगमणातो, गेलण्णतो वा ण्हे, पमादेण वा, केवलणाणुप्पत्तितो वा, मिच्छादंसणगमणतो वा सपज्जवसाणं, अहवा एगपुरिसस्सेव सादिसपज्जवसाणत्तणतो । दव्वतो चैव बहवे पुरिसे पडुच्च अणादि अपज्जवसाणं, अण्णोण्णट्ठितसंताणाविच्छेयत्तणतो, मणुयत्तणं व जहा । खेत्ततो भरहेरवएसु तित्थगर-धम्म-संघातियाण उप्पाद-वोच्छेदत्तणतो सादि सपज्जवसाणं, महाविदेहेसु अवुच्छेदत्तणतो [अणादि अपज्जवसाणं] । कालतो ओसप्पिणीए [जे० २१० प्र०] तिसु, उस्सप्पिणीए दोसु साघंतं, णोओसप्पिणिणोउस्सप्पिणिततियं महाविदेहकालपलिभागं पडुच्च तिसु वि कालेसु अवट्ठितत्तणतो अणादि अपज्जवसाणं । इदाणि भावतः—'जे' इति अणिदिट्ठस्स णिहेसो । 'जदा' इति काले पुव्वग्रहे अवरण्हे वा, दिया रातो वा पुण्वि जिणेहिं पण्णत्ता भावा, पच्छा त एव गौतमादिभिः 'आघविज्जंती'त्यादि,

१ साणं अयोधिअवातकरणे णाण आ० मो० ॥ २ इच्चैयं मो० सु० ॥ ३ वुच्छिं मो० सु० ॥ ४ अवुच्छिं मो० सु० ॥ ५ तत्थ इति पद स० स० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ६ पराव्वं स० शु० ॥ ७ पंच विदेहाइं ल० ॥ ८ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च जे० मो० सु० । नाय पाठव्वूणि-वृत्तिकृतां सम्मत ॥ ९ णोओसप्पिणिं णोउस्सप्पिणिं च ल० । हारि०वृत्तौ एतदुत्तरं व्याख्यातमस्ति ॥ १० ते तथा भावे पडुच्च जे० डे० मो० । ते भावे पडुच्च ल० । चूर्णकृता ते तदा पडुच्च इति पाठान्तरनिर्देशेन सह ते तथा पडुच्च इति पाठ आहतोऽस्ति । वृत्तिह्रया पुन ते तथा पडुच्च इत्येव पाठोऽस्तीत्युक्तं ॥

'आयविज्जति' आख्यायन्ते सामण्यतो [विसेसतो] विसेससामण्यतो वा, पण्यविज्जति भेदप्रभेदेहिं, तेसिं भेदप्रभेदाण सख्मवस्त्राण परवणा, दसिज्जति उवमामेत्तेण जहा गो तहा गवय इति, णिदसण हेतु दिट्ठतेहिं, उवदसणा उवणयोवसघारेहिं सव्वणएहिं वा । अहवा एगद्धिता एते । 'ते' इति पण्यवणिज्जाण णिहेसो । 'तहा' इति पण्यवण्यवणिज्जे वा पडुच्च सादि सपज्जवसाण भवति । तत्थ पण्यवण्य पडुच्च उवयोगतो सरविसेसतो पयत्तयो आसण 5 विसेसतो य सादि सपज्जवसाण । पण्यवणिज्जे पडुच्च गतीतो ठाणतो दुपदेसादिभेदतो तहेगपदेसादिमवगाइतो एगसमयादिमवत्थाणतो वण्णादिपज्जवे य आसज्ज सादि सपज्जवसाण । पाढतर वा "ते तदा पडुच्च" 'तया' इति काल अनाद्यपर्यवसितम् । भावत, श्रुतज्ञान क्षायोपशमिके भावे नित्य वर्तते स्वामित्वसम्बन्ध इति ।

७३ अहवा भवसिद्धीयस्स सुय सौइय सपज्जवसिय, अमवसिद्धीयस्स सुय अणादीय अपज्जवसिय ।

10 ७३ अहवा सादि सपज्जवसाण सपडिपक्खपदेसु भगचतुक्के पढमभगे सम्मसहितसुतभावो चित्तियव्वो, अणेगविह वा खयोवसमभाव पडुच्च दव्वादिउवयोग वा पडुच्च पढमभगो भवति । वित्तियमगो सुण्णो, अहवा अमव्वाण अणागतद्वसजोगेण सुतभावो भाणितव्वो । चरिम-त्ततियमगेसु अविसिद्धसुतभावो अमव्व भव्वे पडुच्च जोएतव्वो । अमवसिद्धीयस्स इत्यादि सुतसिद्ध । इह चरिम-त्ततियमगेसु अणादिसुतभावो दिट्ठो सुताधि कारतो, इधरा मतिभावो वि दट्ठव्वो, मति-सुताण अण्णोष्णाणुगतत्तणतो । सो य अणादिणाणभावो जहण्णो 15 अजहण्ण[जे० २१० द्वि०]मणुक्कोसो वा इवेज्ज, उक्कोसो ण भवति, कम्हा ? जम्हा उक्कोसनाणभावो केवल्लिणो भवति ॥ तस्स य सुत्ते इम पमाण पडिज्जति—

७४ सव्वागासपदेसग्ग सव्वागासपदेसेहिं अणतगुणिय पज्जवंगक्खर णिप्फज्जइ ।

७४ सव्वागासपदेस इत्यादि सूत्र । सव्वमिति-अपरिसेससव्वग्ग अधिकिच्चेव भण्णाति, सव्व आकासं सव्वाकासं, सव्वागासस्स पदेसा सव्वागासपदेसा, ज एतेसिं अग्ग-ज परिमाणं ति बुच भवति, एत सव्वागासप 20 देसरसियग्ग अणतेण रासिणा अण्णेण गुणित ताहे ज रासिपमाण लब्भति त सव्वपज्जवाण अग्ग भवति । पज्जाया गाम-एक्केक्कसाऽऽगासपदेसस्स जावतो अग्रुलहुयादी पज्जवा ते पण्णाए सव्वे सर्पिडिता, तेसिं सर्पिडिताण ज अग्ग एतप्पमाण अक्खर लब्भति ।

[अक्खर पडल]

इह अक्खर ति दुविह-गाण अकारादिदव्वसुतक्खर च । तत्थ नाणमक्खर ति अविसेसतो सव्वनाणमक्खर, 25 जम्हा त नीवातो उप्पण्ण अण्णभावत्तणतो णो क्खरति चि, इह पुण सव्वपज्जायतुल्लत्तणतो केवल्लयाण वेत्तव्व, जम्हा केवल सव्वदव्वपज्जायविण्णत्तिसमत्थ भवति । त च केवल णेये पवत्तइ, तस्स वि परिमाण इमेण चैव विधिणा भाणितव्व—'सव्वागासपदेसग्ग' इत्यादि पूर्ववत् । ते य सव्वदव्वपज्जाया समासतो तीस इमेण विधिणा—गुरू ल्हू गुरूल्हू अगुरूल्हू एते चतुरो, पच वण्णा, दो गधा, पच रसा, अट्ट फासा, अणित्यत्थ सठाणसहिता छ सठाणा, एते सुत्तदव्वे सव्वे समवति । अमुत्तदव्वेसु अगुरूल्हू चैव एक्को पज्जायो समवइ ।

१ आयविज्जति' ति प्राकृतवैत्या आख्यायन्ते सामान्य विशेषाभ्यां कथ्यन्ते इत्यर्थं इति हारिः०मन्दिदृष्टो । 'अयविज्जति' ति प्राकृतवाद् आख्यायन्ते सामान्यरूपतया विशेषरूपतया वा कथ्यन्ते इत्यर्थं इति मलय०मन्दिदृष्टो ॥ २ सायि सप खं । साहे सप ४० ॥ ३ पज्जवक्खरं जे भो सु विजामलव्वी २६८ पत्रे मन्दिदृष्टपाठेदरणे । नावं पाठमूयि वृत्तिरुतां समतः ॥

एत्थ य एक्केके भेदे अणंता भेदा संभवन्ति । किंच सुत्तदव्वेसु णतविसेसतो अणियोगधरा अट्टावीसं मूलपज्जाए भणन्ति । कइं ? उच्यते—ते चैव तीसं सव्वगुरु-लहुपज्जाएहिं विहूणा । जतो भणितं—

निच्छयतो सव्वगुरुं सव्वलहुं वा ण विज्जते दव्वं ।

ववहारतो तु जुज्जति वादरखंधेसु णऽण्णेषु ॥ १ ॥ [ कल्पमा. गा. ६५ ]

णिच्छयणयमतणे सव्वथा गुरुं लहुं वा नत्थि दव्वं । जदि हवेज्ज तो तस्स पडमाणस्स ण विरोधो केणइ 5  
हवेज्ज, सव्वलहुस्स वा उप्पयमाणस्स, जतो य णिच्चपडणं उप्पयणं वा ण विज्जति तम्हा [जे० २११ प्र०] सव्वथा  
गुरुं लहुं वा दव्वं नत्थि । ववहारणयादेसेणं पुण दो वि अत्थि, जहा—सव्वगुरु कोडिसिला वज्जं वा, सव्वलहुं च  
धूम-उल्लापत्तादी । एवं ववहारणयादेसतो वादरपरिणामपरिणतेसु खंधेसु गुरुभावो लहुभावो य भवति ।  
'णऽण्णेषु' चि ण सुहुमपरिणामेषु चि वुत्तं भवति ॥

के पुण सुहुमपरिणता दव्वा ? के वा वादरपरिणता ? उच्यते—परमाणूतो आरद्धं एगुत्तरवड्ढितेसु ठाणेसु 10  
जाव सुहुमो अणंतपदेसिओ खंधो, एतेसु ठाणेसु सुहुमपरिणता दव्वा लब्भन्ति, एतेसिं च अगरुलहुपज्जाया  
भवन्ति । वादरो पुण परमाणूतो आरब्भ जाव असंखेज्जपदेसितो खंधो ताव ण लब्भति, परतो वादरपरिणामो  
खंधो लब्भति, सो य जहण्णो वि अणंतपदेसिओ नियमा भवति, तातो एगुत्तरवड्ढिया अणंता अणंतट्टाणावडिया  
वादरा खंधा । ते य ओराल-विउव्वा-ऽऽहार-तेयवग्गणासु भवन्ति, णियमा य ते गुरुलहुपेज्जाई भवन्ति । सीसो  
पुच्छति—जे रूविगुरुलहु दव्वा अगुरुलहु य तेसिं के थोवा बहू वा ? उच्यते—थोवाणि गुरुलहुदव्वाणि, तेहिंतो 15  
रूवीअगरुलहुयदव्वा अणंतगुणा । कइं पुण ते अणंतगुणा भवन्ति ? उच्यते—थूराणं अणंतपदेसिताणं खंधाणं सट्टाणे  
अणंतातो वग्गणातो, सुहुमाणं पि अणंतातो वग्गणातो, थूरवग्गणठाणेहिंतो उव्वरिं भासादिवग्गणट्टाणेसु एक्केके  
अणंतातो वग्गणातो, हेट्टतो वि थूरवग्गणट्टाणाणं परमाणूणं एक्का वग्गणा, एवं जाव दसपदेसियाणं संखेज्जपदे-  
सियाणं संखेज्जातो वग्गणातो, असंखेज्जपदेसिताणं असंखेज्जाओ वग्गणाओ, एतेणं कारणेणं गुरुलहुदव्वेहिंतो  
रूवीअगरुलहुदव्वाणि अणंतगुणाणि भवन्ति । आदेसतरेण वा वादरठाणेसु वि सुहुमपरिणामो अविरुद्धो चि 20  
भाणितव्वो । उक्तं च—

गुरुलहुदव्वेहिंतो अगरुलहुपज्जया अणंतगुणा ।

उभयपडिसेहिता पुण अणंतकप्पा [जे० २११ द्वि०] बहुविकप्पा ॥ २ ॥ [ कल्पमा. गा. ६७ ]

गुरुलहुपज्जायजुत्ता जे दव्वा तेसिं चैव जे गुरुलहुपज्जाया तेहिंतो रूविअगरुलहुयदव्वाण जे अगरुल-  
हुयपज्जाया ते आधारअणंतगुणत्तणतो अणंतगुणा एव भवन्तीत्यर्थः । 'उभयपडिसेधिता णाम' अगरुलहुया । 25  
'पुण' विसेसणे । किं विसेसेति ? उच्यते—अरूविदव्वाधारा इत्यर्थः । अहवा 'उभयपडिसेधिता णाम' वादर-  
गुहुमभावयज्जिता जे दव्वा, अरूविण इत्यर्थः । तेसु 'अणंतकप्पा णाम' अणंतप्रकारा । कइं ? उच्यते—आकासत्थि-  
काए देस-पदेसपरिकप्पणाए, एवं धम्मादिमु वि । 'बहुविकप्प' चि तेसिं अणंतकप्पाणं एक्केको अणंतप्रकारो ।  
कइं पुण ? उच्यते—जम्हा एक्केके आगासप्यदेसे अणंता अगरुलहुयपज्जाया भवन्ति तम्हा ते बहुविकप्प चि । ते  
य सव्वण्णुवयणतो मद्धेया इति ॥

30

१ 'पज्जाया भवन्ति आ० दा० ॥ २ अस्या गायया एतदुत्तराद्धेमेव कल्पभाव्ये वर्तते ॥ ३ अविरुचिण जे० ।  
अवरुचिण दा० ॥ ४ णाम' पक्केका अणंतं आ० दा० ॥

रुवि-अरुविदव्वाण य पज्जायअप्यबहुत्तं इम मण्णति—रुविदव्वाण जे य अगुरुलहुपज्जाया ते पण्णाछेदेण पिंडिता, एतेहिंतो एकस्स चैव अमुत्तदव्वस्स जे अगुरुयलहुपज्जाया ते अणतगुणा भवतीत्यर्थ । एत्थ सीसो मण्णति—केवतितेहिं पुण भागेहिं मुत्तदव्वाण पिंडितपज्जाएहिंतो अमुत्तदव्वाण अगुरुलहुपज्जाया अणतगुणा भवति ? उच्यते—नास्त्यत्र परिमाण, बहुधा वि अणतएण गुणिज्जमाणे अमुत्तदव्वपज्जाएसु णत्थि परिमाण ॥

एवगते परिमाणार्थे इम मण्णति—

केण हवेज्ज निरोधो अगुरुलहुपज्जायाण तु अमुत्ते ? ।

अच्चंतमसजोगो जहित पुण तच्चिवक्खस्स ॥ ३ ॥ [ कल्पमा गा ६९ ]

जतो अमुत्तदव्वाण बहुहा वि अणतएण गुणिज्जमाणे पेज्जायण ण भवति । ततो 'केनेति' केनान्पेन प्रकारेण 'हवेज्ज' चि मवे 'णिरोधो णाम' परिमाण ? परिच्छेदेत्यर्थ, किं मुत्तदव्वेहिंतो अमुत्तदव्वाण अगुरुयल-  
हुपज्जायपरिमाण भविस्सति ? चि, नेत्युच्यते, 'अच्चंतमसजोगो' 'अच्चंत' अतीव अयुज्जमाणो जम्हा सजोगो ।  
[ जे० २१२ प्र० ] 'जहिय' ति यत्र । 'पुण' विसेसणे । किं विसेसयति ? रुविदव्वे । तदित्यनेन अमुत्तदव्वपक्खो,  
तस्स विक्खलो—मुत्तदव्वपगारो, तेसु पज्जायथोवत्तणतो अमुत्तदव्वेसु य पज्जायाण अतीवबहुयत्तणतो, अतो मुत्त-  
दव्वेहिंतो अमुत्तदव्वपज्जायाण परिमाणकरणसजोगो एगतेणेव ण जुज्जते, ण घटतेत्यर्थ ॥

एव तु अणतेहिं अगुरुलहुपज्जाएहिं सजुत्तं ।

होति अमुत्त दव्व अरुविकायाण तु चतुण्ह ॥ ४ ॥ [ कल्पमा गा ७० ]

'एवमिति' यथेदमुत्तं । सेस कठ । णवरिं 'अरुविकाताण तु चतुण्ह' ति धम्मा ऽधम्मा ऽऽगास-जीवाण ति एतेसिं चतुण्ह वि नियमा पत्तेय अणता अगुरुयलहुयपज्जाया भवति । कह ? उच्यते—जम्हा एतेसिं एकेको पदेसो अणतेहिं अगुरुयलहुयपज्जाएहिं सजुत्तो तम्हा धम्मा ऽधम्मेगजीवस्स य असखेज्जपदेसत्तणतो असखेज्जमणता पत्तेय भवति । आगासपदेसअपरिमाणत्तणतो पुण तस्स नत्थि परिमाण, तथा वि सबवहारतो अणता उक्ता इत्यर्थ ॥

एव ताव ज्ञेयमनतमुत्तम् । अथेदानीं तत् केवलज्ञान यथाऽनन्त तथेदमुच्यते—

उक्खल्ली० गाहा । [ कल्पमा गा ७१ ] सव्वे रुविदव्वा ऽरुविदव्वाण य जावतिया गुरुलहुपज्जाता सव्वे अरुविदव्वाण य जे अगुरुलहुपज्जाया एते सव्वे जुगव जाणति पासति य जतो, एवमणत्तं केवलनाणमक्खर ति सपसगमभिहितम् ।

इदार्णि 'अकारादिदव्वसुतमक्खर' ति जति अविसेसतो णाणमक्खरमुत्त णेय वा तथा वि रुद्विवसतो जहा

पक्कय तथा सरक्खर वज्जणक्खर वण्णक्खर वा मण्णति । तत्थ 'सरक्खर' अक्खर अक्खर सरति—गच्छति सरति वा इत्यतो सरक्खर अकारादि, वज्जणस्स वा फुडमभिवाण सरति, ण वा सरक्खरमतरेण अत्थो समरिज्जइ चि सरक्खरं । ककारादि वज्जणक्खरा, व्यज्यते तेनार्थ इति प्रदीपेन घटादिवद् व्यज्जनासरम् । तेहिं चैव सर-वज्जणक्खरेहिं जदा अत्थो वणिज्जति अमिलप्यते वा तदा ते वण्णक्खर मण्णति । इह एकेकस्स अकारादिहकारांतमक्खरस्स स-परप-ज्जायमेदा इमे—अकारस्स य पज्जाया जहा दीह इस्व-च्छुतात्तय, तत्थ दीहो [ जे० २१२ द्वि० ] उदात्ता ऽनुदात्त-स्व-  
रित्तमेद, एव इस्व-च्छुतात्तयि, पुनरप्येकेको सानुनासिको निरनुनासिकश्च, इत्येव अष्टादशभेदः । एव सेसक्खराण  
वि जहासमव भेदा भावितव्वा । अहवा सरविसेसतो एकेकमक्खरस्स अणता सपज्जाया । एत्थ अकारस्स



अकारजातीसामणतो सपज्जाया अट्टारस, सेसा परपज्जाया, एवं संखेज्जा पज्जाया । अहवा अकारादिसरा ककारादिवंजणा केवला अणसहिता वा जं अभिलावं लभे स तस्स सपज्जायो, सेसा तस्स परपज्जाया, ते य सव्वे वि अणंता । जतो सुते भणितं—“अणंता गमा अणंता पज्जाया” । [सू० ८५ तः ९४ आदि] भणितं च—

पणवणिज्जा० गाहा [कल्पभा. गा. ९६४] । अक्षरलंभेण० गाहा [विशेषा. गा. १४३] । अणभिलप्याण अभिलप्या अणंतभागे, तेसिं पि अणंतभागे सुतनिबद्धो इति । अहवा अकारादिअक्षराण पज्जाया सव्वदव्व- 5 पज्जायरासिप्पमाणमेत्ता भवंति । कहं ? उच्यते—जे अभिलावतो संजुत्ता-उसंजुत्तेहिं अक्षरेहिं उदत्ता-उणुदत्तेहिं य सरेहिं जावतिए अभिलावे अभिलप्ये य लभति ते सव्वे तस्स सपज्जाया, सेसा सव्वे तस्सेव परपज्जाया । आकासं मोत्तुं सव्वस्स सपज्जएहितो परपज्जाया अणंतगुणा । आकासस्स सपज्जएहितो परपज्जाया अणंतभागे । पर आह—कहं तस्सेव परपज्जाया य ? णणु विरुद्धं, उच्यते—सव्वक्षराण घडाइवत्थुणो वा दुविहा पज्जाया चित्तिज्जंति— 10 संवद्धा असंवद्धा य । तत्थ अकारस्स अकारपज्जाया अकारभावत्तणतो अत्थित्तेण संबद्धा, घटागारावस्थायां घटपर्यायवत्तु; ते चेव णत्थित्तेण असंवद्धा, नत्थित्तस्स अभावत्तणतो, जहा घटाकारावस्थायां मृत्पर्यायवत्तु । अकारे इकारादिपर्याया णत्थित्तेण संबद्धा, अकारे णत्थित्तभावत्तणतो, जहा मृदवस्थायां पिंडाकारपर्यायवत्तु; ते चेव अत्थित्तेण असंवद्धा, अत्थित्तभावत्तणतो, घटावस्थायां पटपर्यायवत्तु । एवं अक्षरेसु घडाइपज्जाया वि चित्तिज्जा, घटादिसु य अका(?) क्ख)रपज्जाया, इच्चेवं एकेकमक्खरं सव्वपज्जायमं ॥ [जे० २१३ प्र०]

एवं सर्वात्मकाः सर्वपर्यायाः, अतो भणति—सव्वागासपदेसगं अणंतगुणितं पज्जवगं अक्खरं निप्फज्जति ॥ 15 एवं नाणक्खरं अकारादिअक्खरं णेयअक्खरं च तिणिण वि अणंताऽभिहिता । एत्थ नाणक्खरं जं तं जीवस्स संसारत्थस्स ण कताइ ण भवति च्चि । जतो भणितं —

७५. सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंतभागे णिच्चुग्घाडियँओ, जति पुण सो वि आवरिज्जा तेणं जीवो अजीवत्तं पावेज्जा ।

सुद्धु वि मेहसमुदए होति पभा चंद-सूराणं ।

से तं सांदीयं सपज्जवसियं । से तं अणादीतं अपज्जवसितं ७ । ८ । ९ । १० ।

७५. सव्वजीवाणं पि य णं इत्यादि सुत्तं । सव्वजीवगहणे वि सति 'अवि' पदत्थसंभावणे, किं संभावयति ? उमं—सिद्धे मोत्तुं, चसद्धतो य भवत्थकेवली मोत्तुं । 'णं'कारो वाक्यालंकारे । अक्खरं ति—नाणं, तस्स अणं-

१ 'रेसु णत्थित्तभावत्तणतो घडाइपज्जाया आ० दा० । 'रेसु घडेसु घड इव पज्जाया मो० ॥ २ 'जायमयं । एवं आ० दा० । 'जायमयं । एवं सर्वत्रकाः सर्वं मो० ॥ ३ द्वादगारनयचक्रश्रुतौ इदं सूत्रमित्थं वर्तते—सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंततमो भागो णिच्चुग्घाडित्तथो ।

तं पि जदि आवरिज्जिज्ज तेण जीवा अजीवत्तं पावे । सुद्धु वि मेहसमुदये होइ पभा चंद-सूराणं ॥१॥ अत्र च नयचक्रप्रत्यन्तरे अणंतभागे इति जीवो अजीवत्तं इति च पाठमेदोऽप्युपलभ्यते ॥ ४ 'डिओ स० चूर्णिं च विना ॥ ५ अत्र चूर्णिना चूर्णं जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज इत्यादि गार्थवोक्तिरिक्ताऽस्ति, नयचक्रोद्धरणेऽपि पाठमेदेन गार्थव इत्यते, अस्मात्संस्कृतसूत्रप्रतिपु ये विविधा पाठमेदा वर्तन्ते, यथा पाठस्य स्वरूपमीक्ष्यते, एतन्मूर्धनिचारणेन सम्भाव्यते यदत्र सूत्रे गार्थव अथवा प्रकृतस्ति । वृत्तिरुत्तरोच्चारणे पुनरत्र चिं गय गाथा वा मान्याऽस्ति' इति न नम्यगवगम्यते, तथापि वृत्तिस्वरूपावलोकनेन गार्थव तेषां सम्भवेति सम्भाव्यते ॥ ६ सो वि वरिज्जेज्ज स० सु० । सो वाऽऽवरिज्जेज्ज स० ॥ ७ तेणं जे० मो० मु० ॥ ८ अजीवत्तं स० ॥ ९ पावेज्ज स० ॥ १० सादि सर्पं स० सु० । सयादि सर्पं स० ॥

तमागो निञ्जुग्याडियतो, सो केवलस्स न समवति, केवलस्स अविभागसपुष्पात्तणतो य, ओधीए वि ण समवति, अणतमागस्स अभावत्तणतो, अवधे' असल्येयप्रकृतिसमवादित्यर्थं, मणपज्जवनाणे वि रिञ्जु विपुलदुमेदसभवतो अणतमागो ण भवति, किंच अवधि-मणपज्जवाण णिञ्जुग्याडअभावत्तणतो इह अणधिकारो, परिसिद्धे मति-सुते त्ति 'अक्खरस्स अणतमागो निञ्जुग्याडिययो' अधिकतसुतस्स वा अक्खरस्स अणतमागो निञ्जुग्याडियतो । जत्य  
5 सुत तत्थ मतिणाण पि चेत्तव्व । 'णिञ्ज' ति सव्वराल । 'उग्याडिततो' त्ति णाऽऽवरिज्जति । सो य अणतमागो पुढवादिएगिंदियाण वि पचण्ह निञ्जुग्याडो, अहवा सव्वजहण्णो अणतमागो निञ्जुग्याडो पुढविकाइए, चैतन्यमात्र-मात्मन । त च उक्कोसयीणिद्धिसहितनाण-दसणावरणोदए वि णो आवरिज्जति ।

जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज तेण जीवो अजीवय पावे । सुट्ठु वि मेहसमुदए होति पहा चद-सूराण ॥१॥

[ कल्पमाथ्ये गा ७४ ]

10 जम्हा सो णाऽऽवरिज्जति तम्हा जीवो जीवत्त ण परिचयति । सो य कम्हा णाऽऽवरिज्जति? उच्यते-दव्व-समावसरुवत्तणतो । इह दिट्ठतो जहा—सुट्ठु वि मेहच्चादिए णमे चद सूरप्पहा मेहपडले भेचु दव्वे ओभासति, तथा अणतेहिं णाण-दसणावरणकम्मपुगालेहिं एकेको आत्तप्पदेसो आवेदियपरिवेदितो ते कम्मावरणपडले भेचु नाणस्स अणतमागो उव्वरति, [ जे० २१३ द्वि० ] ततो य से अव्वत्त नाणमक्खर सव्वजहण्ण भवति । ततो पुढविकाइ-तेहितो आउककतियाण अणतमागेण विसुद्धतर नाणमक्खर, एव कमेण तेउ-चाउ-चणस्सति वेइदिय तेइदिय-चत्तुर्-  
15 दिय-असण्णिपचेदिय-सण्णिपचेदियाण य विसुद्धतर भवतीत्यर्थं । ७ । ८ । ९ । १० ॥ भणित सादि सपज्जवसित अणादि अपज्जवसित च । एत्थेव प्रसगतो अक्खरपडल भणित ।

एव बहुवत्तव्व अक्खरपडल समासतोऽभिहित । वित्थरतो से अत्थ जिण-चोइसपुग्गिया कहए ॥ १ ॥

[ ॥ अक्खर पडल सम्मत्त ॥ ]

इदाणिं गमिया-ऽगमिय—

20 ७६ से किं त गमिय? गमिय दिट्ठिवाओ । अगमिय कालित्त सुय । से त्त गमिय । से त्त अगमिय ११ । १२ ।

७६ गमबहुलत्तणतो गमिय । तस्स लक्खण—आदि-भज्ज ऽवसाणे वा किंचिविसेसजुत्त सुत्त दुगादिस-त्तमासो तमेव पडिज्जमाण गमिय मण्णति, त च एवविहसुस्सण्ण दिट्ठिवातो । अण्णोणक्खराभिधाणद्धित ज पडिज्जति त अगमिय, त च प्रायसो आयारादि कालियसुत्त ११ । १२ ॥

25 उक्त गमिया ऽगमिय । इदाणिं अगा ऽणग-वविट्ठ—त च गमिया ऽगमिय चेव समासतो अगा ऽणगपविट्ठ मण्णति । कह ? उच्यते—सव्वसुत्तस्स तन्मावतगतत्तणतो ।

७७ अहवा त समासओ दुविह पणत्त, त जहा-अगपविट्ठ अगोवाहिर च ।

७७ अहवा अरिहतमग्गोवादिहाणुसारि सुत्त ज त समासतो दुविह इत्यादि सुत्त ।

पायदुगं जंघोरु गातदुगद्धं तु दो य बाहूयो । गीवा सिरं च पुरिसो वारसअंगो सुतविसिट्ठो ॥ १ ॥

[ ]

इच्चेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुत्तं अंगभावभागद्धितं तं अंगपविट्ठं भण्णाति । जं पुण एतस्सेव सुतपुरिसस्स वडरे-  
गद्धितं तं अंगवाहिरं ति भण्णाति । अहवा—

गणहरकतभगगतं जं कत थेरेहिं वाहिरं तं च । गियतं अंगपविट्ठं अणियत सुत वाहिरं भणितं ॥ १ ॥ 5

[ ]

७८. से किं तं अंगंवाहिरं ? अंगंवाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आवस्सगं च आव-  
स्सगवइरित्तं च ।

७९. से किं तं आवस्सगं ? आवस्सगं छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—सामायियं १ चउ-  
वीसत्थओ २ वंदणयं ३ पडिक्कमणं ४ काउस्सग्गो ५ पच्चक्खाणं ६ । से त्तं आवस्सयं । 10

७८-७९. से किं तं अंगवाहिरमित्यादि । कंठं ॥

८०. से किं तं आवस्सयवइरित्तं ? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—कालियं  
च उक्कालियं च ।

८०. आवस्सगवतिरित्तं दुविहं—कालियं उक्कालियं च । तत्थ 'कालियं' जं दिण-रातीणं पहम-  
चरिमपोरिसीसु पढिज्जति । जं पुण कालवेल्बज्जं पढिज्जति तं उक्कालियं ॥ तत्थ— 15

८१. से किं तं उक्कालियं ? उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—दसवेयालियं १  
कप्पियाकप्पियं २ चुल्लकप्पमुत्तं ३ महाकप्पमुत्तं ४ ओवाइयं ५ रायपसेणियं ६ जीवाभिगमो  
७ पणवणा ८ महापणवणा ९ पमायप्पमादं १० नंदी ११ अणुओगदाराइं १२ देविंदत्थओ  
१३ तंदुलवेयालियं १४ चंदावेज्झयं १५ सूरपण्णती १६ पोरिसिमंडलं १७ मंडलप्यवेसो १८  
विज्जाचरणविणिच्छओ १९ गणिविज्जा २० ज्ञाणविभत्ती २१ मरणविभत्ती २२ आयवि- 20  
सोही २३ वीयरायसुत्तं २४ संलेहणासुत्तं २५ विहारकप्पो २६ चरणविही २७ आउरपच्चक्खाणं  
२८ महापच्चक्खाणं २९ । से त्तं उक्कालियं ।

८१. उक्कालियं अणेगविहं दसवेयालियादि । कप्पमकप्पं च जत्थ मुत्ते वणिज्जति तं कप्पियाकप्पियं  
२ । कप्पं जत्थ मुत्ते वणिज्जितं तं कप्पमुत्तं, अणेगविहचरणकप्पणाकप्पयं [जे० २१४ प्र०] च कप्पमुत्तं । तं  
दुविहं—चुल्लं महत्तं च । चुल्लं ति—उहुतरं अविथरत्थं अप्पगंयं च चुल्लकप्पमुत्तं ३ । महत्थं महागंयं च महत्ता- 25

१-२ अणंगपविट्ठं न० स डे० ल० सु० ॥ ३ वंदणं न० स० डे० ल० सु० ॥ ४ काओसग्गो स० ॥ ५ "ओवाय्यंति  
अत्ताद पत्तेये औपत्तिकम्" इति पाक्षिकसूत्रवृत्तौ । उववाइयं सु० सु० ॥ ६ रायपसेणियं न० । रायपसेणइयं डे०  
स० सु० ॥ ७ 'फ्पण २९ पवमाइ । से त्तं जे० मो० सु० । पवमाइ इति सूत्रपदं चूर्णि-वृत्तिद्विनांस्ति व्याख्यातम् । अपि  
च ने० प्र० अत्रापि "दीरायामिदं न द्यते" इति दिपनकमपि वन्ते ॥

कम्पसुत ४ । एमेव [पण्णावणा] पण्णावणत्थो सवित्थरो ८ । अण्णे य सवित्थरत्था जत्थ भणित्ता सा महा  
 पण्णावणा ९ । मज्जादियो पचविहो पमातो, तेसु चैव आभोगपुण्विया उवरती अप्पमातो, एते जत्थ सवित्थरत्था  
 दसिज्जति तमज्झयण पमादप्पमार्द १० । सूरचरित पण्णाविज्जते जत्थ सा सूरपण्णात्ती १६ । पुरिसो चि-सङ्ख  
 पुरिससरीर वा, ततो पुरिसातो निप्फण्णा पोरिसी, एव सव्वस्स वत्थुणो जदा स्वममाणा च्छाया भवति तदा  
 ५ पोरिसी भवति, एत पोरिसिप्रमाण उत्तरायणस्स अते दक्खिणायणस्स य आदीए एक दिण भवति, अतो पर अह  
 एकसद्विभागा अगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढति, उत्तरायणे य इस्सति, एव मडले मडले अण्णोष्णा पोरिसी जत्थ  
 अज्झयणे दसिज्जति तमज्झयण पोरिसिमडल १७ । चदस्स सूरस्स य दाहिणुत्तरेसु मडलेसु जहा मडलातो मडले  
 पवेसो तहा वण्णिज्जति जत्थज्झयणे तमज्झयण मडलपवेसो १८ । विज्ज चि-नार्ण, चरण-चारित्त, विविधो  
 विसिट्ठो वा णिच्छयो-सम्भावो स्वरूपमित्थं, फल वा निच्छयो, त जत्थज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयण विज्जा  
 10 चरणविणिच्छयो १९ । सवाल-बुड्ढाउलो गच्छो गणो, सो जस्स अत्थि सो गणी, विज्ज चि-गाण, त च  
 जोइसनिमिच्चगत णातु पसत्थेसु इमे कज्जे करेति, त जहा-पव्वावणा १ सामाइयारोवण २ उवद्दावणा ३ सुतस्स  
 उदेस-समुद्देसा ऽणुष्णातो ४ गणारोवणं ५ दिसाणुष्णा ६ खेत्तेसु य णिमम पवेसा ७, एमाइया कज्जा जेसु तिहि  
 करण-गक्खत्त-सुहुत्त-जोगेसु य जे जत्थ करणिज्जा [जे० २१४ द्वि०] ते जत्थज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयण  
 गणिविज्जा २० । गिरमज्झवसाण ज्ञाण, विमयण विमत्ती, समेद ज्ञाण जत्थ वण्णिज्जति अज्झयणे तमज्झयण  
 15 ज्ञाणविमत्ती २१ । मरण-पाणपत्तिज्जाणो, विमयण-विमत्ती, पसत्थमपसत्थाणि समेदाणि मरणाणि जत्थ  
 वण्णिज्जति अज्झयणे तमज्झयण मरणविमत्ती २२ । आत चि-आत्मा, तस्स विसोही तवेण चरणयुणेहि य  
 आलोयणाविहाणेण य जहा भवति तहा जत्थ अज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयण आतविसोही २३ । सराणो  
 वीतरागो य एतेसिं जत्थ सख्खकइणा, विसेसतो वीतरागस्स, तमज्झयण वीतरागसुत २४ । वाधातो निव्वाधातो  
 वा भत्तसलेहो कसायादिभावसलेहो य जो जहा कातव्वो तहा वण्णिज्जते जत्थज्झयणे तमज्झयण सलेहणासुत  
 20 २५ । विहरण विहारो, तस्स कप्पो-विधि चि वुत्त भवति, सो जिणकप्पे थेरकप्पे वा, जिणकप्पे पडिम-अहालद  
 परिहारिया य दट्टव्वा, एतेसिं सवित्थरो विधी जत्थ अज्झयणे [वण्णिज्जति] तमज्झयण विहारकप्पो २६ ।  
 चरण-चारित्त, तस्स विधी चरणविधी, समेदो चरणविधी वण्णिज्जति जत्थ अज्झयणे तमज्झयण चरणविधी २७ ।  
 आउरो-गिलाणो, त किरियातीत णातु गीतत्था पच्चक्खावेंति, दिणे दिणे दच्चहास करेता अते य सव्वदव्वदात  
 णताए भत्ते वेरग जणेंता भत्ते निच्चणहस्स भवचरिमपच्चक्खाण कारेंति, एत जत्थज्झयणे सवित्थर वण्णिज्ज  
 25 तमज्झयण आउरपच्चक्खाण २८ । थेरकप्पेण जिणकप्पेण वा विहरित्ता अते थेरकप्पिया वारस वासे संलेह  
 करेत्ता, जिणकप्पिया पुण विहारेणेव [जे० २१५ प्र०] सलीण तहा वि जहाजुच्चं सलेह करेत्ता निव्वाधात सचेद्दा  
 चैव भवचरिम पच्चक्खति, एत सवित्थर जत्थज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयण महापच्चक्खाण २९ । एते  
 अज्झयणा जहामिथाणत्था भणिया ॥

उक्त उक्कालिय । इदाणि कालिय—

30 ८२ से किं त कालिय ? कालिय अणेगविहं पण्णत्त, त जहा-उत्तरज्झयणांइ ?  
 दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ णिसीह ५ महाणिसीह ६ इसिभासियाइ ७ जबुद्दीवपण्णत्ती

१ "जीवकीनां प्रमाणं प्रज्ञापना इति द्वारिभृत्तौ ॥ २ कालिय अणयपविहं" कालिय अणयपविहं अणेग सं०  
 सं सु० । नाय पाठ्यचूर्णि-धृत्तिरुक्तां सम्मतोऽस्ति ॥

८ दीवसागरपण्णत्ती ९ चंदपण्णत्ती १० खुड्डियाविमाणपविभत्ती ११ महल्लियाविमाणपविभत्ती  
 १२ अंगचूलिया १३ वंगचूलिया १४ विवाहचूलिया १५ अरुणोववाए १६ गरुलोववाए १७  
 धरुणोववाए १८ वेसमणोववाए १९ देविदोववाए २० वेलंधरोववाए २१ उट्टाणसुयं २२ समु-  
 ट्टाणसुयं २३ नागपरियाणियाओ २४ निर्यावलियाओ २५ कप्पवडिसियाओ २६ पुफियाओ  
 २७ पुफचूलियाओ २८ वण्हीदसाओ २९ ।

८२. से किं तं कालियं इत्यादि सुत्तं । जं इमस्स निसीहस्स सुत्तत्थेहिं वित्थिण्णतरं तं महाणिसीहं  
 ६ । सोहम्मादिस्सु जे विमणा ते आवलितेतरट्ठिते प्रतिविभागेण विभयइ जमज्जयणं तं विमाणपविभत्ती  
 भण्णति । ते य दो अज्जयणा-तत्थेगं सुत्तत्थेहिं संखित्तरं खुड्डं ति ११, वित्थियं सुत्तत्थेहिं वित्थिण्णतरं महल्लं  
 ति १२ । अंगस्स चूलिता जहा-आयारस्स पंच चूलातो, दिट्ठिनातस्स वा चूला १३ । वग्गो ति विक्खाव-  
 सातो अज्जयणादिसमूहो वग्गो, जहा अंतकडदसाणं अट्ट वग्गा, अणुत्तरोव्वातियदसाणं तिण्णि वग्गा, तेसिं चूला 10  
 वग्गचूला १४ । वियाहो भगवती, तीए चूला वियाहचूला, पुत्रभणितो अभणिओ य समासतो चूलाए अर्थो  
 भण्यतेत्यर्थः १५ । अरुणे णामं देवे तस्समयनिवद्धे अज्जयणे, जाहे तं अज्जयणं उवउत्ते समाणे अणगारे परियट्ठेति  
 ताहे से अरुणे देवे समयनिवद्धत्तणतो चलितासणे जेणेव से समणे तेणेव आगच्छिता ओवयति, ताहे समणस्स  
 पुरतो अंतद्धिते कतंजली उवउत्ते सुणेमाणे चिट्ठति, समत्ते य भणति-सुभासितं, वरेह वरं ति, इहलोगणिप्पिवासे  
 से समणे पडिभणति-ण मे वरेण अट्ठो त्ति, ताहे से पदाहिणं करेत्ता णमंसित्ता य पडिगच्छति १६ । एवं गरुले 15

१ वंगचू ख० स० ल० शु० ॥ २ वियाहं शु० ल० ॥ ३ उववपपदान्तानि सूत्रनामानि अस्मदाहतास्वशासु सूत्रप्रतिषु  
 चूर्ण्यादंशेषु हरि०वृत्तौ मलयगिरिवृत्तौ पाक्षिकसूत्रयशोदेवीयवृत्तौ च क्रमव्यत्यासेन न्यूनाधिकभावेन च वर्तन्ते । तथाहि—  
 अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरुणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए उट्टाणं जेसु० मोसु०  
 सुसु० । अरुणोववाए धरुणोववाए गरुलोववाए धरुणोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए वेसमणोववाए उट्टाणं डे० ।  
 अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए वेसमणोववाए उट्टाणं स० शु० । अरुणोववाए  
 वरुणोववाए गरुलोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए उट्टाणं ख० । अरुणोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए वेस-  
 मणोववाए उट्टाणं ल० । अथ च—अरुणोववाए इति सूत्रनामव्याख्यानांतर हरिभद्रवृत्तौ “एव वरुणोववादादिषु वि भाणियव्व”  
 इति, मलयगिरिवृत्तौ च “एव गरुडोपपातादिष्वपि भावना कार्या” इति, पाक्षिकसूत्रवृत्तौ च “एव वरुणोपपात-गरुडोपपात-  
 वैश्रमणोपपात-त्रैलोक्यरोपपात-देवेन्द्रोपपातेष्वपि वाच्यम्” इति निर्दिष्ट दृश्यते । चूर्ण्यादंशेषु पुनः पाठभेदत्रय दृश्यते—१ श्री-  
 सागरानन्दसूरिसुव्रते चूर्ण्यादंशे [पत्र ४९] “एव गरुले वरुणे वेसमणे सक्रे-देविदे वेलंधरे य त्ति” इति, २ श्रीविजयदान-  
 यांगमादिते सुव्रितचूर्ण्यादंशे [पत्र ९०-९] “एव वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलंधरे सक्रे-देविदे य त्ति” इति, ३ अस्मा-  
 भिराहते शुद्धते जेसलमेरुमत्के तालपत्रीयप्राचीनतमचूर्ण्यादंशे च “एव गरुले धरणे वेसमणे सक्रे-देविदे वेलंधरे य त्ति” इति  
 च । श्रीसागरानन्दसूरियो वाचनाभेद आदर्शान्तरेषु प्राप्यते, श्रीदानसूरियो वाचनाभेदस्तु नोपलभ्यते कस्मिंश्चिदप्यादंशे इत्यतः सम्भा-  
 न्यते—श्रीमशिक्षदानसूरिभिः सुव्रितसुत्रादंशे-चूर्ण्यादंशान्तर-हरि०वृत्ति-पाक्षिकवृत्त्यायवलोकेनेन पाठगलनमम्भावनया सूत्रनामप्रक्षेपे क्रमभेद-  
 धापि विहितोऽस्तीति । अस्माभिस्तु जेसलमेरीयचूर्णिप्रथमसारेण सूत्रपाठो मूले स्थापितोऽस्तीति ॥ ४ ॥ परियावणियाओ जे० स० डे० शु० ।  
 परियावलियाओ ७० मो० ल० ॥ ५ ॥ याओ कप्पियाओ कप्पवडिं नवांशु सूत्रप्रतिषु । श्रीमता चूर्णिहृता कप्पियाओ इति  
 नाम आगतं नाम्नि । किम-नवांश्वपि नन्दिस्सुत्रप्रतिषु एतन्नाम दृश्यते, श्रीहरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्योः पाक्षिकसूत्रटीकायां  
 चारि एतन्नामव्याख्यानं वर्तते । तथाहि—“कप्पियाओ” इति नौवर्मादिकल्पगनत्रकथ्यतामोचग प्रथमपद्धतय कल्पिका उच्यन्ते ।”  
 नन्दीहारि०वृत्ति । एतन्नामव्य व्याख्या मलयगिरिवृत्तौ पाक्षिकटीकायां च वर्तते ॥ ६ ॥ वण्हीदसाओ इति नाम्न प्राक्  
 वण्हीदसाओ इत्यन्तरं नाम शु० । नेद नाम चूर्णि-वृत्त्यादिषु व्याख्यातं निर्दिष्ट वाऽस्ति ॥ ७ ॥ एवं गरुले वरुणे वेसमणे सक्रे-  
 देविदे वेलंधरे य त्ति ख० मो० । एवं वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलंधरे सक्रे-देविदे य त्ति वा० ॥

१७ घरणे १८ वेसमणे १९ सखेदेवेदे २० वेलधरे २१ य चि । 'उद्वाणसुत' ति अज्झयण सिंगणाइयकज्जे जस्स ण गामस्स वा जाव रायहाणीए वा एगकुलस्स वा समणे आमुरुत्ते रुद्धे उवउत्ते त उद्वाणसुते चि अज्झयण परियट्ठेति एक दो तिष्णि वा धारे ताहे से गामे वा जाव रायहाणी वा कुल वा उट्ठेति, उव्वसइ चि बुच भवति २२ । से चैव समणे [जे० २१५ द्वि०] तस्स गामस्स वा जाव रायहाणीए वा तुद्धे समाणे पसण्णे पसण्णलेस्से 5 सुहासणत्थे उवउत्ते समुद्वाणसुत परियट्ठेइ एक दो तिष्णि वा धारे ताहे से गामे वा जाव रायहाणी वा आवासेति । समुवद्वाणसुये चि वत्तव्वे वगारलोवातो समुद्वाणसुये चि भणित । अप्पणा पुव्वुट्ठिय पि कत्तसकप्पस्स आवासेति २३ । 'णागपरियाणिय' चि अज्झयणे णाग चि-नागकुमारे, तेसु समयनिवद्ध अज्झयण, त जदा समणे उवयुत्ते परियट्ठेति तथा अकत्तसकप्पस्स वि ते णागकुमारा तत्थत्था चैव परियाणति, वदति णमसति भत्तिवहुमाण च करेति, सिंगणाइयकज्जेसु य वरया भवतीत्यर्थ २४ । निरयावलियासु आवलियपविट्ठेत्तरे य निरया तग्गाम्भियो 10 य णर तिरिया पसगतो वण्णिज्जति २५ । सोहम्मीसाणकप्पेसु जे कप्पविमाणा ते कप्पवड्डेसया ते वण्णिता, तेसु य देवीओ जा जेण तवोविसेसेण उववण्णा ता वण्णिता, ताओ य कप्पवड्डेसिया भणिया २६ । सजमभाव विगसितो पुप्फितो, सजमभावविचुतोऽवपुप्फितो, अगारभाव परिट्ठवेचा पव्वज्जाभावेण विगसितो पच्छा सीयइ जो, तस्स इहमवे परमवे य विलवणा दसिज्जइ जत्थ ता पुप्फिया २७ । एसेवऽत्थो सविसेसो पुप्फचलाए दसिज्जति २८ । अधगवण्हिणो जे कुळे ते अधगसइलोवातो वण्हिणो भणिया, तेसिं चरिय गती सिज्जणा य 15 जत्थ भणिता ता वण्हिदसातो । दस चि-अवत्था अज्झयणा वा २९ ॥

८३ एवमाइंयाइं चउरासीतीपइण्णगसहस्साइ भंगवतो अरहओ उंसहस्स आइतित्थय रस्स, तहा सखेज्जाणि पइण्णगसहस्साणि मज्झिमगाण जिणवराण, चोइस पइण्णगसह- स्साणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स । अहवा जस्स जत्तिया सिस्सा उप्पत्तियाए वेणतियाए कम्मयाए पारिणाभियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइ पइण्णगसहस्साइ, पत्तेय 20 बुद्धा वि तत्तिया चैव । से त कालिय । से त आवस्सयवइरिस्सि । से त अणगपविट्ठ ।

८३ भगवओ उसमस्स चउरासीतिसमणसाहस्सीतो होत्था, पइण्णगज्झयणा वि सव्वे कालिय-उकालिया चउरासीतिसहस्सा । कह ? जतो ते चउरासीतिं समणसहस्सा अरइतमग्गउवदिट्ठे ज सुतमणुसरिचा किंचि णिज्जूहंते ते सव्वे पइण्णगा, अहवा सुतमणुस्सरतो अप्पणो वयणकोसल्लेण ज धम्मदेसणादिस्सु भासते त सव्व पइण्णगं, जम्हा अणतगमपज्जय सुत्त दिट्ठ । त च वयण नियमा अणतरगमाणुपाती भवति तम्हा त [जे० २१६ प्र०] 25 पइण्णग । एव चउरासीती पइण्णगसहस्सा भवतीत्यर्थ । एतेण विधिणा मज्झिमतित्थगराण सखेज्जा पइण्णगसहस्सा । समणस्स वि भगवतो जम्हा चोइस समणसाहस्सीतो उक्कोसिया समणसपदा तम्हा चोइस पइण्णगज्झय

१ याति सं ॥ २ भगवओ अरहओ सिरिउसहसामिस्स, मज्झिमगाण जिणवाण संखेज्जाणि पइण्णगसहस्साणि चोइस सं ६० । भगवओ अरहओ उसहस्स समणाण, मज्झिमगाण इत्यादि शु० । भगवओ उसहरिस्सि (सिरिस्स समणस्स मज्झिमगाण इत्यादि य सं २० । त्रयाणामप्येषां पाठभेदाना मज्झिमगाण इत्याणुत्तराद्येन समानत्वेऽपि नैकरोऽपि पाठे वृत्तिकृतो सम्भवति । धृतिरुद्धया तु मूले आहत एव पाठो ष्टहीतोऽस्ति । चूर्णिकृता पुन सं ६० पाठानुसारेण व्याख्यातमस्तीति सम्भाव्यते ॥ ३ सिरिउसहसामिस्स अहं सं० । अत्र चूर्णिकृता उसहस्स इति हरिमद्वारिणा सिरिउसहस्स इति मलयगिरिणा च सिरिउसहसामिस्स इति पाठोऽशोक्तोऽस्ति ॥ ४ सीसा सं० सं० चूर्णि विना ॥

णसहस्सा भवंति । अहवा 'जत्तिया सिम्सा' इत्यादि मुत्तं । इह मुत्ते अपरिमाणा पइण्णाणा पइण्णाणसामिअपरिमाण-  
त्तणतो, किंच इह मुत्ते पत्तेयवुद्धप्पणीतं पइण्णाणं भाणितव्वं । कम्हा ? जम्हा पइण्णाणपरिमाणेण चैव पत्तेयवुद्धपरि-  
माणं कीरइ त्ति भाणितं 'पत्तेयवुद्धा वेत्तिया चैव' त्ति । चोदक आह-णणु पत्तेयवुद्धा सिस्समावो य विरुज्जते ?  
आचार्याह-तित्थगरपणीयसासणपडिवन्नत्तणतो तस्सीसा भवंतीत्यर्थः ॥

भाणितं कालितमुत्तं अंगवाहिर च । इदाणि अंगपविट्टं—

5

८४. से किं तं अंगपविट्टं ? अंगपविट्टं दुवालसविहं पणत्तं, तं जहा-आयारो १ सूयं-  
गडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ वियाहपणत्ती ५ णायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगड-  
दसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पणहावागरणाई १० विवागसुत्तं ११ दिट्ठिवाओ १२ ।

८४. से किं तं अंगपविट्टं इत्यादि सूत्रम् ॥

८५. से किं तं आयारे ? आयारेणं समणाणं णिरगंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय- 10  
सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जंति । से समासओ पंच-  
विहे पणत्ते, तं जहा-णाणायारे १ दंसणायारे २ चरित्तायारे ३ तवायारे ४ वीरियायारे ५ ।  
आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा,  
संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगइयाए पढमे अंगे, दो 15  
सुयक्खंधा, पणुवीसं अज्झयणा, पंचासीती उदेसणकाला, पंचासीती समुदेसणकाला, अट्टा-  
रस पयसहस्साई पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा,  
अणंता थावरा । सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पण-  
विज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं नाया,  
एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से तं आयारे १ ।

८६. [से किं तं आयारे इत्यादि मुत्तं] । आयरणं आयारो । गोयरो-भिक्षागहणविधाणं । विणयो- 20

यणातियो तिविहो वावणविधाणो वा । वेणइया-सीसा, तेसिं जहा आसेवणसिक्खा । भासा-सच्चा असच्चा मोसा  
य । अभासा-मोसा सच्चा मोसा य । चरणं-“व्रतसमिति०” गाहा [ ] । करणं-“पिडस्स जा

१ इह तित्थे अपरिमाणा इति पाठो मलयगिरिचुद्धतच्युद्धरणं ॥ २ सूयगड सं० ॥ ३ विवाहं न० विना ॥  
४ चाइणा ल० ॥ ५ चूर्णा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, इति पाठो व्यत्यासेन व्याख्यातोऽस्ति ॥  
६-७ 'सीई ल० ॥ ८ 'स्सातिं शु० । 'स्साणि मो० सु० ॥ ९ चूर्णिकता प्वथाया इति पाठो न गृहीतो न च व्याख्यातोऽस्ति,  
किन्तु श्रीहरिभद्रस्वरिणा श्रीमलयगिरिणा च एष पाठो गृहीतोऽस्ति, साम्प्रत च प्राप्तासु सर्वान्वपि नन्दीसूत्रप्रतिषु एष पाठो  
दृश्यते । समवायाद्भूत्तत्तावभयदेवसूत्रिणि प्वंथाया इति पाठो नन्दीसूत्रवेणाऽऽहो व्याख्यातश्चापि दृश्यते । देरे च नत्र स्पष्ट  
निर्दिष्टं यद्-अनौ पाठो न समवायाद्भूत्तत्तावभयदेवसूत्रप्रतिषु वक्तव्य इति । एतच्च सूत्रयति वन-चूर्णिकारप्रारप्रतिष्वयो मित्रा एव नन्दीसूत्रप्रत्यो  
हरिभद्रादीना समक्षमानत्र, तथाऽभयदेवसूत्रप्रामासु समवायाद्भूत्तत्तावभयदेवसूत्रप्रतिषु एष पाठो नामात् । मन्त्रानि प्राथम्याणासु च समवा-  
याद्भूत्तत्तावभयदेवसूत्रप्रतिषु दृश्यमान एष पाठोऽभयदेवसूत्रनिमित्तव्याख्याताराधुरोचनेनाऽऽयात इति मन्माव्यते ॥ १० वणया  
आं च० ल० ॥ ११ आचारे ल० ॥

विसोहो०" गाहा [ व्यव मा उ १ गा २८९ ] । जाय चि-सजमजत्ता, तस्स साहणत्थ आहारो मात चि-भावाजुतो  
वेत्तव्वो । वर्तन वृत्ती । एत सव्व आयारे 'आघविज्जइ' चि आख्यायते । सुत्तमत्थस्स य पदाण वायणा सा परिचा,  
अणता ण भवति, आदि-अतोवलमत्तणतो । अहवा ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिकाल वा पडुच्च परिचा, तीता ऽणागत-  
सव्वद्ध च पडुच्च अणता । उवक्कमादि णामादिणिकखेवकरण च अणियोगद्वारा, ते आयारे सखेज्जा, तेसिं पण्णव-  
५ गवयणगोयरत्तणतो । वेढो-छदजाती । 'पडिवचीओ' चि दव्वादिपदत्थव्युत्पन्नो पडिमा ऽभिग्गहविसेसा य  
पडिवचीओ, ते समासतो सुत्तपडिवद्धा सखेज्जा । तिदिहा जेण निक्खेवमादिनिज्जुत्ती तेण सखेज्जा । णव वमचेरा  
पिंढेसणा सेज्जा इरिया भासज्जाया वत्थेसणा पातेसणा [ जे० २१६ द्वि० ] ओमाहपडिमा सत्तसत्तिकया भावणा  
विमोत्ती, एते एव गिसीहवज्जा पणुवीस अज्जयणा । पचासीती उद्देसणकाला । कह ? उच्यते—अगस्स सुत्तवल्-  
घस्स अज्जयणस्स उद्देसणस्स, एते चउरो वि एक्को उद्देसणकालो । एव सत्थपरिण्णाए सत्त उद्देसणकाला, लो-  
१० विजयस्स छ, सीतोसणिज्जस्स चतुरो, समत्तस्स चतुरो, लोगसारस्स छ, धुयस्स पच, महापरिण्णाए सत्त, विमो-  
हात्तणस्स अद्द, उवघाणसुत्तस्स चतुरो, पिंढेसणाए एकारस, सेज्जाए तिणिण, इरियाए तिणिण, भासज्जाताए दो,  
वत्थेसणाए दो, पातेसणाए दो, उग्गाहपडिमाए दो, सत्तिकयाण सत्त, भावणाए एक्को, विमोत्तीए एक्को, एते सव्वे  
पचासीति । चोदक आह—जदि दो सुत्तकत्तथा पणुवीस अज्जयणा य अट्टारस पदसहस्सा पदग्गेण भवति तो ज भणित  
"णववमचेरमइओ अट्टारसपदसहस्सितो वेदो" । [ आवा० नि० गा० ११ ] चि एत विरुज्जति ? आचार्य आह—णणु  
१५ एत्थ वि भणित 'सपचूलो अट्टारसपदसहस्सितो वेदो' चि, इह सुत्तालावयपदेहि सहितो वहु वहुतरो य वक्त-  
व्येत्यर्थः । अहवा दो सुत्तवल्घा पणुवीस अज्जयणा य, एत आचारसहितस्स आचारस्स पमाण भणित । अट्टारस  
पदसहस्सा पुण पदमसुत्तवल्घस्स णववमचेरमइयस्स पमाण । विचित्तत्थवद्धा य सुत्ता, शुरुवदेसतो सिं अत्थो  
भाणितव्वो । अक्खररयणाए सखेज्जा अक्खरा । अभिघाणाभिप्रेयवसतो गमा भवति, ते य अणता इमेण  
विधिणा-सुत्त मे आउस तेण भगवता, त सुत्त मे आउस, तहिं सुत्त मे आ०, आ सुत्त मे आ०, त सुत्त मया आ०,  
२० तदा सुत्त मदा आ०, तहिं सुत्त मदा आ०, एवमादिगमेहिं भण्णमाण अणतगम । अक्खरपज्जएहिं अत्थपज्जएहिं  
य अणत । परिचा तसा, अणता ण भवति । अणता थावरा वणप्फइसहिता । सासत्त चि पचत्थिकाइयाइया । कड  
चि-क्रिचिमा, पयोगतो वीससापरिणामतो [ जे० २१७ प्र० ] वा जहा अब्भा अब्भरुक्खादी । एते सव्वे आयारे  
सुत्तेण निवद्धा । निज्जुचि-सगहणि हेतुदाहरणादिएहिं य णिकाइया । किंच एते अण्णे य 'जिणपण्णत्ता' जिण-  
पणीया भावा 'आघविज्जति' जाव उवदसिज्जति' एतेसिं पदाण पूर्ववद् व्याख्या । एवविहमायार अहिज्जितु से  
२५ पुरिसे 'एव' ति जहा आयारे निवद्धा परुव्विता य तथा सव्वदव्व भावाण णाता भवति । विविप्रे चि-अणेगथा  
जाणमाणो विण्णाता भवति । अण्णपावाद्दुगेहितो वा विसिद्धतरे विसिद्धयर वा जाणमाणो विण्णाता भवति । सेस  
निगमणसुत्त कठ । से च आयारे १ ॥

८६ से किं त सूयगडे ? सूयगडे ण लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोया ऽलोए  
सूइज्जइ, जीवा सूइज्जति, अजीवा सूइज्जति, जीवा ऽजीवा सूइज्जति, ससमए सूइज्जइ,  
३० परसमए सूइज्जइ, ससमय परसमए सूइज्जइ । सूयगडे ण आसीतस्स किरियावादिसयस्स,  
चउरासोईए अकिरियेवादीण, सत्तट्ठीए अण्णाणियवादीण, वत्तीसाए वेणइयवादीणं, तिण्ह



तेसद्वाणं पावादुयसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठविज्जइ । सूयगडे णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्टयाए बिइए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पदसहस्साणि पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया 5 जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उव-दंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णयाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से तं सूयगडे २ ।

८६. से किं तं सूयगडेत्यादि सुत्तं । 'सूइज्जइ' ति जथा णट्ठा सूई तंतुणा सूइज्जइ, उवलम्भतेत्यर्थः । अहवा जहा सूयी पढं सूतेइ तथा सूयगडे जीवादिपदत्था सूइज्जंति । 'वूहं' किच्च ति प्रतिव्यूहं, तेण प्रतिव्यूहेन ते 10 परप्पवादी णिप्पट्ट-पसिणे कातुं ससमयस्स सन्भावे ट्ठाविज्जति । उद्देसयपरिमाणं नातुं उद्देसणकाला जाणेज्जा । सेसं कंठं । से तं सूयगडे २ ॥

८७. से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठविज्जंति, अजीवा ठविज्जंति, जीवा-ऽजीवा ठविज्जंति, → लोए ठविज्जइ, अलोए ठविज्जइ, लोया-ऽलोए ठविज्जइ, ← ससमए ठविज्जइ, परसमए ठविज्जइ, ससमय-परसमए ठविज्जइ । ठाणे णं टंका कूडा सेला 15 सिहरिणे पन्भारा कुंडाइं गुहाओ आगरा दहा णदीओ आघविज्जंति । ठाणे णं एंगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्डीए दसद्वाणगविविड्ढियाणं भावाणं परूवणया आघविज्जंति । ठाणे णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगां, संखेज्जाओ निज्जु-त्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्टयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, एकवीसं उद्देसणकाला, एकवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरिं 20 पदसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति

१ तेवद्वाणं ख० स० जे० डे० ल० । हारि० वृत्तौ समवायाङ्गसूत्रादिषु च तेसद्वाणं इति पाठो वर्तते ॥ २ पासंडिय सयाणं जे० डे० मो० सु० । श्रीमलयगिरिमिरयमेव पाठ आहतोऽस्ति । ३ विदिषु शु० । बिइए ल० ॥ ४ उज्जंति खं० शु० ल० डे० ॥ ५ → ← एतच्चिह्नमध्यवर्ती पाठं जे० मो० सु० प्रतिषु ससमय-परसमए ठविज्जइ इति पाठानन्तर वर्तते ॥ ६ ठाणे णं इति ख० स० ल० शु० नास्ति ॥ ७ पगाइयाणं पगुत्तरियाणं दसद्वाणं स० डे० ल० शु० ॥ ८ च्चणा जे० मो० ॥ ९ उज्जंति ख० डे० शु० ॥ १० जे० डे० विनाऽन्यत्र सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं ख० स० ल० शु० समवायाङ्गसूत्रे च । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं मो० सु० ॥ ११ खं० स० ल० शु० प्रतिषु अणंता गमा अणंता पज्जवा इति नास्ति ॥

परुविज्जति दसिज्जति णिदसिज्जति उवदसिज्जति । से एवआया, एव णाया, एव विण्णाया, एव चरण करणपरुवणा आघविज्जइ । से त ठाणे ३ ।

८७ से किं त ठाणेत्यादि मुत्त । 'ठाविज्जति' चि स्वरूपत. स्थाप्यते, प्रज्ञाप्यतेत्यर्थ । छिण्ण तद् एक । कूड ति-जहा वेतइदस्सोवरि णव सिद्धायतणाइया कूडा । हिमवतादिया सेला । सिहरेण सिहरी, जहा वेतइत्ते । ज कूड उवरि अवबुज्जय त पन्मार, ज वा पन्वयस्स उवरिमाणे इत्थिकुभाणिई कुडइ निमाय त पन्मार । गगादिया कुडा । तिमिसादिया गुहा । रूप्य मुवण्ण रतणादिया आगरा । पौडरीयादिया दधा । गगासिंधुमादियाओ षदीओ । सेस कठ । से च ठाणे ३ ॥

८८ से किं त समवाए १ समवाए ण जीवा समासिज्जति, अजीवा समासिज्जति, जीवा-ज्जीवा समासिज्जति, लोए समासिज्जति, अलोए समासिज्जति, लोया-ज्लोए समासिज्जति, ससमए समासिज्जति, परसमए समासिज्जति, ससमय परसमए समासिज्जति । समवाए ण एगाइयाण एगुत्तरियाण ठाणसयविवड्डियाण भावाणं परुवणा आघविज्जति । दुवाल्लसगस्स य गणिपिडगस्स पंलवग्गे समासिज्जति । समवाए ण परिता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेदा, सखेज्जा सिलोगां, सखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ पड्वितीओ, सखेज्जाओ संगहणीओ । से ण अगट्ठयाए चरत्थे अगे, एगे सुयक्खधे, एगे अज्झयणे एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले पदसयसहस्से पदग्गेण, संखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परिता तसा, अणता थावरा, सासत-कड णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति एण्णविज्जति परुविज्जति दसिज्जति णिदसिज्जति उवदसिज्जात । से एवआया, एव णाया, एव विण्णाया, एव चरण करणपरुवणा आघविज्जति । से च समवाए ४ ।

८८ से किं त समवाए इत्यादि । समवाए निक्खेवो चत्तुन्विहो । दन्वे सचित्तादिदन्वसमवातो, भावसमवातो इम चैव अग । अहवा जत्थ वा एगत्थ ओदइयाइ वहु भावा सण्णिवादियसजोगा वा भावसमवातो । भावसमवाए वा इम णिरुत्त-जीवा 'समासिज्जति' सम आसइज्जति । सम ति-ण विसम, जहावत्थित अनूनाति रिक्त इत्यर्थ । आसइज्जति-आश्रीयते, बुद्ध्या ज्ञानेन गृह्यतेत्यर्थ । अहवा समास चि-इहमग्गेऽभिहित-जे० २१७ त्रि० ]सन्वपदत्याण समासतो विभारिसो चि । सेस कठ । उक्त समवाय ४॥

१ घणया च सं ल सु ॥ २ उज्जति ष० घ डे ल० ॥ ३ प्रहा इत्यर्थ ॥ ४ लसविह्वस्स मो डे ॥ ५ पल्लवग्गे सं । पल्लवग्गे इत्यस्यार्थ- तथा द्वादशाक्षस्य च गणिपिडकस्य 'पल्लवग्गे' ति पयवपरिमाण अभिवेदादितद्भवसंख्यान्प-यथा 'परिता तसा' इत्यादि । पयवचन्दस्य च 'पल्लव' ति निर्देश प्राकृतगतत्वात् पयइ पत्यइ इत्यादिवदिति । अथवा पल्लवा इव पल्लवा-अवयवास्तत्परिमाणम् । इति समवायाङ्गसूत्रवृत्तिः ११३-२ पत्रे ॥ ६ घायस्स ण जे डे मो० ॥ ७ जेसं० डे० विनाऽन्यत्र-सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से ण सं० सं० ल० सु । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पड्वितीओ । से ण मो० सु० ॥ ८ पया ल० ॥ ९ उज्जति ष० सं० ॥

८९. से किं तं वियाहे ? वियाहे णं जीवा वियाहिज्जंति, अजीवा वियाहिज्जंति, जीवा-अजीवा वियाहिज्जंति, लोए वियाहिज्जति, अलोए वियाहिज्जति, लोया-ज्लोए वियाहिज्जति, ससमए वियाहिज्जति, परसमए वियाहिज्जति, ससमय-परसमए वियाहिज्जति । वियाहे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगां, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । 5  
से णं अंगट्टयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे सातिरेगे अज्झयणसते, दस उद्देसग-सहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीतिं पयसह-स्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परू-विज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, 10 एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ । से तं वियाहे ५ ।

८९. से किं तं वियाहेत्यादि । 'वियाहे' ति व्याख्या, इह जीवादयो व्याख्यायंते । इह सतं चैव अज्झ-यणसण्णं । गोतमादिएहि पुट्टे अपुट्टे वा जो ण्हो तव्वागरणं [च] । सेसं कंठं । से तं वियाहे ५ ॥

९०. से किं तं णायाधम्मकहाओ ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-पर- 15 लोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं संले-हणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाइंओ पुणबोहिलाभा अंतक्रियाओ य आघविज्जंति । दस धम्मकहाणं वग्गा । तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइओवक्खाइयासयाइं, एवमेव सपुव्वावरेणं अच्चुट्ठाओ कहाण- 20 गकोडीओ भवंति ति मक्खायं । णायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा,

१-२ विवाहे जे० मो० मु० ॥ ३ विवाहस्स णं जे० डे० मो० मु० ॥ ४ डे० विनाऽन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं ख० स० ल० शु० । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण जे० मो० ॥ ५ स्साइं, चउरासीई पयसहस्साइं पयग्गेणं, इति समवायाङ्गसूत्रे पाठ । अत्राभयदेवीया टीका—“चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्नेति, समवायापेक्षया द्विगुणताया इहानाश्रयणात्, अन्यथा द्वे लक्षे अष्टाशीति सहस्राणि च भवन्तीति ।” इति ११६-१ पत्रे । तथैतदर्थसमर्थकं ‘विवाहपण्णत्तीए ण भगवतीए चउरासीइ पदसहस्सा पदग्गेण’ इति समवायाङ्गे ८४ स्थानके सूत्रपाठोऽपि कर्त्तते ॥ ६ वणया ल० ॥ ७ ज्जंति खं० स० ल० ॥ ८ विवाहे ख० स० विना ॥ ९ चेतियारिं वणसंडातिं शु० ॥ १० पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इह-पारलोइया इद्धिविसेसा जे० मो० मु० । ‘वम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइयइद्धी-विसेसा’ इति समवायाङ्गे ॥ ११ पव्वजापरियागा ख० स० डे० ल० शु० । ‘पव्वजाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागा संलेहणाओ’ इति समवायाङ्गे ॥ १२ वग्गा पण्णत्ता । तत्थ स० ॥

संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ जिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ,  
 संखेज्जाओ पडिवतीओ । से ण अगइयाए छट्टे अगे, दो सुयक्खवा, एगूणवीस णात  
 ज्जयणा, एगूणवीस उदेसणकाला, एगूणवीसं समुदेसणकाला, संखेज्जाइ पयसहस्साइ पय-  
 ग्गेण, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणता थावरा,  
 5 सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति  
 दसिज्जंति णिदसिज्जंति उवदसिज्जति । से एवआया, एवं णाया, एव विण्णयाया, एव  
 चरण करणपरूवणा आघविज्जति । से त्ता णायाधम्मकहाओ ६ ।

१० से किं त्ता णायाधम्मकहेत्यादि सुत्त । एक्कणवीस णातज्जयणा, णाय चि-आहरणा, दिव्वितियो  
 वा णज्जति जेहउत्थो ते णाता, एते पढमसुत्तखधे । अहिंसादिलक्खणस्स धम्मस्स कहा धम्मकहा, धम्मियाओ  
 10 वा कहाओ धम्मकहाओ, अक्खणाय चि बुत्त भवति, एते वितियसुत्तखधे । पढम वितियसुत्तखधे भणित्ताण  
 णाता धम्मकहाण णगरादिया भणति । वितिये सुत्तखधे दस धम्मकहाण वग्गा । वग्गो चि-समूहो, तच्चिसे  
 सणविसिद्धा दस अज्जयणा चैव ते दट्ठवा । एगूणवीस णाता, दस य धम्मकहाओ । तत्त णातेसु आदिमा दस  
 णाता चैव, ण तेसु अक्खादियादिसभवो । सेसा णव णाता, तेसु एक्के णाते चत्तालीस चत्तालीस अक्खा  
 इयाओ भवति, तत्त वि एक्केकाए अक्खाइयाए पच पच उवक्खाइयासताइ भवति, तेसु वि एक्केकाए उवक्खा  
 15 इयाए पच पच अक्खाइओवक्खाइयसताइ भवति, एव एते णव कोडीओ । एताओ धम्मकहासु सोहेत्तव्व चि काहु  
 एकोणवीसाए णाताण दसण्ह य धम्मकहाण विसेसो कज्जति-दस णाता दस णव य धम्मकहातो दसहिं परोप्पर  
 सुद्धा । एवं विसेसे कते सेसा णव णाता, ते णव चत्तालीसाए गुणित्ता जाता तिण्णि सता सद्धा अक्खाइयाण, एते  
 अक्खाइयपचसतेहिं तो सोधित्ता, तत्त सेस चत्ताल सतं, त उवक्खाइयपचसतेहिं गुणितं जाता उवक्खाइयाण सचरिं  
 सहस्सा, ते पचहिं अक्खाइतोवक्खाइयसतेहिं गुणित्ता एव जाता अद्दुद्धातो अक्खाइयकोडीतो । 'पद्गणेण' ति  
 20 उवसग्गपद णिवातपद णामियपद अक्खातपद मिससपद च, एते पदे अहिकिच्च पचल[जे० २१८ प्र०]क्खा  
 छावत्तरिं च सहस्सा पद्गणेण भवति, अहवा सुत्तालावयपद्गणेण संखेज्जाइ पदसहस्साइ भवति । अहवा छाहचरा  
 हियसहस्सपचलक्खा वि संखेज्जपदसहस्सेहिं ण विरुज्जति । सेस फल । से त्ता णाताधम्मकहाओ ६ ॥

११ से किं त्ता उवासगदसाओ ? उवासगदसासु ण समणोवासगाण णगराइ उज्जा-  
 णाइ चेइयाइ वेंणसडाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मा पियंरो धम्मकहाओ धम्मायरिया  
 25 ईहलोग-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिचरियां परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ सील  
 व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासपडिवज्जणया पडिमाओ उवसग्गा सलेहणाओ

१ २० मो सु० विनाउन्वय-सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से ण सं० सं० ल सु० । सिलोगा, संखेज्जाओ  
 जिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवतीओ । से ण जे ॥ २ वीसं अज्जयणा सं० जे० ३ ल० मो० सु० समवायाओ च ।  
 चूर्णिकत्ता मलयगिरिणा च मूले स्वीकृत एव पाठे व्याख्यातोऽस्ति ॥ ३-४ एगूणतीसं ल० ॥ ५ संखेज्जा पयसहस्सा  
 जे० मो० ॥ ६ पयसयसह समवायाओ ॥ ७ वणया सं० सं० ल० सु० ॥ ८ उज्जति सं० सं० ३० सु० ल० ॥ ९ दट्ठ य धम्म  
 जे ॥ १० वेत्तियारिं सु ॥ ११ वणसंढार सं० सं० सु० नास्ति ॥ १२ पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० मो० सु ॥  
 १३ इहलोग-परलोइया रिद्धिवि जे० मो० सु० ॥ १४ या पच्चक्खाओ परि जे० ३० ल० सु० ॥

भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंत-  
किरियाओ य आघविज्जंति । उवासगदसासु णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा,  
संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ,  
संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्टयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा,  
दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पयग्गेणं । संखेज्जा 5  
अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-  
णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदं-  
सिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा  
आघविज्जंति । से तं उवासगदसाओ ७ ।

९१. से किं तं उवासगदसातो इत्यादि सुत्तं । उवासक च्चि-सावता । तेसिं अणुव्रत-गुण-सीलव्रतोव- 10  
देसणा दससु अज्झयणेसु अक्खत्ता च्चि उवासगदसा भणिता । तासु सुत्तपदगं एकारस लक्खा वावणं च सह-  
स्सा पदग्गेणं । सुत्तालावयपदेहिं संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं । सेसं कंठं । से तं उवासगदसाओ ७ ॥

९२. से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेतियाइं  
वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहंलोग-परलोगिया 15  
रिद्धिवसेसा भोगंपरिभागा पव्वज्जाओ परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ  
भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा  
अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । अंतगडदसासु णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुयोग-  
दारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगह-  
णीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्टयाए अट्टमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ट

१ संखेज्जाओ संगहणीओ जे० मो० नास्ति ॥ २ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ख० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ३ संखेज्जा  
पदसहस्सा जे० मो० मु० ॥ ४ पदसयसहस्साइं समवायाङ्गे ॥ ५ वणया ल० ॥ ६ ज्जंति ख० सं० डे० ल० ॥ ७ अक्खाइज्जति  
त्ति आ० दा० ॥ ८ वणसंडाइं इति ख० सं० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ९ पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० ल० मो० मु० ॥  
१० लोइय-परलोइया इड्ढिविं मो० । लोइय-परलोइया इड्ढिविं जे० मु० ॥ ११ भोगपरिभोगा ख० ल० शु० ॥ १२ पव्वज्जा  
परियागा सुतं ख० । पव्वज्जा सुतं ल० ॥ १३ → ← एतच्चिह्नमध्यवर्ती पाठ मो० मु० नास्ति ॥ १४ दसाणं जे० सं० ॥  
१५ संखेज्जाओ संगहणीओ इति जे० मो० मु० नास्ति ॥ १६ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ इति खं० सं० ल० शु० नास्ति ॥  
१७ एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, सत्त वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पद-  
[सत]सहस्साइं पयग्गेणं इति समवायाङ्गसूत्रे पाठः । अत्राभयदेवीया टोका—

“नवर ‘दस अज्झयण’ ति प्रथमवर्गपिस्सयै घटन्ते, नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् । यच्चेह पठ्यते ‘सत्त वग्ग’ ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गा-  
पेक्षया, यतोऽत्र सर्वेऽप्यष्ट वर्गा, नन्द्यामपि तथापठितत्वात् । तद्वृत्तिश्चेयम् — ‘अट्ट वग्ग’ ति अत्र वर्गं. समूहं, स चान्तकृतानामध्य-  
नाना वा । सर्वाणि चैकवर्गतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततो भणित ‘अट्ट उद्देसणकाला’ इत्यादि ” । इह च दश उद्देसणकाला अभिवीयन्ते  
इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः । तथा सख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाप्रेणेति, तानि च किल त्रयोविंशतिर्लक्षानि चत्वारि च सहस्रा-  
णीति ।” १२१-२ पत्रे ॥

वग्गा, अट्ट उद्देसणकाला, अट्ट समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पयसहस्साइं पदग्गेण, सखेज्जा  
अक्खरा, अणत्ता गमा, अणत्ता पज्जवा, परित्ता तसा, अणत्ता थावरा, सासत-कड णिवद्ध  
णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति णिंदसि  
ज्जति उवदसिज्जति । से एवआया, एव णाया, एवं विण्णाया, एव चरण-करणपरूवेणा  
5 आघविज्जति । से त अतगडदसाओ ८ ।

९२ से किं त अतगडदसातो इत्यादि सुत्त । अतकडदस चि-कम्मणो ससारस्स वा अतो कडो  
जेहिं ते अतकडा, ते य तित्थकरादी, दस चि-पदमवग्गे दस अज्झयण चि तस्सवत्ततो अतकडदस चि । अहवा  
दस चि-अवत्था, तदत्ते जा अवत्था सा वणिज्जति चि अतो अतकडदसा । सरीरा ऽऽयुदसाण वा दसण् अतकडो  
चि अतकडदसा । णवर 'अतकडकिरियाओ' चि अस्य व्याख्या-अतरुडाण किरिया अतकडकिरिया, बहूण ता  
10 अतकडकिरियाओ चि भणित्ता । किरिय चि-क्रिया, चर्या इत्यथ । अहवा किरिय चि-कर्मसपणक्रिया, सा य  
सेछेसिअवत्थाए । अहवा किरिय चि-सहुमकिरियज्जाण । अहवा घातिकम्मेसु अतकडेसु किरिय चि-कम्मबधो,  
सो य इरियावहितो चि भणित्ता होति । एत च आघविज्जति । वग्गो चि-समूहो, सो य अतकडाण अज्झयणाण  
वा । सव्वे अज्झयणा जुगव उदिसति । ताम्भु सुत्तपदग्ग तेवीस लक्खा चतुरो य सहस्सा पदग्गेण । सखेज्जाणि  
वा पदसहस्साणि सुत्तालावगपदग्गेण । सेस कठ । से त अतगडदसा ८ ॥

९३ से किं त अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयदसासु ण अणुत्तरोववाइयाणं  
णगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणंसडाइं समोसरणाइ रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मा  
यरिया इहलोगं-परलोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिखागा पव्वज्जपरियागा सुत्तपरिग्गहा  
तवोवहाणाइ पडिमाओ उवसग्गा सळेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ अणुत्तरो  
ववाइयत्ते उववत्ती सुकुलपच्चायादीओ पुणवोहिलाभा अतकिरियाओ य आघविज्जंति ।  
20 अणुत्तरोववाइयदसासु ण परित्ता वांयणा, सखेज्जा अणुयोगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा  
सिलोगा, सखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ संगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।  
से ण अगट्टयाए णवमे अगे, एंगे सुयक्खधे, तिण्णि वग्गा, तिण्णि उद्देसणकाला, तिण्णि  
समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणत्ता गमा, अणत्ता  
पज्जवा, परित्ता तसा, अणत्ता थावरा, सासय कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा

१ घणया य ल ॥ २ विज्जति य० सं डे ल शु० ॥ ३ त्त्साक्यत इत्यर्थ ॥ ४ वणसंडाइं इति मो सु एव  
वत्ते ॥ ५ धम्मापरिया धम्मकहाओ मो सु ॥ ६ लोइय-परलोइया जे मो सु० ॥ ७ अणुत्तरोववत्ती शु ।  
अणुत्तरोववाय चि यं सं ॥ ८ दसाण स० जे मो ॥ ९ घाट्ठा ल ॥ १० संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ इति ल  
नास्ति ॥ ११ संखेज्जाओ संगहणीओ जे मो० नास्ति ॥ १२ सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सं सं० ल० शु० नास्ति ॥ १३ पगे  
सुयक्खधे, दस अज्झयणा, तिण्णि घग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पयसयसहस्साइं  
पयग्गेण प० इति समवायाङ्के । अत्राययदेवपादा — इह अथयनसमूहो वर्गः कर्णे दशाथयनानि वर्गश्च युगपदेनोद्दिश्यते इत्यत्रय  
एवोद्देशनकाला भवन्ति एवमेव च नन्द्यावनिधीयते इह इ इत्यत्रे दशेति अत्राभिप्रायो न ज्ञायत इति । ११३-२ पत्र ॥

आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति, दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जंइ । से त्तं अणु-त्तरोववाइयदसाओ ९ ।

९३. से किं तं अणुत्तरोववातियदसा इत्यादि सुत्तं । गत्थि जस्सुत्तरं सो अणुत्तरो, उववज्जणसुववातो . उप्पत्तीत्यर्थः, अणुत्तरो उववातो जस्स सो अणुत्तरोववाइओ, तेसिं बहुवयणातो [जे० २१८ द्वि०] अणुत्तरोव- 5 वाइय त्ति, वग्गे वग्गे य दसअज्झयण त्ति अतो अणुत्तरोववातियदसा भणिता । संसारे सुभभावं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा गतिचतुक्कं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा देवगतीए चैव अणुत्तरः । अणुत्तरदेवेषु जेसिं उववातो तेसिं णगरादिया कहिज्जंति । इह वग्गो त्ति-समूहो, सो य अज्झयणाणं, वग्गे वग्गे दस अध्ययना इत्यर्थः । तेसिं पदणं छातालीसं लक्खा अट्ट य सहस्सा, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि । सेसं कंठं । से त्तं अणुत्तरोववाइयदसा ९ ॥

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं ? पण्हावागरणेषु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं 10 अपसिणसयं, अट्ठुत्तरं पसिणा-अपसिणसयं, अण्णे वि विविधा दिव्वा विज्जा-तिसया नाग-सुवण्णेहि य सद्धि दिव्वा संवाया आघविज्जंति । पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जु-त्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्टयाए दसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उदेसणकाला, पणयालीसं समुदेसण- 15 काला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जंइ । से त्तं पण्हावागरणाइं १० ।

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं इत्यादि सुत्तं । पण्हो त्ति-पुच्छा, पडिवयणं वागरणं, प्रत्युत्तर- 20 मित्यर्थः । तस्मिं पण्हावागरणे अंगे पंचासवदाराइदा व्याख्येयाः परप्पवादिणो य । अंगुट्ट-वाहुपसिणादियाणं च पसिणाणं अट्ठुत्तरं सत्तं । किंच-जे विज्ज-मंता विधीए जविज्जमाणा अपुञ्जिता चैव सुभासुभं कहयंति तारिसाणं अपसिणाणं अट्ठुत्तरं सत्तं । अंगुट्टादिपसिणभावं अपसिणभावं च वाकरंति तारिसाणं पसिणा-अपसिणविज्जाणं अट्ठुत्तरं सत्तं । अहवा अणंतरा जे कहंति ते पसिणा, परंपरे पसिणापसिणा, तं पुण विज्जाकहितं कहंतेस्स परंपरं

१ वणया ल० ॥ २ विज्जंति ख० स० डे० ल० शु० ॥ ३ सयं, तं जहा—अंगुट्टपसिणाइं, वाहुपसिणाइं अहागपसिणाइं, अण्णे वि जे० डे० ल० मो० मु० । नाय पाठधूर्णि-वृत्तिकृद्भिर्गृहीतो व्याख्यातो वा विद्यते ॥ ४ वि विचिच्चा दिव्वा सर्वासु सूत्रप्रतिपु । हारि० वृत्तां एए एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति । मलयगिरिपादा पुन चूर्णिकारमनुश्रुताः सन्ति ॥ ५ दिव्वा शु० स० एव वत्ते ॥ ६ दिव्वा संघाणा संघणंति इति चूर्णिकृत्भिर्दिष्ट. पाठभेदः, दिव्याः सन्ध्यानाः सन्ध्वनन्ति इत्यर्थं ॥ ७ संखेज्जाओ संगहणीओ इति जे० मो० नास्ति ॥ ८ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ख० स० ल० शु० समवायाइे च नास्ति ॥ ९ विज्जंति ख० स० डे० ल० शु० ॥

भवति । अण्णे य विविधा विज्जातिसता कहिज्जति । किंच गागा सुवण्णा अण्णे य भवणवासिणो ते विज्ज-भता-  
गरिसिता आगता साहुणा सह सवदति-जल्प करेति । पाढर वा “दिच्चा सघाणा सघणति” तद्दुसुखा भवति,  
वरदाश्च गर्जितादि वा कुर्वति । दसममगस्स पदग्ग बाणउत्तिं लक्खा सोलस य सहस्सा पदग्गेण, सखेज्जाणि वा  
पदसहस्साणि । सेस कठ । से च पण्हावागरणाइ १० ॥

5 ९५ से किं त विवागसुत ? विवागसुते ण सुकड-दुकडाण कम्माण फल विवांगा  
आघविज्जति । तत्थ ण दस दुहविवागा, दस सुहविवागा ।

से किं त दुहविवागा ? दुहविवागेषु ण दुहविवागाण णगराइ उज्जाणाइ वणसडाइ  
चेइयाइं समोसरणाइ रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इंहलोइय-परलोइया  
रिद्धिविसेसा निस्यगमणाइ दुहपरपराओ ससारभंवपवचा दुकुलपच्चायाइंओ दुलहबोहियत्तं  
10 आघविज्जति । से च दुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेषु ण सुहविवागाण णगराइ उज्जाणाइ वणसडाइ  
चेइयाइं समोसरणाइ रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इंहलोइअ-परलोइया  
रिद्धिविसेसा भोगपस्विगा पव्वज्जाओ परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइ सलेहणाओ  
भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ देवलोगगमणाइ सुहपरपराओ सुकुलपच्चायादीओ पुणवो-  
15 हिलाभा अतकिरियाओ य आघविज्जति ।

विवांगसुते ण परिता वायणा, सखेज्जा अणुयोगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा  
सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पड्विचीओ ।  
से ण अगइयाए एक्कारसमे अगे, दो सुयक्खधा, वीस अज्झयणा, वीस उद्देसणकाला, वीसं  
समुद्देसणकाला, सखेज्जाइ पंदंसहस्साइ पदग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता  
20 पज्जवा, परिता तसा, अणता थावरा, सासय कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघ-  
विज्जति पण्णविज्जति परुविज्जति दसिज्जति णिदसिज्जति उवदसिज्जति । से एवआया,  
एव णाया, एव विण्णाया, एव चरण-करणपरुवणा आघविज्जेति । से च विवागसुत ११ ।

९५ से किं त विवांगसुत इत्यादि । विविधो पाक विपचन वा विपाक, कर्मणा सुममसुसो वा

१ विवांगो आघविज्जइ जे० मो० सु० ॥ २ से किं त दुहविवागा इति प० शु० नास्ति । समवायाङ्गे प्रथमम  
वतते ॥ ३ धम्मायरिया धम्मकहाओ सं० जे० दे० ल० मो० सु० ॥ ४ इंहलोग-परलोगिया सं० ॥ ५ इद्धिदि मो०  
सु० ॥ ६ गमणं प० ॥ ७ भवपवधा सं० ल० समवायाङ्गे च ॥ ८ से च दुहविवागा । से किं त सुहविवागा ? इति  
प० शु० नास्ति । समवायाङ्गे तु वतते ॥ ९ धम्मायरिया धम्मकहाओ ल० दे० ॥ १० इंहलोग-परलोगिया इद्धिविसेसा  
जे० मो० सु० ॥ ११ ज्जा परि प० ॥ १२ विवांगसुयस्स ण जे० मो० सु० । विवांगेषु णं शु० ॥ १३ पदसतसह  
समवायाङ्गे ॥ १४ विज्जति सं० सं० दे० ल० शु० ॥



जम्मि सुत्ते विपाको कइज्जति तं विपाकसुत्तं । विपाकसुत्तस्स सुत्तपदग्गं एगा पदकोडी चुलसीतिं च लक्खा वत्तीसं च सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं [जे० २१९ प्र०] । सेसं कंठं । से त्तं विवागसुत्तं ११ ॥

९६. से किं तं दिट्टिवाए ? दिट्टिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जति । से समा-  
सओ पंचविहे पणत्ते, तं जहा—परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५ । 5

९६. से किं तं दिट्टिवाते त्ति । दृष्टिर्दर्शनम्, वदनं वादः, दृष्टीनां वादो दृष्टिवादः, तत्र वा दृष्टीनां पातः दृष्टिपातः, सभेदभिण्णाओ सव्वणतदिट्ठीओ तत्थ वदंति पतंति व त्ति अतो दिट्टिवातो । सो य पंचभेदो-परिकम्मादि ॥

९७. से किं तं परिकम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पणत्ते, तं जहा—सिद्धसेणियापरिकम्मे  
१ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसंपज्जण- 10  
सेणियापरिकम्मे ५ विपपंजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुंतअचुतसेणियापरिकम्मे ७ ।

९८. से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरिकम्मे चोइसविहे पणत्ते,  
तं जहा—माउगापयाइं १ एगट्टियपयाइं २ अट्टापयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६  
रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदा-  
वत्तं १३ सिद्धावत्तं १४ । से त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १ । 15

९९. से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोइसविहे पणत्ते,  
तं जहा—माउगापयाइं १ एगट्टियपयाइं २ अट्टापयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६  
रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२  
णंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४ । से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ ।

१००. से किं तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ? पुट्टसेणियापरिकम्मे एकारसविहे पणत्ते, तं 20  
जहा—पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउ-  
भूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० पुट्टावत्तं ११ । से त्तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ ।

१०१. से किं तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ? ओगाढसेणियापरिकम्मे एकारसविहे

१ विज्जति ख० स० डे० ल० ॥ २ परिकम्मं जे० सो० मु० विना ॥ ३ सुयाइं ख० ॥ ४ ओगाहणसें समवायाहे ॥  
५ विजहणसें ख० स० ल० शु० । विपपजहसें समवायाहे ॥ ६ चुयअचुयं ल० शु० । चुयाचुयं डे० ॥ ७ अट्टपं स० ॥  
८-९ परिग्गहो ल० ॥ १० सिद्धादहं स० । सिद्धवद्ध समवायाहे ॥ ११ परिग्गहो जे० ॥ १२ स्सादहं स० । मणुस्स-  
बद्धं समवायाहे ॥ १३ पयाइं पवमादि । से त्तं पुट्टं ख० स० । पयाइं र इच्चाइ । से त्तं पुट्टं ल० ॥ १४ परिग्गहो जे० ॥

पण्णत्ते, त जहा-पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० ओगाढावत्त ११ । से त्त ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ ।

१०२ से किं त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे एकार-  
५ सविहे पण्णत्ते, त जहा-पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण  
६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० उवसपज्जणावत्त ११ । से  
त्त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ ।

१०३ से किं त विप्पेजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पेजहणसेणियापरिकम्मे एगारस  
विहे पण्णत्ते, त जहा-पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६  
१० तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० विप्पेजहणावत्त ११ । से त्त  
विप्पेजहणसेणियापरिकम्मे ६ ।

१०४ से किं त चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयमचुयसेणियापरिकम्मे एगारसविहे  
पण्णत्ते, त जहा-पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६  
तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० चुयमचुयावत्त ११ । से त्त  
१५ चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ७ ।

१०७-१०४ तत्थ परिकम्मे चि जोग्गकरण, जहा गणितस्स सोलस परिकम्मा, तग्गहितसुत्तत्थो सेस-  
गणितस्स जोग्गो भवति । एव गहितपरिकम्मसुत्तत्थो सेससुत्तादिदिट्ठिवातसुत्तस्स जोग्गो भवति । त च परिक-  
म्मसुत्त सिद्धसेणियापरिकम्मादिमूलभेदयो सत्तविह, उत्तरभेदतो तेसीतिविह मात्तुयपदादी । त च सब्ब समूह-  
त्तरभेद सुत्तत्थतो बोच्छिण्ण, जहागतसमदात्त वा वच्च ॥ किंच—

१०५ [ ईच्चेइयाइ सत्त परिकम्माइ, छ ससमइयाइ, सत्त आजीवियाइ, ] छ चउक्कणइ-  
याइ, सत्त तेरासियाइ । से त्त परिकम्मे १ ।

१०६ एतेसिं सत्तह परिकम्माण छ आदिमा परिकम्मा ससमइका, स्वसिद्धात्तपद्दापना एवेत्यर्थं ।  
आनीविरापासडत्था गोसालपत्रत्तिता, तेसिं सिद्धतमतेण चुता उच्चुत्तसहिता सत्त परिकम्मा पण्णविज्जति । इदार्णि  
परिकम्मे णत्तचित्ता—णेगमो दुग्गिहो-सगहितो असगहितो य, सगहितो सगह पविट्ठो, असगहितो ववहार, तम्हा

१ केउभूय ३ इद्यादि । से त्त ओगाढ ४० सं० ३० ६० ८० ॥ २ परिग्गहो जे ॥ ३ पाढो १ इद्यादि । से त्त उव-  
स सं ३ ८ ॥ ४-५ विज्जहण ४० सं ८० ८० ॥ ६ पाढो १ इद्यादि । से त्त विज्जहण ४० सं ३ ८ ॥  
७ ८ चुयमचुय ने ३ ८० ॥ ९ पाढाह । से त्त चुय ४० सं ३० ६० ८ ॥ १० चुयमचुय ३ ८० । चुयमचुय जे ॥  
११ एतए चट्टरसोत्तकान्तवर्तिं एतए सुत्तएत्तिण न वत्तते । चूर्णि-चूर्णित्तिदिग्ग पुनरावत्त एतए इति समवायात्तसुत्ताव एत्तयोऽयमत्रो-  
दत्तोऽस्ति ॥ १२ याए नरयाई । से त्त सं० ॥

संगहो ववहारो रिजुसुतो सदाइया य एको, एवं चतुरो णया । एतेहिं चतुहिं णएहिं छ ससमइकाइं परिक्रमाइं चित्तिजंति त्ति अतो भणितं-‘छ चतुक्कणइयाइं’ ति । ते चेव आजीविका तेरासिया भणिता । कम्हा ? उच्यते—  
जम्हा ते सर्वं जगं त्रयात्मकं इच्छंति, जहा-जीवो अजीवो जीवाजीवश्च, लोए अलोए लोयालोए, संते असंते संतासंते एवमादि । णयचिंताए वि ते तिविहं णयमिच्छंति, तं जहा-द्व्वद्वितो पज्जवद्वितो उभयद्वितो, अतो [ जे० २१९ द्वि० ] भणियं-‘सत्त तेरासियाइं’ ति सत्त परिक्रमाइं तेरासियापासंडत्था तिविधाए णयचिंताए चित्तयंतीत्यर्थः १ ॥

१०६. से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं, तं जहा-उज्जुसुत्तं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजूहं ८ संभिण्णं ९ आयच्चायं १० सोवत्थिप्पण्णं ११ णंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्टापुट्टं १४ वेयावच्चं १५ एवंभूयं १६ भूयावत्तं १७ वत्तमाणुप्पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभइं २० पण्णासं २१ दुप्परिग्गहं २२ । 10

१ सुत्ताइं बावीसाइं पण्णत्ताइं, तं जहा ख० स० । सुत्ताइं अट्ठासीति भवंतीति मक्खायाइं, तं जहा सम० ॥

२ द्वाविंशतिसुत्रनाम्ना नन्दिसुत्रप्रत्यन्तरेषु पाठमेदोऽधउल्लिखितकोष्ठकाद् ज्ञातव्यः—

ख० प्रति	स० प्रति:	जे० प्रति:	डे० प्रति:	ल० प्रति	मो० प्रति	शु० प्रति
१ उज्जुसुत्त	०	०	०	०	०	०
२ परिणयापरिणय	०	०	०	०	०	०
३ बहुभंगिय	०	०	बहुभंगीय	बहुभंगीय	०	०
४ विज्झवियच्चिय	विज्झायव्वाविय	विजयचरिय	विजयविधत्त	विजयविधत्त	विजयचरिय	वियच्चवियत्त
५ अणतर	०	०	०	०	०	०
६ परंपर	०	०	०	०	०	०
७ समाण	मासाण	मासाण	समाणस	समाणस	सामाण	समाएस
८ संजूह	संजूह	संजूह	जूह	जूह	संजूह	जूह
९ भिण्ण	०	०	संभिण्ण	संभिण्ण	०	०
१० आयच्चाइ	आयच्चाय	आहच्चाय	आहव्वय	आहव्वय	आहव्वाय	आहव्वाय
११ सावट्ठिपत्त	सोवत्थिप्पण्ण	सोमत्थिप्पन्न	सोवत्थियवत्त	सोमच्छिप्पन्न	सोवत्थिय घट	सोवत्थिप्पन्न
१२ णंदावत्त	०	मंदावत्त	०	०	०	०
१३ बहुल	०	०	०	०	०	०
१४ पुट्टापुट्ट	०	०	पुच्छापुच्छ	०	०	०
१५ वेयावच्च	०	वियावत्त	वियावत्त	वियावत्तं	वियावत्त	०
१६ एवंभूय	०	०	०	०	०	०
१७ भूयावत्त	दूयावत्त	दूयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्तं
१८ ?	वत्तमाणय	वत्तमाणपय	वत्तमाणुप्पत्त	वत्तमाणुप्पत्तं	वत्तमाणपय	वत्तमाणुप्पत्त
१९ समभिरूढ	०	०	०	०	०	०
२० सव्वओभइ	०	०	०	०	०	०
२१ पण्णास	०	०	०	०	०	०
२२ दुप्परिग्गह	दुप्पडिग्गह	दुप्पडिग्गह	परिग्गह	०	दुप्पडिग्गह	०

अत्र शून्येन पाठमेदाभावो ज्ञातव्यः, न तु पाठाभाव इति ॥

पण्णत्ते, त जहा-पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० ओगाढावत्त ११ । से त ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ ।

१०२ से किं त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे एकार-  
५ सविहे पण्णत्ते, त जहा-पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण  
६ तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० उवसपज्जणावत्त ११ । से  
त्तं उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ ।

१०३ से किं त विप्पंजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पंजहणसेणियापरिकम्मे एगारस-  
विहे पण्णत्ते, त जहा-पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६  
१० तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० विप्पंजहणावत्त ११ । से त  
विप्पंजहणसेणियापरिकम्मे ६ ।

१०४ से किं त चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयमचुयसेणियापरिकम्मे एगारसविहे  
पण्णत्ते, त जहा-पाढो १ आमासपयाइ २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुण ५ दुगुण ६  
तिगुण ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्त १० चुयमचुयावत्त ११ । से त  
१५ चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ७ ।

१७-१०४ तत्थ परिकम्मे त्ति जोमाकरण, जहा गणितस्स सोलस परिकम्मा, तग्गहितसुत्तत्थो सेस-  
गणितस्स जोमो भवति । एव गहितपरिकम्मसुत्तत्थो सेससुत्तादिदिट्ठिवात्तसुत्तस्स जोमो भवति । त च परिक-  
म्मसुत्त सिद्धसेणियापरिकम्मादिमूलभेदयो सचविह, उत्तरभेदतो तेसीतिविह मातुयपदादी । त च सन्व सम्पू-  
र्रभेद सुत्तत्थतो बोञ्जिष्ण, जहागतसपदात्त वा वच्च ॥ किंच—

१०५ [ ईच्चेइयाइ सत्त परिकम्माइ, छ ससमइयाइ, सत्त आजीवियाइ, ] छ चउक्कणइ-  
याइ, सत्त तेरासियाइ । से त परिकम्मे १ ।

१०६ एतेसिं सत्तह परिकम्माण छ आदिमा परिकम्मा ससमइका, स्वसिद्धातप्रज्ञापना एवेत्यर्थ ।  
आनीविकापासडत्था गोसालपत्रचिता, तेसिं सिद्धतमतेण चुता उचुत्तसहिता सत्त परिकम्मा पण्णविज्जति । इदार्णि  
परिकम्मे णतचिता—गेगमो दुविहो—सगहितो असगहितो य, सगहितो सगह पविट्ठो, असगहितो ववहार, तम्हा

१ केउभूय ३ इच्छादि । से त ओगाढ ख० सं० दे० ल० ॥ २ परिग्गहो जे ॥ ३ पाढो १ इच्छादि । से त उव  
ख सं० दे० ल० ॥ ४-५ विज्जहण य० सं० ल० सु ॥ ६ पाढो १ इच्छादि । से त विज्जहण य० सं० दे० ल० ॥  
७ ८ चुयमचुय जे० दे० ल० ॥ ९ पाढाइ । से त चुय यं० सं० दे० ल० ॥ १० चुयमचुय दे० ल० । चुयाचुय जे ॥  
११ एतद् चत्तरस्रोत्रकान्तवन्ति सद्य स्यप्रतिपु न वतते । चूर्णि-चूर्णिच्छिद्रि पुनराद्यत्त इति समवायाङ्गसूत्रात् सूत्राङ्गोऽयमत्रो-  
दृतेऽस्ति ॥ १२ याइ नइयाइ । से त सं ॥

संगहो ववहारो रिजुसुतो सदाइया य एको, एवं चतुरो णया । एतेहिं चतुहिं णएहिं छ ससमइकाइं परिकम्माइं चिंतिज्जंति चि अतो भणितं—‘छ चतुक्कणइयाइं’ ति । ते चेव आजीविका तेरासिया भणिता । कम्हा ? उच्यते— जम्हा ते सर्वे जगं त्रयात्मकं इच्छंति, जहा—जीवो अजीवो जीवाजीवश्च, लोए अलोए लोयालोए, संते असंते संतासंते एवमादि । णयचिंताए वि ते तिविहं णयमिच्छंति, तं जहा—द्वयद्वितो पज्जद्वितो उभयद्वितो, अतो [ जे० २१९ द्वि० ] भणियं—‘सत्त तेरासियाइं’ ति सत्त परिकम्माइं तेरासियपासंडत्था तिविधाए णयचिंताए चितयंतीत्यर्थः १ ॥

१०६. से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं बावीसं पणत्ताइं, तं जहा—उज्जुसुत्तं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ सज्जूहं ८ संभिण्णं ९ आयच्चायं १० सोवत्थिप्पण्णं ११ णंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्टापुट्टं १४ वेयावच्चं १५ एवंभूयं १६ भूयावत्तं १७ वत्तमाणुप्पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभइं २० पण्णासं २१ दुप्परिग्गहं २२ । 10

१ सुत्ताइं बावीसाइं पणत्ताइं, तं जहा ख० स० । सुत्ताइं अट्टासीति भवंतीति मक्खवायाइं, तं जहा सम० ॥

२ द्वाविंशतिसूत्रनाम्ना नन्दिसूत्रप्रत्यन्तरेषु पाठभेदोऽथउल्लिखितकोष्ठक्राद् ज्ञातव्यः—

ख० प्रति	स० प्रति	जे० प्रति	डे० प्रति	ल० प्रति	मो० प्रति	शु० प्रति
१ उज्जुसुत्त	०	०	०	०	०	०
२ परिणयापरिणय	०	०	०	०	०	०
३ बहुभंगिय	०	०	बहुभंगीय	बहुभंगीय	०	०
४ विज्झवियच्चिय	विज्झायव्वाविय	विजयचरिय	विजयविधत्त	विजयविधत्त	विजयचरिय	वियच्चवियत्त
५ अणतर	०	०	०	०	०	०
६ परंपर	०	०	०	०	०	०
७ समाण	मासाण	मासाण	समाणस	समाणस	सामाण	समाएस
८ सज्जूह	सज्जूह	सज्जूह	ज्जूह	ज्जूह	सज्जूह	ज्जूह
९ भिण्ण	०	०	सभिण्ण	सभिण्ण	०	०
१० आयच्चाइ	आयच्चाय	आहच्चाय	आहव्वय	आहव्वय	आहव्वाय	आहव्वाय
११ सावट्टिपत्त	सोवत्थिप्पण्ण	सोमत्थिप्पन्न	सोवत्थियवत्त	सोमच्छिप्पन्न	सोवत्थिय घट	सोवत्थिप्पन्न
१२ णंदावत्त	०	भंदावत्त	०	०	०	०
१३ बहुल	०	०	०	०	०	०
१४ पुट्टापुट्ट	०	०	पुच्छापुच्छ	०	०	०
१५ वेयावच्च	०	वियावत्त	वियावत्त	वियावत्तं	वियावत्त	०
१६ एवंभूय	०	०	०	०	०	०
१७ भूयावत्त	दूयावत्त	दूयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्तं
१८ ?	वत्तमाणुप्पय	वत्तमाणुप्पय	वत्तमाणुप्पत्त	वत्तमाणुप्पत्तं	वत्तमाणुप्पय	वत्तमाणुप्पत्त
१९ समभिरूढ	०	०	०	०	०	०
२० सव्वओभइ	०	०	०	०	०	०
२१ पण्णास	०	०	०	०	०	०
२२ दुप्परिग्गह	दुप्पडिग्गह	दुप्पडिग्गह	परिग्गह	०	दुप्पडिग्गह	०

अत्र शून्येन पाठभेदाभावो ज्ञातव्य, न तु पाठाभाव इति ॥

इंचेयाइ वावीसं सुत्ताइ छिण्णच्छेयणइयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइ १, इंचेयाइ वावीस सुत्ताइ अच्छिण्णच्छेयणइयाइ आजीवियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइ २, इंचेयाइ वावीस सुत्ताइ तिगणइयाइ तेरासियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइ ३, इंचेयाइ वावीस सुत्ताइ चउक्कणइयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइ ४, एवामेव सपुब्बावरेण अट्टासीतिं सुत्ताइ भवंतीति मक्खवाय ।  
 5 से त सुत्ताइ २ ।

१०६ 'सुत्ताइ' ति उज्जुसुताइयाइ वावीस सुत्ताइ । ताणि य सुत्ताइ सब्बदब्बाणं सब्बपज्जवाणं सब्बपताणं सब्बभगविकम्पाणं य दसगाणि, सब्बस्स य पुब्बगतसुत्तस्स अत्यस्स य स्ययगं चि, अतो ते स्ययगत्तातो सुत्ता भणिता जहाभिधागत्याते । ते य इदाणिं सुत्तं उत्थतो वोच्छिण्णा, जहागतसमदायतो वा वच्चा । ते चेव वावीस सुत्ता विभागतो अट्टासीतिं सुत्ता भवति इमेण विधिणा-वावीस सुत्ता छिण्णच्छेदणतामिप्पायतो । कहं छिण्णच्छेदणतो चि भण्णति ?  
 10 उच्यते-जो णयो सुत्तं छिण्णं छेदेण इच्छति, जहा-"धम्मो मगल्लमुक्कट्टु" ति सिलोगो [दशवै अ १ गा १] । एसं सिलोगो सुत्तं उत्थतो पत्तेयं छेदेण ठितो, णो वितियादिसिलोगे अवेक्खंइ चि वुत्तं भवति । छिण्णो छेदो जस्स स भवति छिण्णच्छेदं, प्रत्येकं कल्पितपर्यंत्यर्थं । एते एव वावीस ससमतसुत्तपरिवाडीए सुत्ता ठिता । एते चेव वावीस अच्छिण्णच्छेदणतामिप्पायतो आजीवियसुत्तपरिवाडीए ठिता । अच्छिण्णच्छेदणतो जहा-एसेव दुमपुप्फियपदमसिलोगो अत्यतो वितियाइसिलोगे अवेक्खमाणो, वितियादिया य पदमं अच्छिण्णच्छेदणतामिप्पायतो भवति । एवपि वावीस  
 15 सुत्ता अक्खररणविभागद्विता वि अत्ययो अण्णोणमवेक्खमाणा अच्छिण्णच्छेदणयद्वितं चि भण्णति । णयर्चिताए वि वावीस चेव सुत्ता, 'तेरासियाणं तिक्कणइयाइ' ति त्रिकनयामिमायतो चिंत्यतेत्यर्थं । तट्ठा ससमये वि णयर्चिताए वावीस चेव सुत्ता चउक्कणइया । एव चतुरो [ जे० २२० प्र० ] वावीसातो अट्टासीतिं सुत्ता भवति । से च सुत्ताइ २ ॥

१०७ से किं त पुब्बगते ? पुब्बगते चोइसविहे पण्णत्ते, त जहा-उप्पादपुब्बं १  
 20 अंगोणीयं २ वीरियं ३ अत्थिणत्थिप्पवात्तं ४ नाणप्पवात्तं ५ सच्चप्पवात्तं ६ आयप्पवात्तं ७ कम्मप्पवात्तं ८ पच्चक्खोणं ९ विज्जणुप्पवात्तं १० अवद्दं ११ पौणायु १२ किरियाविसालं १३ लोणविंदुसारं १४ । उप्पायस्स ण पुब्बस्स दस वत्थू चत्तारिं चुँल्लयवत्थू पण्णत्ता १ । अंगोणीयस्स ण पुब्बस्स चोइस वत्थू दुवाल्सं चुँल्लवत्थू पण्णत्ता २ । वीरियस्स ण पुब्बस्स अट्ठ वत्थू अट्ठ चुँल्लवत्थू पण्णत्ता ३ । अत्थिणत्थिप्पवायस्स ण पुब्बस्स अट्ठारसं

१-३-५-७ इंचेयाइ मो० सु० ॥ २-४-६-८ सुत्ताइ इति पदं ल० स एव वत्तते नान्यत्र समवायाङ्केऽपि नास्ति ॥  
 ९ भवति इत्थमक्खवाय ल० ॥ १० अंगोणीयं ल० ॥ ११ क्खणप्पवात्तं ल० सं विना ॥ १२ विज्जाणु जे० ल० मो० सु० ॥  
 १३ पाणाउ ज । पाणाउ हे ल० मो० सु० ॥ १४ अस्सिं सुं उप्पायस्स ण पुब्बस्स, अंगोणीयस्स ण पुब्बस्स  
 वीरियस्स ण पुब्बस्स इलादिकेयुं चतुरारसि पूर्वनामस्थानेषु उरगायपुब्बस्स ण, अंगोणीयपुब्बस्स ण, वीरियपुब्बस्स ण  
 इत्यादि पाठभेदो मो० सु० इत्यते ॥ १५ चुँल्लवत्थू ७ । चुँल्लियावत्थू जे० रे० मो० सु० ॥ १६ अंगोणीयस्स ल० ल० ॥  
 १७ चुँल्लवत्थू ल० सु० । चुँल्लिवावत्थू ज ड मा० सु० ॥ १८ चुँल्लवत्थू ७ । चुँल्लिवावत्थू जे हे यो सु० ॥

वत्थू दस चुल्लवत्थू पण्णत्ता ४ । णाणप्पवादस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ५ । सच्च-  
 प्पवायस्स णं पुव्वस्स दोण्णि वत्थू पण्णत्ता ६ । आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू  
 पण्णत्ता ७ । कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ८ । पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स  
 वीसं वत्थू पण्णत्ता ९ । विज्जणुप्पवादस्स णं पुव्वस्स पणरस वत्थू पण्णत्ता १० । अवंझस्स  
 णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ११ । पाणायस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता १२ । 5  
 किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता १३ । लोग्गिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणु-  
 वीसं वत्थू पण्णत्ता १४ ।

दस १ चोदस २ अट्ठ ३ ऽड्डारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि ।

सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पणरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ७७ ॥

बारस एकारसमे ११, बारसमे तेरसेव वत्थूणि १२ ।

तीसा पुण तेरसमे १३, चोदसमे पण्णवीसा उ १४ ॥ ७८ ॥

वत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चैव दस ४ चैव चुल्लवत्थूणि ।

आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चुल्लया णत्थि ॥ ७९ ॥

से त्तं पुव्वगते ३ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगतं ? ति, उच्यते—जम्हा तित्थकरो तित्थपवत्तणकाले गणधराण सव्वसुताधारत्तणतो 15  
 पुव्वं पुव्वगतसुत्तत्थं भासति तम्हा पुव्वं त्ति भणिता, गणधरा पुण सुत्तरयणं करेन्ता आयाराइकमेण रयंति  
 इवेति य । अण्णायरियमतेण पुण पुव्वगतसुत्तत्थो पुव्वं अरहता भासितो, गणहरेदि वि पुव्वगतसुत्तं चैव पुव्वं रइत्तं  
 पञ्जा आयाराइ । एवयुक्ते चोदक आह—णणु पुव्वावरविरुद्धं, कम्हा ? जम्हा आयारनिज्जुत्तीए भणितं—“सव्वेसि  
 आयारो” गाहा [आचाराङ्गनि. गा ८ ] । आचार्याऽऽह—सत्ययुक्तम्, किंतु सा ठवणा, इमं पुण अक्खररयणं पडुच्च भणितं,  
 पुव्वं पुव्वा कता इत्यर्थः । ते य उप्पायपुव्वादिया चोदस पुव्वा पण्णत्ता । पढमं उप्पायपुव्वं ति, तत्थ सव्वद्ववाणं 20  
 पज्जवाण य उप्पायभावमंगीकाउं पण्णवणा कता, तस्स पदपरिमाणं एका पदकोडी १ । बितियं अग्गेणीयं, तत्थ  
 वि सव्वद्ववाण पज्जवाण य सव्वजीवविसेसाण य अग्गं—परिमाणं वण्णिज्जइ ति अग्गेणीतं, तस्स पदपरिमाणं  
 छण्णउत्ति पदसतसहस्सा २ । ततियं वीरियप्पवाद्यं, तत्थ वि अजीवाणं जीवाण य सकम्मेतराण वीरियं प्रवदति त्ति  
 वीरियप्पवादं, तस्स वि सत्तर्हि पदसतसहस्सा ३ । चउत्थं अत्थिणत्थिप्पवादं, जं लोये जहा अत्थि जहा वा  
 णत्थि, अहवा सित्तवादाभिप्पादतो तदेवास्ति नास्तीत्येवं प्रवदतीति अत्थिणत्थिप्पवादं भणितं, तं पि पदपरि- 25  
 माणतो सट्ठि पदसतसहस्साणि ४ । पंचमं णाणप्पवादं ति, तम्मि सतिणाणाऽपंचकस्स सप्रभेदं प्ररुवणा जम्हा  
 कता तम्हा णाणप्पवादं, तम्मि पदपरिमाणं एका पदकोडी एगपदूणा ५ । छट्ठं सच्चप्पवादं, सच्चं—संजमो सच-

१ चुल्लवत्थू ल० शु० । चुल्लियावत्थू जे० डे० मो० सु० ॥ २ विज्जाणुं जे० ल० सु० ॥ ३ पाणायुस्स स० ।  
 पाणाउस्स जे० डे० ल० मो० सु० ॥ ४ चुल्लवं मो० शु० सम० ॥ ५ चुल्लिया स० विना ॥ ६ स्याद्वादाभिप्रायत ॥

वयण वा, त सच्च जत्थ समेद सपडिक्ख च वणिज्जति त सच्चप्पवाद, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोडी छप्प दाघिया ६ । सत्तम आयप्पवात, आय त्ति-आत्मा, [ जे० २२० द्वि० ] सो जेगहा जत्थ णयदरिसणेहिं वणिज्जति त आयप्पवाद, तस्स वि पदपरिमाण छब्बीस पदकोडीओ ७ । अट्ठम कम्मप्पवाद, णाणावरणाइय अट्ठ विघ कम्म पगति द्विति-अणुमाग प्पदेसादिएहिं भेदेहिं अण्णेहि य उत्तरुत्तरभेदेहिं जत्थ वणिज्जति त कम्मप्प वाद, तस्स वि पदपरिमाण एगा पदकोडी असीतिं च पदसहस्साणि भवति ८ । णवम पच्चक्खाण, तमि सच्चपच्चक्खाणसरुव वणिज्जति त्ति अतो पच्चक्खाणप्पवाद, तस्स य पदपरिमाण चतुरासीतिं पदसतसहस्साणि भवति ९ । दसम विज्जणुप्पवात, तत्थ य अणेगे विज्जातिसया वणिता, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोडी दस य पदसतसहस्साणि १० । एगादसम अचल्ल ति, वल्ल णाम-णिप्फल, ण वल्लमवल्ल, सफलेत्यर्थ, सव्वे णाण-त्तव-सजमजोगा सफला वणिज्जति, अप्पसत्था य पमादादिया सव्वे अमुमफला वणिता, अतो अवल्ल, तस्स वि पदपरिमाण छब्बीस पदकोडीओ ११ । बारसम पाणायु, तत्थ आयु-प्राणविधाण सच्च समेद अण्णे य प्राणा वणिता, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोडी छप्पण च पदसतसहस्सा १२ । तेरसम किरियाविसाल, तत्थ कायकिरियादियाओ विसाल त्ति-समेदा, सजमकिरियाओ य छदकिरियविहाणा य, तस्स वि पदपरिमाण णव कोडीयो १३ । चोदसम लोगविंदुसार, त च इमम्मि लोए सुतलोए वा विंदुमिव अक्खरस्स [ सार- ] सच्चुत्तम सच्चक्खरसणिवातपदितत्तणतो लोगविंदुसार, तस्स पदपरिमाण अट्ठतेरस पदकोडीओ १४ । ३ ॥

15 इदाणि अणिओगो त्ति—

१०८ से किं त अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, त जहा-मूलपढमाणुओगे य गडियाणुओगे य ।

१०८ अनुयोग इत्येतद् अनुरूपो योग अनुयोग इति । एव सर्व एव सूत्रार्थो वाच्य । इह जन्म भव पर्याय शिष्यादियोगविवक्षातोऽनुयोगो वाच्य । स च द्विविध—मूलपढमाणुयोगो गडिकाविशिष्टश्च ॥ तत्थ—

20 १०९ से किं त मूलपढमाणुओगे ? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताण भगवताण पुव्व भवा देवलोगगमणाइं आउ चवणाइ जम्मणाणि य अभिसेया रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि य सीसा गणा गणधरा य अज्जा य पवत्तिणीओ य, सघस्स चउव्विहस्स ज च परिमाण, जिण-मणपज्जव ओहिणाणि-समतसुय णाणिणो य वादी य अणुत्तराती य उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो जत्तिया, जत्तिया सिद्धा, 25 सिद्धिपहो जह य देसिओ, जच्चि च काल पादोवगओ, जो जहिं जत्तियाइ भत्ताइ छेर्यइत्ता अतगडो मुणिवरुत्तमो तमरंओघविण्णमुको मुखवसुहमणुत्तर च पत्तो, एंते अन्ने य एवमादी भावा मूलपढमाणुओगे कहिया । से त्त मूलपढमाणुओगे ।

१ छत्तीस जे० ॥ २ य यघकिरिय जे विना ॥ ३ देवगम जे० ल० सु० मो सु ॥ ४ आय लं ॥ ५ उत्तर वेउच्चिणा य मुणिणो इति सं सम० नास्ति ॥ ६ छेरत्ता जे जे ल० मो० सु० ॥ ७ रपुंघ सं ॥ ८ सुहं च अणुत्तर पत्तो सं न ॥ ९ पवमन्ने जे० सु ॥



१०९. 'मूलपदमाणुओगो' चि, इह मूलभावस्तु-तीर्थकरः, तस्य प्रथमं-पूर्वभावादि, अहवा [जे० २२१ प्र० ] मूल एव प्रथमः मूलपदमाणुओगो । एत्थ तित्थगरस्स अतीतभवभावा वट्टमाणभवे य जम्मादिया भावा कहिज्जंति । अहवा मूलस्स जे पदमा भावा ते मूलपदमाणुओगो भण्णति । एत्थ तित्थकरस्स जे भावा प्रसूतास्ते परियाय-सुत-सिस्साइया भाणितव्वा ॥

११०. से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे णं कुलगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ चक्कवट्टिगंडियाओ दसागंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ गणधरगंडियाओ भद्वाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ ओसप्पिणिगंडियाओ उस्सप्पिणि-गंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ अमर-गर-तिरिय-निरयगइगमणविविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति । से तं गंडियाणुओगे । से तं अणुओगे ४ ।

११०. गंडियाणुओगो चि इक्खुमादिपर्वगंडिकावत् एकाहिकारत्तणतो गंडियाणुओगो भणितो । ता य 10 कुलकरादियाओ, विमलवाहणादिकुलकराणं "पुव्वभव जम्म णाम प्पमाज०" १४१ [ आव. नि. गा. १४१ ] एवमादि जं किंचि कुलकरस्स वत्तव्वं तं सव्वं कुलकरगंडियाए भणितं । एवं तित्थकरादिगंडियासु वि । 'चित्तंतर-गंडिय' चि चित्ता इति-अनेकार्था, अंतरे इति-उसभ-अजियतरे ता दिट्ठा, गंडिका इति-खंडं, अतो चित्तंतरगंडिका भणिता । तासि पेरुवणे पुव्वायरिएहिं इमा विधी दिट्ठा—

आदिच्चजसादीणं उसभस्स पयोपदे णरवतीणं । सगरसुताण सुबुद्धी इणमो संखं परिकहेति ॥१॥ 15

चोइस लक्खा सिद्धा णिवईणेको य होति सव्वट्ठे । एवकेक्कहाणे पुरिसजुगा हौतऽसंखेज्जा ॥२॥

पुणरवि चोइस लक्खा सिद्धा निवतीण दोण्णि सव्वट्ठे । दुगठाणे त्रि असंखा पुरिसजुगा हौंति णातव्वा ॥३॥

जाव य लक्खा चोइस सिद्धा पण्णास हौंति सव्वट्ठे । पण्णासहाणे वि तु पुरिसजुगा हौंतऽसंखेज्जा ॥४॥

एंगुत्तरा तु लक्खा संव्वट्ठे णेय जाव पण्णासा । एक्केक्कुत्तराणे पुरिसजुगा हौंतऽसंखेज्जा ॥५॥ १ ।

विचरीयं सव्वट्ठे चोइस लक्खाइं निव्वुतो एगो । स चेत्र य परिवाडी पण्णासा जाव सिद्धीए ॥६॥ २ । 20

तेण पर दुलक्खादी दो दो ठाणा य समग वच्चंति । सिवगति-सव्वट्ठेहिं इणमो तासिं विही होइ ॥७॥

दो लक्खा सिद्धीए दो लक्खा णरवतीण सव्वट्ठे । एवं तिलक्ख चतु पंच जाव लक्खा असंखेज्जा ॥८॥ ३ ।

सिवगति-सव्वट्ठेहिं चित्तंतरगंडिया ततो चउरो । एगादेगुत्तरिया एगादिबिउत्तरा वितिया ॥९॥

तति एगादितिउत्तर तिगमादिबिउत्तरा चतुत्थेवं । [जे० २२१ दि० ] पदमाए सिद्धेको दोण्णि य सव्वट्ठसिद्धम्मि ॥१०॥

ततो तिण्णि णरिंदा सिद्धा चत्तारि हौंति सव्वट्ठे । इय जाव असंखेज्जा सिवगति-सव्वट्ठसिद्धेहिं १ ॥११॥ 25

ताहे विउत्तराए सिद्धेको तिण्णि हौंति सव्वट्ठे । एवं पंच य सत्त य जाव असंखेज्ज दो वि च्ति २ ॥१२॥

एग चतु सत्त दसगं जाव असंखेज्ज हौंति दो वि च्ति । सिवगति-सव्वट्ठेहिं तिउत्तराए तु णेतव्वा ३ ॥१३॥

१ पेरुवणा पुव्वायरिएहिं इमा दिट्ठा आ० दा० ॥ २ एंगुत्तरा उं ठाणा सव्वट्ठे चेत्र जाव पण्णासा । पक्केक्क-त्तराणे दा० ॥ ३ सव्वट्ठहाणे य आ० ॥ ४ तेषिं हारि०वृत्तौ ॥ ५ दोण्णि च्ति दा० ॥ ६ रं पत्थ णेयव्वा आ० । रंए सुणेयव्वा दा० ॥

ताहे-तियगादिविउत्तराए अउणत्तीस तु तियग ठावेतु । पढमे णत्थि तु खेवो सेसेसु ईमो भवे खेवो ॥१४॥  
 दुग पण णवग तेरस सत्तरस दुवीस छ च अट्टेव । वारस चोदस तह अट्टवीस छवीस पणुवीसा ॥१५॥  
 एकारस तेवीसा सीताला सतरि सत्तसत्तरि या । इग दुग सचासीती एगत्तरिमेव वावट्टी ॥१६॥  
 अउणत्तरि चउवीसा छाताल सत्त तद्देव छवीसा । एते रासीखेवा तिगअतता जहाकमसो ॥१७॥  
 5 सिक्कति-सव्वहेई दो दो ठाण विसमुत्तरा जेया । जाव उणतीसठाणे उणतीस पुण छवीसाए ॥१८॥  
 विसमुत्तरा य पढमा एवमसख विसमुत्तरा जेया । सव्वत्थ वि अतिल्ल अण्णाए आदिम ठाण ॥१९॥ गत ॥  
 अउणत्तीस वारा ठावेतु णत्थि पढमए खेवो । सेसे अट्टवीसाए सव्वत्थ दुगादियो खेवो ॥२०॥  
 सिक्कति पढमादीए वितियाए तह य होति सव्वहे । इय एगतरिताइ सिक्कति-सव्वहेठाणाइ ॥२१॥  
 एवमसखेज्जाओ चित्तरगडियाओ जेतव्वा । जाव जितसत्तुराया मज्जिताजणपिता समुप्पणो ४ ॥२२॥  
 10 एव गाहाहिं चित्तरगडियां समत्ता । इमा एतासिं ठव्वणा—

सिद्धा लक्खा	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
सव्वहे लक्खा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०

एव जाव असखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । अतो पर—

सिद्धा लक्खा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०
सव्वहे लक्खा	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४

एव पि असखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । एते वि लक्खा—

सिद्धा लक्खा	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सव्वहे लक्खा	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

एव जाव असखेज्जा आवलिया दुगादिपुत्तरा दो [ जे० २२२ प्र० ] वि गच्छति ॥

सिद्धा	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९
सव्वहे	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०

एव असखेज्जा । एगादिपुत्तरा पन्ना चित्तरगडिया जेया ॥

सिद्धा	१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३३	३७	४१
सव्वहे	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३

25 एव असखेज्जा । एगादिविउत्तरा त्रितिया चित्तरगडिया ॥

१ इमे मये रोया भा० ॥ २ त्रिान्तरगडिकात्तचन्द्रकदम्बकविशेषजिज्ञासुभिरष्टव्या अस्मत्सम्पादितलम्बिल्लुत्रहार्त्तिस्रीवत्पन्तर-  
 सुदिनदुगपद्म्याख्याया १६० तमे पत्र टिप्पणी ॥

सिद्धा	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५
सव्वट्ठे	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८

एवं जाव असंखेज्जा । एणादित्तिउत्तरा ततिया चिचंतरंगंडिया ॥

सिक्कति	३	८	१६	२५	११	१७	२९	१४	५०	८०	५	७४	७२	४९	२९
सव्वट्ठे	५	१२	२०	९	१५	३१	२८	२६	७३	४	९०	६५	२७	१०३	

सव्वट्ठे	२९	३४	४२	५१	३७	४३	५५	४०	७६	१०६	३१	१००	९८	७५	५५
सिक्कति	३१	३८	४६	३५	४१	५७	५४	५२	९९	३०	११६	९१	५३	१२९	

सेसं गाहाणुसारेण णेतव्वं जाव असंखेज्जा ४ ॥

१११. से किं तं चूलियाओ ? चूलियाओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिया, अव-  
सेसा पुव्वा अचूलिया । से तं चूलियाओ ५ ।

१११. 'चूल' ति सिहरं । दिट्टिवाते जं परिकम्म-सुत्त-पुव्व-अणुयोगे य ण भणितं तं चूलासु भणितं । ताओ य चूलाओ आदिट्टपुव्वाण चतुण्हं जे चूलवत्थू भणिता ते चेव सव्वुवरि ट्ठिता पढिज्जंति य, अतो ते सुयपव्वय-चूला इव चूला । तेसि जहक्कमेण संखा चतु बारस अट्ठ दस य भवंति ५ ॥

११२. दिट्टिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,  
संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ 15  
संगहणीओ । से णं अंगट्ठयाए ढुवालसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोइस पुव्वा, संखेज्जा  
वत्थू, संखेज्जा चुंलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडि-  
याओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पंदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा,  
अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया  
जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पणविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उव- 20  
दंसिज्जंति । से एवंआया, एवंगाया, एवंविण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जं-  
ति । से तं दिट्टिवाए १२ ।

११२. संखेज्जा वत्थू पणुवीसुत्तरा दो सता । 'संखेज्जा चूलवत्थू' ति चतुत्तीसं ॥

१-२ चूलिया ख० स० ल० शु० ॥ ३ चूलिया, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं, से तं जे० मो० सु० ॥ ४ चूलिया  
ख० स० ल० शु० ॥ ५ दिट्टिवाए णं ख० स० ल० शु० ॥ ६ अंगट्ठयाए ख० शु० ॥ ७ बारसमे जे० मो० सु० ॥ ८ पुव्वाइं  
जे० मो० सु० ॥ ९ चूलवत्थू ख० स० सम० विना ॥ १० पदसतसहं सम० ॥ ११ विज्जंति स० जे० ॥

११३ इंचेइयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे अणता भावा अणता अभावा अणता हेऊ  
अणता अहेऊ अणता कारणा अणता अकारणा अणता जीवा अणता अजीवा अणता  
भवसिद्धिया अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा अणता असिद्धा पणत्ता । सगहणिगाहा-

भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणा चेव ।

जीवाऽजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ८० ॥

११३ अणता भाव चि भवन भूतिर्वा भाव , ते य जीवा ऽजीवात्मका अणता प्रतिबद्धा । 'अणता  
अभाव' चि अभवन अभाव अभूतिर्वा । जहा जीवो अजीवत्तेण अभावो, अजीवा य जीवत्तेण, घटो पडत्तेण, पढो  
य घडत्तेण, एमादि अणता अभावा प्रतिबद्धा । अहवा जे जहा जावइया भावा तेसि पडिपक्खतो तावइया चेव  
अणता अभावा भवति । 'अणता हेतु' चि पच-दसावयववैयणेषु पक्खधम्मत्त सपक्खसत्त अभिलसितमत्यसाधक  
वयण हेतु भणति, अहवा सव्वजुत्तिजुत्त वयण हेतु भणति, अहवा सव्वे जिणवयणपहा हेतु, प्रतिपातकत्तणतो,  
णिदोसहेतुवयण व, सुत्तस्स य अणता जे० २२२ द्वि० गमत्तणतो, एव अणता हेतु । भणितपडिक्खतो य  
अणता चेव अहेतु । 'अणता कारण' चि कज्जसाधय कारण ति, ते य पयोग-वीससातो अणता भाणितव्वा । जच  
जस्स असाधक त तस्स अकारण, जहा चक्क-दडादयो पडस्स, एव अणता अकारणा । 'अणता जीवा' इत्यादि कठ ॥

११४ इंचेइय दुवालसग गणिपिडगं तीए काले अणता जीवा आणाए विराहेत्ता  
चाउत्त ससारकत्तार अणुपरियट्टिसु । इंचेइय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पणकाले परिता  
जीवा आणाए विराहेत्ता चाउत्त ससारकत्तारं अणुपरियट्टति । इंचेइय दुवालसंग गणिपिडगं  
अणागते काले अणता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउत्त ससारकत्तार अणुपरियट्टिससति ।

११४ इंचेय दुवालसगं गणिपिडगं तीते काले अणता जीवा आणाए विराहेत्ता इत्यादि ।  
'दुवालसग गणिपिडग' ति तिविह पणत्त-सुत्ततो अत्यतो तदुभयतो य । एमेव आणा तिविहा-सुत्ताणा अत्थाणा

१ इंचेयम्मि य० ॥ २ कारणा जीवा । अजीव भवियमभविया, तसो सिद्धा सं० छ सु० ॥ ३ पचावयव दशा  
वयवज्ञानार्थमत्रोत्थितमानो दशवैकालिकसूत्रनियुक्तं धूर्ण-वृद्धविवरण-वृत्त्यादिगतो ग्रन्थस-दमोऽवधारणीय — पश्चात्-हेतु दिद्वतोवर्षहार  
गिगमणोर्ह वा गिरुविज्जति आगमवयण पचाहि दसाहि वा ।' तथा "पतिष्णा पढतो अवयवो १ पतिष्णासुद्धी २ हेऊ ३ हेउसुद्धी ४ दिद्वतो  
५ दिद्वतोविसुद्धी ६ उवर्षहारो ७ उवर्षहारविसुद्धी ८ गियमण ९ गियमणविसुद्धी दसमो १० । इति [ कथयति पचावयवो" इति  
दशवैकालिकसूत्रनियुक्तिया १३ अगत्तयसिंहचूर्णो पत्र २० ] । कदा आगम हेतु दिद्वतोवर्षहार गिगमणावसाणेण पचावयवेषु कथिअद  
कदाइ पुण दसावयवेषु । तथा— "इदानीं दसावयवणा पक्खण काहामि तं—पतिष्णा पढतो अवयवो १ पश्चात्तिसुद्धी  
२ एव हेऊ तदो अवयवो ३ हेउविसुद्धी चउत्तो अवयवो ४ दिद्वतो पचमो अवयवो ५ दिद्वतविसुद्धी छट्ठो ६ उवर्षहारो  
७ उवर्षहारविसुद्धी अट्ठमो ८ गियमणं नवमो ९ गियमणविसुद्धी दसमो १० । इति वृद्धविद्यरणे पत्र ३८-३९ ।  
प्रतिगादव' यथोक्तम्— प्रतिज्ञा हेतुआहारणोपनय गिगमनानीत्यवयवा' [ न्यायद० १-१-३२ ] दशवैकालिकहरिमद्रुत्ति पत्र ३३  
तथा— ते उ पद्म १ विमत्तो २ हेउ ३ विमत्तो ४ विवक्ख ५ पडिसेहो ६ दिद्वतो ७ आसंका ८ तत्पडिसेहो ९ गियमण १० च  
१३० ॥ दशवैकालिकनियुक्ति । अस्या म्याख्यार्था हरिमद्री इतिरत्तलोकोनीया । एपूढेवेषु दशावयवद्वैविध्यमपि न विस्तरणीयम् ॥  
४ वयणेषु सपक्खधम्मत्त-सपक्खत्त अभिलसितसज्जसाधकं आ ॥ ५ पादकत्तणतो आ दा ॥ ६ इंचेय यं इ  
एवमप्रपि सर्वत्र हेयम् ॥

तदुभयआणा य एवं एगद्विता तहा वि अभिधाणतो विसेसो कज्जति-यदा आज्ञाप्यते एभिः तदा आज्ञा भवति, तंतुंपटव्यपदेशवत् । आज्ञाप्यते यया हितोपदेशत्वेन सा आज्ञा इति । इदाणि एतेसिं विराहणा चिंतिज्जति-जं सुत्ततो दुवालसंगं गणिपिडगं तं अत्थतो अभिनिवेशेण अण्णाहा पण्वेतो ताए अत्थाणाए सुत्तं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, गोट्टामाहिलवत् । अहवा जं अत्थतो दुवालसंगं गणिपिडगं तं सुत्ततो अभिनिवेशेण अण्णाहा पढंतो ताए सुत्ताणाए अत्थं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा जमालिवत् । अहवा आणं ति-पंचविहायारायरणसीलस्स गुरुजो हितोवदेसवयणं आणा, तमण्णधा आयरंतेण गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, एसो अक्खरससो अत्थो । इमो अणक्खरससो-आणाए विराधेत्ता इति जहा छायाए भुंजित्ता गतो, णो छायाए करणभूयाए भुंजित्ता, किंतु छायायां भुक्त्वा गतेति, एवं आज्ञायां विराधनं क्कत्ता । सा य आणा इमा-‘इच्चैयं दुवालसंगं गणिपिडगं आणाए विराहेत्ता’ । सेसं पूर्ववत् । पडुप्पण्ण-अणागतेसु वि सुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं, णवरं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा इति, अणंता असंखेज्जा य [जे० २२३ प्र०] ण भवंति, सण्णिमणुयाणं संखेज्जत्तणतो ॥

११५. इच्चैइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं वितिर्वंसु । इच्चैइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं वितिर्वयंति । इच्चैइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतरं वितिर्वतिस्संति ।

११६. तिस्सु वि आराधणसुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं ॥

११६. इच्चैइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णाSSसी ण कयाइ ण भवति ण कयाइ ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअँ सासते अक्खए अव्वए अव-  
द्विए णिच्चे । से जहाणांमए पंचत्थिकांए ण कयाति णाSSसी ण कयाति णंत्थि ण कयाइ -  
ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवा णीया सासता अक्खया अव्वया  
अवद्विया णिच्चा, एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ णाSSसी ण कयाइ णत्थि ण  
कयाइ ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअँ सासते अक्खए अव्वए  
अवद्विए णिच्चे ।

११६. ण कताइ णाSSसीत्यादि । त्रिकाले नास्तित्त्वभावप्रतिषेधकं सूत्रम् । ‘भुवि च’ इत्यादि त्रिकाले अस्तित्त्वभावप्रतिपादकं सूत्रम् । त्रिकालभावित्तणतो चेव अचलभावत्वाद् धुवं मेवादिवत् । धुवत्तणतो चेव जीवादि-

१ एए एगं दा० ॥ २ तंतुभिः पटं व्यय, देवदत्तवत् आ० दा० ॥ ३ तीए काले जे० सु० ॥ ४-५-६ वीइवं जे० मो० । वीतीवं शु० ॥ ७ णीते ख० ल० शु० ॥ ८ णामे ख० ॥ ९ काया ख० ले० ल० शु० ॥ १० ण भवंति ण कयाइ ण भविस्संति, भुवि च भवंति च भविस्संति य, धुवा णीया सासता अक्खया अव्वया अवद्विया णिच्चा, दा० ल० शु० ॥ ११ णीते ख० ल० शु० ॥

णवपदत्येसु नियुक्त नियत जहा लोकवचन पचास्तिकायेष्विव । णियतत्तणतो चेव 'सासत' शब्द भवतीतिशाश्वतम्, प्रतिसमया ऽऽबलिक-सुहूर्तं दिनादिष्विव काल । सासतत्तणतो चेव वायणादिषु 'अक्खय' नास्य ङयो अक्षयम्, गमा सिधुप्रवाहेष्वपि पोंडरीकरदवत् । अकलयत्तणतो चेव 'अक्खय' नास्य व्ययो अन्ययम्, मानुषेतराद् बहिससुदवत् । अव्ययत्तणतो चेव स्वपमाणे अवद्धित जवूदीपादिवत् । अवद्धितत्तणतो चेव सक्खहा चित्तिज्जमाण 'निच्च' आकाशवद् अविनाशीत्यर्थ । अहवा एते धुवादिया एगद्धिता । चोदक आह-इशेयं दुवालसग धुवादिपदपरुषित किमाणोञ्ज दिद्वततो वा सज्ज ? आचार्याऽऽह-जम्हा जिणा अण्णहावादिणो तम्हा तेसिं बयणं सक्ख आणाते चेव गज्ज, कर्हिचि दिद्वततो वि गज्ज । इह दुवालसगस्स धुवादिपरुषितत्यस्स साधको इमो दिद्वतो- 'से जहानामते'त्यादि कठ ॥

११७ से समासतो चउन्विहे पणत्ते, तं जहा-दब्बओ खेत्तओ कालओ भावओ । तंत्य दब्बओ ण सुयणाणी उवउत्ते सक्खदब्बाइ जाणइ पांसइ । खेत्तओ ण सुयणाणी उवउत्ते सक्खं खेत्तं जाणइ पांसइ । कालओ ण सुयणाणी उवउत्ते सक्खं कालं जाणइ पांसइ । भावओ ण सुयणाणी उवउत्ते सक्खे भावे जाणइ पांसइ ।

११७ त च दुवालसगसुत चतुन्विह दब्बादि । अमिण्णदसपुच्चादियाण जाव सुतनाणकेवली ते पइच्च भणितं । दब्बतो ण सुतनाणी सुतनाणेणोवपुत्तो सुत्तविण्णत्तीए सक्खदब्बादिं जाणति पासति य । णणु पासइ त्ति विरोहो ? उच्यते-जम्हा अदिद्वण वि मेरुमादियाण सुतनाणपासणताए आगारमालिइइ, ण यादिद्व लिखइ, पणवणाए थ भणित्ता सुतनाणपासणत त्ति, ण त्रिरोओ । आरतो पुण जे सुतनाणी ते सक्खदब्बनाण-पासणताइ भइता । सा य भयणा मतिविसेसतो जाणितव्वा । एव खेत्त-काल-भावेसु वि [ जे० २२३ दि० ] भाणितव्वा ॥

सुतनाणदसणत्थ भणति—

११८ अक्खर १ सण्णी २ सम्म ३ सादीय ४ खलु सपज्जवसिय ५ च ।

गमिय ६ अगपविट्ठ ७ सत्त वि एए सपडिवक्खा ॥ ८१ ॥

[ भाव० नि० गा० १९ ]

आगमसत्यगहण ज बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिद्व ।

चित्ति सुयणाणलभं त पुव्वविसारया धीरा ॥ ८२ ॥

सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४ य ईहए ५ यींवि ।

ततो अपोहए ६ वीं धारेइ ७ करेइ वा सम्म ८ ॥ ८३ ॥

मूय १ हुंकारं २ वा वाट्ठकार ३ पडिपुच्छ ४ वीमंसा ५ ।

ततो पसगपारायण ६ च परिणिट्ठ ७ सत्तमए ॥ ८४ ॥

१ जिणा णऽण्णहा आ० ॥ २ तथ इति ख० ३ ४ ५ विमान-सुदरणे ३०० पत्रे नास्ति ॥ ३-५-७-९ ण हाटोपा० ॥ ४-६-८ सक्ख ख विमान-सुदरणे ३०० पत्रे ॥ १० अट्ठहिं चि दिद्व जे० ४० ॥ ११ आवि ख० । वा जे ४ ॥ १२ या ख० ॥

सुत्तथो खलु पढमो, बीओ णिज्जुत्तिमीसिओ भणिओ ।  
तइओ य णिस्वसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ८५ ॥

[ आव० नि० गा० २१-२४ ]

से त्तं अंगपविट्ठं । से त्तं सुयणाणं । से त्तं परोक्खणाणं ।

॥ से त्तं पंदी सम्मत्ता ॥

5

११८. अक्खर० गाहा । एसा चोइसविहसुतभावपरुवणा कता ॥ ८१ ॥ एत्थं आयारादिगणधरागम-  
पणीतस्स पत्तेगबुद्धभासितस्स वा तहाकालाणुभावतो बल-बुद्धि-मेधा-SSयुहाणि जाणिऊण जे य सुतभावा  
आयरिएहिं निज्जूहा तेसु गहणविही दंसिज्जइ—

आगम० गाहा ॥८२॥ इमे ते अट्ट बुद्धिगुणा—

सुस्सूसति० गाहा ॥८३॥ विणेत्तस्स अत्थसवणे इमा विही—

10

सूयं हुंकार० गाहा ॥८४॥ गुरुणो अणुयोगकहणे इमा विही—

सुत्तथो खलु० गाहा ॥८५॥

जं ण भणित्तमूणं वा अतिरित्तं वा वि अहव विवरीत्तं ।

तं सम्मऽणुयोगधरा कहेत्तु कात्तं मम वक्खंति ॥ १ ॥

णि रे णं ग म त्त ण ह स दा जि या पसुपतिसंखगजट्टिताकुला ।

15

कमट्टिता धीमतचितियक्खरा, फुडं कहेयंतऽभिघाण कत्तुणो ॥ छ ॥

सैकराजो पंचसु वर्षशतेषु व्यतिक्रातेषु अष्टनवतेषु नद्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ छ ॥ छ ॥ ग्रन्थाग्रम् १५०० ॥



## प्रथमं परिशिष्टम्

## नन्दीसूत्रान्तर्गतानां सूत्रगाथानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क
अनस्वर सण्णी सम्भं	११८	८१	ओही भवपञ्चतियो	२८	५२	जेसि इमो अणुओगो	५	३२
[आव नि. गा. १९]			कम्भरयजलोहविणि-	२	७	णाणम्मि दंसणम्मि य	५	२८
अड्ढभरहप्पहाणे	५	३७	कालियसुयअणुओग-	५	३४	णाणवररयणदिप्पंत-	२	१७
अणुमाणहेउदित्तंत-	४६	६६	काले चउणह कुड्ढी	२३	५०	णिमित्ते अत्थसत्थे य	४६	६२
[आव नि. गा. ९४८]			[आव नि गा ३६]			[आव. नि गा ९४४]		
अत्थमहत्थवखाणि	५	४०	केवलणाणेणऽत्थे	४१	५५	णियमूसियकणयसिला-	२	१३
अत्थाणं उगहणं	५८	७१	[आव नि गा ७८]			णेरतियदेवतित्थंकरा पत्र-२०	टि०८	
[आव. नि गा. ३]			खमए अमच्चपुत्ते	४६	६८	[टीकाद्वयसम्भता गाथा,		
अभए सेट्ठि कुमारे	४६	६७	[आव नि गा ९५०]			आव नि. गा. ६६]		
[आव नि. गा ९४९]			खीरभिव जहा हंसा पत्र-१२	टि०५		णेव्वुइपहसासगयं पत्र-७	टि०६	
अयलपुरा गिक्खंतते	५	३१	[चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]			[टीकाद्वयसम्भता गाथा]		
अह सव्वद्ववपरिणाम-	४१	५४	गुणभवणगहणं सुय-	२	६	तत्तो य भूयदिक्खं पत्र-१०	टि०७	
[आव. नि गा. ७४]			गुणरयणुजलकडयं पत्र-५	टि०१०		[चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]		
अंगुलमावलिंथाणं	२३	४६	[चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]			तत्तो हिमवंतमहंत-	५	३३
[आव. नि गा. ३२]			गोविंदाणं पि णमो पत्र-१०	टि०७		तवनियमसच्चसजम- पत्र-११	टि०११	
आगमसत्थगहणं	११८	८२	[चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]			[चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]		
[आव नि गा. २१]			चत्तारि दुवालस अ-	१०७	७९	तवसंजममयल्लंछणं	२	९
ईहा अपोह वीमंसा	५८	७५	चलणाहण आमडे	४६	६९	तवियवरकणगचंपय-	५	३६
[आव. नि गा १२]			[आव नि. गा. ९५१]			तिसमुइखायकिरिंति	५	२६
उगह ईहाऽवाओ	५८	७०	जच्चजणधाउसम-	५	३०	दस चोदस अट्टऽट्टा-	१०७	७७
[आव नि गा २]			जयइ जगजीवजोणी-	१	१	नगर रह चक पउमे पत्र-५	टि०१०	
उगह एकं समयं	५८	७२	जयइ सुयाणं पमवो	१	२	[चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]		
[आव. नि गा ४]			जसमहं तुंगियं वंदे	५	२३	न य कत्थइ निम्माओ पत्र-१२	टि०५	
उप्पत्तिया वेणइया	४६	५६	जावतिया तिसमया-	२३	४४	[चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]		
[आव. नि गा ९३८]			[आव. नि. गा. ३०]			पढमेत्थ इंदभूती	४	२०
उवओगदिट्टुसारा	४६	६४	जा होइ पगइमहुरा पत्र-१२	टि०५		परतित्थियगहपह-	२	१०
[आव नि गा ९४६]			[चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]			पुट्टं सुणेति सदे	५८	७३
ऊससियं नीससियं	६४	७६	जीवदयासुंदरकंद-	२	१४	[आव. नि. गा ५]		
[आव नि. गा २०]			जे अण्णे भगवंते	५	४२			
एलावच्चसगोत्तं	५	२४						



गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क
पुञ्च अदिद्रुमसुय	४६	५७	महुसित्थ सुदियके	४६	६०	सज्जमतवतुवार	२	५
[आव नि गा १३९]			[आव नि गा १४२]			सवरवरजलपगल्लियउज्ज	२	१५
वारस एकारसमे	१०७	७८	मडिय मोरियपुत्ते	४	२१	सावगज्जणमहुयपरि	२	८
भण्णं फण्णं भण्णं	५	२७	मिउमइउसपण्णे	५	३५	सीया साढी दीह च	४६	६३
मद थिइवेलापरि	२	११	भूय हुकार वा	११८	८४	[आव नि गा १४५]		
मइ सन्वज्जुज्जो	१	३	[आव नि गा २३]			सुकुमालकोमल्लले	५	४१
मइ सीलपडागू	२	४	चइउउ वायगवसो	५	२९	सुत्तथो खल्ल पदमो	११८	८५
भरिगिथरणसमरथा	४६	६१	वदामि अज्जघम्म	पत्र ८	टि०१०	[आव नि गा २४]		
[आव नि गा १४३]			[चूर्णि टीकाद्वयानादता गाथा]			सुमुणियणिक्काणिच्च	५	३९
मरहम्मि अद्रमासो	२३	४८	वदामि अज्जरत्तिसिय	पत्र ८	टि०१०	सुत्सूसइ पडिपुच्छइ	११८	८३
[आव नि गा ३४]			[चूर्णि-टीकाद्वयानादता गाथा]			[आव नि गा २२]		
मरह सिल पणिय रुस्से	४६	५८	वदे उसभ अजिय	३	१८	सुहम्म अग्गिवेसाण	५	२२
[आव नि गा १४]			विणयणयपवरमुणिवरं	पत्र ५	टि०८	सुहमो य होइ कालो	२३	५१
मरह सिल मिद कुकुड	४६	५९	[१६ गाथाप्रथमचरणपाठभेद]			[आव नि गा ३७]		
[आव नि गा १४१]			विणयमयपवरमुणिवर	२	१६	सेल्लण कुडग चालणि	६	४३
भावमभावा हेउम	११३	८०	विमलमणत्तइधम्म	३	१९	[आव नि गा १३६]		
मासासमसेगीओ	५८	७४	सम्मदसणवइरदद-	२	१२	इत्थम्मि सुहुत्ततो	२३	४७
[आव नि गा ६]			सन्धुबहुअगणिजीवा	२३	४५	[आव नि गा ३३]		
भूयहिययप्यगन्धे	५	३८	[आव नि गा ३१]			हारियगोत्त साइ	५	२५
मणपन्नवणण पुण	३२	५३	सखे जम्मि उ काले	२३	४९	हेरणिणए करिसए	४६	६५
[आव नि गा ७६]			[आव नि गा ३५]			[आव नि गा १४७]		

## द्वितीयं परिशिष्टम्

## नन्दीसूत्रचूर्ण्यन्तर्गतानामुद्धरणानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क
त्तरि चउवीसा	७८	एवमसखेज्जाओ	७८	जह जुगवुप्पत्तीय वि	२९
त्तीसं वारा	७८	एवं तु अणंतेहि	५४	[ विशेषणवती गा. २९९ ]	
रलंभेण समा	५५	[ कल्पभाष्य गा ७० ]		जह पासतु तह पासतु	३०
शेषावश्यक गा १४३ ]		एवं बहुवक्तव्यं	५६	[ विशेषणवती गा. १९२ ]	
ण चैव वीसुं	२८	[ नन्दीचूर्णी ]		जं केवलइं सादी-	२८
शेषणवती गा. १५४ ]		कस्स व णाणुमतमिणं	३०	[ विशेषणवती गा. १९३ ]	
भोजने	१४	[ विशेषणवती गा २४६ ]		जाव य लक्खा चोइस	७७
णि. धातु. १५२४ ]		किच्चिम्मत्तगाही	१३	जुगवमजाणंतो वि हु	२९
व्याप्तौ	१४	[ कल्पभाष्य गा. ३६९ ]		[ विशेषणवती गा २१६ ]	
णि धातु १२६५ ]		कृमिकीटपतङ्गाद्याः	४८	णववंभचेरमइजो	६२
ण वि एतं तो सुण	२९	[ ]		[ आचाराङ्क नि गा. ११ ]	
शेषणवती गा. २०३ ]		केण हवेज्ज निरोधो	५४	णुट प्रेरणे	१७
देसणाणदंसण	३०	[ कल्पभाष्य गा. ६९ ]		[ पाणि धातु १२८३ ]	
शेषणवती गा १५७ ]		केयी भणंति जुगवं	२८	तत्तिप्पादि तिउत्तर	७७
देवजसादीणं	७७	[ विशेषणवती गा. १५३ ]		तत्तो तिण्णि णरिंटा	७७
अस्सीणिहणत्तं	२८	केवलमेग सुद्धं	१४	तह य असब्बणुत्तं	२८
शेषणवती गा. १९४ ]		[ विशेषणवती गा. ८४ ]		[ विशेषणवती गा १९५ ]	
अधोलौकिका ग्रामा	२४	गणहरकतमंगगतं	५७	ताहं विउत्तराए	७७
[ ]		[ ]		नित्थं मंते ! नित्थं ?	२६
उत्तस्सेमेव य	२९	गमणपरावत्तेगो	१३	[ मगवती श ३० उ ८ सू. ६८३ ]	
शेषणवती गा. २०६ ]		[ ]		निययादिविउत्तराण	७८
योगो एगतरो	३०	गुणदोसविंसण्णू	१२	तुल्ले उमयाद्वरण-	२९
शेषणवती गा २३२ ]		[ कल्पभाष्य गा. ३६५ ]		[ विशेषणवती गा. २१३ ]	
अल्ही अगुरुल्लू	५४	गुरुल्लूद्वंविंति	५३	तेण पर दुल्लुक्खादी	७७
कल्पभाष्य गा. ७१ ]		[ कल्पभाष्य गा. ६७ ]		दिंनम्म ल्ळंनम्म व	२९
स्सेहपमाणतो मिणे देहं	२४	चोदम ल्ळक्खा मिट्ठा	७७	[ विशेषणवती गा. २०५ ]	
बृहत्सब्रह्मणी गा ३३५ ]		जनि पुण मो वि वणिज्ज	५६	दुवा णण णव्वं नैस्स	७८
कारस तेवीसा	७८	[ कल्पभाष्य गा. ११ ]		दंमण्णाणोद्वंभं	३०
ग चतु सत्त दसगं	७७	जह द्विर म्मीणावग्गं	३०	[ विशेषणवती गा. १५६ ]	
गुत्तरा तु लक्खा	७७	[ विशेषणवती गा. १५५ ]			

गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क
पुत्र्य अदिद्रुमसुय-	४६	५७	महुसित्थ सुदियके	४६	६०	सजमतवतुवार	२	५
[आव नि गा १३९]			[आव नि गा १४२]			सवरवरजलपगल्लियज्जा	२	१५
वारस एकारसमे	१०७	७८	मडिय मोरियपुत्ते	४	२१	सावगजणमहुयरिपरि	२	८
भणगं करग झरग	५	२७	मिउमइवसपणे	५	३५	सीया साढी दीह च	४६	६३
भद धिइवेलापरि	२	११	मूय हुकार वा	११८	८४	[आव नि गा १४५]		
भद सन्नजगुज्जो	१	३	[आव नि गा २३]			सुकुमालकरोमल्लते	५	४१
भद सीलपडागू	२	४	वइदउ वायगवसो	५	२९	सुत्तत्थो खल्ल पढमो	११८	८५
भरगित्थरणसमत्था	४६	६१	वदामि अज्जधम्म	पत्र ८	टि०१०	[आव नि गा २४]		
[आव नि गा १४३]			[चूर्णि-टीकाद्वयानादत्ता गाथा]			सुमुणियणिच्चाणिच्चं	५	३९
भरहम्मि अद्रमासो	२३	४८	वदामि अज्जरक्सिय	पत्र ८	टि०१०	सुस्सुसइ पडिपुच्छइ	११८	८३
[आव नि गा ३४]			[चूर्णि-टीकाद्वयानादत्ता गाथा]			[आव नि गा २२]		
भरह सिल पणिय रुत्तवे	४६	५८	वदे उसभ अजिय	३	१८	सुहम्म अग्गिवेसाण	५	२२
[आव नि गा १४०]			विणयणयपवरमुणिवर	पत्र ५	टि०८	सुहुमो य होइ कालो	२३	५१
भरह सिल सिद्ध कुक्कुड	४६	५९	[१६ गाथाप्रथमचरणपाठमेद]			[आव नि गा ३७]		
[आव नि गा १४१]			विणयमयपवरमुणिवर	२	१६	सेलघण कुडग चालणि	६	४३
भावममावा हेउम	११३	८०	विमलमणत्तइवम्म	३	१९	[आव नि गा १३६]		
भासासमसेदीज्जो	५८	७४	सम्मइसणवइरदद	२	१२	हत्थम्मि सुहुत्ततो	२३	४७
[आव नि गा ६]			सन्नवहुअगणिजीवा	२३	४५	[आव नि गा ३३]		
मूयहिययप्पगभे	५	३८	[आव नि गा ३१]			हारियगोत्त साइ	५	२५
मणपज्जवणाण पुण	३२	५३	सत्ते जम्मि उ काले	२३	४९	हेरणिणए करिसए	४६	६५
[आव नि गा ७६]			[आव नि गा ३५]			[आव नि गा १४७]		



## द्वितीयं परिशिष्टम्

## नन्दीसूत्रचूर्ण्यन्तर्गतानामुद्धरणानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क
अउणत्तरि चउवीसा	७८	एवमसखेज्जाओ	७८	जह जुगवुप्पत्तीय वि	२९
अउगत्तीस वारा	७८	एवं तु अणतेहिं	५४	[ विशेषणवती गा. २१९ ]	
अक्खरलंभेण समा	५५	[ कल्पभाष्य गा. ७० ]		जह पासतु तह पासतु	३०
[ विशेषणवती गा. १४३ ]		एवं बहुवचत्वं	५६	[ विशेषणवती गा. १९२ ]	
अण्णे ण चेव वीसुं	२८	[ नन्दीचूर्णी ]		जं केवलाइं सादी-	२८
[ विशेषणवती गा. १५४ ]		कस्स व पाणुमतमिणं	३०	[ विशेषणवती गा. १९३ ]	
अश भोजने	१४	[ विशेषणवती गा. २४६ ]		जाव य लक्खा चौदस	७७
[ पाणि. धातु. १५२४ ]		किच्चिम्मत्ताग्हाही	१३	जुगयमजाणंतो वि हु	२९
अशू व्याप्तौ	१४	[ कल्पभाष्य गा. ३६९ ]		[ विशेषणवती गा. २१६ ]	
[ पाणि. धातु. १२६५ ]		कृमिकीटपतद्वाधाः	४८	णवदंभचेरमइओ	६२
अह ण वि एतं तो सुण	२९	[ ]		[ आचाराङ्क नि गा. ११ ]	
[ विशेषणवती गा. २०३ ]		केण ह्वेज्ज निरोधो	५४	णुद प्रेरणे	१७
अह देसणाणदंसण	३०	[ कल्पभाष्य गा. ६९ ]		[ पाणि धातु १२८३ ]	
[ विशेषणवती गा. १५७ ]		केयी भणंति जुगवं	२८	ततिएगादि तित्तर	७७
आदिच्चजसादीणं	७७	[ विशेषणवती गा. १५३ ]		तत्तो तिण्णि णरिंदा	७७
इहराऽऽयीणिहणत्तं	२८	केवलमेग सुद्धं	१४	तह य असव्वणुत्तं	२८
[ विशेषणवती गा. १९४ ]		[ विशेषणवती गा. ८४ ]		[ विशेषणवती गा. १९५ ]	
इहाऽधोलौकिका ग्रामा	२४	गणहरकतमंगगतं	५७	ताहे विउत्तराए	७७
[ ]		[ ]		तिथं भंते ! तिथं ?	२६
उवउत्तस्सेमेव य	२९	गमणपरावत्तेगो	१३	[ भगवती श्र. २० उ ८ सू. ६८२ ]	
[ विशेषणवती गा. २०६ ]		[ ]		तियगादिविउत्तराए	७८
उवयोगो एगतरो	३०	गुणदोसविसेसणू	१२	तुल्ले उमयावरण-	२९
[ विशेषणवती गा. २३२ ]		[ कल्पभाष्य गा. ३६५ ]		[ विशेषणवती गा. २१७ ]	
उवल्लदी अगुरुल्लू	५४	गुरुल्लुदव्वेहितो	५३	तेण पर दुलक्खादी	७७
[ कल्पभाष्य गा. ७१ ]		[ कल्पभाष्य गा. ६७ ]		दिंतस्स लभंतस्स व	२९
उस्सेहपमाणतो मिणे देहं	२४	चोदस लक्खा सिद्धा	७७	[ विशेषणवती गा. २०५ ]	
[ बृहत्सहप्रहणी गा. ३३५ ]		जति पुण सो वि वरिज्जेज	५६	दुग पण णवग तेरस	७८
एकारस तेवीसा	७८	[ कल्पभाष्य गा. ७४ ]		देसणाणोव्वरमे	३०
एग चतु सत्त दसगं	७७	जह किर खीणावरणे	३०	[ विशेषणवती गा. १५६ ]	
एगुत्तरा तु लक्खा	७७	[ विशेषणवती गा. १५५ ]			

गाथादि	पत्राद्	गाथादि	पत्राद्	गाथादि	पत्राद्
दा लकरा सिद्धी	७७	पुगति चोदस लररा	७७	उतसमिति०	६१
घग्मो मगस्सुपट्टु	७४	पुन्वभव जम्म गाण	७७	[ ]	
[ मगस अ १ गा १ ]		[ आयस्यवनि गा १४९ ]		विचरीय सच्चट्टे	७७
नागम्मि दम्मणम्मि य	३०	भगित पि य पणत्ती	२९	विसमुत्तरा य पन्मा	७८
[ विनेपणवती गा २२९ ]		[ विशेषणवती गा २२० ]		सतत ण देइ लमइ	२९
निदञ्चयतो सच्चगुरु	५३	भणगति जट्टोहिणागी	३०	[ विशेषणवती गा २४ ]	
[ पन्वमाप्य गा ९५ ]		[ विशेषणवती गा १७८ ]		सदसदविसेसगातो	४८
पगनीमुद्धमजागिय	१३	भणगति ण गस गियमो	२९	[ विशेषणवती गा ११५ ]	
[ वल्लगाथ्य गा ३६७ ]		[ विनेपणवती गा २१८ ]		सन्ने सत्ता ण हत्तवा	२
पणगणिजा भावा	५५	भणति भिणगसुहुत्तो	२८	[ आचाराज थु १ अ ४ उ २ छ २ ]	
[ पन्वमाप्य गा ९६४ ]		[ विशेषणवती गा २०२ ]		सच्चैसि आयारो	७५
पायदुग जयोक्	५७	भमा मकुद मदल	१	[ आचाराज नि गा ८ ]	
[ ]		[ ]		सिचगति पन्मादीए	७८
पासतो वि ण जाणइ	२९	रुप्य पत्तेयमुद्धा	२६	सिचगति सच्चट्टेहिं चि	७७
[ विशेषणवती गा २१५ ]		[ आयस्यवनि गा ११३९ ]		सिचगति सच्चट्टेहिं दो	७८
पिटस जा विसोहा	६१	रुमिस्सञ्चथ	१५		
[ प्यरहारगाथ्य उ १ गा २८९ ]		[ तररा अ १ छ २८ ]			

३

## तृतीय परिशिष्टम्

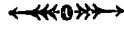
नन्दीसूत्रचूर्णितानि पाठान्तर-भतान्तरनिदर्शकानि स्थानानि

	पत्र पक्ति		पत्र पक्ति
अणगायत्रियमतेश	७५ १७	अहवा	१७ १३
अग्गे	२७ २७, ३७ ३	अहवा पान्ते	१२ २
अग्गे पुण	८ ११	केइ	४१ ६
अग्ग पुण आयरिया	४१ २	पादतरं इम	२ १४
अग्ग भगति	९ २५, २४ २१	पादतर	८ ११, ५२ ६, ७० २

## चतुर्थ परिशिष्टम्

नन्दीसूत्र-तच्चूर्प्यन्तर्गतानां ग्रन्थ-ग्रन्थकार-स्थविर-नृप-श्रेष्ठि-नगर-पर्वतादीना-  
मकारादिवर्णकमेगानुकमणिका

[ अस्मिन् परिशिष्टे \* एतादृक्पुष्पिकायुतानि नामानि नन्दीसूत्रमूलगतानि ज्ञेयानि, ० एतादृक्शून्ययुतानि नामानि उद्घरणस्थानत्वेनास्माभिर्निर्दिष्टानि ज्ञेयानि, शेषाणि च नामानि चूर्णि-टिप्पणिसत्त्वानि ज्ञेयानि ]



विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
*अकंपित	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७	अणुत्तरोववाइयदसा [ जैनागम ]	६९	०अंगविज्ञा [ जैनागम ]	३८	३८	
०अगस्त्यसिंह	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	८०	*अणुत्तरोववाइयदसाओ ,,	४८, ६१,	*अंतगडदसाओ	,,	४८, ६१, ६७	
*अग्निभूति	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७		६८, ७०	अंतगडदसतो	,,	६८	
*अग्निवेस	[ गोत्र ]	७	*अस्थिणस्थिप्पवात् [ जैनपूर्वागम ]	७४	अंधगवणही [ राजा ]		६०	
अग्निवेस	,,	७	अस्थिणस्थिप्पवाद	,,	७५	*आउरपच्चक्राण [ जैनागम ]	५७	
*अग्नेगिय	[ जैनपूर्वागम ]	७४	०अनुयोगद्वार [ जैनागम ]	४८	०आउरपच्चक्राण	,,	५८	
*अग्नेगीय	,,	७४		४९	०आचाराङ्ग	,,	२, २८	
अग्नेगीय	,,	७५	*अमय [ राजपुत्र ]	३४	०आचाराङ्गनिर्युक्ति	,,	६२, ७५	
अजितजिण	[ तीर्थकर ]	७८	०अमयदेव [ निर्ग्रन्थ-आचार्य ]	२३	आजीविक [ दर्शन ]	७२, ७३, ७४	७४	
*अजिय	,,	६		४२	*आजीविय	,,	७२, ७४	
अजिय	,,	७७		६७	आतविसोही [ जैनागम ]		५८	
अज्ज	[ गोत्र ]	८	*अभिणदण [ तीर्थकर ]	६	आदिच्चजस [ राजा ]		७७	
*अज्जणागहत्थि [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]		९	*अमरागइगमण-		०आभीयमासुरुक्ख [ शास्त्र ]		४९	
अज्जणागहत्थि	,,	९	गडियाओ [ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७	०आम्भिर्य	,,	४९	
अज्जधम्म	,,	८	*अयलभाता [ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७	आयप्पवात् [ जैनपूर्वागम ]		७६	
*अज्जमगू	,,	८	*अर [ तीर्थकर ]	७	*आयप्पवाद	,,	७४, ७५	
अज्जरक्खिय	,,	८	अरुण [ देव ]	५९	*आयविसोही [ जैनागम ]		५७	
अज्जवइर	,,	८	*अरुणोववाए [ जैनागम ]	५९	*आयार	,,	४८, ६१	
*अज्जसमुद	,,	८	०अर्थविद्या [ शास्त्र ]	४९	आयार	,,	४६, ४९, ६२,	
*अज्जाणंदिल	,,	८	*अवञ्ज [ जैनपूर्वागम ]	७४, ७५			७५, ८३	
अज्जाणंदिल	,,	८	अवञ्ज	,,	७६	आयारनिज्जुत्ती	,,	७५
*अणतइ [ तीर्थकर ]		७	अंगचूलिता [ जैनागम ]	५९	आरिस		२६	
*अणुओगद्वाराइं [ जैनागम ]		५७	*अंगचूलिया	,,	५९	०आर्यजीतधर [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]		८८

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
०आर्यमङ्गु	[ निग्रन्थ स्वविर ]	८टि०	*प्रवय	[ क्षेत्र ]	५१	कासव	[ गोत्र ]	७,८
०आर्यसमुद्र	"	८टि०	*एलावच्च	[ गोत्र ]	७	*किरियाविसाल	[ जैनपूर्वागम ]	७४,७५
०आवदयकर्दापिका	[ जैनागम ]	११टि०	एलावच्च	"	८	किरियाविसाल	[ जैनपूर्वागम ]	७६
०आवदयकनिर्युक्ति	, २, २६, ४६,		*एलावच्छ	"	७टि०	कुलमारगडिया	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७
	४७, ५१		०ऐलापत्य	"	८टि०	*कुलमारगडियाओ	"	७७
०आवदयकनिर्युक्ति	[ जैनागम ]	२०टि०,	*ओवाइय	[ जैनागम ]	५७	*कुयु	[ तीर्थंकर ]	७
	२७टि०, ३३टि०		*ओसम्पिणिगडियाओ	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७	*कोडिल्लय	[ शास्त्र ]	४९
०आवदयकवृत्ति	"	३४टि०				*कोडिल्लय	"	४९टि०
०आवरसग	"	४९	*कचायण	[ गोत्र ]	७	०कोडिल्लदडणीइ	[ शास्त्र ]	४९टि०
*आवरसग	"	५७	कचायण	"	७	*कोसिय	[ गोत्र ]	८, ७टि०
*आसुद्वक्त्र	[ शास्त्र ]	४९टि०	*कणगसत्तरि	[ शास्त्र ]	४९	कौसिय	"	८
०आसुर्य	"	४९टि०	*रूप	[ जैनागम ]	५८	*क्रियाकल्प	[ शास्त्र ]	४९टि०
०आसुवृक्ष	"	४९टि०	*कम्पवर्डिसियाओ	"	५९	*खदिलायरिय	[ निग्रन्थ-स्थविर ]	९
०इतिहास	"	४९टि०	कम्पवर्डिसिया	"	६०	खदिलायरिय	"	९
*इसिभासियाइ	[ जैनागम ]	५८	कम्पसुत	"	५७	*खुडियाविमाणपविमत्ति	[ जनागम ]	५९
*इदमृत्ति	[ निग्रन्थ गणधर ]	७	*कम्पासिय	[ शास्त्र ]	४९	खुडियाविमाणपविमत्ति	"	५९
*उद्वृणमुय	[ जैनागम ]	५९	*कम्पियाओ	[ जैनागम ]	५९टि०	*खोडसुइ	[ शास्त्र ]	४९
उद्वृणमुत	"	६०	*कम्पियाकम्पिय	"	५७	*धोडसुइ	"	४९टि०
*उत्तरभयणाइ	"	५८	कम्पियाकम्पिय	"	५७	*गगधरगडियाओ	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७
*उपादपुच्च	[ जैनपूर्वागम ]	७४	*कम्प्यगडि	[ जनशास्त्र ]	९	*गणिय	[ शास्त्र ]	४९टि०
उपावपुच्च	"	७५	*कम्प्यवाद	[ जैनपूर्वागम ]	७४, ७५	*गणिविज्ञा	[ जैनागम ]	५७
उदक	[ दचन ]	४	कम्प्यवाद	"	७६	गणिविज्ञा	"	५८
*उरनाइय	[ जैनागम ]	५७टि०	करकडु	[ निग्रन्थ-प्रयेक्कुइ ]	२६	गरुळ	[ द्वैत ]	५९
*उवासगदसाओ	"	४८, ६१,	करिसाधण	[ नाणकविशेष ]	४५	*गरुळेव्वाए	[ जैनागम ]	५९
	६६, ६७		०कन्यमाथ्य	[ जैनागम ]	१२, १३,	गंगा	[ नदी ]	६४, ८२
उवासगदसाओ	"	६७			५३, ५४,	गडिकाणुओग	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७६
*उसम ह	[ तीर्थंकर ]	६, ६०			५५, ५६	*गडियाणुओग	"	७६, ७७
उसम	"	७, ६०, ७७	कविल	[ ऋषि ]	२६	गडियाणुओग	"	७७
*उरसम्पिणिगडियाओ	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७	*कविल	[ शास्त्र ]	४९	गोटम	[ निग्रन्थनिह्व ]	८१
			*काविल	"	४९टि०	गोटम	[ निग्रन्थ गणधर ]	२६, ६५
एगूरग	[ अन्तराक्षेप ]	२२	*काविलिय	"	४९टि०	गोतम	[ गोत्र ]	७
एवद-य	[ क्षेत्र ]	२२, ५१	*कासन	[ गोत्र ]	७	०गोमटसार	[ जैनशास्त्र ]	४९टि०

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
*भोयम	[ गोत्र ]	७	०छन्दस्विनी	[ शास्त्र ]	४९टि०	*णायोधम्मकहाओ [ जैनागम ]	४८, ६१,	
गोविंद	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	१०टि०	जमाली	[ निर्ग्रन्थनिहव ]	८१		६५, ६६	
गोसाल	[ आजीवकदर्शनप्रणेना ]	७२	*जसभद	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	७	णायोधम्मकहाओ	,,	६६
गौतम	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	५१	जसभद	,,	७	*णासिककुमुंदरी-नंद [ श्रेष्ठिदम्पती ]		३४
*घोडमुह	[ शास्त्र ]	४९टि०	जंबु	,,	७, २६	णिसीह [ जैनागम ]		५८
*खोडमुह		४९	*जंबू	,,	७	*णेमी	[ तीर्थकर ]	७
*चक्रवर्तिगडियाओ [ दृष्टिवादप्रविभाग ]		७७	*जंबुद्वीप	[ द्वीप ]	१८, २४	०त्त्वार्थाधिगमसूत्र [ जैनशास्त्र ]		१५
चरग	[ श्रमणविशेष ]	३, ४	जंबुद्वीप	,,	२४	*तवोकम्मगडियाओ [ दृष्टिवादप्रविभाग ]		७७
*चरणविही	[ जैनागम ]	५७	*जंबुद्वीपपणत्ति	[ जैनागम ]	५८	*तंदुलवेयालिय	[ जैनागम ]	५७
चरणविही	,,	५८	जंबुद्वीप	[ द्वीप ]	८२	तावस	[ श्रमणविशेष ]	४
*चंदपणत्ति	,,	५९	जिणदासगणि-	[ नन्दिचूर्णिकार ]	८३	*तित्थगरगंडियाओ [ दृष्टिवाद-		७७
*चंदावेज्जय	,,	५७	महत्तर			प्रविभाग ]		
*चाणक	[ अमात्य ]	३४	जितसत्तु	[ राजा ]	७८	*तिरियगइरगमणगंडियाओ	,,	७७
चित्तंतरगडिया [ दृष्टिवादप्रविभाग ]		७७	जीवधर	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	८	*तुंगिय	[ गोत्र ]	७
*चुल्लकप्पसुत [ जैनागम ]		५७	*जीवाभिगम	[ जैनागम ]	५७	तुंगियायण		
चुल्लकप्पसुत	,,	५७	०जेसलमेरु [ नगर ]	३५टि०, ५९टि०		वग्घावच्च		
चुल्लहिमवंत [ गिरि ]		२२	ज्योतिष	[ शास्त्र ]	४९टि०	*तेरासिय [ दर्शन ]		७२, ७४
०चूर्णि [ नन्दीसूत्रचूर्णि ]	१टि०, ७टि०,		*ज्ञाणविभत्ति	[ जैनागम ]	५७	तेरासिय	,,	७३, ७४
	१०टि०, ११टि०, १७टि०,		ज्ञाणविभत्ति	,,	५८	*तेरासिय-तेसिय [ शास्त्र ]		४९टि०
	२७टि०, ३३टि०, ३४टि०,		*ठाण	,,	४८, ६१, ६३	*थूलभद [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]		७
	३५टि०, ४०टि०, ४३टि०,		*णमी	[ तीर्थकर ]	७	,,	,,	७, ३४
	५५टि०, ५९टि०, ६१टि०		णमोक्कार	[ जैनागम ]	३४	०दशवैकालिक [ जैनागम ]		७४
०चूर्णिकृत्- [ जिणदासगणि-	४टि०,		*णरगइरगमण-	[ दृष्टिवाद-		०दशवैकालिक	,,	८०टि०
कार महत्तर ]	५टि०, ७टि०,		गंडियाओ	प्रविभाग ]	७७	० " चूर्णि	,,	८०टि०
	८टि०, ११टि०, १२टि०,		*णंदिसेण	[ निर्ग्रन्थ ]	३४	० " निर्युक्ति	,,	८०टि०
	१५टि०, १६टि०, २०टि०,		णंदी	[ जैनागम ]	१	० " वृद्धविवरण	,,	८०टि०
	२३टि०, ३१टि०, ३३टि०,		*णाइलकुलवंस [ निर्ग्रन्थवश ]		१०	०दशाश्रुतस्कन्ध	,,	८टि०
	३४टि०, ४८टि०, ५१टि०,		णाग	[ देव ]	७०	*दसवेयालिय	,,	५७
	५२टि०, ५७टि०, ५८टि०,		*णागज्जुण [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	१०, ११	दसा	,,	८	
	५९टि०, ६०टि०, ६१टि०,		णागज्जुण	,,	१०	*दमाओ	,,	५८
	६६टि०, ६७टि०, ६९टि०,		णागपरियाणिया [ जैनागम ]		६०	*इसारगंडियाओ [ दृष्टिवादप्रविभाग ]		७७
	७२टि०		णाणप्पवाद [ जैनपूर्वागम ]		७५	०दानसूरि [ निर्ग्रन्थ-आचार्य ]		५९टि०



विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
*द्विद्विवाक्य [ जैनपूर्वागमसमूह ]		४८, ६१, ७१, ७९	*निगम	[ शास्त्र ]	४९ टि०	*पुष्फचूला	[ जैनागम ]	६०
द्विद्विवात	"	७१, ७२, ७९	*निरयगइगमण-			*पुष्फचूलियाओ	"	५९
*दीवसागरपण्णत्ति [ जैनागम ]		५९	गडियाओ [ दृष्टिगदप्रविभाग ]		७७	*पुष्फदत्त	[ तीर्थंकर ]	६
दुमपुष्फिय	"	७४	निरयावलिआ [ जैनागम ]		६०	पुष्फिया	[ जैनागम ]	६०
दुस्तगणि } [ निग्र-थ-स्थविर ]		११, १२	*निरयावलिआओ	"	५९	*पुष्फियाओ	"	५९
दुस्तगणि }		१३	० निरुक्त	[ शास्त्र ]	४९ टि०	*पुराण	[ शास्त्र ]	४९
*दुस्तगणि	"	११	० निर्घण्ट	"	४९ टि०	० पुराण	"	४९ टि०
दृष्टिवाद } [ जैनपूर्वागमसमूह ]		७१	निसीह	[ जैनागम ]	५९	*पुस्तदेवय	"	४९ टि०
दृष्टिपात }			*पञ्चकस्त्राण [ जैनपूर्वागम ]		७४, ७५	पेटिया	[ जैनागम ]	१८, २६, शावक्यकपीठिका ] ३१, ४४
देवरायग [ नन्दीसूत्रकार ]		१३	पञ्चकस्त्राण	"	७६	*पोरिसिमडल [ जैनागम ]		५७
*देविदय्यअ [ जैनागम ]		५७	*पञ्चकस्त्राणप्यवाद	"	७४ टि०	पोरिसिमडल	"	५८
*देविदोववाए	"	५९	पण्णवणा	"	२९, ५८, ८२	पोडरीय	[ इह ]	६४
० द्वादशारनय [ जैनशास्त्र ]		५० टि०	*पण्णवणा	"	५७	*बलदेवगडियाओ [ दृष्टिवादप्रविभाग ]		७७
चक्रवृत्ति			*पण्णवणाग	"	४८, ६१, ६९	बलिस्सह [ निग्र-थ-स्थविर ]		८
*धणदत्त [ श्रष्टी ]		३४	पण्णवणाग	"	६९, ७०	*बहुल	"	७
*धम्म [ तीर्थंकर ]		७	*पमव [ निग्र-थ-स्थविर ]		७	बहुल	"	८
धरण [ देव ]		६०	पमव	"	७	*बहुलसरिव्विय	"	७
*धरणोववाए [ जैनागम ]		५९	*पमास [ निग्रन्थ गणधर ]		७	(बलिस्सह)		
० नन्दिवृत्ति	"	३४ टि०, ३५ टि०	*पमादप्यमाद [ जैनागम ]		५७	*बमदीवग [ निग्रन्थशाखा ]		९
० नदी-सूत्र	"	२३ टि०, ३२ टि०, ३८ टि०, ४२ टि०, ६१ टि०, ६७ टि०, ६८ टि०, ८२ टि०	पमादप्यमाद	"	५८	बमदीवग	"	९
० नयचक्र [ शास्त्र ]		५० टि०	*पाइण्ण [ गोत्र ]		७	० बार्हस्पत्य [ शास्त्र ]		४९ टि०
नदी [ जनागम ]		५७	० पाकिक्कमूरटाका [ जैनागम ]		५९ टि०	विंदुसार [ जैनपूर्वागम ]		३२, ४९
*नागपरियागियाओ	"	५९	० " वृत्ति	"	५७ टि०	० बृहत्सङ्ग्रहणी [ जैनशास्त्र ]		२४
*नागपरियावगियाओ	"	५९ टि०	*पाणाउ-उ-यु [ जैनपूर्वागम ]		७४ टि०,	ब्रह्मी [ लिपि ]		४४
*नागपरियावलिआओ,		५९ टि०			७५ टि०	० भगवती [ जैनागम ]		२३ टि०, २६
*नागमुटुन [ शास्त्र ]		४९ टि०	*पागाय	"	७४, ७५	भगवती	"	३०
*नागमान [ जैनपूर्वागम ]		७४	पाणायु	"	७६	भइगुत्त [ निग्रन्थ-स्थविर ]		८ टि०
*नाममुटुम [ गाय ]		४९	० पागिनीयधातुपाठ [ शास्त्र ]		१४, १७	*भइवाहुगडियाओ [ दृष्टिवादप्रविभाग ]		७७
			*पायजली	"	४९ टि०	*भइवाहु [ निग्रन्थ-स्थविर ]		७
			पायीगणि [ गोत्र ]		७	भइवाहु	"	७
			*पास [ तीर्थंकर ]		७	० मन्थी [ शास्त्र ]		४९ टि०

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
भरह	[ क्षेत्र ]	१८, ५१	*महाणिसीह	[ जैनागम ]	५८	*रायपसेणिय-सेणीय-सेणइय		
भरह	"	२२, ५१	महाणिसीह	"	५९	[ जैनागम ]	५७, ५७ टि०	
*भागवत	[ शास्त्र ]	४९ टि०	*महापच्चक्खाण	"	५७	रिसम	[ तीर्थंकर ]	२, २६
भारथ	"	५०	महापच्चक्खाण	"	५८	*रुयग	[ गिरि ]	१८
*भाह	"	४९	*महापणवणा	"	५७	रुयग	"	२, ४
भूतदिग्ण	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	१०, ११	महापणवणा	"	५८	*रेवइणक्खत्त	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	९
*भूयदिग्ण	"	११	*महाविदेह	[ क्षेत्र ]	५१	रेवतिवायग	"	९
भूयदिन्न	"	१० टि०	महाविदेह	"	२२, ५१	*लेह	[ शास्त्र ]	४९ टि०
मधुरा	[ नगरी ]	९	*महावीर	[ तीर्थंकर ]	१ टि०, २	लोगविंदुसार [ जैनपूर्वागम ]	७४, ७५, ७६	
*मरणविभत्ति	[ जैनागम ]	५७	महावीर	"	७	*लोगायत	[ शास्त्र ]	४९, ४९ टि०
मरणविभत्ति	"	५८	*मंडलप्पवेस	[ जैनागम ]	५७	णागायत		
*मलयगिरि	[ निर्ग्रन्थ-आचार्य ]	३ टि०,	मंडलप्पवेस	"	५८	लोहिच्च-लोमिच्च	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	११
		४ टि०, ७ टि०, ८ टि०,	*मंडिय	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७	*लोहिच्च	"	११
		१० टि०, १७ टि०,	मंदर	[ गिरि ]	२४	*इसेसिय-वत्ति	[ शास्त्र ]	४९, ४९ टि०
		२० टि०, २३ टि०,	*माढर	[ गोत्र ]	७	*वग्गचूलिया-वंग	[ जैनागम ]	५९,
		२७ टि०, ३२ टि०,	माढर	"	७		५९ टि०	
		३३ टि०, ३४ टि०,	"	[ शास्त्र ]	४९	*वग्गवाच्च	[ गोत्र ]	७
		३५ टि०, ३७ टि०,	माधुरा वायणा	[ जैनागमवाचना ]	९	*तुंगिय		
		४३ टि०, ४८ टि०,	मानुषोत्तर	[ गिरि ]	८२	*वच्छ	"	७
		५० टि०, ६० टि०,	*मुणिसुवय	[ तीर्थंकर ]	७	वच्छ	"	७
		६३ टि०, ६६ टि०,	*मूलपढमाणुओग	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७६	*वण्हिदसातो	[ जैनागम ]	६०
		६७ टि०	मूलपढमाणुयोग	"	७६, ७७	वण्हिदसाओ	"	५९
*मलयगिरिवृत्ति	[ नन्दीसूत्रटीका ]	३ टि०,	*मृगपक्षिरुत	[ शास्त्र ]	४९ टि०	*वण्हियाओ	"	५९ टि०
		३६ टि०, ३९ टि०,	*मेतज्ज-यज्ज	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७, ७ टि०	*वद्धमाग-सामी	[ तीर्थंकर ]	७, ६०
		४० टि०, ५२ टि०,	मेरु	[ गिरि ]	४, ८१, ८२	*वरुणोववाए	[ जैनागम ]	५९ टि०
		५८ टि०, ५९ टि०	*मौरियपुत्त	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७	*ववहार	"	५८
*मल्लि	[ तीर्थंकर ]	७	*यज्जकल्प	[ शास्त्र ]	४९ टि०	*वाउभूति	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७
*महल्लियाविमाणपविभत्ती	[ जैनागम ]	५९	योग	"	४९ टि०	*वागरग	[ शास्त्र ]	४९
महल्लियाविमाणपविभत्ती	"	५९	रतणप्पभा	[ नरक ]	२४, २९	*वायगवस	[ निर्ग्रन्थवश ]	९
*महाकप्पसुत्त	"	५७	*रयणप्पभा	"	२३	वायगवंस	"	९
*महागिरि	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	७	*रयणावली	[ शास्त्र ]	४९ टि०	*वायभूह	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७ टि०
महागिरि	"	८	*रामायण	"	४९	वासिट्ठ	[ गोत्र ]	८

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
०वासिष्ठ	[गोत्र]	८टि०	०वृत्तिकृत् ऋतुं [नन्दी]	११टि०, १२टि०,		*सद्वृत्त	[शास्त्र]	४९
*वामुदेवगडियाओ	[दृष्टिवादप्रविभाग]	७७	टीकाकारौ-	१५टि०, १६टि०,		सदपाहुड	[जैनशास्त्र]	९
*यामुपुत्र	[तीर्थकर]	६	धोहरिमन्-	२३टि०, ३०टि०,		*समवाज	[जैनागम]	४८, ६१, ६४
निजगुण्यनात	[जैनपूर्वागम]	७६	मलययिया	३१टि०, ३३टि०,		समवाय	"	६४
*निजगुण्यवाद	"	७४, ७५	चार्यौ]	५०टि०, ५२टि०,		०समवायाङ्ग	"	६३टि०, ६५टि०,
*विज्ञाचरणविणिच्छ्रम	[जैनागम]	५७		५७टि०, ५८टि०,				६६टि०, ६७टि०,
विज्ञाचरणविणिच्छ्रय	"	५८		६०टि०, ६७टि०,				६८टि०, ६९टि०,
*निजगुण्यवाद	[जैनपूर्वागम]	७४टि०,		६९टि०, ७२टि०				७०टि०, ७१टि०,
		७५टि०	वेतद्द	[गिरि]	६४			७२टि०, ७४टि०
*निवत्त	[निग्रन्थ-गणधर]	७	*वेद	[शास्त्र]	४९	०समवायाङ्गसूत्रवृत्ति	"	७४टि०
*निमल	[तीर्थकर]	७	०वेद	"	४९टि०	*समुद्राणसुय	"	५९
विमलवाहण	[कुलकर]	७७	वेद	"	५०	समुद्राणसुय	"	६०
*वियाह	[जैनागम]	६५	वेलधरे	[देव]	६०	*ससि	[तीर्थकर]	६
वियाहचूला	"	५९	*वेलधरोववाए	[जैनागम]	५९	*सडिळ	[निग्रन्थ स्थविर]	८
विवागमुत्त	"	७०, ७१	वेसमगे	[देव]	६०	सडिळ	"	८
*निगामसुय	"	४८, ६१, ७०	*वेसमगोववाए	[जैनागम]	५९	*सती	[तीर्थकर]	७
*निग्राह	"	६५टि०	*वेसिय	[शास्त्र]	४९	*सभव	"	७
*विग्राहचूलिया गियाह०	"	५९, ५९टि०	*वेसिय		४९टि०	*सभूय	[निग्रन्थ-स्थविर]	७
०विशेषगवती [जैनशास्त्र]		२८, २९, ३०	*तेरासिय		४९टि०	सभूय	"	७
०विशेषावश्यक [जैनागम]		२३टि०,	०वैशिक	"	४९टि०	*सलेहणासुत	[जैनागम]	५७
		८२टि०	०वैशेषिक	"	४९टि०	*साई	[निग्रन्थ-स्थविर]	८
०विशेषावश्यक	"	३२टि०	०व्यवहारभाष्य [जैनागम]	४९टि०, ६१		०सागरानन्दसूत्रि [निग्रन्थ आचार्य]	५९टि०	
महाभाष्यमलया	"	३८टि०, ४२टि०	०याकरण	[शास्त्र]	४९टि०	साती	[निग्रन्थ-स्थविर]	८
रीयटीका-वृत्ति	"	५२टि०	शकराज	[राजा]	८३	*सामज	"	८
विससायरसग	"	३२	०शाण्डिल्य	[निग्रन्थ-स्थविर]	८टि०	सामज	"	८
*विहारकृष्ण	"	५७	०शिक्षा	[शास्त्र]	४९टि०	सामादिय	[जैनागम]	३२, ४९
विहारकृष्ण	"	५८	सक्र	[धर्मणविशेष]	४	०साख्य	[शास्त्र]	४९टि०
यन्तरागमुत्त	"	५८	*सगमन्याओ सयम०	[शास्त्र]	४९,	*सिजस	[तीर्थकर]	६
*वीरयारमुत्त	"	५७	सगम०-सदम०-सगडम०		४९टि०	सिंधु	[नदी]	६४, ८२
*वीर	[तीर्थकर]	२	सगर	[चक्रार्ती]	७७	*सीयल	[तीर्थकर]	६
*वीरिय	[जैनपूर्वागम]	७४, ७५	*सधन्यवाद	[जैनपूर्वागम]	७४, ७५	*सीह	[निग्रन्थ-स्थविर]	९
वीरियन्याय	"	७५	सधन्यवाद	"	७५	सहवायक	"	९

नन्दीसूत्र-तच्चूर्णि-टिप्पणीगतानां ग्रन्थ-ग्रन्थकार-स्थविर-नृपादिनाम्नामनुक्रमः

९५

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	
सुदृष्ट	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	८	सेज्जंभव	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	७	*हारिय	[ गोत्र ]	८	
सुपडिबद्ध	"	८	हर	[ देवविशेष ]	४	हारिय	"	८	
सुपास	[ तीर्थकर ]	६	हरि	"	४	०हारि०वृत्ति [ हरिभद्रसूरिद्वत- नन्दीसूत्रवृत्ति ]	३टि०, ५टि०,९टि०,		
सुस्पभ	"	६	०हरिभद्रसूरि [ निर्ग्रन्थ-आचार्य ]	३टि०,					
सुबुद्धि	[ अमात्य ]	७७		४टि०,७टि०,८टि०,					
सुमति	[ तीर्थकर ]	६		१०,टि०,२०टि०,				३६टि०,३९टि०,	
सुवण्ण	[ देव ]	७०		२३टि०,२७टि०,				४०टि०,५२टि०,	
*सुहृथि	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	७		३२टि०,३७टि०,				५९टि०	
सुहृथि	"	८		४२टि०,४३टि०,					
*सुहम्म	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७		४८टि०,५०टि०,		०हिमवन्तस्थविरावली [ जैनशास्त्र ]	८टि०		
सुहम्म-धम्म	"	७,७टि०		६०टि०,८०टि०		हिमवन्त	[ गिरि ]	१०,६४	
सुहस्ती	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	८टि०	*हरिवसंगंडियाओ [ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७		*हिमवन्त+स्वमासमण			
सूयगड	[ जैनागम ]	४८,६१, ६२,६३	*हंभीमासुरकख-रुक्ख	} [ शास्त्र ] ४९, ४९टि० ४९टि० ४९टि० ४९टि०			[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	१०	
*सूरपण्णत्ति	"	५७	*भीमासुरकख				हिमवत+स्वमासमण	"	१०
सूरपण्णत्ति	"	५८	०भंभीयमासुरकख				०हेतुविधा	[ शास्त्र ]	४९टि०
*सेज्जंभव	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	७	०हंभीयमासुरकख				हेमवत	[ क्षेत्र ]	२२

## पञ्चम परिशिष्टम्

नन्दीसूत्र-तद्धूर्ण्यन्तर्गतानां विषय-व्युत्पत्त्यादियोनिकानां  
शब्दानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका

[अस्मिन् परिशिष्टे ऋणात्कृणोःकाचिद्वाङ्किता ऋणा नदाभूत्सुत्रान्तं दूत्रहृत्वा त्वय व्याख्याता  
हेया, + एनात्कृचतुक्किताचिद्वाङ्किता ऋणा चूर्णिकया प्रथममन्त्रं न्वय प्रयोजिता  
हेया, ऋणाश्च शब्दा मूत्रात्तर्गता चूर्णिकृता व्याख्याता अवबोधय्या ।]



शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति
अ		+अगिबोस	७६-१५	अभिज्ञावन्मर	४४-१७
अक्षरग	८०-१३	अणागुणामिक	१७-२१	अहृत	४८-२०
अक्रिय [ गरिव्यवार्थ ]	४-९	अयुक्तद्वय	१७-२	अजल [ इच्छा शक्त ]	१६-२२
अकृन् [ अह्न व्याता वाण्यन्- टाए आय अकृन् ति इचव जीवो अकृन् वाण्यन्वावग वाविति ति अणिल मशति । अह्ना क्वा मानन द्वाचतस्य वा सव्यत्ये अकृन् ति अकृन्तो पाळ्यति मुहकत चस्ये १ ]	१४-१५, १६	अयुत्तर	६९-४	अवाद्	५-१३
अकृन् [ ऋणा ]	५७-२३	अयुसोवराइय	६९-५	अवप्र	३४-१९
अकृन् [ अविरोधित निरविचार ]	३-१७	अगोमिद्व	२७-९	अवधि	१३-२३, २४
अगमिय [ अगोमिद्वराविधयद्वित ब पञ्जित त अगमिय ]	७६-२४	अगत	२६-३	अवयग [ इच्छितवग ]	४७-२७
अग [ परिभा ]	५२-१९, ७५-२२	अण्डिासिद्ध	२७-२	अवलवगना	३५-२६
अगगति	७५-२२	अण्णान	५०-६	अवहि	१५-११
अचरमसमयमवधकेवटगग	२५-२८	अण्णानित [ अण्णान इत अण्णानित ]	५०-७	अवात	३६-२३, ४१-१६
अचरिम	२५-२७	अनिथ	२६-१३	अवाय	३४-२०
अजोगिमवधकेवटगग	२५-१६	अनिथक्रसिद्ध	२६-१७	*अवाय	४३-११
अजोगी [ अण्णानेनिरदा सन्धमावद्वितो ]	२५-१६	अनिथसिद्ध	२६-१५	अवि	५५-२२
अज [ आय आय वा ]	८-९	अन्य	११-२१	अबोह [ परममनरिषणे सधन्नायुगदावधारणे य अबोहो' ति अण्णे ]	४६-११, १५
		अन्यगियमवाद	७५-२५	अवस	७६-१, ९
		अयोगह	३५-१३, १४, १५	अमगिमुत	४५-२१
		अनुयोग [ अनुसो योग अनुयोग ]	७६-१८	असर्ज [ इच्छितव्यो ]	४७-२७
		अपञ्चय	२२-१९	अमृतनिस्सित	३२-२६
		अभाव	८०-७	अपाविद्व	५७-३, ९
		अभिनिरोध	१३-१८	अवाहिर	५७-४, ९

शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति
अंगुलपुहत्	१९-१५	इंदिय	१४-२८	उववात	६९-४
अंतकड	६८-७	इंदियपच्चक्रव	१४-२९	उवासग	६७-१०
अंतकडदसा	६८-८, ९	इंदियपज्जति	२२-१५	उवासगदसा	६७-११
अंतगतमोधिष्णाण	१६-५, ६	ईहा [ १ ज पुण हेतुववत्ति-	३४-२०,	उरसण्ण	१८-२०
आ		साधणेहिं सम्भूतमत्थस्स	४१-९;	ए	
आउट्टणता	३६-२२	विसेसधम्माभिमुहल्लोयण	४६-१०,	एकसिद्ध	२७-९
आउर	५८-२३	तस्सेवऽत्थस्स अधम्मविमुह	१३	ओ	
आउरपच्चक्खाण	५८-२५	असम्मोहमविकलमत्थपरिच्छेदक		ओगिण्हणता	३५-२५
आघविज्जइ [ आख्यायते ]	६२-२	चित्त ज त ईहा (पत्र ४१),		ओमत्थग	२५-२७
आणा-ज्ञा	८१-२, ६	२ अतीतकाले सुवीहे वि इद		ओसण्ण	२२-२४
आणापाणुपज्जति	२२-१५	तदिति क्तमणुभूत वा सुमरति,		क	
आणुगामिय	१५-२७	वट्टमाणे य इदिय-णोइदिण्ण वा		कड [ कित्तिम ]	६२-२१
आतविसोही	५८-१७	अण्णतरं सदाइअत्थमुवल्लं अण्णत-		कण्णिथा	बाहिरपत्ता ] ४-२
आता	५८-१६	वडरेगधम्मोहिं ईहइ त्ति ईहा (पत्र		+कण्हुइ	२२-२०
आदेस [ १-प्रकार, २-सुत्तं ]		४६) ]		कप्प	५८-२०
	४२-१५, १९	*ईहा	४३-१०	कप्पवडेसिया	६०-११
आभिणिबोधिक	१३-१८, १९,	उ		कप्पसुत	५७-२४
	२०, २१	उद्	६-५	कप्पिया	५९टि०५
आभोयणता	३६-१०	उक्का [ दीविया ]	१६-२२	कप्पियाकप्पिय	५७-२३
आय	१३-२६	उक्कालिय	५७-१५	कम्म	३-२३
आयप्पवात	७६-३	*उग्गह	४३-१०	कम्मप्पवाद	७६-४
आयार	६१-२०	उग्गहडित्त [ उद्घाटित्तक ]	५६-५	+कयार [ देख्य स कचवर ]	३-१७
आल [ अधिकयोगयुक्त ]	४-३	उज्जल	६-१५	करणशक्ति	४७-५, ६
आवागसीसग [ आवागसीसगंति ४०-१, २		उज्जुमई	२२-२४	कल्पिका	५९टि०५
आपागट्टाणमेव, अहवा आपाग-		उट्टाणसुत	६०-१	कहण	१२-१
ट्टाणस्स आसण्ण समता परिपेरत,		उप्पायपुब्ब	७५-२०	कंत	६-१८
अहवा आपागमुत्तारियाण ज ठाण		उवउज्जत	२४-५	कारण	८०-१२
त आपागसीसय भण्णति ]		उवदेस [ उवदिसणमुवदेसो,	४६-६	कालिओवएससण्णी	४६-१७, २०
आसइज्जति [ आश्रीयन्ते ]	६४-२३	उवदेसो त्ति वा आदेसो		कालिय	४६-८, ५७-१४
आहारपज्जति	२२-१३	त्ति वा पण्णवण त्ति वा		किरिया	६८-१०, ११, १२
इ		परूवण त्ति वा एग्गट्टा ]		किरियाविसाल	७६-११, १२
इड्ढिप्पत्त	२२-२१	उवदंसणा	५२-२		
इत्थिल्लिसिद्ध	२७-८	उवधारणता	३५-२५		
		उवरिमसुड्डाणपतर	२४-१८		

शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति
कुच्छी [ दो हत्या (द्विद्वस्त प्रमाणम्) ]	१९-१५	च		जाया [ संजमजता ]	६२-१
कुवलय [ १ कुच्छितो उवलो १-१३ कुवलयो सो य कण्हकायो २ णील्लप्लं ३ रयणविसेसो ]	१-१३	चरण	५८-८, २२	जीत [ छत्त ]	८-९
कूड	६४-४	चरणविही	५८-२२	जीव	१-२०
कोट्ट	३७-११	चरिम	२५-२६	जीवभाव	२८-८
स्व		चहित (दि०) [ मनोरथदृष्टिदृष्ट ]	४९-१	जोई [ मल्लगदिठितो जलतो १६-२३ अगणी ]	१६-२३
स्वाणी	११-२०	चित्त [ चित्तिज्ज जेण त चित्त ]	५-१९	जोणि	१-१७
खुइ	५९-८	चित्ततरगड्डिका	७७-१३	ज्ञ	
खुइगपत्तर	२४-८	चित्र	७७-१३	ज्ञाण	५८-१४
ग		चिता [ जो यऽणागते य चित्त्वति क्हं वा त तत्थ कातम्भ ? इति अण्णोणालंबणानुगतं चित्तं चिता २ अणोगहा संकप्परण चिता (पत्र-४६) ]	३६-१३, ४६-१३, १५	ज्ञाणविमत्ती	५८-१५
गण	५८-१०	चुडली [ अणो पज्जलिता तर्णपिडी ]	१६-२२	ट	
गणिविज्जा	५८-१४	चुल्ल	५७-२५	टक	६४-४
गदिय(दि०) [ क्यात ]	११टि०११	चुल्लकम्पसुत	५७-२५	ठ	
गम्भ [ पोमकेसरा ]	११-३	चूला	७९-११	ठवणा	३७-९
गमिय	५६-२३	चोदक	३८ ६, ७	ण	४२ १३, १४, ४७-४, ५, ५५ २३
गवेसणा [ १ वीससप्पयोष्ठ- न्भवणिसम्मणिस चेत्यादि गवेसणा, २ अमिलसित्तये चोव अपह्णप्यज्जयाणे वायथा गवेसणा (पत्र ४६) ]	३६-१२, ४६-१२, १५	चोदित	५०-२३	ण	४२ १३, १४, ४७-४, ५, ५५ २३
गडिका	७७-१३	छ		णदिघोस	३-५
गाढ	५-१५	छद्दुमथ	२४-३	णदी	१-२, ८
गिहिल्लिसिद्ध	२७-४	छन्द	५०-८	णाग	६०-७
गुण	४-३	ज		णागपरियाणिय	६०-७
*गुणपक्वतिम् इय	२०-१३, २३-१४	जग [ १ खेत्तलोगो (पत्र १) २ सक्खसण्णि- खोगो ३ सत्त-प्राणी (पत्र २) ]	१-१७, २-१, ३	णाण-नाण	१३-११, १२, १३, २०-९
*गुणपट्टिवण	१५-१८	जतपडागा [ संजयपटाका ]	३-५	णाण्यवाद	७५-२७
गुरु [ एणासि शास्समिति गुरु ]	२-२	जमलट्टित	१७-३	णाय	६६-८
गोयर	६१-२०	जयति	१-१७, २ २०	णिस	५६-५
घ		जलोह	४-१	णिस	४-१०
घोस	३५-२१	जसवस	९-६	णोइदिय	३५-१६
				णोइदियत्थावगाह	३५-१९
				णोइदियपक्वस	१५-११
				त	
				तर	२५-१

शब्द	पत्र-पक्ति	शब्द	पत्र-पक्ति	शब्द	पत्र-पक्ति
तवोमतां=तपोमयाः	३-९		प	पमादप्पमाद	५८-२,३
तैथ	२६-११,१२	पङ्णग	६०-२३,२४	परंपरसिद्धकेवलणाणं	२६-२; २७-२२
तैथकरसिद्ध	२६-१६	पउर	६-११	परिकड्ढिय	१७-३
तैथसिद्ध	२६-१०	पगम्भ	११-६	परिकम्म	७२-१६
तेरियलोगमञ्ज	२४-१०	पच्चक्ख	१४-१७; ३१-८	परिघोलण	१७-२३
तिसमयाहारग	१८-३	पच्चक्खाणप्पवाद	७६-६	परिबुड	४-५, २०
तुरसंघात	१-४	पच्चाउट्टण+ता	३६-२३	परोक्खणाण	३१-५
तिलोक्क	४८-२५	पज्जतय	२२-१८	पल्लव	६४ टि०५
	थ	पज्जत्ती	२२-११	पसत्थञ्जवसाण	१८-२१
थिर	४-२	पज्जय	१३-२५	पसिण	६९-२४
	द	पज्जव	१३-२४	पसिणापसिण	६९-२४
दरित	६-५	पज्जात	१३-२६	पंक	४-१
दग्गमण	३५-१७	पड्डिवत्ती	६२-५	पाणायुं	७६-१०
दग्गिदिय	१४-२८	पड्डिवाती	१९-१४	पारियल्ल	३-९
दस-सा	६८-७, ८	पढमसमयसजोगिभक्ख-		पावयणी	१२-५
दसा	६०-१५	केवलणाण	२५-१८	पासओ अंतगय	१६-१०
दंसण	२०-१०	पढमसमयअजोगिभक्ख-		पासणता	२४-३
दंसिज्जति	५२-२	केवलणाण	२५-२२	पासतो	१७-२
दिट्ठिवाओवदेस	४७-१६	पणगजीव	१८-३	पुप्फचूला	६०-१३
दिट्ठिवातअसण्णी	४७-२०	पणीत	४९-५	पुप्फिया	६०-१३
दिट्ठिवातसण्णी	४७-१९	पणोल्लण	१६-२३	पुरतो	१६-२३
दुआधरिस,	४-१०	पणत्त	१३-१३, १४, १५, १६, १७	पुरतो अंतगय	१६-९, ११, १७-५
दुष्टिपात	७१-७	पणवग	३८-७, ८	पुव्व	७५-१६
दुष्टिवाद	७१-६	पणवणा	५८-१	पुह्य	४९-४
	ध	पणविज्जति	५२-१	पेरंत	१७-२२
धम्मकहा	६६-९, १०	पण्णा	१३-१४, १६	पोरिसिंढल	५८-७
धरणा	३७-७	पण्ह	६९-२०	पोरिसी	५८-४
धारणा	३४-२१; ३७-९, ४१-१८	पतिट्ठा	३७-१०	प्रज्ञापना	५८ टि०१
*धारणा	४३-११	पत्तेयबुद्ध	२६-२३		फ
	न	पत्तेयबुद्धसिद्ध	२६-२८	फड्डग	१७-१२
नाण	२०-९	पदीव	१६-२३	व	
नाणक्खर	४४-१५	पम्भार	६४-५	वंधु	२-९
निरियावल्लिया	६०-९	पमव	२-२१	बुद्धवोधित	२६-२८





शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति
नतबोमलां=तपोमयाः	३-९		प	पमादप्पमाद	५८-२,३
तिथ्य	२६-११,१२	पङ्गणग	६०-२३,२४	परंपरसिद्धकेवलणाणं	२६-२; २७-२२
तिथ्यकरसिद्ध	२६-१६	पउर	६-११	परिकङ्कित्य	१७-३
तिथ्यसिद्ध	२६-१०	पगन्ध	११-६	परिकम्म	७२-१६
तिरियलोगमञ्ज	२४-१०	पच्चक्ख	१४-१७; ३१-८	परिघोलण	१७-२३
तिसमयाहारग	१८-३	पच्चक्खणप्पवाद	७६-६	परिवुड	४-५, २०
तूरसघात	१-४	पच्चारट्टण+ता	३६-२३	परोक्खणाण	३१-५
तेल्लोक्क	४८-२५	पजत्तय	२२-१८	पल्लव	६४ टि०५
	थ	पजत्ती	२२-११	पसत्थञ्जवसाण	१८-२१
थिर	४-२	पज्जय	१३-२५	पसिण	६९-२४
	द	पज्जव	१३-२४	पसिणापसिण	६९-२४
दरित	६-५	पजात	१३-२६	पंक	४-१
दब्बमण	३५-१७	पडिबत्ती	६२-५	पाणायुं	७६-१०
दग्धिदिय	१४-२८	पडिवाती	१९-१४	पारियल्ल	३-९
दस-सा	६८-७,८	पढमसमयसजोगिभवत्थ-		पावयणी	१२-५
दसा	६०-१५	केवलणाण	२५-१८	पासओ अंतगय	१६-१०
दंसण	२०-१०	पढमसमयअजोगिभवत्थ-		पासणता	२४-३
दंसिज्जंति	५२-२	केवलणाण	२५-२२	पासतो	१७-२
दिट्ठिवाओवदेस	४७-१६	पणगजीव	१८-३	पुफ्फचूला	६०-१३
दिट्ठिवातअसण्णी	४७-२०	पणीत	४९-५	पुफ्फिया	६०-१३
दिट्ठिवातसण्णी	४७-१९	पणोल्लण	१६-२३	पुरतो	१६-२३
दुआधरिस,	४-१०	पण्णत्त	१३-१३, १४, १५, १६, १७	पुरतो अंतगय	१६-९, ११; १७-५
दृष्टिपात	७१-७	पण्णववा	३८-७, ८	पुव्व	७५-१६
दृष्टिवाद	७१-६	पण्णवणा	५८-१	पूह्य	४९-४
	ध	पण्णविज्जंति	५२-१	पेरंत	१७-२२
धम्मकहा	६६-९, १०	पण्णा	१३-१४, १६	पोरिसिमंडल	५८-७
धरणा	३७-७	पण्ह	६९-२०	पोरिसी	५८-४
धारणा	३४-२१, ३७-९, ४१-१८	पतिट्ठा	३७-१०	प्रज्ञापना	५८ टि०१
*धारणा	४३-११	पत्तेयबुद्ध	२६-२३		फ
	न	पत्तेयबुद्धसिद्ध	२६-२८	नफह्णग	१७-१२
नाण	२०-९	पदीव	१६-२३		व
नाणक्खर	४४-१५	पब्भार	६४-५	बंधु	२-९
निरियावल्लिया	६०-९	पभव	२-२१	बुद्धबोधित	२६-२८

शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति
बुद्धबोधितसिद्ध	२७-१	मरण	५८-१५	वगच्छ	५९-१
बुद्धि	५०-९,१०	मरणविमर्त्ती	५८-१६	वद्दत्तु	९
बुद्धी	३६-२४	महत्त्व	११-२०,२१	वद्दी	१८-२
	म	महल्ल	५९-८	वण	५-२
भगवत्	४८-२१	महाकम्पसुत	५७-२५	वण्णक्खर	४४-१
भद्रस्	२-२७	महात्मा	२-२३	वण्हिदसाओ	६०-१
भवत्थकेवल्लणाण	२५-११	महापञ्चक्खाण	५८-२७	वमेति	५०
भवपुञ्चतिज	२०-१३	महापण्णवणा	५८-१	वय	८
भाव	८०-६	महित	४९-२,३	वर	५-१६,६-१
भावमण	३५-१८	मडलप्यवेस	५८-८	वज्जण	३५-
भार्विदिय	१४-२९	मता	१७-१३	*वज्जणक्खर	४
भासापञ्चत्ति	२२-१६	माता	६२-१	वज्जणक्खर	४
	म	माधुरा वायगा	९-२४	वज्जणोग्गह-ग्गावग्गह	३५-४,५,६
मग्गणा [१ विसेसत्थस्स	३६-११,	मिच्छा	५०-७	वस	०
अग्गय-वद्दरेग्गम्मससा	४६-११,१४	मिच्छादिद्वित्त	५०-७	वातरण	६९-
सोयमं मग्गणा मग्गति (पत्र ३६)		मुदिया	९-१०,१२	वातगा-यगा	९
विसेसधम्मण्येत्तणा मग्गणा २ अ		मूलपडमाणुयोग	७७-२,३	वायक-भा	९-२,
मिक्खसियत्थस्स मणोववणक्काएहि		मेधा	३६-१	विउल्लतराग	२३-६,९,११,२४-२
जायणा मग्गणा ( पत्र ४६ )]				३०,३१	
			र		
मग्गओ अत्तगय	१६-१०,१४,१७-६	रय	३-२३	विक्रम	२-
मग्गतो	१७-१	रवति	६-११	विज्जणुप्पवात	७६
मज्झगत-य	१६-२,७,८,२०, १७-९	रुयग	[ अट्टप्परेत्तो रुयगो, तिरियत्तो गमज्ज ]	विजा	५८-८,
मणपञ्चत्ति	२२-१७	रूढ	५-१४	विजाचरणविणिच्छय	५८-१
मणपञ्चयणाण-नाण	१३-२६,२८		ल	विज्जुत	६-१
मणपञ्चव	१३-२७	लद्धिअक्खर	४५-१०	विणिच्छय	५८
मणपञ्चव + नाण	१३-२५,२८	लेस्सा	४-१५	विण्णाण	३६-
मणपञ्चाय + णाण	१३-२७	लोगविदुसार	७६-१४	विन्तिमित्तराग	२३-७,९,१
मणित	२४-२		व	विपुल्लमती	२५-४,५
मत्ति	५०-९,१०	वक्खाण	११-२२	विधि	१३-१
मत्तिअग्गणा	३२-९,१०	वक्खाणरूहण	११-२२	विपाक	७०
मत्तिणाण	३२-९,१०	वमा	५९-१०,६६-११,	विपाकसुत	७१
मन-पर्यय	१३-२५		६८-१२,६९-८	विपुल्लमती	२२-२
				विमर्त्ती	५८-१४,१५

शब्द	पत्र-पक्षि	शब्द	पत्र-पक्षि	शब्द	पत्र-पक्षि
व्रमाणषविभती	५९-७	श		सव्वजग	२-२७
वेयाणभ	१-१८, १९	श्रुतम्	१३-२२	सव्वबहुअगणिजीव	१८-५
वेयाह	६५-१२	स		सव्वतो	१७-११, १२
वेयाहचूला	५९-११	सइलेसभाव	२५-१६	संक्किल्लिडु	१९-५
वि-रायते	६-११	सच्चप्पवाद	७६-१	संज्ञा	४५-२६
विविध	६२-२५	सजोगिमवत्थकेवल्लणाण	२५-१५	संसताणचोदक	४७-९
विसाल	७६-१२	सजोगी	२५-१५	संसथै	९-२६
विसुद्धतराग	२३-६, ९, ११;	सज्जाय	११-४	सलेहणासुत	५८-१९
	२५-३, ५	*सण्णक्खर	४४-२४	संसवट्ट [ पत्त ]	२४-१२
विहार	५८-२०	सण्णक्खर	४४-२६	सवर	६-९
विहारकूप	५८-२१	सण्णिमुत्त	४५-२१, २६	ससय	४१-८
वीतरागसुत	५८-१८	सण्णी-सञ्जी	४५-२१, २६	सिद्धकेवल्लणाण	२५-१२, २६-१
वीमसा [ १ णिञ्चा-ऽणिञ्चादि-	३६-१३	संसतत्त [ स स्वतत्त्व ]	२८-८	सुत	१३-२२
एहि दब्ब-भावेहि विमरिसतो	४६-१३,	सतंबुद्ध	२६-१८	सुतणिस्सित	३२-२५
वीमसा भण्णति ( पत्र ३६ ),	१५, १६	सम्भाव	११-१३, १४	सुत्त	७४-७
२ आत्त-पर-इह-परत्थयहिता-		सम	६४-२२	सुयअण्णाण	३२-१०, ११
ऽहितविमरिसो वीमसा ( पत्र		समत्ता	१७-१३	सुयणाण	३२-१०, ११
४६ ), ३ अहवा सकप्पतो		समाण	५०-२४	सुसवण	} १२-२, ३
चेव विविधा आमरिसणा		समुट्ठाणसुय	६०-६	सुत्सवण	
वीमसा ( पत्र ४६ ) । ]		समंता	१७-१२	सूरपणत्ती	५८-३
वीरियप्पवाद	७५-२३	सम्मत्त	५१-२		
वृह	६३-१०	सयंबुद्धसिद्ध	२६-२३	ह	
वृत्ती	६२-२	सरीरपज्जत्ती	२२-१४	हायमाण-हूत्समाण	१९-४
वेला	४-१९	सल्लित	२-१५	हेट्ठिमखुड्ढागपत्तर	२४-१९
वेद	६२-५	सल्लिगसिद्ध	२७-१	हेतू	८०-१०
वेणइय	६१-२१	सवण	१२-२	हेतूवदेसअसण्णी-हेतुवायस	४७-१०, ११
व्यङ्गन	४५-२	सवणता	३५-२६	हेतूवदेससण्णी-हेतुवायस	४७-४, १०
व्यङ्गनाक्षर	४५-३				



# PRAKRIT TEXT SERIES

## PUBLISHED WORKS

### 1 ANGAVIJJA

-Demy Quarto size Pages-8+94+372 Price Rs 21/-

Angavijja is published for the first time by the Prakrit Text Society. It is critically edited by Muni Shri Punyavijayaji, with English Introduction by Dr Motichandra and Hindi Introduction by Dr V S Agarwal.

Angavijja is an ancient Prakrit Text relating to prognostication on the basis of bodily signs. The work is of unknown authorship but was considered to be of high antiquity and great sanctity having been delivered by Mahāvīra himself. Its internal evidence points to its having been finally compiled at the end of the Kushan period about 4th Century A. D.

It is highly important document firstly for the history of Prakrit language and secondly for the cultural history of India. It contains hundreds of lists of all descriptions for example seats postures utensil containers flowers trees personal names food and drinks bedsteads conveyances textiles ornaments jewellery coins birds animals arrows weapons boats gods goddesses etc.

### 2 PRAKRITA PAINGALAM, Part I

-Demy Octavo size Page-700 Price-Rs 16/-

Prakritapaingalam is a text on Prakrit and Apabhramśa Metres. It is critically edited with three Sanskrit commentaries on the basis of the two earlier editions and further available manuscript material by Dr Bholashankar Vyas a distinguished member of the Hindi Department of the Banaras Hindu University. He has also added Hindi translation with philological notes and glossary of Prakrit and Apabhramśa words.

### 3 CAUPPANNAMAHĀPURISACARIYAM

-Demy Quarto size Pages-8+68+384 Price Rs 21/-

Cauppannamahapurisacariyam is a great biographical work by Ācharya Śīlatika of the 9th Century A. D. It is critically edited by Pt Amritlal Mohanlal Research scholar of Prakrit Text Society. Its Introduction is written by Dr K. L. Bruhn.

It gives the lives of 34 great men revered by the Jains viz. 24 Tirthankaras 12 Chakravartins 9 Baladevas and 9 Vāsudevas.

### 4 PRAKRITAPAINGALAM Part II

-Demy Octavo size Pages 16+16+592+12 Price Rs 15/-

The Part I of this work on Prakrit metres is published as the Second Volume of the Prakrit Text Series. Part II contains the editor's comprehensive Introduction dealing with the problems of the Prakritapaingalam together with a critical and comparative study of the metres that form the subject matter as well as the exact nature of the language of the original text and also a literary assessment of the portion which the author intended to serve as illustrations to the Mātrika and Varuṅka metres dealt with by him.

### 5 ĀKHYĀNAKAMANIKOŚA

-Demy Quarto size Pages 8+16+25+422 Price Rs 21/-

Ākhyānakamanikośa is critically edited for the first time by Muni Shri Punyavijayaji.

It is written by Nemuchandra and is commented upon by Āmradeva of the 12th Century A. D. This book is a mine of historical and legendary stories in Prakrit and Apabhramśa.

### 6 PAUMACARIA Part I

-Demy Quarto size Pages 8+40+370 Rs. 18/-

This is the earliest Prakrit version of the story of Rama. It was written in about the third Century A. D. by Vimala. The work is printed with Hindi translation. It is edited by Muni Shri Punyavijayaji and translated by Prof S M Vora, M. A. Jamadarānāchārya. Its Introduction is written by Dr V. M. Kulkarni.

